गईनदीतरिगुरुसुंआकुलातिवारइंगुरइंरापितारेदूरात्मनस्त्रीघिक्कुविणासी थिउंतिहांधिक्कातांच
लउगुरुनुंवचनकुवरथंवाणसणी।तापसाआमिजइरिसिउ।नदीनइतटिआ।तापनालिंतीराइमागिसाध
संघातआवउजाईतिहां।आहारलि।नदीनइतटितपतपतापसाविवर्षाकालिनदीनउवाहलउआनथि
बूढउ।तहसणीलोकिकूलवालउनामदीधउं।एकइअवसरिश्रेणिकनाबेटाहल्लविहल्लबिकुमरश्रेणि
कनाआपियांदिव्यकुंडलअष्टादशचक्रहार।सेचनकहाथिउलेई।आपणाबडाऊआ।चेडामहारायकनै
इविसालाइंगया।तीणइवयरइंकोणीराजाकालकुमारआदिदेइ१०भाईउउसहस्सघोडाहाथीआ३३सहस्स
रथ३३कोडिपायकसहितआवीविसालानगरीवीटी।तिवारइंचेडामहाराय१८राजानयजसहस्सहाथीआपय
सहस्सघोडासहस्सरथथयकोडियायकसहितसामहउनीकलियरणि।चेडामहारायनइएहवीप्रतिज्ञा१०दि
हाडएकबाणमूंकइ।तेणइबाणइकरीजआग्रवाणी।सेनानीकूइ।तहनइजीपइ१०दिहाडकोणीनाका-
दिक१०बांधवविणास्यां।चेडइ।तहवइकोणीइंइंद्रचमरआराधियाइंदेहरक्षादीधी।चमरइमहा-
लाकंटकरथमुशलरणनइविषइदीधी।महायुद्धकुयां।तिहांरकोडि६०लाषमनुष्यपडिआं।सिद्धांत
घापणिइमबोलइ।कोणी।चेडइराजा।रणिमिहनूवइलरवकमरणूयाणा।चमरिदणाइनहीया।बी
देणिलरकचुलसीआ।।णगासुहमससुरा।बीजदिट्टीमरणूमहाविदेह।मि।दसमसहस्यमिद्धलीणा।समा
नयतिरिएसु।।१एहयांयुद्धकुया।पछीउविसालानगरीकोणीयाल।ईनसकी।श्रीमुनिसुव्रतस्वामि
थूपनामहिमाथिकी।तेहवइकूलवालसुरवीकोणीकूउ।घणाइंकालिसवितथनाविणासथिकी।आकाश

णीजई॥ समणे उदहरूलवालूए। मागहियंगणियं रमिस्सए। राययअसोयचंदए। वेसालिं नगरं गिह
एए॥१ उउ कूलवालूउ मागधिकागणिका सुं रमिस्यइ। उ असोगचंद कोणी राजा विसाला नगरी लेसि।
हवी आकारा वांणी सांसली। कूलवालउ तिहां जो वरा वित्ता नदी तटि रहिउ जाणी मागधिका गणिका त
वी नइ कहिउं॥ अहो गणिका कूलवालउ आणी उ जोईइ॥ वेश्या इ कहिउं। हा स्वामिन् आणीसु
क हा बीउ जें जाली। कपट श्राविका थई। यात्रा करत तिहां गई। वांदी नइ कूलवाला नइ ग
णिका कहिवा लागी। आम्हे श्राविका यात्राइ नीकल्या छियां। जिहां देवगुरु हुइ तिहां आम्हे वांदी
इ रावी जिमुं। तुम्हे इहां सांसलिआ॥ तह सणी आम्हा इहां आव्या॥ हवइ उ आम्ह अनुग्रह मया करी सूझ
तां सातपाणी विहरउ। एहवउं कही घरा इ आपइ। पिन पालामि श्रितमोद कदी धातीणइ लीधा। त्री तीसार हू
उ। घरा इ कष्टि पडिउ। तीणइ वेश्या इ धोवा पखालवा रूप वयावृच करी ला ज लो पावी। कषाध करी साजउ
कीधउ। कूलउ कहिवा लागउ। अहो वेश्या कांइ मागि॥ वेश्या इ कहिउं उ उमागिउं दिउ तुं मज साथि कोणीक
कूइ आवि तिहां थिकूं से जवाली धाली। वेश्या इ कूलवालउ कोणीकनइ आणिउ। कोणी इ बोल्या वितउ अ
हो कूलवाला तिम करि जिम ए विशाला नगरी लेवाइ। तिहां थिकउ कूलवालउ विशाला नगरी माहि गई।
निमित्तिआ नुवेष करी समतइ हूतइ। जोईउं। कांए नगर नथी सांजेउं। ज्ञानबलि जाणिउं। ए मुनिसु
व्रत स्वामि स्तूप नु महिमा सघलु। तह वइ नगर लोके निमित्तिउ पूछिउ। अहो निमित्तिआ। ए नगर वि २
रोध कईइ सांजिसिइ। तक हिवा लागउ जि वारइ ए स्तूप पाडीसिउ तिवारइ कटक पाछा जासि।

का ४

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

FOLIO NO:- 2 to 5 MISSING
(IInd Part) (I^st Part)

सविपरलोकि ते दुःख लहुं तउ आत्मा महा अनर्थकारं हुइ तेउ ॥ वरंम ॥ आपणउ आत्मा जे संयमि तपि करी आपणी इंद्री दमउ रू
डुं छइ आपणउ आत्मा न दम्यउ तप संयम न करइ तउ परलोकि मांहिं तिर्यंचादिकनी गतिमांहिं जउ अनेरा लोक ते ता ज
णा पराणा बंधन वध आदिक इं करी अवस्यपामवदमीछइ एहवुं जाणी आपणउ आत्मा दमिवउ ॥ ९ ॥ अप्पा चेव दमियव्वो
अप्पा हु खलु दुद्दमो ॥ अप्पा दंतो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ॥ १ ॥ वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेण य ॥ मा हं परेहिं
दम्मंतो बंधणेहि वहेहि य ॥ २ ॥ गाथा ॥ द्वयस्पष्टमुपदेशमालावत् ज्ञेयं ॥ चोर कहतां आपणां कर्मनां वश थकउ जेणइ
इं रसनां इंद्रीय जीतउ अनइ सुखी हूया ॥ दृष्टांत कहीइ छइ ॥ एक पालिं बिहार्इ चोरपति कहतां ते सदा चोरीः ॥
करइ तिहां महात्मा विहार करतां वरसालउ धुरि साधु साधि आव्या तिहां कोइ साधुसकश्रावक कोन थी तिहसणी
महात्मा चोर पल्लीपतिनि मिल्या ॥ महात्मानि देखीनइ हरख्यो प्रणाम करी चोरे इं वीनवियां ॥ हस्ते भवनउ ते अम्ह लगइ
ऊ ण कारणि आव्या तिहांरि महात्मा एक कहीउं ॥ महात्मानइ वरसालउ रहीवुं न कल्पइ तेह सणी वरसाले रहवा योग्य
उपाश्रय आपि महा गुरु हरख्यो धिके तिहां उपाश्रय देई कहिउं तहे रहेइ हा रहीउ ॥ अम्हारइ घरि ते इम्ह ते घे हम्तपालीः
लेउ तिह वर्इ महात्मा एक कहिउं एक घरनउ आहार लीधु न कल्पइ तेह सणी आहार लेवा योग्य घरे असे आहार
लेवां उहां नि उपाश्रयनि देवइं करी ॥ एहउं जे हसणी सिद्धांत कहीउ छइ ॥ यतः ॥ जो देइ अवस्सइ मुणिवराणं ॥ ताव
संजमे य सझाए ॥ पावइ सुरनरगं ॥ ३ ॥ एहवां ऋषीश्वरनां उपदेस वचन सांभली पल्लीपति बहु हरख्यो रात्रि दिवस म
हात्मानी सेवा करइ ॥ एहवइ हातऋषीश्वरनि तप नियम करतां चउमासउ हतां वर्षाकाल वीतउ ॥ जातां महात्मा एक
तालवानइ विरखइ आतपल्लीपति गुरु अस्समर्थ जाणी ॥ एहवात बिहुं कउ साथे नि गुरु एक कहीउ ॥ रात्रि भोजन नुं करिव उ पए
हवा नियम दीधा ॥ पता हदा हिण पधिकउ नीयमलीध ॥ उमहात्माए त्रिहुं शालाक रात्रि भोजन नादखी तादाबय

स्त्रीपति चोरनइं प्रतिबोधादइ बड्डायतः॥ श्रीयोगशास्त्रे॥ मेधां पपीलिका हंति॥ यूका कुर्याज्जलोदरं॥ कुरुते मक्षि
का वांत्यां॥ कुष्टरोगं च कोलिकः॥१॥ कंटको दारुखंडं च वितनोति गलव्यथां॥ व्यंजनांतर्निपतितः तालु वि
ध्यति वृश्चिकः॥२॥ विलग्नश्च गले वालः स्वरभंगाय जायते॥ इत्यादयो दृष्टदोषाः सर्वे षां निसि भोजने॥३॥ अर्थः
रात्रिं जिमतां केतीवारि कीडी पेटमांहिं जाइ तउ बुद्धि मति जाइ॥ अनइ जू पेटमांहि जाइ तउ जालोदर वाधइ॥ जु माखी
पेटमांहिं जाइ तउ ततकाल विमन करइ॥ जउ कोलीयावडु पेटमांहिं जाइ तउ कुष्ट ऊपजइ॥१॥ जइ बोरिनु कांटउ अथवा
बीजुइ कांटु अथवा दारुखंड मूलांकमानु कंटकु॥ जिमण मांहि रात्रिं अंधारइ जिमतां आवइ तउ गलइ व्यथा करइ॥ व्य
जन शाकि सालणा मांहि वीछी अथवा गिरुळी आवइ तउ तालू उवींधाइ॥२॥ केतीवारिं वालू केसु आलजिमण मांहि
आवइ तउ स्वरभंग सादबइसइ॥ इत्येव मादि कुरी रात्रि भोजन सविकुं कुइ दीगदोख जालिया कुंइं॥ अनइ रात्रिंनु
भोजन कीजइ तउ अवस्पिं राध्युं जोइइ॥ तिहां अधारि आनकि जीवना विणास कुंइ॥ जिहां साणा धोइ हाथ पग मुह धोतां
जिहां पाणी बंम्हाइ तिहां इ अनेक जीवना विणास कुंइ॥ एह सगली धर्म्म चिंतइ जे सर्वथा रात्रिं भोजन न करिवुं॥३॥ महात्माए
शास्त्रोक्तप्रकारि रात्रिना दोख घणा कांइं कहा॥ नियम नइ विषइ॥ पछी पति बिहि हसाइ दृढचित्र कीधा॥ महात्मा चाली
आ तिवुला वीपाबा घिरि आव्या॥ महात्मा नीसि वाइं करी॥ आपण पुसलुं मान इबइ॥ एह बइ एकवार ते हे चोरे ध्य
डिगए जंतां गाम सांजीगाय निसि घणां कांइ ढोर आणियां॥ तेहे पाबं आवतां विचालि महि विलाणसवामां मी उ के
तला एक पुरुख तिहां रहिया॥ अनइ केतला एक गाममध्य मद्य लेवा गया॥ एहवइ मदिख विलासण हारे परस्प
रिं इमचीतविं॥ अर्द्धमांस माहि विख घाती गाम माहि ल्या जाण हार निंदीजइ॥ तउ एतां मरिं॥ आपणइ घिकी एहवी पा ६
प बुद्धि ऊपनी॥ आपण पेए अर्द्ध मद्य माहि विख घाती॥ एहवुं विमासी विष घाती॥ जेहे वइ सघलाइ जोरए कगमिइ

ल्या तेहवइ सुर्य आथिम्यु॥ तिहां रितेबिन्हइ स्त्री त्रिचोरनायक॥ गुरुनी दीधी रात्रिभोजननी आखडी तेहसां जवाना सच्च
धि कुएक इनिवरइ प्रदेसिजइ ईरहीया॥ नजम्या॥ जे जेजिम्या ते विषना प्रयोग थिकुं मुआ॥ कुगतिं गया॥ एहवइ मेलिंस घ
लाइं मुआ तेहे स्वरूप देखी॥ गुरुनी दीधी आखडी ऊपरि आप्रतिहिंसा व ऊपनु॥ एहना महिमा थिकी अह्मे जीवतां रहीया॥
आपापणइ गामि घरि पुहुता॥ सुखी थया॥ जिमते चोर निह्वें ह्रीदमी उ॥ तिम बीजाइ आपणाइं ह्रीयदम इ॥ तेसु खीथाइ
॥ यतः॥ वरमे अप्पा दंतो॥ संजमेण तवेलया॥ माहं परेहिं दम्मंतो॥ बंधणेण वहेणय॥१॥ चलीदृष्टांत सेचनक हाथीयानु॥ इं
द्रीयदमवा ऊपरि जाणिवुं॥ एकिं अटवीइं हाथी नु यूथ बइ॥ ते यूथनु धणी हाथी उ॥ ना न्हां जे जणिया हाथीया ते हना
जे तलइ हाथिणी हाथी जन्म इ॥ एतलइ जे वछु हाथी उ ते हनि विणास इ॥ मन माहिं इमचीतव इ॥ रखे एवाधइ एवाधी आ जं
ता मुह निहणीमाहरा यूथनुं धणी कुइ॥ रखेए मुझनिं विणासइ॥ एहवा सयथिकु नान्हां रकलतस लाविणास इ॥ यतः
॥ सद्वंगोवंगविकत्तणाउ जगडण विहेडणाउ अ॥ कासी यरछुत्त सीउ॥ पुत्ताण पीयाकुणगकेउ॥१॥ सद्वंगो॰ कनकके
उराजा आपणा बेटारहिं सद्वंगोवंग॥ सर्वांगोपांग नी विकर्तना छेदा विवुं॥ अनइ जगडण कदर्थिवुं॥ विहेडण॥ विविध
जातिनी पीडा ते हनि कीधी॥ ते शा सणी॥ राज्य रखुलणी॥ एबेटा वाध्या कुंता॥ माहरुं राज्य लोलवी लसिं॥ ईण अलि:
प्राइ॥ जिमते लिंराजाइं राज्य वां बतइ॥ इमजात मात्र बेटा विकृति कीधा॥ तिम ते णिं हाथीइं आपणा बालकनिं विणास इं ए
हवइ एकदा को एक हाथिणीइं गर्भ धरिउ॥ एहवइ चीतवइ ते हाथिणी॥ जु माहरु जन्म्यु हाथीयानु कुसिउ॥ एवछु हाथी
अविणास इ॥ ते हसली किमहएक उपाइं॥ आपणु हाथीयानु गर्भ राष्युं जोई इ॥ तिहां घिकी तहा थिणीइं पग छूब
वानुं मिस करी॥ हलूइ हलूइ थिकी पाछी रहिती आवइ॥ किवारइं एक इं दिनि मिल इ॥ किहांरि बिकं त्रिकुंद हि हा
डमिलइ॥ इम करतां तेणइं हाथिणीइं हाथी उवीसासी उ॥ तेहवइ तेलइ हाथिणीइं॥ तापसाश्रम गुप्त स्थानकः

दीधुं तिहां रही हाथीउ जिणुं ते तापसनां पुत्र साथिं दीठी मइ जनम लगु हाथीउ साथिं चालइ। जिम ते तापस वृक्ष सीचइ ति
म ते हइ ते सूंढि पांणी लेई नइ सीचइ। ते इहलणी ते तापसे हाथीयानुं नाम दीधुं सेचनक। ते वय प्राप्त सबल हाथीउ हूउ।
तेहवइ तेणइ समतइ ए हाथीयानुं यूथ दीठुं। मा कहइ इस थ्युं। मांइ सघलुं वृत्तांत कहीउ। ते समाचार पीठी मनि रीस धरी। से
चनक कहइं आपणु पिता इ यूथनुं धणी हुंतो आपणपे इ यूथनुं धणी हूउ। तेणि ते तापसाश्रम विणास्युं। जिम मा हारी माइं छांडी ईहां
वधारी। उतिम रषइ ईहां बीजी इ हाथिणी इं। बीजा कू इ हाथीया निवधारसि। इम चीतवी ते गाम लांजी उं। तिहां थिका ते ताप
स रूवा कंता फल फूल लेई टणुं लेई राजा श्रेणिक निं मिल्या। तापसे राजननिं कहीउं देश जेंइल खणोपेत सेचनक इस्त
इ मामिं हाथीउ वनमाहि वसइ छइ। एहवुं तापसनुं वचन सांभली कटक सहित राजा श्रेणिक जईं ते हाथीउ साहीउ। आ
णी आलानस्थंभ बांध्यु। ति हवइ ते हे तापास हाथीउ निजरबीउ देहस्ति न किहीग युता हरइ बलि तिं प्राप्युं अविनयनुं फल
। एहवुं वचन सांभली हाथीउ रोसिं चडीउ आलानस्थंभ भांजी सांकल त्रोडी तापसनी प्रविंध्सयु। तापससघला इहतप्रहत:
की धावनि न ईवली। तापसाश्रम भांज्युं। राजा श्रेणिक वली तिहां जिहां थी आ साहवा लणी नीकल्या। पणि घणे प्रकारे करी। त
णइं दिहा मइन साहि वराणु। रात्रिनइ समइ राइपनी अधिष्टायकानी दिव्यइ हां थीया आगलि एहवुं वचन कहिउं। अहो हस्तीगज
गतिनां चालणहारा सालिवाणी। चरमे अप्पा दंतो। आपणपुं आपणपिं दमी इ उत्तम लोपरदम हुते तलो। एहवु उपदेस देव्या
नां सुरव उ सांभली हीइ जाण्युं विवेक ऊपन्नु। आपणपि रात्रिं राय तणी जे हस्तिशाला छइं। तिहां आवी ऊभु रहीउ। प्रभात सम
य राजाइं हाथीउ आव्युं सांभली वध्यु। महा सुखी हूउ। एणिं दृष्टांतिं इम जेम हां त आपणपुं आपहिणी दमइ जा ते इहलो
कि परलोकि सुखी थाइ॥१६॥ इति आत्मन इदमवइ सेचनक हस्ती दृष्टांत॥ पडिणीयं च बुद्धाणं। वाया अडु व कंम्म
णा। आवी वा जइ वा रहस्सि। नेव कुज्जा कयाइ वि॥१७॥ प्रत्यनीकं तू बुद्धानां प्रत्यानीकं वा। वा अथवा कम्मणा आवि वा प्रकट वा: ७

यदि वा रहस्ये। एकांते कदापि नैव कुर्यात्। अनइ शिष्य बुद्धज्ञातव आचार्य रहइं। प्रत्यनीक विरूइ वचनिं करी। अथवा:।
कर्म्मिं करी प्रगट अथवा एकांतिं इथ्यान्नु न करइ॥१७॥ न पिरकउं न पुरउ। नेव किच्चाण पिठउ। न जुंजे ऊरणा ऊरं सयाणा
नो पडिस्सुणा॥१८॥ शिष्य: गुरो: पक्षतो नो पविसेतू। कृत्यानां पुरत: पृष्टतस्य नो पविशेतू। शिष्य गुरुनि पासइ। कृत्य आचार्य
रहिं आगलि पूठिं कृम्मुन बइसइ। ऊरणा ऊरणं न जुंजीतू। पग ऊपरि पग न चडावइ। शयनेन प्रविश्रृणयातू। शय
ने शय्याइं बइठउ वचन सांभलइ॥१८॥ नेव पल्हत्थियं कुज्जा। पक्खपिंडं च संजए। पाए पसारीए वा वि। न चिट्ठे गुरुणं तीए
॥१९॥ संयत: पर्यस्तिकां वा। अथवा नैव पक्षपिडं न कुर्यातू। महात्मा पर्यस्तिका साथणी इ वस्त्रतणी पालठी। अथवा पक्षपि
ड बाहं तणी पालठी न करइ। तथा गुरुणां मंति। कयादोप्रसार्य न तिष्टेत्। तिम गुरुतणाइ समीपि पग पसारी न
रहइ॥१९॥ आयरिएहिं वाहित्तो। तुसिणीउ न कयाइ वि। पसायपेही नियागट्ठी। उवचिट्ठे गुरुं सया॥२०॥ शिष्य
आचार्येर्व्याहृत: कदापिदपि तूष्णीको न स्यात्। शिष्य आचार्य बोलावि उ कुं तउ कांइ इतूष्णीक अणबोलि उ
न रहइ। तत्काल तहत्ति करी आदेश फलइ। तथा प्रसादप्रेक्षी नियोगार्थी सदा गुरु उपतिष्ठेत्। तिम गुरुतणा
प्रसाद बतउ मोक्षार्थी कृतउ सदा गुरु सेवइ॥२०॥ आलवंते लवंते वा। णत्तीसीएज्जा कयाइ वि। चइ
ऊणं आसणं धीरो। जउ जत्तं पडिस्सुणे॥२१॥ गुरु वालपनि कदाचिदपि। निषेदित। शिष्य गुरु थाडतुं बोलइ
य एंणु बोलइ कांइ इ बइसइ नहीं। कहइ आवी आदेश फलइ। धीर इ आसनं मुक्त्वा। यच्चगुरवो यदादेशं तत्
प्रतिश्रृणुयात्। धीर ऋ कु आसणा मूकी गुरु जं आदिसिइ ते अंगीकरइ॥२१॥ आसणगउ न पुच्छेज्जा नेव
सिज्जागउ कया। आगम्मुक्कुडउ संतो। पुच्छिज्जा पंजलीउडो॥२२॥ आसनगतो न पृच्छेत्। शय्यागत: क
दापि नप्राच्छत्। आसणा बइसउ न पूछइ। शय्या संथारइ बइठउ कांइ न पूछइ। आगत्य उत्कुटित: सन्

साधुः एकः स- मं स्त्रिया अगारेषु संधिषु महा- पथेषु एकः स्त्रि- या सार्द्धं नैव तिष्ठेत्। न संलपे- त्।४×२०३०

प्रांजलिः पठेत्। गुरु समीपि आवी उ त्कटिका सनि बइठउ उभउ थयो डि तरहस्त कु तु प्रवइ॥२२एवं विनय युक्तस्य
सूत्रं उ अर्थं च तदुभयं। पृच्छमानस्य शिष्यस्य वागरिज्ज जहा सूयं॥२३एवं विनययुक्तस्य एवंभूतः शिष्य
स्य सूत्र अर्थं च तदुभयं। यथाश्रुतं व्याकुर्वीयात्। गुरु एवंरूपइ प्रकारिइ विनय हित सवतो शिष्य रहइ सूत्र
अर्थ तदुभयं सूत्रार्थ यथाश्रुत जिम सांभल्या ते गुरु समीपि जिम सांभलिउ तिमउ कहइ॥२३मुसं परिहरे भिक्खू न
य उहारिणं वए। भासा दोसं परिहरे। मायं च वज्जए सया॥२४भिक्षुः मृषां परिहरेत्। महात्मा मृषा भाषा परिह
रइ। अवधारिणां च न वदेत्। अनइ निश्चय भाषा न बोलइ। भाषादोषं परिहरेत्। सदोष भाषा परिहरइ। मायां च
सदा वर्जयेत्। अनइ माया सदा वर्जइ॥२४न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं नाणिट्ठं न मम्मयं। अप्पणट्ठा परट्ठा
वा उभयस्संतरेण वा॥२५पृष्टः सावद्यं न लपेत्। पूछिउ हुंतउ सावद्य न बोलइ। निरर्थकं न ब्रूवत्। आत्मा
र्थं परार्थं उभयार्थं अथवा काज पाखइ न भाखइ॥२५समरेसु अगारेसु संधीसु य महापहे। एगो एगत्थिए सद्धिं
नेव चिट्ठे न संलवे॥२६साधु एकस्मरस गीइलोहार नुं घर नक अथवा निर्जन स्थानिक अगार स्थनि
घरे संधि बि घर तणइ। अंतरालि महापथ राजमार्गि एकली स्त्री सिउ ऊभुं न रहइ वात न करइ॥२६जं मे बु
द्धाणुसासंति सीएण फरुसेण वा। मम लाभोत्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे॥२७शिष्यः इति प्रेक्षया बुद्ध्या त
त् गुरु वचनं प्रतिशृणुयात्। शिष्य इसी बुद्धिइं गुरु वचन पडिवज्जइ। इति किं। इसी किसी बुद्धिइं करी त
गुरु प्रति पडिवजउ। बुद्धाचार्या तं शीतेन परुषेण वा अनुशासति। ते मम लाभ एव बुद्धः आचार्य जं मरु
प्रति इसी तल वचनइं करी अथवा कर्कश वचनइं करी सीखवइ। तिहां मउ नइं लाभ जाणइ। किं शिष्य
प्रयतः आदरपर बइ॥२७अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं। हियं तं मन्नए पन्नो वेसं होइ असाहु
णो॥२८प्राज्ञः ततः गुरुः अनुशासनं हितं मन्यते। डाहा ते गुरु शिष्य हित मानइ॥ किं। अनुशासनं उपायं॥

उपाइं करी प्रयुक्ति बइ। पुनः किं। दुष्कृतस्य नोदनं। दुःकृत पाप करइ। मोक्ष न पेडइ बइ। असाधोः द्वेष स
वति। असाधु रहइ ऊ शिष्य रहइ गुरु शिष्य वचन द्वेष कारण हुइ॥२८हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसा
सणं। वेसं तं होइ मूढाणं खंती सोहिकरं पयं॥२९बुद्धा विगत भया शिष्या। परुषमपि अनुशासनं हितम्
न्यात। बुद्ध ज्ञानवंत शिष्य सय रहित कर्कश शिष्य वचन हित मानइ। मूढानां तद्द्वेष्यं स्याद्। मूर्ख
रहइ ते गुरु शिष्य वचन शिष्य वचन द्वेष कारण हुइ॥२९किं अनुण्णमानइ। अनइ निर्मलय
गुण करइ बइ। पुनः अनुशासनं पदं ज्ञानादि गुण तणु पद स्थानक बइ॥२९आसणे उवचिट्ठिज्जा अणुच्चे
अकुए थिरे। अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए॥३०साधुः अकुच ऊ स्थिरे आसने बइसउ। तथा
अल्पोत्थायी निरुत्थायी। अल्पकुक्कुचः निषीदेत्। तिम काज विशेष पाखइ ऊठउ तिम काज पाखइ ऊ विकार रहित
अल्प कुक्कुच हस्तव रणादि विकार रहित बइसइ॥३०कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण पडिक्कमे। अकालं च
विवज्जित्ता काले कालं समायरे॥३१भिक्षुः कालेन निष्क्रमेत्। प्रतिक्रमेत्। महात्मा कालिइं भिक्षा नइ
कारणि नीकलइ कालिइं पाछउ वलइ। अकालं वर्जयित्वा। कालेकालं समाचरेत्। अनइ अकाल वर्जी
कालि अवसरि कालायाग्य क्रिया संचरइ॥३१परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे। पडिरूवेण
एसित्ता मियं कालेण भक्खए॥३२भिक्षुः परिपाट्यां न तिष्ठेत्। महात्मा नइं परिपाटि इं कहितां मांडि
घणा जन लोक जिहां विविध बीजा नाटकउ ण प्रमुख जिहां मंडाणा हुइ तिहां यतीश्वर ऊभा न रहिव
उ। दत्तेषणां चरेत्। निरवद्य समति पालइ। प्रतिरूपेण एषयित्वा। मितं कालेन भक्षेत्। प्रतिरूप यो

×उपविष्टेन× उपविशेत् अ/मा हात्मा अति उच पणा रहित अकु- ऊच आसन दंड तइ। स्थिर आस- नि××३०२

ग्यम हात्मा सामाचारी नइ रषयिवा॥ विहरी नइं भिव अल्पाहार कालि ग्रस्ता विजमइ॥ ३२॥ नाइ दूरमणासणो। णा
णोसिं चक्खुफासउ। एगो चिट्ठिज्ज भत्तट्ठा। लंघिता न इक्कमे॥ ३३॥ नाति दूर अनासन्न नीनषा च क्षुस्पर्श एकः
साधुः सिद्धार्थी भुक्तार्थं वा तिष्ठेत्। महात्मा एक रागद्वेष रहित कह्यउ आगइ घर बाहिरि भिक्षाचर कसइद्धं
तइ हरवी उ न ही। अतिवेगलइ न ही। अति ढूकड इ। अन्यथा आनरी भिक्षुचर तणु दृष्टि मार्गि वर्ज्जी॥
सकनइं आघि जउ ऊ सउ रहि तलंघ र्यि चाजु॥ नाक्रमेत्। भिक्षारेलंघी नइ माहिं न पइसइ॥ ३३॥ णाइउ
च्चं वणीयवी। नासण्णो नाइ दूरउ। फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहिज्ज संजए॥ ३४॥ संयतो नात्युच्चो नातिनी
चो नासन्नो नातिदूर स्थित्वा। संयत नही अति ऊचु नही। अति नीचउ नही अति ढूकडउ नही अ ति वेगलउ
स्थानक भिक्षा नइ कारणि रहइ। तथा धैर्य कं परिकृतं पिंड गृह्णीयात्। तिम फासु परिग्रह कं आप णइ
अर्थि कीधु प्रति ग्रहीयात् विहरइ॥ ३४॥ अप्पपाणप्पबीयंमि पडिच्छन्नंमि संवुडे। समयं संजए भुंजे।
जयं अपरिसाडियं॥ ३५॥ संयतः अल्प प्राणे। अल्प बीज प्रतिच्छिन्ने संवृत स्थाने समकं यतः अपरिशा
टियं ग्रासं यथा भुंजीत। अल्प त्रस्ट अल्प बीजे संयत प्राणी जीव रहित बीज रहित। प्रतिच्छिन्न ऊपरि ढा
कं संवृत बिहु पाषिइ सुसंवृत स्थानक समका आनरा महात्मा संघाति। अथवा समय सावियय:। जयणा
पुरुष कुतइ। परशाटि रहित जिम ऊइ। तिम साड न करइ॥ ३५॥ सुकडेत्ति सुपक्केत्ति। सुच्छिन्ने सुहडे मडे सु
निट्ठिए सुलट्ठे ति। सावज्जं वज्जए मुणी॥ ३६॥ इह मुनिरिति सावद्यं वर्ज्जयेत्। महात्मा ई णाइ प्रकारि इ सावद्य वचन व
र्जइ। इतिति किम सुकृतमिति। विवाहादिक सकल उ कीधउ। सुपक मिति। आम्लादिक कहूं वउ। सुच्छिन्न सुक्ष्म ९
छेदितं। आनक द्रव्यादिक सघलु। कल वितवधारितं। बद्ध समृतं। सलहसूउ। जा जी वितंता संताप कारक ऊ

+व+

उ। सुनिष्ठितं सणीइ। अथवा सादिक सघलुं नीपनुं। कहवु सुधा धवलित रूडउं। देसइ बइ इस लीकं न्याइ त्ये
व सावद्य भाषा यती अत्र न बोलवी॥ निरवद्यं भाषेत्। अनइ निरवद्य भाषा इ। बोलें। रूडउं सामाय
कपर्वे तिष्ठिपे। सउ सउ करीधउ। अथवा संसारा स्थ हसलु बदिउ रागाद्वेष रूपीया तामांचा रादिक
सलइ हरिया। इणइ पंडित मरणइ सलुं मुरण साधिउं। श्रावक आचार अथ वायतिनी क्रियानी पजावी
ए सलु सामाचारी ना जाण जेऊ ईहा लडा हायारि. साधुइ मिउ निरवद्य बोलइ॥ ३६॥ रमए पंडिए सासं। हयंस
हं व बादए। बालं सम्मइ सासंतो। गलियस्सं व वाहए॥ ३७॥ गुरुः पंडितान् शासनरमते। गुरु करा हा। शिष्यसी
षतं उर इमा सइ वाहकर इव यथा वा हको सहं हयं वाह यन रमते। कहि नीय रिइ। असवार नीयरिइ। यमत्र
सवार सहुसुजी जोती घोडउ वाहतउ रति पामइ। गुरुं बालिसं शैशा सन आम्यति गुरु सम्म शिक्षा सीष वउ आष
इ पामइ। कहिनीय रिइ। जिम सलु असवार दुष्टाश्व वाहतु खेद पामइ॥ ३७॥ खड्डुया मे चवेडा मे। अक्कोसा य वहाय
मे। कल्लाणमणुसासंतो। पावदिट्ठि त्ति मन्नइ॥ ३८॥ कल्याण शिष्यो गुरुं कल्याणं मनुसासंतं। पाप दृष्टिमिति मन्यते।
कुशिष्य गुरु रूडउं सीषवतु पाप दृष्टि इम मानइ। इम जाणइ गुरु जाणी इ पापी इ ती ति कि। इम किमा मम रव
ड का:। ए गुरु वचन मरुनइ मस्तक प्रहार ममा चापटा थापट। मे मम आक्रोश। वध मम मरुइ। ए गुरु वच
न आक्रोश गालि अनइ वध रूप इस्यउं शिष्य मानइ॥ ३८॥ पुत्तो मे भाय णाइ त्ति। साहू कल्लाण मन्नई। पावदि
ट्ठी उ अप्पाणं। सासं दासं त्ति मन्नई॥ ३९॥ साधु गुरुः पुत्रो मे भ्राता मे ज्ञानं तीति। मे इति कल्याणं मन्यते। कुशिष्य
गुरु सीषामणा देता म ऊनइ पुत्र नीय रिइ। सगा नीयरिइ इम कल्याण रूडउं मानइ। पापदृष्टि रात्मानं शास्य

॥उत्तरा०
॥बोला०१०

मानंदमा।इतिमन्यातः।शिष्य आपणगुंसीषदेतांयणुमानइ।अप्नकोवए आयरियं।अप्पाणंपिन कोवए।बुद्धोवया
ईणसयाणंसया तोन्नगविसए॥४०॥आचार्यनकोपायवा।आत्मानमपिनकोपायवा।सुशिष्यआचार्यनइनस्रसव
इ।अनइ आपणपुनरूसवइ।बुद्धोयघातीनस्यात्।गुरुनइउपघात।कारनक्रइ।तत्राद्धकाकानस्यात्।गु
रुतणा छिद्रनजोइ।अघवाघ्राणीनीपरिइगुरुवचनजोइ।आयरुणागुरुसक्तिकरइ॥४०॥किमएकरीसइ
ऊपनइऊत इवडानुघातिक नक्रइ।जिमयुगप्रधानाचार्य।घातक ऊ।अष्वनीपरिइ।तकिमऊणएकचा
यमहाबहुश्रुतामहात्मा तकालिइ।तगुरुनइवडपणआविउ।जंघाबलक्षीणथिइऊतइएकइगामिर
ह्या।जेहसणी।सिद्धांतमाहिइमकहिउंबइ।ज्ञियकोहमाणमाया।[illegible]।जियलोनपरीसाहइ।ज
धीरा।वुड्ढावाससंठिया।खवेति।चिरसंचियंकम्मं॥१क्रोधमानमायालोभअनइ स्नूषतृषादिकजेणइ
जीताबइ।तिहवायुआर्तिनथीपडतांजेधीर।सत्ववंतबइ।तसयरनअसमर्थपणाइएकक्षेत्रवास्थिरह्या
इऊतांखवंतिणचिरकालनुंसंचिउंकर्मक्षिपइबइ॥तथा॥पंचसुमतियागुत्ता।उज्जुत्तासंजमेतवेचरणे।
वाससयंपिवसंता॥मुणिणोआराहगा भणिया॥२पंचसुमिया।पंचसमितिकरीसमता।त्रिऊगुप्तिक
रीगुप्ताउज्जुत्ताणसंयमबजीवनीरक्षातपबारभेदिचरचरणमहाव्रतअनइपडिलेहणाप्रमायेना
दिकसर्वसाधुक्रियाएतलानइविषइउज्जुत्ताउद्यमवंता॥एवाजेमहात्माऊइ।वाससयंपिणतएकइक्षे
त्रिवरसनांसइवसतां।तजिममहात्माआराधककह्या।तीर्थंकरदेवनीआज्ञाचालतां।तदहइलगार
इदोषनलहइ।उक्तंच॥एगखित्तविहारी कालाइक्कतचारिणोजइवि।नहवियविसुद्धचरणांविसुद्ध २७

*जिमघणोला
नदेबइतिम
करइ।इकां
तिकाइनथी
।लोलबेक्कि
मजोईइलो
हाकंखव०जि
मलानवांब
उ×उ०६

आलंबणीजेणा॥२हिवसर्ववस्तुआश्रीवातकहइबइ।तम्हासवाणुन्नासव्वनिसेहोपवयणे नथि।आयंव
यउलिह्या।लाहाकंखिवावाणीउ॥३तम्हाजेहभणीएकइक्षेत्रिवसतांचारित्रीयारहइ।तेहभणीसर्ववस्तुआ
स्त्रीसर्वप्रकारिआज्ञानथी।एअबोलइइमकरिवुजि।सर्वाअनइकहिंइ।वस्तुआश्रीएकांतिइंनिषेधनथी।आ
बोलइमकरिवउजु।द्रव्यक्षेत्रकालभावनीयपेक्षासविकुंवस्तनुंकरिवउं।अनइंसविकुंवस्तनुंनिषेध
वउं।इकहिउं।पुणिआयंवएलाभवयबेक्कतोलिवउ।जोजगीतार्थजाणइआमकरतांआवलुलाभइथि।
बिक्कबइं।वणिगव्यवसाइउलाभबेक्कजोईवक्करइ।तेहनइएकांतिकाईनथी।इमकीइजिवस्तुवक्करवी।जेएणीइ
वस्तुइंजेतीवारइंलाभथइ।तेतीवारइतवस्तुवक्करइ।ईणइदृष्टी।तिगुरुश्रावकनाआग्रहथिकीइभगवनत
२
म्हवयोतीतथयाविहारकरवइ।अष्यमहूआ।तिम्हजावजिवआराइथे।त्रिरक्रअनइअतीचारसंयमआ
राधु।तिगुरुतिहांरहइथकइ।तहवइगुरुनुविनयवियावच्चकरतांकेतलेएकदिवसेगएऊंत।विनयविया
वच्चकरतांशिष्यनामनभागा।हीइदुष्टबुद्धिचीतविवालागा।कहीइंगुरुमरसिइ।एहउंचीतवीतवातऊं
तिगुरुमरचाभणी भातपाणीऊषधदिकनीचिंतानाकरणाहारश्रावकनइंचेलेकहिउं।गुरुतुंमलेहण
अणशणलिइथिइ।गुरुनइंचेलेकहिउं।भगवनश्रावकउपध्यपांणी।ऊषधनविहरावइ।जेहभणीउ
म्हइंहांएकस्थानकिघणादिनईहारहइतांऊता।[illegible]केतलइकदिवसेश्रावकनामनदीदलार्थइ।एहबुद्धि
थ्यगुरुनइंकहिउं।एहवइजेसदा[illegible]साधुगुरुनइपध्यपांणीविहरवाआवइ।अनआउनावियात।भिउंकार
णश्रावकगुरुसमीपिआवीत्रबिया।हेभगवनस्रुतासातपाणीअम्हारइघरिमिलतइत[illegible]काइमलषना

करइ एहवउं प्रविद्धकू तां गुरुइं चिंतविउं आ कंकनुं काई वांक नथी सदाइ जातइ हुं जि सावदी सइ वहुएस्य
घली कुछ अपनी वात अवकउ साम्प वेलाती र्थंकर देवनइ मान्या एहवउ मंत्तिइ आपणां कुं शिष्यनइ
अप्रीतिकूपजती जाणी नइ मनवचनि थिर निश्चल करीनइ आणास णाली धउं आपणाडी वनुं काडकी
धउं जिम तेहकु शिष्य गुरुनुं उपघातकी धउं तिम बीजा न करिवउं ॥४०॥ आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण प
सायए। विज्झवज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणोत्ति य ॥४१॥ शिष्य आचार्यं कुपितं ज्ञात्वा। प्रातितीकेन वसायथा॥
प्रीत्या प्रसादयत्। शिष्य आचार्य कुपितउ जाणी। प्रतीति कप्रतीतिकारण शपथादिक वचन करीनइ आ
घवा प्रीतिकरी प्रसन्न करइ। प्रांजलिपुटो विध्यापयेत् वायो जतकर संपुटकू तउ कृपनुं कृतनो। कोपउल्ह
वइ।व अन्यत न पुनरिति वदेत्। अनइ वली प्रमाद नही। करवइ इम बोलइ॥४१॥ धम्मज्जियं च ववहारं। बु
द्धेहायरियं सया। तमायरंतो ववहारं। गरहं नाभिगच्छई ॥४२॥ शिष्यो धर्मार्जितं व्यवहारं बुद्धैराचरितं। व्य
वहारं आचरन् गर्हा नाभिगच्छति। शिष्य धर्मनइ गुणइ अर्जित विवहार बुद्धज्ञातता तं आचरइ व्यवहारत
दातं व्यवहार आचरतउ गर्हा न पामइ॥४२॥ मणोगयं वक्कगयं जाणित्ता आयरियस्स उ। तं परिगिज्झ वायाए। कम
णा उववायए॥४३॥ मनोगतं शिष्य आचार्यस्य मनोगतं वाक्यगतं वा चाप्र तिगृह्य कर्मणा उपपादयेत्॥
शिष्य आचार्यतणउं मनोगत वचनगत। कार्य जाणीतका र्यवच निइं जाणी क्रिया विस्तरइ संपजावइ॥४३॥ वि
ते अचोइए निच्चं। खिप्पं हवइ सुचोइए। जहोवइट्ठं सुकयं। किच्चाइं कुव्वइ सया॥४४॥ वित्तः प्रशस्यः शिष्यः अचोइ ११
तो पि नित्यं क्षिप्रं सुचोदितो भवति प्रशस्य शिष्य अणचोईउ कहतउ प्रेरितउ कहतउ नित्य निरंतर काज नइ॥

पिप्रसीघ्र उच्छ आदि चोईउ कहतउ। आणाकहिइं वयावच्चादि कार्य करइ। इत्यर्थो। यथोपदिष्टं सुकृतं यथा भवति
सदा कृत्यान्यकरोति यथोपदिष्ट आदेशनइ अनुसारइं वेयावच्चादिक कार्य करइ। सुकृत रूडउ कीधउं जि
म कुइ तिम सदा काम करइ॥४४॥ नच्चा नमइ मेहावी। लोए कित्ती से जायइ। हवई किच्चाण सरणं। भूयाण ज
गई जहा॥४५॥ मेधावी विनयं तत्त्वा। ज्ञात्वा नमति। डाहु शिष्य विनयत त्व जाणी नमइ गुरुकार्य करिवा तत्पुर कुइ
स वस्य लोके कीर्तिर्जायते तेह तणी लोक माहि कीर्त्ति कुइ। सुकृत्यानां शरणं भवति। ते शिष्य वेयावच्चादि
क पुण्य कार्य तणउं शरण थानक कुइ। यथा भूतानां जगती शरणं। वर्त्तते। जिम भूत प्राणीयां रहइ पृथ्वी
शरण वर्त्तइ। ते शिष्य सर्व कार्य योग्य कुइ इत्यर्थः॥४५॥ पुज्जा जस्स पसीयंति। संबुद्धा पुव्वसंथुया। पसन्ना लाभइस्स
ति। विउलं अट्ठियं सुयं॥४६॥ संबुद्धा पूर्वसंस्तुता। पूज्या यस्य प्रसीदंति। ज्ञाततत्त्व पूर्वपरिचित पूज्य गुरु जेहरहइ
प्रसाद करइ। ते प्रसन्ना विपुलं आर्थिकं श्रुतं लंभयिष्यंति। ते गुरु प्रसन्न कहता विपुल विस्तीर्ण आर्थिक मोक्षा
र्थ सहित श्रुत पमाडिस्यइ॥४६॥ स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए। मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया। तवो समायारि स
माहिसंवुडे। महज्जुई पंचवयाइं पालिया॥४७॥ स देवगंधव्वमणुस्सपूइए। चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं। सिद्धे वा ह
वई सासए। देवे वा अप्परए महिड्ढिए त्ति बेमि॥४८॥ स साधुः कर्मसंपदा सहितस्तिष्ठति। ते महात्मा कर्मसत्तणीइ
दस विध सामाचारी तणी संपद तल्लक्षा सहित कुइ तउ तिष्ठति। संयम मम यो निश्चल रहइ। किंभूतः पूज्यपूजनीय शा
स्त्र बहु। जेह तणउं पुन: किंभूतः विनीतसंशयः अतिहिं फेडिया संदेह बहु शिष्यइ। पुनः किं मनोरूचि गुरु रहइ मन
गमतु बइ। पुनः किंभूत: तपः समाचारी समाधिसंवृतः। तपि समाचारी समाधि इ करी संवर सहित बइ। पुनः किंभूत:

उत्तराध्य
बाला०
१२

महार्द्धि ति। मोटी तपतणी कांति छइ। यह नी सपंच महाव्रतानि। या जियव्वा। मलपंक पूर्वकं देहं त्यक्त्वा सिद्धः शा
श्वतो भवति। अथवा अल्परजा महर्द्धिको भवतीति। महात्मा पंच महाव्रत पालीनइ। मलका देव गंधर्व मनुष्य पूजित
। दमनिष्पन्न देहछांडी सिद्ध शाश्वतउ हुइ। अथवा अल्पविषयाभिलाष महर्द्धिक अनुत्तर विमानवासी देव
हुआ। किंभूत देव गंधर्व मनुष्यइं पूजिउ छइ॥४८ इति प्रथम विनयाध्ययनार्थः॥१ सुयं मे आउसं तेणं।
भगवया एवमक्खायं। इह खलु बावीसं परी[सहा] समणेणं। भगवया महावीरेणं। कासवेणं पवेइ
या। जे भिक्खू सोच्चा णच्चा। जेच्चा अभिभूय। भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा॥ मया श्रुतं अ
यं आयुष्मता भगवता एवमाख्यातं। इम सोभलिउं आयुष्मंत चिरंजीवी भगवंतिइं इम कहिउं। खलु निश्चितं इ
ह जिन शासनि द्वाविंशति परीषहा श्रमणेन भगवता। महावीरेण। काश्यपेन निवेदिता। बावीस परी
सहा काश्यप गोत्र उत्पन्न। श्रमण भगवंत श्री महावीरिं उपदिश्या॥ भिक्षुर्यान् श्रुत्वा ज्ञात्वा अभिभूय॥
भिक्षाचर्यायां परिव्रजन्। स्पृष्टः न विहन्यात। महात्मा जे बावीस परीसह जे सांभली जाणी जीता परि
चित करी अभिभूय जीपीनइं गोचरी इं चालतउ स्पृष्ट उपरी सह फरसिउ। हुंतउ न विहन्यते।
संयमउ विराधन पामइ। कयरे काते रे केहा। बावीस परीसहा। फरसिउं हुंतउ। ना शेष प्राग्वत् इति प्रश्नः इ
मे ते बावीस परीसहा॥ शेषं प्राग्वत्। आघु आलावउ पाछिली परिइं। वखाणिवउ। दिगंछा:। दसी लाषा दिगि
छा भूष कहीइ। शेषं नाम स्पष्टं का॥ काश्यपेन परीसहाणां प्रविभक्तिः प्रवेदिता काश्यप गोत्र उत्पन्न। श्री म
हावीरिइ। परीसहतणी विचारणा उपदर्शीता प्रविभक्ति। तां भवतां आनुपूर्व्या उदाहरिष्यति। तपरीस
हतणी विचारणा तं मे अनुक्रमिइं उदाहरिसु कहिसु। मेममकथयतः श्रृणुत ऽ मझ रहइं कहतां १२

सांभलुं॥ २ दिगिंछा परिगतादेह। तपस्वी भिक्षु थामवं। नछिंदे णछिंदावए। न पए न पयावए॥ २ भिक्षुः तपस्वी
स्थामवान् दिगिंछा परिगतादेहे सति न छिंद्यात्। नाछेदयेत्। महात्मा तपसहित स्थाम संयम तणा बल
सहित हुंतइ परीसह सहित भीलकुइ शीतता दिठउ उष्णताय। खुद भूष घिवासं त्र सहुं सिहि उं चानीचीठ
यादयस्तु भि। आनराइ परीसह पीडा किलसन अनइ फल आदेवता दिकनाकी धा। उपसर्गइ त्यवमादिक
सहवइ करी तप समाचरइ। डइ हृढ मनेन हुइ। तअत्रिइ करी धर्म विराधइ। डो निश्चल चित नु धणी छइ। उ
महात्मा दिगिंछा भूषइ परगिता देहव्यापिउ। देह हुंतइ फलादिकन छेदइ। न छेदावइ। नपचितानापाच
यिवा पचइ नही। पचावइ नही र भूष व्यापिउ हुंतउ असरुत उफलादिकन लिइ॥ दृष्टांत कहीइ छइ॥ उजे
णीइ नगरी इं हस्तिमित्र श्रेष्टि वासिं वसइ। तेहनइ कतलेक कालिं भार्या नामरणथिकुं वैराग्य ऊपनु। तिवारइ
हस्ति[illegible] भूतपुत्र सहित साधु कन्हइ दीक्षा लीधी। निरतीचार संयम प्रतिपालइ। एकवार साधु विहार करतां
अटवी इ पुहुता। तिहां हस्तिमित्र मुनिनइ कांटउ लागु। अतिहिं पीडा ऊपनी। ऊ वाआ वि वानइ विषइ ते अ
क्षम थयउ तीणइ बीजा महात्मानइ कहिउं। अहो ऋषी स्वेरा तम्हे आघा पुहुचउ। हुं तउ अतिदुखियौ छउ॥
आ ऋषि यणी थोडउं छइ। ईहां नातपाणी पचारवसि। तिरांथिकु तेहनइ षमीषमावी। चेलु लेई बीना महात्मा
आघा चाल्या। तेह वइ मार्गि जातां थिकां मोहे भावथकी चेलु बाप कन्हइ पाछउ आविउ। तेह वइ तापिता
साधु अणसण लेई। पीडिना विरासथिकु शुभ ध्यानि कालकरी देवता होउ। चेलु नजाणइ बाप मूउ।
भूगध परणा थिकउ पासइ जि भमइ। भूखि उथिउ हुंतउ। चेलु वनफलादिकन लिइ। तेहवइ तिणइ देवता

सिहांजाति
नानरंगाहा
रंजनइ
लिहांष्टि
इ।ते चेलु
तिहानइ
अनेक सक
हिउ गयउ।
उत्तीर

१ नेत्रविहग्गा॥
वियउस्सल
चराग्गउ·२

ह्या तणरी रअधिष्टी नइं मोहघिकु चेलानइ कहिं।सो दुहस्रक सह्यानइ अर्थी जसु स्काइ धननी वन
बईं तिहां देवता वनमाहि हाघकाढी दिवीत्राक्तिइं त्रातयाणी दिहाइ मदिन केतलाएक हस्रा।एहवइतै
हजिम हात्माते णीइ जिअरटवीइ पाबा तिहां आव्या।चेलुमिलिउ।चेलइ कहइ हष्विउ।सो दुहस्रकताहकपि
ताजी विबइ। चेलइ कहिउं हा।तुअम्हनइ देषाडि।जेह वइत चेलु जई।तपितादेषाडइ।तिह वइ देवताका
याम्रूकी अदृष्ट थयु।चेलइ कहिउं हवडां एजीवउ हतु।निजीवडी सी ज्ञाबदेषी चीत विउं मोह घकु देवताएस
ही चेलानइ दयाकीधी॥जिम पिताइं स्रूषपरीषह सहिउ।तेणइ चेलाइ परीसह सहिउ।जेह सणी चेलाइं नुअ
ध्यवसाय एहवुनकुउ।जकुंईहां आहार नही लहुं।उकुं सचित्त फलादिक कुलिउं।कल्पा तिइं एहवीम
नसा नावी।तेसणी तिराइ वेलाइ परीसहस्रूष सही।प बइ।ति चेलानइ महात्मा साथि लेई गया।जिम तेहे वन
मांहिस्रूष रपरीसह सहिउ।तिम बीजि महात्मा एसहिवउं॥२ प्रथम परीषह॥ कालीपव्वंगसंकासे किसे धम
णिसंतए।मायस्से असणपाणस्स।अदीणमण सोचरे॥३साधुरदीनमनाश्चारत।क्षुधापरीषह आवि
इंकु तइ साधु अदीनमनकु तइ संयमनइ विषयवालइ।किं०साधुः कालीपर्वसंकाशांगः कालीकागनंजघत
णीपर्वनी परिइ विसमांअंग बइ।जेह तणा पुनः किं०साधुः कृशः दुर्बल बइ।तथा धर्मनी संगत तनुः नसाजा
ले व्याबइ।पुनः किं०साधुः अशनपानस्य मात्रज्ञः असनपानतणी मात्रा जाणइ बइ।३तते पुट्ठो पिवासाए
दोगंबी लज्जा संजए।सीउदगं नो बाकरइ।पुनः किं०साधुः सर्वसंयमलाधउं।संयमबइ जीताइ॥४बिणाबाएसुयं
पेसु।आगार सुपिवासि ता।परिसुक मुह दीणो।तंतितिरवपरीसहं॥५साधुः छिन्नापातशुपथियान्।सुपि
पासितो अनुरक्तपरीषहति दोव।महात्मा छिन्नापात निवरइ मार्गि चालतउ कुतउ।अतितृष्णा आतुराथी

डेउ कुंतउ तृषापरीषह सहइ॥५किं०साधुपरिशुष्कमुखः तृषाइं करी सूकुं मुख बइ जेहनुं।पुनः अदीनादीनपणार
हित बइ॥५अत्र तृषापरीषह दृष्टांत माहा।उजेणीनगरीइं धनमित्र वाणीउ वसइ।वैराग्य सहित।धनमित्र बेटा सहि
तदीक्षालीधी।एकवार मार्गि विहार करतां चेलानइ अति हितृषा ऊपनी।तेहवइ चालतां वाटइ नदी आवी॥द
षीपिताइं मोहघिकु चेलानइं कहिउं।वबपाणी पीय बइ।आलोअणा लेई दोष शुद्ध करयो।एहवइ कहि कुतइ चेलु
लेवानवाबइ तिहां घकुती णइं पिताइ चीतविउं।ए चेलु माहरी लाज करइ बइ।तेह सणी तिपिता साधु आगलि थई नदी
ऊतरिउ।तेहवइ चेलइ नदी माहि आवी तिरि सिइकुं तइ।पाणीनी पसली ऊपाडी चीतविउं पाणी पीउं।तेहवइ उ
त्तमपणा थिकु हीइ विचारकुं पनु।मइंउ पंचमहाव्रत कुंचरियां बइ।जेह सणी सिद्धांतइ सिउं बोलइ।कारूण्य
रूण्यसिगारा।सावुस्रयजीवीअंतकर रोहि।स्राहूअविभरंती।नयनय नियमं विराहेति॥काख्ण्य०करूणा द
यासावनइ देषाडइ।अनइ स्वजनादिक निहरो वइ विलाप।अनइ स्त्री।नअनेक श्रृंगार सोवलय०अनइ रा जादि
कान सा।अनइ जीवतव्या नए तेलेस विकुं।अनुकूले प्रतिकूले उपसर्गो साहूण०साधु महात्मा मरइ।प्राणा बी
डे।नियनियम०पुरा आपणु नियमव्रत विराधइ नही।उत्तम षा कांत चारित्री उ सिद्धांत वचन जाणी मनि चीतवि
उं।एस छित्त पाणी किमपीउं।जेह सणी सचित्त पाणीनु दोष।सिद्धांति कहिउं बइ॥यतः॥एगंमि उदगबिंदुंमि।
जेजीबाजिणावारहिं पन्नता।तेजइसरिसव मित्ता।जंबुद्दीवन मायंति।जच्चजलं तच्च वणं।जच्च वणं तच्च निच्चउ
अगी।तेउवाऊ सहगया।तसायपच्चरकया चेव॥१ हंसूणाय परप्पाणो।अप्पाणं।०एहवु सिद्धांत विचारी वैराग्य
थिकुती णइ।वलाइं पसली पाणी पाबवं मूकिउं।पणि पापी थउ नही।नष्टिल चित्त शुभ ध्यानधरी रहिउ।तिहां थि
कु तृषापरीषह सहिउ मरी।ति चेलु देवतापणु पामिउ।साधुनी दयाथि कीतीणइ देवताइं दूकडा रंगोकल विकु।

वियां। जिह्नसगीएमहात्माएसुखीथाइं। तिवारयबीश्रागलिजातांसाधुनइ आपणुंस्वरूपजणावासणीतीरा
इदेवताइएकमहांनीवीटि। बेहलइगोकुलराषी। श्रागेराडइं जिह्नवइमहात्मावीटिलेवापाबावलीतीराइ
गमिश्रावइ। तिहवइतिहांवीटीदीठीपणि। गोकलादिककांइनदीठुं। तिहांथिकुतेहेमहात्माएचीतविउं।ए
कांइदेवतानीमाया। एहवउजाणीमहात्माकुणएकवासिपुछता। तिहांदेवताइप्रगटथईआपणुपि
ताधनमित्रनउसाधु। तेतालीबीजासाधुसघलाइवांदिया। पणितनवींदिउ। ततणइमहात्माइपूछिउ। तइ
सघलायतीवांद्या। अनइकुंकाइनवांदिउं। तिमहात्मानइसघलइजणावीदेवता॥ आपणीवासिपछउ
। जिमातणाइवलइंतृषापरीषहसहिउ। तिमबेडोसहिवउ॥ इतिद्वितीयाध्या नत्रिषापरीषह॥ एवर
तविरतत्त्वहसीतक्रुसंतिएगयानातिवलमुणीगाछेता।सुष्ठांणंजिणसासणं॥ इएकदावरंतसाधुशीत
स्पृशात। एकदाकुणावस्त्राविचरंतविहारक्रमकरतांसाधुमहात्माप्रतिइसीतपरीसहफुरसइ। किंसाधु
विरतेतथारुक्षसंसारनुविरिमिउबइ। तथातिमरूक्षगात्रबइ। जिनशासनजिनागमसांसलीनइवेलं
इस्वाध्यायादिकउल्लंघीनइं। अथवावेलामर्यादाउल्लंघीनइस्थानोतिरिशीतसीतकुंतउनजाइ॥ इनामे
निवारणंअछि। बविताणंताचिन्नइं। अहंउअग्निसेवामि। इतिभिक्षुनचिंत इ॥ भिक्षुरितिनचिंतये
त। साधुइसिउंनचीतवइ। इती तिकिसिउंमिममसीनिवारणुं। आवासादिनास्तिमाहरइ। आवास्थिवातनथी
। बविशाणंनविघातबविंवा। वानइशरणरक्षकंबलादिकशीतरक्षणनाकिसाइ। उपगरणनवर्तइं। उपुन
रहमग्निसेवेतपिणीकुंअग्निसेवउं। शीतसीतकुंतउइमनचीतवइ॥ नराजगृहनगरिवणिगधयरस्यरिहंम

x तिहांदेवताइकहिउं। सच्चतपाणीपीधानुआदेशदाधउ। तेह ऋतेहनणीअवंदनीक। एहवउसमाचार ३-५

हामित्रबइ। तदेवैराग्यइश्रीसदबाहुस्वामिकहइ। चिहुंमित्रेदीक्षालीधी। श्रुतलगीइपारगामीहुआ। एका
कीयणानीप्रतिमाइरहियाविहरंरक्रमकरतांवलीराजगृहआव्या। तिवारइंसीतकालिआविइथिकइत्रीजीइ
पोरिसितानपाणीविहरीजेहवइनगरिथिकुबाहिरिजूजूआच्यारिइनीकल्या॥ तहवइतचिहुंमांहिलाएक
ऋषीस्वरनइवैभारगिरिपर्वतनीगुफानइबारणइसूर्यअस्तहुंतइ। तेतिहांरहिउ। बीजउषीऋश्वरनग
रनाउद्यांनवनमहिरहिउ॥ २अनइत्रीजउउद्यानढूकडउरहिउ॥ ३अनइचउथुनगरनइपासइरहिउ४॥
हवइवैभारगुफानइबारणइरहिउकुंतइ। तहनइ। अतिहिताढियरीषहसहतां। रात्रइनइपहिलइपुह
रिकालकुउ। उद्यानमाहिलाऋषिइएहारबीजानइबीजइपुहरिकालकीधु। त्रीजानइउद्याननापासना
रहणाहारनइंत्रीजइपुहरिकालकुउ॥ ३अनइचुथाऋषीश्वरनगरनापासानारहिनारनगरनइ। बापडइ
करीथोडउत्रीतथिकुचउथइपुहरिकालकुउ। एच्यारिऋषीश्वरसुखसावउदेवलोकिगया॥ जिमएत्रीनप
रीसहसहिवउ। तिमबिजेसाहिवउ॥ ०इतित्रीतपरीसहएदृष्टांत॥ ३उस्सिणपरियावेणं। परिदाहेणतवि
क्किए। घिंसुवायरितावेणं। ओयंपरिदेवए॥ ०साधुउष्णपरितापेनपरिदाहेनतर्जितः। वाअथवाग्रीष्मपरिताये
नतर्जित॥ सातसुखहेतुप्रतिनपरिदेवेत। साधुउष्णवालुकादिकतणाइपरितापिइ। अथवापरिदाहमलादिक
दीपिइंकरी। अथवाग्रीष्मकालिपरितापइंकरी। अथवाकामितातर्जित। ऊर्ध्वमहाशालआकुलिव्यकुलउ। दयाम
णुनथाइ। ताढउकहिंआवलिहिसु। अथवास्कंडइवायनइप्रदेसिबइसिसुं। इमहुरवकनधरइ॥ ८उष्णाभितोमेहावी।
सिणणंणोविपत्थए। गायणोपरिसिंचेजा। णवीइज्जाइअप्पयं॥ एमेधावीउष्णाभितःपूःसातांनेवपाधायत। डाकु
साधुउष्णकालतापइतापतणइतपवइशरीरितापविउ। कुंउस्नानननवांछइ। गात्रनपरिषिचेत। गात्रनखाचइ। पाणीक

x णो+

रीनइ। तथा त्मानंनेवीजयेवा। आपणापाअतिवायनथा लइ। परअनेरापाहिं वायवीजणेनवीजावइ॥ एतंगीयान
गरीइंदत्तइभिइनो मित्रथीग। अर्हन्नकबेटासहित अर्हन्मित्राचार्यकह्नइदीक्षालीधी॥ पिताइं तेपुत्रनीअतिहिसि
श्रूषाकरइ। अनतपितेकेहांविहिरवाजावा नदिइ। स्वयंदेहमोहथकीतेपुत्रअतिसुखीउकीधउ। कालिइंतीण
इंचारित्रीउपितापरोक्षहूंतइ। बेडेमहात्माए। तेचेलुबापबतांकरइंही। ऋनऋवायनऋतेसाधु। पितानामोहथिकी
तिवारइं ऋषीश्वरेजाण्युं ए बालकसंयमसारकिमनिरवहिइ। सिनितेहनणीकह्यु। लइनगरमाहिंकेचा। सरीइ
सिक्षार्थिमोकलिउ। शरीरइं भालपणाथिकुंऊपरिसूर्यंतणुताप। पगेवेलूमाहिंअग्निदाझतु। शरीरपरसे
वइ। तृषाइंपीडिउहूंतउ। आवासनागुषिहेवलिबारडीइंवीसाम्युलतु। तेहवइ विहरणीइंविवहारीआनीगुषिरह्या
देषीतनुछत्रकबोलाविउ। अहोक्षुल्लकलिक्षालिउ। इमकहीमोदकदीधा। पछइवलीतणीस्त्रीइकहिउं। अहोसा
धुउपाबलइवइदीक्षापालीजे। हिवडांउईरणइआवासिमऊसाथिइसुषभोगविइ। इसिउंवचनकहिहूंतइ। उष्ण
पणानुपीडिउहूंतउ तेचेलुतिहांरहीभोगभोगवइ। पछइमहात्माएचीतविउं [illegible] घणी वलाथइंचेलुनथी। आवु
उतासुकारणघणेरस्थानकिथीथिकिउपाणीनलाधउ। तेहवइ तचेलानीमातासाध्वी मोहथिकुंनगरमाहिंपरिभ
मणकरइ। सुखिअर्हन्नकरहंकिहांबइइ मविलपतीती॥ तणाइचलइगुषिबइठां आपणीमाद्धुषिणीकीधी। अ
नइमइंनरकनुआऊषुंऊपार्जिउं। इमचीतवीगुषथिकुंऊतरा। तेअर्हन्नकमानिपगेलाग्यु। आपणापुत्रन
इउलषीस्वस्थथई। मनसंतोषऊपजावीमाइ। आपणापुत्रनइपूछिउं। हेपुत्रतुंआजलगइकिहांहुतु। तिवार
तीणइअर्हन्नकपुत्रिइंआपणाउगुषिरहीभोगभोगविवानुसर्वस्वरूपकहिउं। तिवारपछीमाताइपुत्र
नइकहिउं। हिवउभोगपरान्मुखीएकांतसाधुचारित्रपालि। तिवारइतीणइपुत्रिइकहिउं। मइंपापीइचारित्रनप

लइ। पणीअणसिनलिउं। तेहवइमाइंकहिउं। वरिइमकरि। पणपापमकरिमो। नइवचनइसांसलिइहूंतइ।
विराग्यथिकुंतातीशलाऊपरिपादोपगमअणशणलिईषिणएकउष्णपरीषह। तसहिउजिमतापनइयोगि
इमाषणवीघराइ। तिमतिहांकालकरीदेवताहूउ। जिमतीणइंअर्हन्नकिचलइंपहिलुंपडि [illegible] उअनइमान
इवचनथिकीउष्णपरीषहसहिउ। तिमबीजेसहिवउ॥ एइतिउष्णपरीषहदृष्टांतः॥ ५ ॥अथदंशमशकप
हिं। समरेवमहामुणी। नागोसंगामसीसवा। सूरोअतिहणोपरं॥१०॥ मुद्दामुनिःदंशमशकिःस्पृष्टः समएवस्याव।
महाऋषिडांसमसे फरसिउहूंतउ। समभावकुइद्वेषनकरइ। संग्रामशीर्षेनागइवसूरःसनृपरंअभिहन्या
त्संग्रामंगणिहस्तीनीपरिइंसूरउहूंतउपरशत्रुअघवादंशादिकयरीषहहणइ॥१०॥ नसंतसेनिवारिज्जा।
मणंपिनपदूसए। उवेहेणहणेपाणे। भुंजंतेमंससोणियं॥११॥ नसंत्रसतनिवारयेत। मनोपिनद्वेषयेत्।सा
धुडांसमसेपीडिउहूंतउ। त्रासइनहीं। वारइनहीं। जीवऊपरिमनद्वेषनकरइ। सहितमोन्नाशोणितंभुंज
मानात्प्राणिनःउपेक्षेत। नहन्यात्। मांसअनइरक्तआहारताप्राणीदंशादिकजीवपाछ्छवा। ऊव
षइउदासीनपणइकरीनइऊडाडइनहीं। हणइनहीं॥११॥ जिमश्रावस्तिइंचंपानगरीइंयशशत्रुराजा
नुपुत्रश्रमणभद्रयुवराजाइ। श्रीधर्मघोषसूरिकह्नइदीक्षालीधी। कतलइकालिविहारकरतुश्रम
णऋषीश्वरअटवीइपुहुतुतिहांप्रतिमाइरहिउ। दंशमशकइंसमरमधुबइऋषीश्वरनइशरीरिमधुतणा
बिंदुलागाएहवइरात्रिइंडांसमसेअतिहिंपीडिउहूंतउ। नरकवेदनानांदुषचीतवइ। अरडीवसिद्धांत
माहिंएवांदुःखकहियांबइ। तसंसारबकोईनथी। नरएसुजाइअइकरकडाइं। दुस्वाइंपरतिरकंइ। कोव
न्नहीताइं। जीवतोवासकोडिवि॥१॥ नगरमाहिंउकर्धशापरमतीहांगाढातीव्रक्षेत्रजावदना। परमाधामि

कनीकीधी।वदनायरस्यरछेदनानां दुःखबहुकोवन्नु०तेदुःखकुणाइवसीवीइ।बोलीसकीइ।जीवएवर
सनेकोडिइंजीवउनिरंतरबोलउकोइबोलीनसकइ।इसिउसावकोइदुःखउअनंता।अनइवचनउ।कामि
जिबोलइ।एहूतणीवलीनरगइजिनांदुःखकहिइबइ।।करकडइदहेसामिलि।असिवणावेउरणीयहरणा
सरहिं।जाजायणाउपावेति।नारयातेअ्हफलं॥रकरवणककर्इदादहपरधार्मिकदेवनुविकुर्विउ।आगि
मांहिंपचिवउ।अनयलोहमयकंटकबकुलपारिणलीवृक्षमांहि।अकर्षवउं।अनइषांडांनीधारसरि
षांजिहांपानडां।एहवाइसिपत्र।वनमांहिप्रचंडवायापानाडपडातकंताहिबिबइसारिवउ।तातातरुआ
सरिषांजिहांपानडां।एहवाइसिपत्र।वनमांहिप्रचंडवायापानडेपडातकंतांहिबिबइसारिवउ।तातातरूआ
सराषां।वतररणीनदीनांकलकलतांपाणीपीवां।अनइअनेककरवतकुहाडादिककरी।बदिवांसेदिवा॥
एहेकरीनारकीजंआतापनाष्वडीकदर्थनापामइबइ।तेअहंम्मणापाबिलइसविजंपापकीधुं।तहजिनुफ
ल।तनारकीरहइक्षणसुखनथी॥उक्तंच॥अच्छिनिमीलणमित्तंपि।नत्थिसुहंदुःखमेअणुबद्धं।नरएनेर
इयाणं।अहोनिसंपच्चमाणाणं॥तऋषीश्वरडांसमसानांपरीषहसहिउनरकावेदनाबदनालहनए
णाइजीविइएनरगतणीवेदनासहिउ।आवेदनाकुणमात्राइमचितनिश्चलकरीडांसमसेअतिहिंपी
उउकुतउपरीसहसहिउ।कालकरीदेवलोकिगयु।जिमयणाइअमणाहृषीश्वरइडांसमसापरी
षहसहिउ।तिमबीजसहिवउ॥११इतिपरीषह॥ ६॥परिजुणोहिवत्थेहिं।होरकामितिअचेलए।अदुवा
सचेलएहोरकंइतिभिरकं नचिंतए॥१२भिक्षुरितिनचिंतयेत्।साधुइमचीतवइ।इतीतिकिं।इमकिमपरी
जीर्णी।वस्त्रैरहमाचलोसविष्यामि। [illegible] इ।तवस्त्रकरीकुंचेलवस्त्ररहितहोइसु 26
अ

इसिंउदीनपणुंनचींतवइ।अथवासचेलोसविष्यामि।अथवामाहरांजूनांवस्त्रदेषीमफनइश्रावककवस्त्रदेसि
इतिवारपूर्विइंकुंसचेलवस्त्रसहितहोइसुइसिउनआणइ॥एएणयाअचेलएहोति।सचेलयवियएगया
एयंधम्महियंनच्चा।नाणीनोपरिदेवए॥१३एकदाअचेलोभवति।एकदासचेलोभवति।एकदाजिनकल्पी
नइकालिअचेलकुइएकदास्थिवरकल्पीनइकालिसचेल वस्त्रकुइ।ज्ञानीएतधर्महितज्ञात्वानपरि।
देवयेत्।ज्ञानवंतसुजाणसाधुएतलअचेलयपणुंजाणी।अथ वासचेलयपणुंबिहुंप्रकारिधर्महितजाणीम
ननइशीतकुंज्ञाकिमकुइ।इमपरिदेवनइनहीदुःखनधरइ॥१३अथदृष्टांतमाह॥दसारणपुरनगरिआ
आर्यरक्षितस्यपिताःसोमदेवामाररुद्रसोमासाइफलगरक्षितादिककुटंबचूकवीदीक्षादीधी।तेहवइसो
मदेवपिताआपणीबेटीवहूनीलाजइब्राह्मणनास्वसावधिकीउनोइकुमंडलबत्रडी।पुकलाधोतीयाउ
पानहप्रमुखआपणुलिंगावषमूकइ।एहवइएकवारचैत्यवांदवाजातगुरेचेलकाबालकसीषव्याकु
तां।तसोमदेवनिजईकहिउ।आपूएबत्रीयामाहात्माटालीबीजासघलानमसात्मावांदियांइमकहोतेहे
बालकेसघलासाधुवांदिया।पणितनवांदिउपबइबालकनइकहिउ।तणइमइसिंउदीक्षानथीलीधी।
तेहेकहिउ।दीक्षानालेनहारकहूइ।किसिउबत्रकमंडलेज्ञोपवीत्रीउपानहकुइ।तेउमहात्माकनूइनकु
इ।एहवुंबालकनुंहास्यमयवचनसांभलीगुरुउपाश्रयआवद्धिकिनीणाइसोमदेवइगुरुनइकहिउ
।बेत्राहिकेदेषीबालकादिकहसइ॥तहतणीबत्रउपानहकमंडलयज्ञोपवीत्रीएसर्वमइंबांडियां।पणि
एककटिपटउधोतिअनमुकइ।तेहवइएकसाधुअणसणलीधइकालगतकुआ।तिहांआचार्यकटिय

टउ बंडा वा सरणी माहि त्यानि कहिउं। अहो साधु एम्ह तक नइ आयणाइ षसइ करी वहइ। तेहनइं माहो
तउ तापक्रूइ। तेहवइ ते स्थविर गुरु नइ अन्तबिइ। भगवन इ णाइ कपा डिइ के तला कर्मनी निर्जरा क्रूइ। तिवा
रते सोमदेव इक हिउं कूवकूं। तिहां वली गुरे कहिउं ईहां उपसर्ग घणा कपजइ। चेडा लागइ। एहवइ घिकइ जु
वही सकइ उ विहिइ। जु इहां को सपामे सिउ अम्ह नइ सलउं नकू। इम तस्थिवरा स्थिर करी गुरु तणाइं म्ह
त्थु कलगाडिउ। माहि त्यामासती नइं समदाइ मिलिइ आघेरो म्हत्थु काल इ लेई जा तां। बाल केधे तीउं का
डिउं। तेहवइ तकाल बीजे माहात माएबी जु चलउ टउ दोरे करी कडि बांधिउ। केतली सूइं जइ तो वो स्थिरा वी। गु
रु कहइ आवउ गुरे बोल्या विउ। जे अम्ह उपसर्ग कहिया। ते उपसर्ग तुम्ह नइ कूआ। भगवन तिहां तेहनु मनरा
षवा सणी माहात्मा नइ गुरे कहिउं। लावुरे लाबु चलु टउ। सोमदेव नइ पहिरावु इम कहि घिकइ। सोमदेव रू
षीश्वरइ कहिउं। उत्रारीर देष वंउं कूं तात दी ठउं। एहवइ जि चलउ टउ हकउ। पछइ मानोपेत प्रमाणोपेत वेष
धरी। स्वधुं चारित्र पालिउं। तेणइ पहिलु अचेल परिसह नसहिउ। पछइ सहिउ। तिम बीजे साहिवु:॥१३ इति अ
चेल परिसह॥ ६ गामाणुगाम रीयंतं। अणगारं मिकिंचणं। अरई अणुपविसिज्जा। तं तितिक्खे परिसहं॥१४ ग्रा
मानुग्रामं रीयंतं। विचरंतं। अनगारं। अकिंचनं। अरति। अनुप्रवेशेत्। ग्रामानुग्रामि विहार क्रम करतां। अ
नगार रूषीश्वर पतिइ। अकिंचन। परिग्रह रहित कूतइ। अरति कपजइ। साधु स्तं परिसहं तितिक्षेत। १७
साधु ते अरति परिसह सहिइ। अरति नकरइ अत्यर्थ। १४ अरतिं पिठउ किच्चा। विरते आतरक्खिए। ध
म्मारामे निरारंभे। उवसंते मुणीचार॥१५ मुनिरति पृष्ठ कृत्वा। धर्मारामउपरतां तस्चार त्ता माहात्मा अर

तिनिराकरी। धम्मारामा। धर्म नइ विषइ रमउ कूतु रमइ। संयमनइ रति करइ। किंभूत मुनिः विरतः वरति
सहित बइ। तथा आयरक्खिका। ज्ञान दर्शन चारित्र तणउ लाभ राषइ बइ। पुनः मुनिः निरारंभ सरहित ब
इ।१५ अरति परिषह दृष्टांत माहि॥ १७ अचलपुरि नगरि यत जत्र राजा। तेहनइ पुत्रि इ। राधाचार्य गुरु कहइ दी
क्षा लीधी। एकवार विहार के तु कूजे णी इंगइ कूतइ श्रावक कहइ सूबइक सिउ इहां ग्राम माहि माहात्मा बइ। अवन
घी। तेहवइ श्रावके कहिउ। इहां राजा ना बेटा अनइ पुरोहितना बेटा। आगलि इहां माहात्मा रही नसकइ। आ
व्या गया माहात्मा नइ उपसर्ग करइ। एहवु वचन तेणइ रूषीश्वरइ श्रावक मुखिइ सांभल्यो। आपणु सत्री जु ते
जाणी प्रतिबोध देवा नइ काजिइ। लोकेवारी तु कूउ मध्यान समइ तेहनइ घरि धरम लाभ कहिउ। सहांइं गयु।
तेहवइ ते हराजा कूमर माहात्मा प्रति इहस्यी नइ पूछिउं। अहो माहात्मा उष्म नइ नाचतां आवडइ। तिहां माहात्मा
इ कहिउं हा मरुनइ नाचतां आवडइ। पणि तुम्ह नइ वजाउतां ना वडइ। इम कहइ कूतइ। ते राजकूमर माहि॥
त्मानइ उपसर्ग करवा ढूकडा आव्या। तेहवइ तेणइ रूषीश्वरइं बिहि इ कूमर ना घल्लोग करी पाडु उपाश्रय गु
हउ। राजाइ ते कूमर नु समाचार सांभली। राजा रीस चढिउ कूंउ माहात्मा कहइ आविउ। तेहवइ देखइ उ सागर
चंद्र माहात्मा आयणु साई जाणी उलषिउ। पगे लागी कहिउं अहो रूषीश्वर यत्ना। तुम्हारा सत्री आभुं कउ अनि
रामय कर्म। तिवारइ रूषीश्वर कहिउं एताहरी सी राजनीति। उ माहात्मा नइ एकूमर हस्यइ वितर्कइ उपसर्ग क
रइ। तेह सणी कूंएहनइ नहीं मुंकउं। जु दीक्षा लिइ तु एराजकूमर अनइ पुरोहितना पुत्र नइं मुंकउं। एहवु रूषी
श्वर सागरचंद्र नु दृढ वचन जाणी। मुनि चंद्र राजाइ कहिउं तुम्हे दीक्षा दिउ। पणि स्था जाकरू। तिहां सागरचं
द्र रूषीश्वरइ शुभ परणाम जाणी। जगदीश्वर नु नाम लेई। ते बेहइ कूमर स्या जा करी दीक्षा दीधी। ते बिकूमा

हिइराजकुमरिइ स्वाविकरी चारित्र पालइ। अनइ पुरोहितनु पुत्र जातिमद करी वेषधर हुती इम पालइ। कालि
इवेहि रूषि ध्यर काल करी देवलोकि पुहुता। बेबि हुइ देवता। एकदा प्रस्तावि महाविदेह क्षेत्रि तीर्थंकर श्रीसी
मंधरस्वामि वांदिवा पुहुता। तेबि हुइ देवता तिहां पुरोहितना पुत्रनइ जीवइ पूछिउं। भगवनहुं सुलभबोधि के
घा वा दुर्लभबोधि। तिहां तीर्थंकरदेवइ कहिउं। तुं दुर्लभबोधिः। एहवुं वचन सांभली वलतुं पूछइ। भगवन आ
वतइ भवि किहां अवतरेसि। एहवुं पूछिइ हुंतइ केवलीइं कहिउं। कोसांबीइं मुकश्रेष्टिनइ साईपणइ आर्व
सो। तिहां तीर्थंकर कहइ वली तेणइ देवताइं पूछिउं। भगवन तं मुकश्रेष्टि कुण। वलतुं तीर्थंकरदेव मुक
श्रेष्टिनु वृत्तांत कहइ। कोसांबी नगरीइ तापस श्रेष्टि कालिइं आर्त्तिइं करी जातिस्मरण [illegible] सापकुउ। त
सहितनु सुड सूकर हुउ। जातमात्र हुउ। तहनइ पुत्रइ विणासिउं। तेसुड सूकर आर्त्ति मरी करी जातिस्मरणवंत सापकु
तिसाप। तेह पुत्रइ विणासिउं। तिहां थिकु त्रीजइ भवि सविसाय मिरी बेटानु बेटउ तिहां आपणु बेटउ। आपणीव
हु जातिस्मरणइ देषी चीतविउं। हा धिग् पडउ एणइ संसारि। बेटानइ बाप किम कहुं। अनइ वहुनइ माकि
म कहुं। अहा वपरीत संसार। इम चीतवी मुनते रहइ बालिकि हुं आदरिउं। लेकालि वृद्धवय प्राप्त हुउ। आ
बोलि वा थिकु लोकमुं मुंगा नाम दीधुं। तेह वइच ज्ञानी गुरु ते देसइ सी देषीनइ वासणी घरि मांहलइमो
कलामहात्माइ जूई मा घामुं कटश्रेष्टिनइ संभलावीं। तावस किमरणा मुरा वयणा पडिवज्ज रहइ अवरधम्म
मरीऊण सूयरो रूगजानु पत्तस्स पत्तउत्ति॥ एहवी गाथा सांभली प्रतिबोध पामी गुरु कन्हइ आवी श्रा
वक थयु। अहो देवतानुं च्यवी तमुं कश्रेष्टिनौं साई हुए सिइ। एहवुं तीर्थंकरनुं वचन सांभली ते दे
वता मुक श्रेष्टि कन्हइ आवी घणा कोई द्रव्य नामांकित कुंडलादिक आभरण आपी कहिवा लागु हुं १८

देवतानु जन्मांतर मुंकी तारहरी मानइ पेटि अवतरसि। ताहरइ साईपणइ तिवार इताहरी मानइ सदा
फल आंबु दोहिलिउ रूपजसा। ते आंबा फल लेई दोहिलु पूरवेजो। इम कहीनइ वली कहिउं हुं जिन
धर्म लहुं सुलभ बोधि थाऊं तिम करजो। इम कही देवता आयणइ वामि गयु। अनुक्रमिइ ते देवता
काल करी मुंकश्रेष्टिनी मानी कूष इ अवतरिउ। तणइ मुकश्रेष्टिइ आयणी मानइ आंबानइ दोह
लइ पूरिइ हुंतइ पुत्र जायु। तहवइ मुकश्रेष्टि देवतानां वचन थकी। ते बालिकनइ देवगुरु वंदावइ। पण
दुर्लभबोधि थिकु देवगुरु देषी रोइ। वली पाछिला भवनां आपणां कुंडलादिक नामांकित आभरणा
दिक देषाडी घणुइ बूझवइ पणानबूझइ। अन्यदा प्रस्तावि तमुंकश्रेष्टि दीक्षा लेइ चारित्र पाली कालक
री देवता थयु। हानइ करी जुयुं। तहवइ पाछिला भवनु ईदुर्लभबोधि देषी। चीतविउं किम एबापडउ बूझ
वुं। एहवुं जाणी दुर्लभबोधि जाईनइ बूझवा भणी। तहनइ जलोदर रोग कीधउ। तदेवता वैद्यनुं रूप करी
तिहां आविउ। मुषिइ बोलइ। हुं सर्वरोगक्षय नाते शमावुं। एहवुं कहितु वजलोदरी पासि आविउ। तह
वइ आर्त्ति रोगातं गयपडि इथ कइ जलोदरीइ कहिउं। अहो वैद्यराज माहरू रोग शमावि। ते वैद्यइ कहिउं
ते असाध्य रोग मइ नशामइ। उदिइ काई एकरीजो जुउमाहरू कष धनु कोथलु ऊपाडी मऊ साथिइ जि
हां जाउं तिहां आवइ तु समाधि करूं। तणइ रोगात किहां दुर्लभ बोधिइ ते वैद्यनु वचन पडिवजिउ।
तकाल तणइ वैद्यइ देवतानां भावथि कीसाजु करी। कोथलु ऊपडवा आपी। जिहां जाइ आवइ ति
हां साथिइ कोथलु ऊपाडी जाइ। एहवइ तणइ देवतानी मायाथकी अतिहि भार करी माथइ। घणुकालक

माडी बेदषिन्नु कीधु। तदह वइए कइवा मिइ माहात्मादीग॥ तदह वइ विघइं कहिनं तुंदिक्षा लेयि॥ तदह वइ
तेणाइ न्नार न्नागइ कहिंउं हादीक्षा लेसु। तदह वइ देवतादीक्षा देवाडी। देवलोकि गयु। ते दुर्लभ बोधिइ दी
क्षा तु पलइ नही॥ अनइ बांडी गयु। वलीदवता आविउ तम जिदीक्षा देवारी। वली तिम जबांडी। वली त्रीजी
वार दीक्षा देवारी॥ दुर्लभबोधिनइ धर्म स्थिर करवा नत्ता॥ सापिइर हिइ। तदह वइ राहतइ घिकइ एकवा
रषड नुन्नार लेई देवता वलता गामभमा हिइ पइस वान्नागउ। तदह वइ तेणाइ माहात्माइ कहिउं। अरइ
म्हर्षी किहा बलतां माहि षडनान्नारा सहि किहां पइसइबइ बलेसि। तिवारइ तेणाइ देवताइं कहिउं।
तुं म्हर्षी जह न्नणी क्रोध मान माया लोभादिके प्रज्वालितइ गृहि स्व वासि तुं वारी। वली रपइसइ बइ।
वलीय कवार तादवता राजपथ मूकी कंटाली वाटइ चालवा लागउ। तिवारइ तेणाइ माहात्माइ कि
हिउं। अरइ म्हर्ष वाट मूकी कंटाली वाटइ कांइ जाइ। वलतुं देवताइ तिम जि कहिउं कु म्हर्षी नहापणा तुं
म्हर्षी जे सार संयम मार्ग बांडी। असार संसार नइ मार्गि जाइ बइ। तेह वइ वली देवताइ एक देवकुल एक
यक्ष लोके पूजीतु अर्चीतु कुंतु ऊधउ पडइ देवता नइ न्नावइ एहवुं देषाडिउं। ते देषी दुर्लभबोधिक हिइए
यक्ष अधमजे पूजीतु इकुंतु कंधउ पडइ बइ। तदह वइ देवताइं कहिउं ए उ अधम पुणातुं अधमाधम जे जग
त्रय वांदीतु कुंतु पूजीतु कुंतु वली चारित्र घु पडइ बइ। एहवे दृष्टांत करी बूक विउ कुंतु दुर्लभबोधिक हइ
वुंकुं णा तिहां देवताइं मुक आष्टिनु रूप देषाडिउं। पूर्व भव संबंध कहिउ। तिहां दुर्लभबोधि पूबइ काई
अहि नाण॥ तिहां षिका तदेवता दुर्लभबोधिनइ भावितादु पवे तिहा स्वताचेत्य वंदावी आपणु देवतानुं रू

पप्रगटकीधउं। तिहां एकइ प्रासादि पाबिलाबीजा भवनां दुर्लभबोधिनइ देवताइ मूकियां आचरादिक
देषाडियां। तेणाइ जाति स्मरण उपनुं। तिवार पबी दृढ चारित्र एकांत आदरी करी पालिउं। जिमा तणाइ पहिलु
चारित्र कपरि अरति आणी पुठि पबइ रति आणी तिम बीजे चारित्र नइ विषइ रति आणवी॥ १५ इति अ
रति परिषह॥ ७॥ सगो एसमुणा साणं। जा उलोय सि इत्थिउ। जस्स ता उपरि नाया। सुकडं तस्स सामरणं॥
१६॥ लोकेया: स्त्रियो मनुष्याणां एष संगो हे आ। लोक माहि ये स्त्री मनुष्य रइ हिए संगम सार तणु प्रसंग जाणि
वु: तस्य एतापरिज्ञाता: तस्य श्रामण्य सुकृतं स्यात्। जह नइ स्त्री ज्ञातस्य रूप। तेह नइ दीक्षा पालइ तां सोहि
ली॥ १६ एवमाया विमेहावी। पंकभूया उइत्थिउ। नो ताहि विहन्निजा। चार जत्तगवे सए॥ १७ मेधावी एवमा
दाय। पंकभूता स्त्रिय। इति ता निर्निर्व्यहन्यात्। साधु कर्दम प्राय। स्त्री इम जाणीनइ तेह स्त्री एकरी संयम न
हणाइ। आत्मगवेषकश्चरेत्। आत्मस्वरूप जाणतु संयम सेवइ॥ १८ तधन्या तेसाक्षा। तस्मिन मोडा अ
कज्ञापडिविरमा। धीरा वइम सिहारं। चरंति जयहघूलि नइ मुणी॥ १९ तधन्यामुणयं वे तसाधु उत्तम। तेसाधु
नइ नमस्कार कु॥ जे अकार्य तत्पाप कर्त्तव्यउ निर्वृत्ताविरमा। धीरा० धीर साहसीक ऋषि। असि हा० असि
धारा खडगधारा कपरि चालवानी परि दुष्करव्रत समाचरइ। जिम श्री स्थूलिभद्र मुनि समाचरितु:।
॥पाडलीपुरि नगरि नागउ ताल मंत्रि नु पुत्र श्री स्थूलिभद्र कुमर। कोशा वेश्या नइ घरि जि णाइ साढी बार
कोडि सुवर्ण नी भोग वी॥ आपणा बाप नु कुमरण सांभली। वैराग्य ऊपनइ। सर्व संसार माया बांमी। आर्य
संभूतिविजयसूरि ना पयाश्र आभिग्रह गुरु पार्श्व आवी लेइ। एकसीह नी गुफा आदराणा गइ। बीज इ
साप नइ बिल। अनइ त्रीजु ऋषी कूवा रह्या नइ वाविल पाट रहिवु। आदराणा गउ। अनइ चउथइ श्री

*संभूतिविजयगुरु कहिं दीक्षा लीधी। वैराग्य ऊपनइ, सर्व संसार बांडी। आर्य ३-२

स्थूलिभद्रइं पूर्वपरिचितस्नेहनिबद्धकोस्याना घरइं चउमासुं रहिवानु आदेश मागिउ। चित्रशालीइं रहिवानु तिवा
रइं गुरू कहिउं तत्र आपणाइं स्त्री न किरहितां दुःकर बइ। जिहां तइं साठीबार कोसिवि इव वी। वलीतिहां
रही विषय जीपी। आषइ अस्सी चउमासानइं प्रांतिआवीइं गुरू वली कहिबइ। विस आसियंजरमिवालो
एसिपंजरमितिरकमि। सीहावपंजरगया। वसंतितवपंजारसाढा॥रविसआमिणविषयशाढ्यादिकातधर्म
रूपीयांशस्त्रजेहनइं छेदइ। अनइंचिकूदइ। सिवकूंगमाबइ। असियंजरंमितिरकमि। यमचिकूंयासिसुभट नो
षडगनांपंजरमाहिपाजरइंघाल्यासीहवसइ। एहनुरो आवाराजद्वारिजि हांपांजरइं सीहघाल्या कूश्रन
इराजतीवारइंसीहनइंमदनीवेलाकूइतिवारइंसीहपांजराभांजवानुउद्यमकरइ। तेतलइंरायनासुभट
पंजरापाषतीसिवकूंगमारवांडालेईरहि। अनेकजीववधीतादेषाडइ।पबइसीहइ। तदेषीबीहतां पाजरांजि
माहिमदरहितथिकूसमाधिइंरहिइ। इसीयरिइमाहात्मांइंलोकमाहिशावकूंयासेविमयकरी अनेकजीव
कदर्थेनादुःखपामतादेषी। आपणापइं आगम्यतपरूपीयापांजरमाहिवसइ। सीहानीपरइ। एतलइंजुगुरूनइं
उपदेशइंचालइ। तसुषीथाइ। गुरूनुं वचनसांभलीश्रीस्थूलिभद्रइं कहिउं। भगवनकूंउम्हारूशाषमकूउ
जुतिहांरहीसुधुंचारित्रपालीपाबउ आवुं इमकही चउमासानुं आदेशलेई। बइविगयमोकली। एहबुपड
वडीकोशावेश्यानइं घरिचित्रशालीइं जईचउमासुंरहिउ। तिहांबइविगयनुआहारलइ। कोशावेश्याना
कीधाहावभावशृंगारनिहाणी। विषयवमी। इंद्रियदमी। एकलमलमाहाव्रतव्रतनइं विषइसूरसुभट
थईकोशाप्रतिइंबूझवी। शीलव्रतऊचरावी। चउमासुंपूरूंकरीपाबउगुरूकहइंआवी। गुरूवंदनकर
इ। एहवइंजेत्रणसाधप्रमुखथापनाकिरहियाकुंता। तेहजितिमगुरूवांदिया। गुरूपहिलात्रिकूंनइंदुःकर

कारकइमकहिउं आवुश्रीस्थूलिभद्रनइंदुःकरदुःकरकारकआवुइमकहीप्रसंसाकीधी। जइदुःकरदुःकरकारक
गुरेजणाउ। इमयथास्थितसाचउंसाधुरश्रीस्थूलिभद्रमाहात्मानइंकहिउं। तउकोसरअवकाईआचार्यसं
भूतिविजयसूरिनइंत्राषिइंसीहगुफावासीमाहात्माएनरवमिउंनसांसयुं। एनिविवेकपणुजाणवुं॥
तेहवइंसीहगुफावासीमाहात्मास्थूलिभद्रनीप्रसंसासांभली। मनिरीसआणी। आवतइंचउमासइंमइं तेह
नइंघरिरहिवुं। मनिचीतवीरहिउ। एहवइंबीजइवरसिस्थूलिभद्रनीपरिइं अभिग्रहलेई। गुरूघणुंवारि
उपणि अभिमानचढिउथकुंकोशानीबहिनिउपकोशानइंघरिधर्मलाभकहिउ। तिहांपहुतउ। तिवारइं
उपकोशाइंआवउ आदरदीधुंतवइंसीहगुफावासीइंस्थूलिभद्रनइं सोलावरसंबइसाडातलइंरूपस्वरू
पदीठउंतेतलइंमनक्षुभ्याउं। तेहवइंमनक्षोभजाणीइमकहिउं। अम्हारइंधर्मलाभनकोईइ। पणिअ
म्हारइंअर्थलाभजोईइ। एहवुंसुकुमालवचनसांभलीरूपव्यामोहिउ आपणुंवचनप्रमाणकरवाज
णीतेहनइंवचनिइंवर्षाकालनगणीउं। नेपालदेशजईतिहांनुराजा रीझवीगाढइंकष्टिइंरत्नकंब
ललेईआणीउपकोशानइंआपिउं।तेहवइंतेरत्नकंबलमाहात्मादेषतांमलमूत्रभरियाअशुचिषाल
माहिघालिउं। तिहवइंतीणइंमाहात्माइंकहिउं। अरेअभागीआ। आपणुंइहीआम्रुधिइंजुउकांइनथी
जेएहवुंचिंतामणिरत्नसमानचारित्रलहीविषयरूपीयालेषेमाहिनाषइ। अम्हारासयरअशुचिषा
लसरीषोतेहमाहि। आपणुंचारित्ररूपीउंरत्नगमइबइ। तेहनेवचनेबूझिउ। घणुंमनमाहिझू
रइ। देषुमइं अभागीइंविषयांधथिकइंचारित्रमिलननकीधउं। तेविजयसिंहमाहात्माआवीगुरूनेपगे
लागीषमावइ। आलोयणालेई। गुरूनुंवचनअणाकरतीतेहनइंकिउकूंउ। कहिबइ॥जिइब्वयप्पवत्तणा॥१

जेह ब्रतमाहाव्रतातेह्नं तादोहल्याचरणीपवैतनाचारस्मरीषाकहीइ। ववसीपातमाहाव्रतकबाडवानी।
अबुंत जाव प्रतिज्ञाकीधीवइ। तणाइसीह गुफावासीमाहात्मातेहनइजुवइ। युवतीजनस्त्रीजननइमेल्हाव
इजपकोशानइयोगइ। जइहरणं माहात्मापणुविकुपरिगयुं। माहात्मानकहीइ चारित्रनापरिणामरहित
जणी। अनइगृहस्थनइकहीइ। जेहजणी बाह्यमाहात्मानुवेषधरइछइ। एहनइ अब्रह्मनइत्यागि विइमात्र
यतीपणुं किमगयु एवातकहिछइ। जयवाणी जयमुणी॥१ जइकितीवारइस्त्रीनीसादिवकाउसग्गकरइ। अ
घवामोनी। नित्यमोनीअवलंबीरहिजइ मुंडीमस्तकजनइकरावीइ। वकली जइवाकल्लांपहइरइ। तवसी।
जइमाहातपनुधरणीक्रिश्चइपिहुतोपि। जइअब्रह्म मिथुननुप्रार्थइ। तउबंजावि०लोकप्रसिद्धिइं। ब्रह्माअपा
रिमोटउतक्रमरुनइंनरचइनगमइ। बीजानुंकहिवुं कस्युं। जिनवचननाज्ञाणनइ। अब्रह्मचारीसर्व
थानरचइ। इसिउसाव॥७॥ तोपढिउं तोगुणीयं तो ज्ञास्त्रनंपढिउं तप्रमाण। अनइगुणिउं तप्रमा
ण। मुणियं। शास्त्रनाअर्थनुंजाणिवुं। इतोप्रमाण। तोचोइउअप्पा। आत्माचतिउ। आत्मस्वरूपजाणि
उ। प्रमाण। आवडीयं० जुक्कशीलसंसर्गमाहिपडिउ। पहियं० कमित्रेप्रेरिउ। वलीस्त्रीएआमंत्रिउ। अनिर्धि
उ। असिउकउ। नकुणइ० अकार्य। अब्रह्मसेवानकरइ। पढिउं गुणिउं जाणिउं। तउ जसफलसफल। तउ
ब्रह्मचारीकहइइसिउजा। वासीह गुफावासीमाहात्मानइस्त्रीचित्रालोचइकरीकुद्याइमकहिछइ। पाग
डियसवसद्धो॥० पागडिय० उइसर्वसघलाइदाव्यपापप्रगटकरइ। आलोइकिहां। गुरुपामूल० गुरुनाच २१
रणआगलिवु लहिइ। साधुपदमाहात्मापणुंलहिइ। अविशुद्ध० जविनोधिनकरइ। आपपायगुरुनालोएत्त
। तेहनइगुणसेढी० गुणानीश्रेणि। ज्ञानदर्शनचारित्रादिकगुणनुसमुहतत्रि० ततलइजिरहिइ। गाढउकीय

नुष्टानकरतां। आपरीधियपहिलुजातागुणाकं त्रातितलाजिरहिइ। बाधइनहीं। जउक्रियानुष्टाननकरइतउपहि
लाघ्रतानागुणजाइ। एहकारण जिमश्रीस्थूलिभद्रऋषीस्वरइजिमस्त्रीपषिमिनकरिवु॥१८इतिस्त्रीपरिसह॥
एगएवचरेलोढे। अभिभूयपरीसहे। गामेवाणगरेवावि। णिगमेरायहाणिए॥१८॥ साधुएकग्रामेवानगरेवापिनगमेवा
राजध्यानीवाथरतु। साधुएकलुरागद्वेषरहितइकुउगामनगारनिर्ममवाणिया वासिराजधानीइविहारकरइ। किण।
साधुलाढदेशीलाषाप्रशंसनसंयमसहित। किंसवा। कुस्तिउकरानइ। परिषानुअभिभूय। परीसहजीपीनइ॥१८॥
असमाणेचरेभिक्खु। नयकुछ्यापरिग्गहं। असंसत्तोगिहत्थेहि। अणिएउपरिव्वए॥१९॥ भिक्षूः मनः चरेत। माहात
मामनिगर्वरहितविहारकरचइ। नचपरिग्रहंकुर्यात। अनइपरिग्रहनकरइ। गृहस्थैः संसक्तो। अनीअतः परि
व्रजेत। गृहस्थसिउंसंगअणकरउ। अनीअतवासीकुउविहरइ॥१९॥ अत्रकथा॥ कुछ्ळागपुरनगरि। संगमस्थिव
राचार्य। उत्सर्गेअपवादनाजाण। क्षीणजंघाबल। दुर्भिक्षपडिइ। कुंतइ। चेलामाहात्मानइविहारकरावी। गुरुते
नवेनांगोविहिचा। नवेउपाश्रयरहितानवकल्पीविहारकरतारहिइ। तेहविआलोअणलेवादत्तसाध्यआवि
उकुंउ। तेणिइं गुरुअनुक्रमितेणइ जिउपाश्रयरहितागुरुदेषीचिंतविउं। एगुरुनित्यस्थानकवासी। प्रमादीइ
मविमासीजइउपाश्रयरहिइ। गाममाहिभिक्षाअणलहितइ। दत्तमाहात्माविवहारा। आनाघुजरूतग्रस्तनइं
षडीनापडीकरीसाजुकरइ। तिहांनुआहारलिइ। सांजइं गुरनेचारित्रनेगुणीकरीरंजी। नगरदेवताइंकहि
उंअरेअनाचारागुरुगुणवंतनाअवगुणदेषइछइ। पणिआपणाभ्रात्रीदोषनुअवगुणकाइंनालोइ। इमदेवता
कही। गुरुनागुणजणावीशाघ्यक्रकविइ। जिमस्थिवराचार्यतेणइपरीसहसहिउ। तिमबीजेऋषीस्वरेसहिवुं॥

×राषहसह
उतिमबीजे
सहिवुं। अन
इस्याहगुफा
वास्यामाहा
त्माइंआपरि
षहनसहि
उ। तिमनत्ति×

॥९॥ चर्यापरीषहः॥ एसुसाणेसुन्नगारेवा॥ रुक्खमूलेवएकउ॥ अकुक्कुउसीएज्जा॥ नयवित्तासएपरं॥२०॥ साधुश्मसाने
शून्यगारेवा। वृक्षमूलेवाएककः अकुकुचोनिषीदेत्॥ साधुमसाणिसून्नघरि वृक्षमूलिएकरागद्वेषरहितअकुकुचहस्तादि
कचलाविकाररहितकुउ॥ स्वाध्यायभूमिकाइंबइसिइ। परनएवित्रासएत्। परअनेरानेत्रासनरूपजोवइ॥२०॥ तत्थसेचि
ठमाणस्स॥ उवसग्गाभिधारए॥ संकाभीउनगच्छेज्जा॥ उट्ठित्ताअन्नमासणं॥२१॥ सतस्यतत्रासनपसर्गानवेतितानभिधारयेत्
तेहसाधुनइतत्रतिहांस्वाध्यायभूमिकाइंबइठ्गाकुंताउपसर्गकुइतेसहइ। शंकाभीतउत्थायान्यमासनंनगच्छेत्। उ
पसर्गत्रासीतादिकतणीशंकाभीतकुंउठीअनेरइआसणिनजाइ॥२१॥ अत्रकथा॥ हस्तनागपुरिकुरुदत्तविव
हारानुप्रतिमावहिउगामबाहिरिरात्रिइंरहिउ। तेहवइकिहांएकविकुचोरगाइलेई। तेणीवाटिइंनीकल्या। तेचोरपूठि
वाहारआवी। तेऋषीश्वरपूछिउ। देमाहात्मन्चोरकेहीवाटिइंगया। इमपूछिइकुतिदयानापरिणामथिकुनबोलिउ।
तिवारइंवाहरनइरोसचडिउथिकइमाथइमाटीनीपालिकरी। बलतीचिहिनाअंगारघालिया। मस्तकबलतिइएहवुंमरणां
तकष्टइनिषेधकीपरिसहसहिउसाधु। जिमकुरुदत्तऋषीश्वरिपरीसहसहिउ। तिमबीजेसहिवु॥२१॥ परीषहः॥१०॥ उच्चावया
हिंसेज्जाहिं। तवस्सीभिक्खुथामवं॥ नातिवेलंविहन्नेज्जा॥ पावदिट्ठीविहन्नइ॥२२॥ नैषेधकीपरीसहः। तपस्वीभिखुथामवान्।
उच्चावचाभिः शय्याभिः अतिवेलंविहिंसस्यात्। ततः पुनः करणहारसाधुथामवंत। संयमनइवीर्यवंतउच्चउकृष्टअवचसा
मान्यशय्याउपाश्रयकरी। अतिवेलस्वाध्यायादिवेलादिउ। अतिक्रमनकरइ। हर्षविषवादनकरइ। यसेतिसेउपाश्रयआ
पणीक्रीआनमुकइ। पापदृष्टिविहन्येत्। कुत्रिष्यसंयमहणिइ॥२२॥ परिक्कुवस्सयंलद्धुं॥ कल्लाणंअदुवपावगं॥ किमेगराय
करिस्सइ॥ एवंतिबइहियासए॥२३॥ साधुपरिपकनिर्वजनभुपाश्रयकल्याणमथवा। पापकंजंबध्वातत्रैवमध्यसहे। साधुनि

रुपाश्रयरूडउअथवाविरूउनतत्तलाइउपाश्रयएवं इमअहीआसइ। एवंकवंइमकिमएकरात्रिकविषेत्। एकरात्रिरू
उउअनुइविरूउउपाश्रयकिंकरेसि॥२३॥ अत्रदृष्टांतमाह॥ कोशांबीनगरइजिनदत्तब्राह्मणनेपुत्रेबेकुसोमदत्त
आचार्यकइदीक्षालीधी। तणाशुणाबुद्धिस्थनगीनाथविया। कोशांबीथिकुचाल्या। उजेणीनगरइआव्या। आयरांभंभा
शाथानइवदांविवातिहांबकुमाहात्माआव्या। तिहांदेशसीमी। अजांणनेमाहात्मानइउभामणदाधु। तेमाहात्माहात्मा
एवावरितउ। तेमाहात्मानइविषमिश्रतमरणउवषुं। एहवुंजाणीनइवेहपुत्रविकुमंदानइसूकरकाष्टकपरिवडापादोपगम
नअणसणलीधु। तेहवइअकालिवृष्टिनायोगथिकुनदीइप्रवाहथ्या। तेहरउविगाकाष्टसहितवहिउकपाश्चरतारणपाकुना॥
पाणीउपसर्गइमतउत्तनक्षानतां। कालकरीदेवलोकिगया। जिमतेहेकुवाकरेसिह्यांपदेकोपसहिउ। तिमअनेरेसहिवु
॥इतिपरीषहः॥११॥ बा॥ अकोसेज्जपरेभिक्खू॥ नतेसिंपडिसंजले॥ सरिसाहोतिबालाणं॥ तम्हाभिक्खूनसंजले॥२४॥ परः भिक्षूनाक्रो
शेत्तदअनेरस्वर्थीभिखुप्रतिइआक्रोशवचनबोलइ। तस्मैनप्रतिसंज्वलेत्। तेहकारणमहात्मासंयमउकोपनकरइ॥२४॥ समणंसंजयं
दंतं॥ हणेज्जाकोविकत्थइ॥ नत्थिजीवस्सनासोत्ति॥ एवंपेहेज्जसंजए॥ रूपवलउतेत्वंवचनबोलइ। किंभूतःधु॥ ना
थाःदारुणाःगांवकुंटकाः ग्रामइंद्रियवइहकंटकप्रायवथकछकिंडवइ। तेमनभितउकयोत्। तेहथितापालो।
कतणानोलीमनिनामाणज्जा॥२५॥ एवइकथविदृष्टांतमाह॥ राजग्रहनगरिअर्जनमालीतेहनासायिकिदश्या। तेहनउकुलदेवता
मुद्गरपाणितेहनावाडीपूक्कडुयक्षायतनतिहांवदइतेहनास्त्रिदशनाथयिपणानवीनइसानदीक्षलेइआप
णासत्तरिस्सहिततेसुद्गपाणियक्षकहावजीवाआव्या। तेहवइतिहांबअइदुष्टनुसमसहाउइष्टबुद्धिनाधणी। जेतलइतेणाइदुवा(दाव)।
एतलइपापकर्मकविवामनटलकिवा। तेअर्जनमालीबांधी। तेदेषतांयक्षनादेवकुलमध्ययक्षनाइष्टिइतेस्त्रीभितेबउ

॥उत्तरा०५०
॥बाला०२३

MEMORIAL

कष्ट अणाव्या रमे विद्धुं मांडिउं अर्जुनमालीनां हथियार। तेहवइ अर्जुनमालीनं विवरामइं आ जलगइ एयथापूजिता अनेकलोगनोगा
दिककी धातेफोको। एयवानी हथियइं मकनइं बांधी॥ मारी स्त्री नइं एवडो विडंबना करइ बइ। तेहनणी आ जप बी एयखानइं नुभुज
उं। एहवउं जे हवइ ति अर्जुनमाली मानि चीतवइ। तेहवइ तेणइ यक्षइ तेमालीना शरीरमाहिं अइंमा शरीरमाहिं पइसी हाथियार
रुवलेई तेबए पुरुषस्त्री दिनविणा मिया। इम दिनरघु तिइंबइ पुरुष मानमीस्त्री विणामइ जिको दिवलवन आगलि जाइ तेहनुइं
यथा अर्जुनमालीना शरीर रक्षइ विणामकरइ लोके जाणिवडं। तेहवइ तेनगरनइं उद्यानि श्रीमहावीरस मोसरिया। माल
ली नगरनिवासी समकित्वधारी सुदर्शनश्रेष्ठि गामलोकमायबाय वारी तेइं कइं श्रीमहावीर वांदिवा जावतो गइ यक्षायतननावा
टइं आवउ। तेसुदर्शन देषी ते अर्जुनमाली मोगर लेई धाउ मारवा। आवतउ देषी मार्ग आणि सणलेई तिहां काउसग रहिउ। मनि वीत
राग नूं ध्यान ध्यायवा लागउ। तेहवइ तेणइ अर्जुनमाली तिहां आवी मोगर नइं प्रहार करइ। पणि तेहनइं लागइ नहीं। तिहां ना
सुराय थिकउ मोगर पछी गिउ यक्ष तेमालीना कायाथकी नासउ तिवार श्रेष्ठिइं अणसण पार्‍उं। अर्जुनमालीनइ पाखिलउ संबंध ज
णावी भूझवी श्रीमहावीर कइं लेई गयउ। तिहां धर्म सांभली श्रीमहावीर कइं दीक्षा लेई राजग्रहनगर बाहिर पासइ रहइ। बहनइ
या रणइं आहारनइं अर्थि नगरमाहि जाइ। तिहां नगरनालोक आक्रोश दीइ। पणि कोई निज्ञानदिइ। सुनिवइ मकहि अब
पापी अहलारा स्वजन तविणास करी। हिवइ दीक्षा लेई जिनरूप आ जई सा ति इ लेवा आवि उब। एहवा दुर्वचन घा न
घा लोकनां सही क्षमाकरी बमासतपी बहइ मासि अनशन करी केवल लही मोक्ष गउ। जिम अर्जुनमालीइं आक्रोश परिसह
सहिउ। तिम बीजे सहिवउ॥२५॥ इति आक्रोशपरीसह॥१२॥ बा। हेकवाडइ संजालें निष्कुः। मणापिणन कुप्पये। तितिक्खं परमं णा २३
च्चा भिक्खुधम्मं विचिंतए॥२६॥ भिक्षुः हतो न संज्वलेत्। महात्मा हणि वहिं ताडिइं पइन हो। मनोपि न प्रदूषयेत् नातं निइह वेष

नकवइ निज्झां परमं ज्ञात्वा। भिक्षुः धर्मं विचिंतयेत्। क्षमा उत्कृष्टं जाणीनइ महात्मा धर्म चीतवइ॥ समणं संजयं दंतं
हणिज्जा कोई कच्छई। नत्थि जीवस्स नासोत्ति। एवं पेहेज्ज संजए॥२७॥ कोपि कश्चित् श्रमणं संयतं दांतं महात्मानं हन्यात्। को
ई कणहि वांन किश्रमण महात्मा संयमवंत जितेंद्रिय हणइ। तत्र संयतो जीवस्य नाशो नास्ति निचिंतयेत्। तिहां महात्मा
जीव रहइ नास विणास न थाइ इम चीतवी कोप नकरइ॥२७॥ एतलइ इम तंकहिउं। आयहां आवीइं महात्मा हद धर्म कडइ
किमाजं तेहि पालीया विझिरं वंदनगमी मानवे वपरिक्किविया। विज्ञय वेमका साश्री नवमिंतिजे पडिया हति॥ स्यंत्र याणा नीण
इ पालीना कुताजवदगञ्श्री स्कंदकसूरिना शिष्य पांचसइ नवे वकप्या। तेहनइ कोघलगा बनकं पत्तु इमा वहण अ
नेराइ जे विइ विहिन जाणिउ परमार्थ सां धर्म रहमार। ते माजाणाइ बहा। जेहेइ निया जे पंडित जाणइ उहइ तेमांक मतं
इ। जाणे जा ते मार्गे विचलइ नहीं॥ श्रीमुनि सुव्रतस्वामीना राइ यवत्तमानि वारां जाधिरणीरां राणी तेहनु पुत्र स्कंदकुमा
र। मर्व राणा। पुरंदरयशा॥ देशा दंडकारण्य नाधरणीनइ करनकारा जानइ यव
णावी। एकवार कुंभकार राजा उपालक नाम इ पुरोहित आवउ। स्कंदक कुमार जायज्ञ तनीसमाइ धर्मगोष्टि करतां पाल
क मंत्री भूर नास्तिक मत थापइ। ते स्कंदकुमारि स्याद्वादनी युक्तिइं करी नास्तिकमत कथापी। मलसमष्ट्रते पालक वि
लखु कीधुं। लोक हसउ। ते अथापणइ नगरि गयउ। तेहवइ स्कंदक विरक्त आवता नगरी स्कंदककुमार विद पांचसइ राजपुत्र
नइ परिवारि इं श्रीमुनिसुव्रतस्वामी कइं दीक्षा लाधी। कमिइ गणधर पदवी पामी। एहवइ स्कंदकें तलेदिवसे श्रीमुनि
सुव्रतस्वामि कइं पूछिउं भगवन कुंभकारकड नगरि बहिनि बहनोइ नइ प्रति
बोध देवा जाणी वलतुं प्रभु कहिउं तिहां उपसर्ग मरणांत। उपसर्ग बाधा वेदल तव बीजा पांचसइ आराध

॥उत्तराध्य०
॥बालो०२४

कहइ ते सांभली नविनतव्यतानायोगि दंडकारणि वंदिवा उद्यावंने निजई कृतनिया तेह वइ ते परोहित पालक पाव
लोरी सनायोग तु खंदककुमर परिवार सहित णबावी बटा रात्रि इ तेणइ उद्या निवनिवाना ह्वाथ्या रत्तु इग तसा तइ यवइ इ
मान सम्म इ श्रावा राजा नइ जणाविवां जे उत्तान कमालक वा विवना उ योधपाव मइनइ परिवाविवनि श्राविउ वइ ते उ
स्तनइ विणासी उद्यानक राज्य लेमि इ नेमइ ध्रुपदवमइ एहवुचा विउवइ जुनमा उ उज्ञा तु उद्यानइ नेपांवमइ नाह थ्याथार
बांनां वाडा माहि स्मा तिंवां वइ ते देषाडुं। तिहां घु राजा अवंननननेरा दोदलुंक रतु वाडा माहि नेउ हथ्याथार देषाडियां मसा
त्मा ऊपरि विरासवि जि इ कृतइ ते पावमैं इ पालकपरोहित नइ नलाव्या तेह उइ जिम इच्छा आवइ तिम करो मइ मानइ उवदी
धा तिवार इ ते णइ श्रन व्यइ नगर बाहिर विघाणु मंडावी पालकि इ पाबलोरी सनायोग र्षि कृष्ठा श्वरनइ घाणइ घाला पी
लवा लागु जमा धरतां केवलज्ञान ऊपाजी मोक्ष ऊकता। तेहवइ श्री खंदककुमरि कहिवां अहो पालक श्रावेलु न उतबा
लबइ। एपहिलुं मऊनइ विणासि इम कहिइ घिक इविशेष ऊ ऊकनइ वेला ऊपरि मोइ लावड़ां णी पहिलुं वेलु विणासिउ ते
हइमो क्षउ ऊता पबइ ऊक विणासिया। ते ऊकरी समसहित कालकरी लवनपतिमा हि अग्निकुमार देवता ऊपनु तिणि अग्नि
कुमार देवताइं ज्ञान करी जोउं अवयर जाणु। एक ओपणी बहिनि टाला बाजुदेश जे तलइ रायनी आज्ञा हती ते मघलइ देश
बालि वा हवि लोरी मनइ बलि इ तिवारय बाने देशनइ श्री जलगइ दंडकारणि कहा। इ तेहनां घुवंदरय शांबहिन दीहालेई
तप समा देवलोकि ऊ ऊका। स्कंदककुमार्यनाव्याख्या समइनवा एह श्रयधाणइ घाला पालना ग्राम जाने कोप्यानहा। उत्कं ध्यानथ्यानां
अंतगड केवली ऊआ। तेदेश ष्पे जिमव धपरीसह सम्मा हिवनि मबाजे महिव आ॥२७॥ इति खंदककुमारीसपरीसहा॥ ध॥ ग॥ डक्कर
खलु लोणिछां अणगारस्स निरकणो। मध्येसेजाई यंहोई। नविकिंचि अजाई यं॥२८॥ नोइत्यामंत्रणो खलु निश्चितं मि दो। नित्य

इदं उक्कं सव तितो इमि इ अ आमंत्रणि खलु निश्चि इ अउगा रसहात्मानस निउ ऊक ऊक इ। किंकि मितं। संतमप्य सर्वयाचि नु
सवति। किंचि तृणशलिका मात्र मप्य याचितं नास्ति। ने महात्मानं सर्व मागितं जि ऊइ। किंचि तृण घोड ऊ तेरा लाका उमागि इ अणमागि
तं जिन ऊ इ॥२८॥ गोयरग्ग पविठ्ठस्स। पाणि नो सप्पसारए। सेउ अगारवा सोत्ति। इति भिक्खु न चिंतए॥२९॥ व्याख्या साधे; गोच
राय पविठ्ठस्य याणि; सु प्रसारको नस्यात्। जेह साधुनइ गोचराइ याउ कंता पणि लहया केरी लिइ नइ अर्थिसु प्रसारका
न ऊइ। हाथ मांडवु कायणिक रहा। तत्र अगारवासा श्रेयः इति भिक्खु न चिंतये। एलाज कपनी कंती यह स्या वाम तल ऊ इम
भिक्षु न वीन वइ॥२९॥ एहउ अर्थ इ छानमाहा॥ बा। श्री नेमिनाथनइ पहिलइ समोसरणि श्रीकृष्ण महाराय वांदिवा श्रावइ घिकइ
श्री नेमिनाथ कहइ इ ब्रि ऊं। लगवन माह्रकां किम वइ। तिवारइ कहइं। नाह कंताइं जरा ऊमरनइ हाथि इम रणा ऊमि ड
ते वचन सांभली जराकुमार अपणा लाई ने मरणरा षवालणी विदेशगउ। वली दखकवर्ष लगवनदा रिकाउदाइ कहि
इ हिमि। मद्य घकी नगर दहनइ हमिजां लगइ नगर माहि घर दाव अबिल तपऊ समि इ। तिहां लग इ नगरावउ दहन नहीं ऊइ
। पवइ श्री कृष्ण महाराय इ जिहां मद्य पाननां जे ताजनरूता तेस घलां इगिरनार पर्वतनी झोलि माहि लंषा वियां। एहवइ
हणहाबनइ योगि इ एक ऊ उ नमद्य ऊनुते णइ वननाम हामो टाह हदेवि पाम्स इ ते ताज ननी णइ ऊबा न किंस विउं। लवत व्यसा
नदयो गिइ तिहां वहिं उं ऊ णाइ नजां णिवा अनइ वली घ विकान गरी माहि मारपडा विउ। घब रहा वदिन रहा तिइ एक
ऊ आबिलक विज्ञा जिमसंकट विलय जाइ। एह वइ वाव वसि मइ मद्युल्या। एहनेइ यादवना ऊमर गिरिना विनाव नमा हि
कंबर वलिय णि वनमाहि परिभ्रमणा करतइ। कालनइ योगि इ धागइ मद्य उ घड ऊजे तिहां वा मा विउ ऊ तेणे यादवने ऊ
मदेदीव ऊ। एहवइ ते महा बारवरसना ऊ मद्य ऊटवइ। नेहण हो वप्रकारि इ। तेमद्य वाव रिउ। तेहवइ ते ऊमरमदविक लजाअ

वसि थया। पाछा द्वारिका भणी आवता तेहवइं कुमरे दीपायन ऋषि तप तपइ बइठा दीठा। ते कुमरे वैर संभारी कहइ ऋषिनइं घा घाइ मार
करी घणुं कदर्थिउ। तेहवइं ऋषिइं चीतविउं। जु माहरा तपनुं कांइ प्रमाण हुइ तु कुमर नइं सबाल द्वारिका नगरीइं दाह
नउ अधिष्ठायक हुयो। एहवउं अन्नपाननुं पचखाण थाणुं बांधिउं। तेणइं कुमरे ऋषिनुं वचन सांभलिउं। तेहवइं तत्काल कृष्णमहा
राय आवी ऋषिने पगे लागा। स्वामी ए बालक छइ कां जे तुम्हनइं दूमव्या ते अपराध कीधउ ते अपराध खमउ। वलतुं ऋषि
कहिं मइं जे आपदीधुं ते अन्यथा न थाइ। तुं तु कां पत्रनइं ऋषि कुआपकल्प्या ते पाछा न थाइ। वली एम पगे लागा तु न वहइ।
एवइं कहिउं कृष्ण अनइं बलदेव बिहुनइं बिहुं अधिक कोऊ गरव्या। बीजा सर्वनइं दहन हुयो। एवडुं कृष्ण बलदेव पाछा
वल्या। ऋषि क्रोध करी आर्त्तध्यान पडिउ। कालकरी अग्निकुमार पाताल देवता हुउ। ज्ञानिइं करी पाछिलुं वैर जाणि
उ। नगरमांहि सघलो कोइ आंबिल तप करइ छइ। ते तप ना प्रभाव थकी बारवरस लगइ नगरमांहि तेणइं कांई न वालिउं। एव
वइ बार वरस नइं अंतिं नगरलोक नइं समकालि सरषी जिबुद्धि ऊपनी। देवघणा इ वरिस तप करता हुआ। अजी
बिल तप आपणइ घरि नकीधउ। ते बीजा नगरमांहि घणा करइ छइ। तेणे सरिखुं। जिमइ एक नइं बुद्धि ऊपनी तिम सघले आं
बिल तप न करा। एहवइं तेणइं देवताइं वडा पामिउ। नगर सघलुं दहन कीधुं। जे रत्न हीनइं ताविलुं आने मिना
वलुं आवरण पडिवाजिउं। ते केतला एक ऊगरिया। द्वारिका नगरीइं बाह्य जे कोइ ना कलइ। तेवारइं नाओ कर्ष्य कीला
ओ सिमांहि पडइ। द्वारिका समग्र दहन विश्री कृष्ण महाराय अनइं बलदेव ऊगरिया। ते हे बंधव ते आपणा स्वजनय
रिवार सहित बलतुं देषी मन्हा दषी थाइ हुया। ते बिहु इ बांधव वनमांहि निकलइ। पर देशइं जातां जीणइं वनि जराकुं
मर बइ तिहां उकला। कृष्ण महाराय नइं तरस लागी। एहवइं एक वृक्ष तलइ बाया देखिआ वीसूता। बलदेव वनमां २५

हि पाणी लेवा गयुं। तेहवइं जराकुमर वनमांहि क्रीडा करतउ। तेहवइं जराकुमारइं मृगनइं वरांसइं बाणसूं किउं। तेवाण
श्रीनारायणपगनइं तलइ पदम कलइ लइ बइठा। तिहां आवी बाण लागुं। तेहवइं जराकुमर आव्या। देषइ किसिउं। एश्रीनाराय
ण उलषा पगे लागा। मइं अमृगला वरांसइं बाण मूकिउं। अनइं उत्ताबइं पगे आवी लागुं। ए अपराध षमउ। वलतुं कृष्ण कहइ।
कहिवी न राग ना बवन अन्यथा न हुइ। तेहवइं तणाईहांई मनो पडउ। बतावइ गमिजो। नहीतर बलदेव आवइ ऊ तनइं हूं ह
वणा करसि। जराकुमर आपणइं स्थानकि गिउ। पबइं कृष्ण धर्म ध्यान वइ बइ। मउ नइं केहा कर्म थकी आवी बाण लागुं। वउदा केहो को
टिआं। ता वासुदेवनइं परविइ ग्निमया रामनल वेपाय। मकश्मिन्नोत्तम।। यक तस्य पागमो नास्ति। ऊतजा शोत विद्यते। अद्युहमा
नो हनो वालि। तस्येदक्मर्णः फलं।। इम भावना भावी आर्त्तध्यान मनमां काल करी अधोगति गया। तेहवइं बलदेव पाणी लेईं तिहां
आवइ। ताई सूता बइ। तिहां बोलावइ। हे बांधव पाणी वावरउ। मउ नइं पाणी आणतां घणी वार लागी। मन्हो उत्तरन दिया वा
स्या। इम विलाप करइ छइ। मोह ना वाचि ऊ कृष्ण न बोला जाणतां। इम जबुआ पणइं रकंधि ऊपाडतइ बमास हुआ। एहवइं देवता
इ ब्राह्मणनइं रूप धरीनइं गायकंरूप विकुर्विउं। अनइं वाबडा तेहनइं धावइ बइ। एहवउं रूप बलदेवि देषी कहिवा लाउ
अहो विप्र तुं एम सुं मूर्ष काइ। मइ गाइ नइं धवरावइ बइ। वलतुं ते ब्राह्मण कहिबइ। ऊमूर्ष के तुम्ह मूर्ष। जिह्वा आनइं घ लइ ऊपाडतां ब
मास हुया। अनइं सूं जनथी जाणतां देवताइं बुऊ विउ। श्री कृष्णनइं संस्कार करी। वैराग्य पामी ऊ श्री नेमिनाथ कन्हइं दीक्षा लेई विहा
र करइ। अनइं जिहां शिक्षा नइं अर्थि जाइ। तिहां रतेहनां रूपना मोही स्त्री सर्व काज मूकी जोवा आवइ। तेहवइं एक वार स्त्री बलदे
वमुनिनइं भिक्षा नइं अर्थि गाममाहि पइसतां स्त्री आनइं कोवइ एक स्त्री इ बलदेवनुं रूप जोतां इ घडानइं बदलइ आपणा बेटा न
इं गलइ गलापास उदीधउ। मा हरा रूपनइं देषी वीतविउं। माहरा रूपनइं धिक्कार पडउ। एपवेइं बालक मूपा पम ऊनइं लायऊ

तइमकह्यो तेश्रीबलदेवदेविइरूपअनथइ तुंगीयानामलीधगाआजपबोगामंमाहिआवा तिहांनलितं जउवेडइकोए
कष्ठउवाह्या अथवाकाष्टवाहो अथवासार्थवाह्यादिकआव्याहुंता दिइउलितंइमचीतवीमनिनिश्चयआणीवेडइजई
रहिता तिहांआवनपरिणामदेषीवेडिनाजावइदिणादिकआश्रिग्रएइवइस्यूगलतउएकजातिस्मरणउतेरूषिनोसेवा
करइ जिहांकिहांसाधुकुंतरितपालदेतूंगीयाडा अनइसइंन्याइकराउषीश्वरनइजणावइ एइवइएकदावथका
रसार्थवाहतेवनमाहि जेहेस्यूकाष्टवाबडनेकाष्टलेवानइघणाकाईआक वलेईरआव्युबइ तिहांअनपाननापना
वइतंमृगलानाजोगिवा षिहुंस्यगलतुआगलिषिऊपाबलिषिह बलदेवतिहांनइआवीतिहाउड्डंता एहवइवथका
वनइमनिहर्षेकषत्तु जोउनइआवनमाहिऊषीश्वरनुयोगमिलिउ उकालनइविशेषइरथकावनइदानदेताम्रग
लानइतावनातावतां बलदेवस्यूरुडउआहारलेता लावनलावइम्रगलो नयणेनीरझरंति मुनिविहरावितकबक
वि जउकमाणमहंति ॥१ एहवइस्यूअकस्मातस्अर्धछेदायो हतुनीडालवायनइयोगइत्रिहुंकपरिपडा त्रिहुंमरीपांचमइ
देवलोकिव्रह्मइमिनामिदेवलोकिदेवताहुआ जिमबलदेवऋषीश्वरियावनापरीसहसह्या तिमबीजेसहिवउ
२० इतियावनापरिसहः १५बा पिंडंसुधासुमेसिहाप्तिसोयगेपविशिगोठीयालहीपिंडेअलहेवा
।राएणुनप्पह्यसंजए तरत्संयतोनोजनेपरिनिष्ठेनाऽ परइथयामेसुषयेतुं संयतसाजननापजइकुंतइ शृहस्थनणेघरे
गृहस्थावासलतुयासन्आहारवांबइ पिंडेलद्धेअलनधवा नारणुतप्पेन्मा आहारलाधइ अथवाअणलाधइपश्चातापन
करइ २० अद्येवाहंणलझामि अविलानोसुएसिया जोएवंपडिसंविरके अलानोतंणउद्दयए २१ अद्येवाहंनलन्ये २६
।अपिसमवनायास्वः कल्पेलाभः स्यान्। इतियएवंपतिसंविचेतसअलाभपरीषहःस्तननतर्जयेत्। आजउनवीलं

हिवइअपिसंलावनाया स्वकालिअथवा परमदिवस ह्या हो बलालउभिइजेइमविवारइअलालनपरीसहतेमहाल्माप्रतिइ
ननाजइनइएहवइनपाडइ ॥२१ अत्रढंढणाकुमारदृष्टांत।। वृष्णिकयफलियतइपाथघरमितस्युबुहासमणुबरो ढं
ढणानहाविसदो विसढाजइसफलियाजाया ।।१ वृष्णिकयढंढणाकुमारनाबापश्रीकृष्णनंघरेफलितंफलितो धन
धान्यइकरी सम्हदानारबुझाउपणनांघरतेहमाइकरीफलितंहूइ पणिकंईदासादइनहीं अनइआपणइ
लागवीजातेइतणीफलितनकरोइ नटविटनइघरेविषाजइपीजइतेइलणीफलितकरोइ पणिउत्तमनइलाभतणी
कलितनकरोइ ईहाबिवानोबडो ढंढणाकुमारनइबापनइघरलम्मीबत्तइ तेसाधुहाउत्तषाअनइदूषसमणुबहोनि
रंतरढंढेणा ढंढणाकुमारितदाविकृत्तिमकिमदूस्तहो विसढो निर्माय्यपणइजइहिको नजिमसफलाइहुई ढंढणाकुमा
रइपाविलइस्तविगांवसइंदलकपरिरायनइघरिअधिकारीबत्तइ देत्रइलषेडावडा एहवइमध्याह्नवेला तातपारग
चारिआव्यासूविइएकेकुंवाअदेवरावतइ पनरमइजीवनइअन्तरायकीधु तानेकमंढंढकुमारनइलविआनेमिना
थकन्हइदीक्षालीधी प्रविहतेअन्तरायकर्मआव्यु नवबारही द्वारिकानगरीमाहिसूस्कृतीलिहाकेहनलहइतेउअलं
यइलाधुपरायतंविहरवंआहारमइनलेवतं आपणीलबाधिस्युरुडउआहारलउतउलेउंइमिअभिग्रहलियइपालतां
घणउकालगिउ एकवारश्रीकृष्णिश्रीनेमिनाथकनइपूछिउं भगवनअढारसहस्रश्रमणमांमाहिकउणउत्कृष्ट
उतपावा तिहांश्रीनेमिनाथिकहिउं तत्ताढंढणाकुमारमहात्मामहातपनापिविश्रीवीतरागतवनसांभली तेहवइ
श्रीकृष्णमहाराजद्वारिकानगरीमाहिपाबाआवतां तेहाढंढणाकुमारकृषीश्वरआगलिउत्तरवउश्रीकृष्णिइ
हीवउ एतलइएकिम्नगइआपणपेहविषयाधिकउकत्तरी ढणउदहवादेईवांदिउ तेहवइकुणहुंएकलाइकन्हवसावावि व

हाराइश्री कृष्णवांदणां देषावी नविउं। एकोएक मोदकमहात्माजेहनइ त्रिषंडनो कारवासुदेववांदइं। तेएमहात्मा माहइ ढंढणषि
आवइ उपनइं आहारदिउं। एहवुंजोवी नवनांनि हां जिढंढणाकुमारउकउं। विवहारइं इहूं कृष्णनामोदकदीधा। नेविवह
राश्रीनेमिकन्हइं पूछइ। भगवनमाहरुं अंतराय कर्मक्षय गयुं। जेमइं सुकृष्णना मोदकपाम्या। तिहांश्रीनेमिनाथिं कहिउं
।एकृष्णमहाराय नीलब्धिपणि ताहरी लब्धिनहीं। एहवुं सांभलीनेविउं मकृष्णनइ पर लब्धिना षुंआहार लेवा उनां
नवइ। तेहनणीआहार नलिउं। एहवुं जोवानेविउं कृष्णाकरनइ घर विनीमाहनाषमाहिं विविधिपूर्वक लइपरठववा। लाइं सूभवतां
शुक्लध्यानध्यातां कर्मक्षयिया। केवलज्ञानऊपनउं। जिमढंढणाकुमारमहात्मानइ आहारनइ विषइं प्रतिबंधनहूओ।वाअनइ
काजमाडिउं। तिमसविकुंमहात्मानइ आहारादिक प्रतिबंध कमपरिअधिकारनइ। जिमतेणइढंढणकुमारेविइं अलाभ प
रीसहसहिउ। तिमबीजेसहिवउ। इतिअलाभपरीसहः। १५ बा। नत्वा उप्पतीयं ... कं। विचयणाएस्तुइहीय। अहा गोबा
वपतुवसं। पुठोनुवदियासए। इसाधुकुत्पतितरोगजातेड:खकुशादवेदनयाड:खकार्तिनअदीनःचलंताबुद्धिकर्मफलमि
तिष्ठापयेत्। साधुरोगऊपनइदुषआंणानइवेदनाकरडःखकार्तकुंत्तदीनपणानदितकहिचलघातीबुद्धिकर्मनणउंफलइणिइपरि
इं प्रकाशिविकरइ। नतरोगेम्युष्टोऽधिकसहेत्। नतितहांरोगफरिमिउकुंतेनो गच्छइ यासइ। तेतेइर्षनालिजंदिष्ठा। म
विरकगावसए। एसंनवुत्तंस्सामत्नं। जेनकुंवानकारवे। इसाधुःश्चिकित्सांनालिनंदेत। साधुचिकित्सानवांवइ। आम्भगवे
षक:संचिकित्स्यमाधिनोतिष्टेनूजा वकर्मतोगव्या। विरागनहतद्याइमआत्मकृपजोयउसमाधि ... वांहिशखुयस्मानूतस्यसाधोएत
तुश्रामण्यं जेहकारणमहात्मानइं एस्वां चित्नष्णुसास्थनूविकित्सानकर्थात। नकारयेनूजे चिकित्सा करइनहीं। करावइनहीं
। इइ अधरोगपरीसह दृष्टांतमाह। मथुरानगरी इजिनसतुराजाइकालाइसिनामिइगणिकानइस्वरूपिइं व्यामोहिइअनेवि २३

वाधीतिहनइकालवेसकइ सिनामिंउत्रहूआ। तागइधर्मआंभली दीक्षालेईसुकृतेलिधनगिविउकउं। तिहांहनइ उहराज्याबहि
नेवानेहनीश्चार्ड्आपणा। लाईनइदरसन। व्याधिजाणीकायाविंअनित्यपणुंलेषवां। अणसणलाधुं। प्रतिमाइराहि
तिणिकाऊकुमविइ एकवारहस्टहस्खावामिधिकइरात्रिड्सी। आलसाहाअणविउं। तिणिकुमरइ सुतिकइहणी
तेअकांमनिर्जराइमरी व्यंतरकूपहवा। तिणिवंनविआपणुवइरामहात्मादेषावइरक्षिकुंसी। आलणानास्पकरी
षावालाऊ। तेअहीयासउरोगपरीसहसहिउ साधउ। जिमतीणइरोगपरीसहसहिउ। तिमबीजेसहिवउ। इतिपर
सहा। १६बा। अचेलगस्सलूहस्स। संजयस्सतवस्सिणो। तणेसुसुयमाणस्स। होज्जागायविराहणा। अचेलकस्यरू
क्षस्य। संयतस्यापिस्थिनः तृणेषुशायानस्यगात्रस्यविराधनाभवेत्। जिनकल्पीनइअचेलवस्त्ररहितलूंभा। रूषाशरीरब
रूक्षशरीरीरूक्षनानपरवीनइं दर्भादिकतृणउपरिसूतां गात्रपीडाऊपजइ। अधअातपस्सनिवाएण। अउलाइवनिवेदणा। एवंण
च्चाणासेवंति। तंतुजंतणतजिया।। आपत्रआतपस्यनिपातेन। अतुलावेदनाभवति। माघइआतपतडकानइपवइ करी। अतु
लगाढीवेदनाऊपजइ। तृणतर्जिताः साधवः एवं ज्ञात्वा तंतुजं वस्त्रं कंबलादि नसेवंते तृणेन। ज्याइइव्या साधु। एवंईणइप्र
कारइं परीसहआविउजाणी तंतुजवस्त्रादिक नसेवइ। आपश्रावस्तीनगरीइ यसउ तेनराजानइ भद्र इवइ कुमारवैराग्यधिकु
दीक्षालेईविहारकरतउअनाथदेशिकेरनइराज्यसुखेउवतिहांनाराजानेउलषइ एमहात्मा उद्दर्शनअणउलषनइसूवि
उउकुंणा। पणितेकुमारपार्श्वविबोलइनहीं। तिहांपिकुंहेकुकरहारडीलनाबिहं। उगनवाटीस्त्रकिउं। जिमलइकुमारमहा
त्माएपरीसहसहिउ। तिमअनेरेसहिवुं।। १७ बा।। किलस्सगायमेहावी। पंकेणवरएणवा। धिंसुवापरितावेण। सातणा
परिदेवए। इहमेधावीकेनरजसावाअ्गीष्मेवापरितापेनक्लिन्नगात्रः सातसुखंप्रतिनपरिदेवेत्। उाऊमहात्माकर्दमिअ

थवा रज अथवादार्थ प्रकालिता पात्रिकव्यामंडु अगात्र अथवापीडितगात्र ऊं वसुखकारणप्रति वेदनकरइ। कइथं स्ना
न करी आपकेडी मि। इमदीनपणु नवीतवइ॥२६॥ वदिन निद्रापही॥ अविर्यधम्ममणुत्तरं। जाव यसरीमनेदो ति। जहं
कापूणा ध्वरण॥ २७ अर्थ अंतर धर्म आश्रित; साधु निर्जरापेही मलपरिसहप्रति वेदयेत्। सहेत्। दूजेपतवीतिमक्रुष्ट
धर्म आयरियउमहात्मानिर्जरावांछतउ कंडु। मलपरिसह अहीयासइ। यावत्सरीरनो देहांतिकायनजहं धारयेत्॥
तांलगइ सरीरनइ विणास तांलगइ मलपरीसह सहइ। जावजीव सहइ इत्यर्थः॥ २७ अथ दृष्टांतमाह॥ चंपानगरी। सुनंदा श्रेष्ठि
लक्ष्मीवंतसनिहिदा नेष्वउ। तेणइ एकवार महातमावा वित्र पात्रमहामलमलनिगात्र आवतउ देखउ। तेदेषी श्रेष्ठिवातवइ। ए
जैनदर्शनमाहि मलधरवउनिरवर। जउ सर्वजलवां इमदुगंध कर्म ऊपार्जी। तेणइ आयुनइ क्षयइ कालकरी कोशांा
बीनगरी इविवहारी यारुउपत्रहहउ। तेपाबिला तवनाकमेंना उदइ धिक्कडारा विमहाउ गंधिवपनी। तेजिहां जाइं ति
हां लोक तेदेषानिं दाउगंछा करइ। एहवइ तेणइ इमवीतविउं। मिहां ततइ अउपाइए हवउ कर्मा सलीइ उर खवय कम्म
खयपकाममगकरइ कर्मबूटी। एहवउ मिहां तक्वन हृदयमाहिधरी। एकइ तिवर स्नातकी। काममगकरी शासनदेवता
आराधी। एकाग्रचित्ति काउसग्ग थिरहिया। वकी शासनदेवता इतेह तंत्रण सगरअतिहि सुगंधकीधउ। काउसग्ग पारी आपणा
थान किआवइ उहिलो कनिंदइ कहइ। एमहा लोगा देवतानइ ताविइउ। मिउदेषु। निवाकइ तीणइ वीतवि उं देषवलो
कउक हितानहइ। जेह कारणइ। शब्द एहवउं करइ। अरंगे रंगमित्यादि। रंगनारमउच्यते। लोकापवादउ हैयः। कवलोको
विधीयते॥ लोकएहवूहसी नइवली तेणइ देवता इआराधी। तेणइ देवताइ सहज गंधकीधउ। तीणइजिमकीधु। तिम २८
बीजे नकरिवउं। दुगंछा कर्म न ऊपार्जवउं। मलपरीसह सहिवुं। इतिमलपरीसह॥ १८॥ अतिवायणअब्भुट्ठाणं स्वामि

ऊद्यानमितणं। जेताइ पडिसेवंति। नतेसिंपीहए मुणी॥ २९॥ स्वामी राजादि अभिवादनं। अभ्युत्थानं पाहरणादौ निमंत्रणं ऊ
र्वान्। स्वामी राजा इसुखऊणइ महात्मा नइ। अभिवादन मस्तकप्रणाम अभ्युत्थान साम्हाउठवउं। पावरणादिकनु
इविषइ निमंत्रण करइ। येता निप्रतिसेवंति। जे महात्मा ते राजादि केहऊं अभिवादनादिक प्रतिसेवंति। मुनिस्तेभ्यो
नस्पृहेत्। मुनि ऋषीश्वर ते हअभिवादनादिकनइकारणि स्पृहा न करइ॥ २९ अणुकसाई अप्पिछे अन्नाएसी अलोलुए
रसेसु नाणुगिज्झिज्जा। नाणुतप्पिद्य पन्नवं॥ ३० एदृक्षानवानूरसेषु नावृद्धस्येत्। प्रज्ञावंत महात्मा रसनइ विषइ हद्धपणा
वंनकरइ तथा मातृतप्येत्। तथाति मअनेराइ। रूडउं विहरावीउं मानदेईउं मानदेषी पश्चापंतानकरइ। मऊनइ काई राजा
दिकस्नकार करमिइ इमिउ अनुतापनाणइ। किंसाधुः अल्पकसाई सन्मादिकतणीवंका गारहितस्पृहइ बइ। अथवा अणु
कषाया बइ येनइ तथा अल्पेव; अल्पथोडा आहारवस्वपात्रस्नकारादिकतणी वाछइ बवेनूजे हनइ। पुनः किंसाधुः अज्ञातैषी अज्ञा
तभिक्षाना बवइ तथा अलोलुपः रसादिकनइ विषइ लंपट नथी॥ ३० एउं अस्नकारपरीषह दृष्टांत माह॥ मथुनगरी इंजयसिंह राजा
तेह नइ इंदुदत्त पुरोहित मिथ्यादृष्टि। तीणइ साधुबइठउ राजमंदिरवातिणि आवतादेषी। आपणापगसाषिकारेगापाम
इकरी जे हवइ शुकउ स्नब्रे विलिआवइ। तेमस्तकि पग दीधु। तेह उंस्वरूप जे साधुन क्रुद्ध हश्रावकि इ दीउं। तीणइ एहवी प्रतिज्ञा
कीधी। मारडंजावनव्यउ प्रमाणजु एपरोहिततापग बेदउं। तेदिनथकी ते श्रेष्ठि पुरोहितना विद्रजोइ। पणि काईल हइन ही। तिहां षि
कुतेणइ श्रावकिइ तेपुरोहित नइं स्वरूप गुरूनइ कहिउं। वतउंपरवे कहिउं। महानुभावमहात्मा इत्र जासकारनथाउ स्नकारपरीष
हसहवा जिइमकहिउं तइ श्रेष्ठिवली कहि। भगवननिमिथ्यात्वा जिमकिस्तइ बेदिउ जोईइ भगवननिहां तमाहि सांभलिउं बइ। साक्ष
वेईआणथ। पडिणा यंतह अवन्नवायं। जिणपवयणस्स अहीयं। भद्धा मेणावासिणा॥ साह महात्मानइ। श्रेष्ठि श्रीवीतराग

ना।श्रासादप्रतिमा रहिइं जे प्रत्यनीक उपद्रव तु करणहार अनइ अवर्णवाद तु बोलणहार जिनाय नघणुं किसिउं अनेरुं प्रवचन आवा
नरागना शासन नइ अहितं विरूद्ध समवृत्ति बलि इधाण नइ ज कवइ वा बन्नु जिनशासन ना उन्नतिउं करि बुंमेद्द तुं रहेउ जाण
बता सक्ति इगो पवा इउ विराधक थई श्रवलो अधिक दि लगवन एमिथ्यावी कहे दृवानी प्रतिज्ञा कीधी बह एक वनमां तलो अरवेलो अधि
कद्दद्द बिंग।दिवडो एप रोहित नइं घरि मिउं छूइ बहति वार इअधिक कहिउं। एहनइ नवु अवास नापत्त बहा।तिहां राजा जिमवान
कृतरो बहा।तिहां थुबे कहिउं। राजा अवासमा हि जिमए बहसइ तिवार राजा नूनइहा थिसाहीं गनउ राषा कहि जेस्वामि नपक्ष विमि
ना हिवडां एअवासि पडिसइ इम कहिजे अकस्मात रबेवर्षा थुपडइ। तिहां युक्त तेणइ अधिक राजा जेतलइ अवासमाहि पइसइ तेतल
इराजा करउराषा कहिउं स्वामिन नदेइ हां मपक्षा विमिउ हिवडां एअवास पडिसइ जेदवइन कालअवासु पडिउ।तेहवइ राजाइक तु
उं एस्मिउं घटइ अहन नइस्थवे ज्ञानि इ कहिउं राजाइ दयह संसुक्षकरुक ने पगे लागावा तराग तु धर्म सबे डिजि।अधिक नइ ते परोहि त
नापदृवी राजा इ अयथा अधिक कहिउं स्वामि एणइ परोहितनइ चारित्रि आमां घइ पगमू किउं तेह उ।उपहनइ इहलो कि फल देषाड्यं इस्य
जाइले इ परोहित नहि इघालिउ केतला एक दिन कू आत अधिक कहइ जुगए अकनापगथो ईपाणी पीइ वसूं कं।तेणइ परोहित इमां निउं
श्रकनाच रण प्रह्मा लाजन लोकसमक्ष केसमक्ष पाणी पवराविउं।प्रतिज्ञा इमअधिक इं करी॥जिम ते हे महात्मा एसकार परी सहइ स
हि तु अनइ अधिक इनसहिउं।तिमनकरिवुं इति असकारपरी सहा॥४४॥ से नूणं मए पुव्वं।कम्मा णाण फला कडा।जेणा हं णाभि
जाणामि।पुट्ठो केण कण्हुई॥४०॥ सेउपन्या मे सेडा दूउप न्या स विशेषनइ विषइ वर्तइ।तेणइ करी प्रज्ञापरी सह अनइ अज्ञान परीसह
एबेह्न बिहुं अर्थ जाणिवा।प्रज्ञाघणी हुइ उगर्व नकीजइ प्रज्ञानथोडी ईणइ अधि विगाथा वषाणीइ।सेनूणं० नूनं निश्चितं मया पु
र्वजन्मनि कर्म्माणि कृतानि वर्तते।नूनं निश्चितं मइ पाछलि विज्ञान फलयामाइ इस्युं कर्म कीधां वर्त्तइ।।येनाहं नाभिकेना २९

कृत
भि कत्रापि पृष्टो जानामि जेणइ कारणि हुं कुणेनापिम तुष्यइं कुणेइ केनापि कणइ कत्रापिके णइ इस्यान्वननइ विषइ पूछिउं कुण वंदिवुं ॥४
अह पुव्वा उइजंति कम्मा णाण फला कडा। एवमा सासि अप्पाणं। णच्चा कम्म विवागयं॥४१॥ अथ पश्चात् अज्ञान फलानि कर्म्माणि उदेष्यंति
अथ हिव पूठइ अज्ञान फल कर्म ज्ञानावरणी उदय पामिसिइ। एवमात्मानं। अश्वासय निर्मलं कुंकेई णइ प्रकारि इ आपणउं आ
षवो। निर्मल कवि किसि कुवा किसिउं करी नइ कर्म विपाकं ज्ञात्वा॥ कर्मविपाक जाणी नइ इम वीनवाइ जे जाण बउ ते कर्म तु फल
दषेजा वगर्व करइ एप्रज्ञा गर्व परिहार परी सहजाणिवउ॥४१॥ हिव एहजि बिगाथा॥ प्रज्ञाह नपणइ षेद न कीजइ ईणइ अधि
वषाणीइ छइ॥से नूणं मए पुव्वं।नूनं निश्चितं मया पूर्वजन्मनि अज्ञान फलानि कर्म्माणि कृतानि वर्त्तंते।नूनं निश्चितं मइ पाछ
लि विज्ञान फलज्ञानावरण कर्म कीधां।येनाहं कत्रापि पृष्टो नाभि जानामि जाणइ कारणि केनापि केणइ कत्रापि के हइ स्थानकि
नइ विषइ पूछि उंहुं नजाणुं॥४॥ अह पच्छा अथ पश्चात् अज्ञानफल कर्म्माणि उदेष्यंति। हिव इपवहइ वलीषेदकरतां।अज्ञान फ
लकर्म ज्ञानावरणी कर्मसविशेष उदय पामिसिइ।एवमात्मानं आश्वासय सेतिएवं इम आपणउं आषवइ। संतापम धरिकिं कृत्वा॥
कर्मविपाकं ज्ञात्वा॥ किसिउं करी नइ कर्म्म विपाक जाणी नइ जुप्रज्ञानकुं इसुइ इमवीनवइ।वेजा वक्खे .दम धरि।किं कृत्वा एकर्म विं
पाक इम वीनवाषेद न कीजइ। षेदपरिहार परी सहजाणिवउ। अथ प्रज्ञा परीसह दृष्टांत माह। कुंजेणी इकालिका येनेह ना त्रिणि स्वा॥
अनि हिं भुमा दी कुआ जाणी मिथ्या तब आवक नइ कहइ पाप सहइ शिष्य सुकामु कु उवर्ममन्त्रिक लिविवा पूछुता।तिहां आपणा शिष्य
शिष्य सा गरवं प्रवेला करु हुइ उठूता।पणतेसागरवं दु उकउं नइं तल षवइ। उकएक पासइ आवी रहिया। सागरवंद इवषाण करइ
अनइ उकनइ प्रविइ।माहरूं केहडुं वषाण। उह्लेवउडा घणाइ ना वषाण सांभलि आछु सिइ। उकउं कहि आपा बह उउव षाण न
लज्ञं। तिम इउअमूडबल इ।कुंसर्व जाणुं। इमगर्व धरता सागरवंद पएवइ जे पूर्विइ उबेयावसप्रम हासा मासूक्ष्या वनानेणइ प्रसा

नसमयघयांइविंइपोसालमाहिथ्रेजोया।केहादेषइनहा।पवइशिष्यानश्रावकदेषइघूबिंवांकाईजांणु।थककिहांथ
ऊता।श्रावकिइकहिंउ।नज्ञेत्रमादाजाणानइतज्ञनइश्रमजाधिकांमूकाथ्यकथुवर्णाद्रमिकाइथुऊना।तेणइश्रावकि
इमहाम्याचारित्रनइविषइनिश्चलमनकरीथककडइमो कल्याणेपांचसइकालिकाचार्यउपविवारश्राववमानलो।मागर
वइनाइत्ताजाइ।तेमहाम्यामंघाड़ीकहइइद्रबिउंश्रा तलाक्रषीश्वरमांहिथकूकेहा।तेहवइमहा एककहिंउं किस्युंईहांनघ
श्राव्या।तेहवलतुंसागरविंइकहिउं।एकमिवबमहाम्याकोएकश्राविवबइ।तेहवइमहाम्याएककहिउं।सागरसघाडोउंमि
श्रुन्ना।तांश्रम्ञेयुक्तश्रवंपा।श्रनइसागविंइपाणिनंजांणपानउलघ्या।इमवांनवासर्वमहाम्याश्रावाथकषमाव्या।तिवारइथव
सागरनइकहिउं।उगर्वमकरि।सर्वज्ञिटलतसर्वसनउजांणा।कोनथी॥जिमश्रीकालिकाचार्यइप्रज्ञापरीसहसहिउतिमबीजेसाह
वउ।इतिप्रज्ञापरीसह॥२०॥।निरठगांमिविरतौ।मेहणाउससंवुडो।जोमरक्कनाभिजाणामि।धम्मंकल्लाणपावगं॥धरसाधुविरत्त
निविंतथेन।महाम्याइमनावा।तवइ।इत्तानिकिइमकिमनिवर्धकमैथुनादिकनससंवृत्ताअइजतो।इतिनिवर्धकमोहालावऊतइमै
थुनविषयथक्ऊवविरमिउ।संवृतइन्द्रिय।धनुसाहानकल्याणंधर्मपापकंवानजाणाेजेसाहानपुतन्हकल्याणकाराधर्मअथवापाप
नजाणउं।विरतिनुंफलक्कइनेपवफलकेइउंघूकिंसइस्वर्यहोसइनगरहीसइ।पीणजुनदेषुंउवनिरर्थकक्रियाश्रज्ञान
पणाइकंतइ।इमननावा।धजिनवचनमहइधर्मकीजइ।एश्रज्ञानपरीसहजाणिवउ॥धरतवोवहाणमादाय।पडिमंपडिवजउ।एवंपि
मेविहरंतो।छउमणाणिउठतो॥धरतपउपधानश्रादाय।प्रतिमापद्यतो।एवमपिमेविहरतलाछनविवर्तते।बारनेदितपश्राव
उपकादिकतणायोगविहवाउपधानतप।इसेनपश्रादरी।नइप्रतिमाएकमासिकाप्रमुखपडिवजानइ।एवमपिइ
णइप्रकारिविहरताबिहारकर्मकरतासउननइबदमस्थपणुनिवर्तइनही।तपकीधइक्रियाकीधइ।जिउप्रमाणइमवा ३०

नवइ।अथवाजइज्ञानऊइतुअतज्ञानपणुंनथीनेज।इमनिहांएबिगाधाइमवषांणाइ।निरठगंमिचनवोवहाणा।निरर्थाक्याज्ञानमहे
सानिअइंमैथुनादिरतसंवृतोस्मि।निरर्थकइंज्ञानमइंकिहांइमैथुनउविरतयसंवृतऊउं।यतन्माहानकल्याणंधर्मअथ
वापापकंनजानामि।जेधर्म्यपन्यापाणसपनजाइ।वकिसिउंगर्वबीजांगाथाउंकिजिमइजि।पणितावार्धइसिउानपुवपधा
नादिककरता।बदमस्थपणुनजाइ।वनस्थपणाइज्ञानउगर्वइमज्ञानगर्वनकीजइ॥धरअज्ञानपरीसहकहिउंतमाइ
।गंगापविबिलाईएविरागपूर्णकोहालाधा।तेइमाहिविहांसमवीविद्यापारांगतऊउ।अनइबाजउरूषिकुउ।जेविद्यापारांगत
तेविद्यानाउणाथकीश्राचार्यकुउ।अनेकराध्यश्रावकादिकअइअर्धविपारकाहिवस्त्रातिश्रानवेदशिनहस्ग।तिवारबढ्वा
नवइविहांसपाहिस्थूलभद्रपणुलव्युं।जेस्थूलभद्रपणामांहिआवहामलाउणा॥स्थूलवृंहिस्युरेवमसा।पिस्विवंयक्षिमनवउष्ठेथुणा।नि
श्वितेबद्धतोजनोपवदत्तरात्रौदिवारायक।।कार्याकार्यविचारणाधबधिरोमानापमानेसमः।।ध्यायेणामयेवडिंनिइटवउः
स्थूलस्वजावति॥११एहनोबांनवउत्तेणेथुउदेइज्ञानावरणा।कर्मकपाजिंउंबालवाथकालकमिद्रअउकमिशश्राकषानइ
अतिकालकरीदेवलोकिहुऊता।तिहांदेवतानासोहालोगवीआकषपूरीविवाश्राहारनइकुलिनअथकदापिनाइसिनामि
श्राइ।वऊउ।कालिइतेणाइदीक्षालाधी।तेणइउत्तराध्ययनयोगविहताविणिअध्ययनलीयां।तेहवइपाबिलानवउंबां
धिउंज्ञानावरणीकर्मउदयश्राविउं।तिहांबारवर्षमंबलकरी।श्रसमर्थयंअध्ययनलागिउंपणिउहिइथऊनावडिउं।बा
रमवर्षिमनइश्रानिज्ञानपरीसहसहताकेवलज्ञानऊपनुं।जिमतेणइअज्ञानपरीसहसहिउ।तिमबीजेसाहुवउ॥११॥अज्ञानपरी
सहा।एकवारश्रीस्थूलिभद्रविहारकरताबालमित्रब्राह्मणनइघरिलेऊऊताधरिजसौत्रीकहइस्थूलिभद्र।जोमकिहांगया।ति
हांवाह्मणनामन्त्रीइकहिउं।विजेगानअइअर्धगया।तिहांश्रीस्थूलिभद्रघरमाविषानाईनइपासइज्ञानिइकरीन्हमिगतनि।

नदेषी थांनुमाहसु ह्राषकना कहिउं ईहां इमनिहां तिमएवानंडुंकिमएवडुंकहां धूलिनइ पाडउ बलिउ एह वइकेनलेएक
दिवसेआमषिकडा मेइण घरिआ विउकर्मनावसउकाई द्रव्यलेइन्या विउं तेह वशानणा दो हुआ धूलिनइ घरिआ आउ पा बी
लुववं नानि कुलनांविनइ कहिउं आनी गाइवा ढूंगाइवा न विउं महा वस्तुनो पयोग ज्ञानी एहनू अन्यथा न हुइ एह वडं वा तवा ते
हांषणी जो इहु नानाप्रकारनं तस्तु वर्णलहिउं नीकलिउ दव्यनइ प्रमाण इं तेहमांहां सुषालूआ जइ धूलिनइ वाघो
स्वामी तद्भाराग्रमाद दषकी अहो सुषी मुउं आधूलिनइ हुइ ज्ञानपरी भइ तम्हे हि तिमनकरे वउं २१ इति अज्ञानपरा
मइ १ बा नविनूनणांय देलोए इहावा विनवक्सिरणा अदुवा वविडं मिति इति लिकूनविंनथा ४४ नूनं निश्चितं परलोको नास्ति
अथवा तपस्विन ऋद्धिन्नास्ति अथवा वंचितोस्मि इति भिक्षुन चिंतयेत् नूनं निश्चितं परलोक नथी अथवा तपस्वी नणी ऋद्धि
आमोसहि विप्पोसहि लब्धि नथी अथवा तपवा स्थादिक कष्ट करवा विउ बनवो धर्मनु फल काइ प्रत्यक्ष दीसइ नहीं लिहूं म
हामाइ मवी नवइ ४४ अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई मुसं ते एवमाहंसु इति भिक्खु न चिंतए ४५ जिना अभूवन्
जिना संति अथवा जिना न विष्यंति ते एवं मृषा आहु भिक्षुरेवन चिंतयेत् जिनतीर्थंकर अथवा केवली हूआ जिन वइ महा वि
देह क्षेत्रि विद्यमान वर्तइ अथवा जिन आवना तडवामाहि जिन हुसिइ ते महात्मा एवं इम मृषा जुठं बोलइ केंणजाणइ तीर्थं
कर हूआ अथवा नहूआ केंण जाणइ महाविदेह क्षेत्रि तीर्थंकर बइ कइ नथी केंणजाणइ आवता कालमाहि तीर्थंकर
हुसिइ अथवा नहीं हुसिइ एम महात्मा जिन पणि कल्पइ बा लिहूं महा मा इमवी नवइ जिनागम सहहा आज जिनहूआ मा नइ व
इमान छइ हुसि एसमकिति वउ परिपरिणामरूप परिसह जी तउ ४५ वंदे दुम्हे मिदेसी आषाढभूति आचार्य तेह घणा शि
ष्य भणावी गणावीया इम कहिउं हूं जे काल करिसु तउ हुं वेला देवता हुआ पणि एकइ वेलु आवी देवलोकनुं स्वरूप उ

ऋकहित

३१

कनइ नकहिउं तेह वइ वलो एक नाइ तु वेलु नाजामीवला तिमसि कहिउं इम घणा इ वेला नइ कहि पणि एकइ वेलइ देवलोक कु
पजवा स्वरूप आवी न कहिउं ते मइ बालक परा इ लालितपालितवा किं या कलापमाष विवा जु ठ देवता थाइ तउ अवश्य निश्चइ
आवी कहिउं तेह इ कालकरी देवता हुउ पणि देवांगनानाटकादिक सुषे लाग्यो तेहइ नावइ एहवइ स्युं कहुं मन परावर्त्त थू
यउं देषु सवेलु एहवउ मनकाल गा दउ वहूल तउ एतापणइ आवी कहिउं नहीं तउ महादेवलोकादिक काई नथी वइ स्लो
क नालोग मो चोकाइस्युं कीवउ इम वीन वीवा विवेष प्रवर्त्त विषगोपवाला पोसालवाहिर निकल्या तेह वइ देवता वेला हूं आ
सणा वक पड्युं तांति हां अवधिज्ञान जोइउ देषइ किमि उ मांडयुं केका वारि वइ कुनुकवबइ तेह लणा जई बूझवउ इमा
वीन वी देवता नामाया इवाटइ आवनाजाणी तिहां नाटक रचिउ तिहां घणा लोकनु समस्त दाय जोउ देषाय कौतिहां आ वा
ओवालागा तिहां बमासलगइ जोइ वला आघा चाल्या वली देवताइं संयमना परीक्षा जोवा नणी वाटइ बबालक सर्वालंकारइ
अलंकरिया विकुर्विया तेहवइ स्थविर विनाशीत जुइ हा मार्ग आवता तउ धन जोइ हू सो अनइ मनइ धन आगम नउ किसो
सइ उपाय नथी आवइ उपवालकाकहिना हूलो आवइ बहाउ एह नां आलरण लेइ एहनइ विणासी आघउ चालु एहवउ
चीतवी तेबालक छ ट विकाईया अपकाइया तेउकाइया वाउकाइया वनस्पतिकाईया त्रसकाइया एहवे नामे ते बालक
कबइ वृणा सांभगा समय उ हुइ आपणा झोला माहि बांधिया सकवली आघा चाल्या तेहदेवताइं तोर्थ या संघ वि कुर्विउ ते
हआवउ देषायुकवीहना पाया सर्वत्र समंकिता तेहवइ स्ते आवी थुरुवांदा कहिउ लगवन अम्हारइ कतारइ विहरवा उ
मवु ऊरुना ना कहि वा रकरवा तुम ननथी तस्ते अंतराय मकरु आज अम्हा रइ षप नथी इम कहि तोआवके हाथ वि
लगा झोला लेइ वोडा तेहवइ देषइ तउ बइ आपणा बालक नां नाम आंकित आलरण देषी नइ उक नइ कहिउं लगवन ए आ

स्वामीं प्रभु वनीं अध्यानरण। ते आहार साधु तउ किहां इम कहितुं नइ युक्त लोजिया। नयरीं नइश्या। देवता इ जो धउं उभवैनीं सर्वनी गमि
तां हजी काई युरमाहि रहितुं बइठा कइ सर्वनी गमितां तिहां कहिवा लागा। नगवन् वहतार इ इम कहिवा ग्रुगउं नहीं। उत्तमबीजा न
इसा हंतुं उपदेस दिवा अनइ जुदु हमेइ मकहि मिति अतकाण साधु मि। इम कहिताधिका केडिवा रही बूध्या। देव तानी माया धकी ता
कालक्ष्यारणम हितयुक्त नइ परालवक कहिवा ला। मातिवा बदुडथु स्केवा शरणा पडिवजितं। तिवारइ देवता इ जाणि तां गुरे सर्वना ग
मितं। पणि इ ओ बोधिबाज बहुतउ हजा वर्णवत काई नथी। तनतकाल स्यापणुं क पडगट करता हवे। नगवन् उत्तमे गमि धिका कहा
ता कल्याहंता। ताटइ आवता काइ दीठउं। तिवारइ युक्त कहि शाहणा एक नाटक जोयउं। नगवन् संवेगवइ ज्ञान हाष्टि जोवा ते दिन
अनइ आजु उ दिन निरति जोउं। नेह वइ युद्वेस् पं मउलद लाणायक उत्तरायणा ऊ। चदाव उ ात मास संजा नक ऊ उति हांदे
वता एक ऊा नगवन उत्तनइ नाटक जो तां छमास एक दाणा आयह गाउ इहते देवता देवलोकना नाटक एकवार विमह
च वरस रहइ मरहवाना नाटकनां सुख मूंकी। किम आवूं इम आपणु अण आविवा संस्वरूप जणाव्यां। धर्म स्थिरा करणा
देवता दिव्य दिफलन दिषाडी देलोकि गउ तत्र आचार्य इ मुंवा रिउ फल जाणा। हवे वीर वाला सूग निगमा छुया। जिम आषाढभू
ति आचार्य परिसहि लंदउं नयरी सहन सहिउ। तिम नकरिवउं। पवइ जिम परी सह सहिउ। तिम बीजे साहिवउ। २२ परीसहाध्ययन
कथा ॥२७॥ बा। ए ए परीसहा संबैका सवेणा पवेईया। जे भिक्खू विहन्नेद्य। पुट्ठो केणइ कण्हुई त्ति बेमि॥ ए ए ते परीसहा का श्य
पेन प्रवेदिता। एबावीस परीसह का श्यप गोत्र संघु त्यत्रा श्री महावीरइ प्रवेदिता। उपदेक्षा के हि था तिक्षुयान् एतान् परीषहा नृक्षा वा।
केना पिक्का पि स्पष्टा पि न दन्येन निक्षु मर। सा जे परीसह जाणी न केना पिक्कणा कंपरी सहि क्का पि कुण क्षा घ्रानकि फरि
भितं मा ते उनविहन्येत। संयम वसूं कइ नहीं। प्रमाद न करइ। इति समासौ बेमि। इति ईणइ प्रकारि बीजाध्ययन तणो स ५२

मासिमउक्षी निबोलितउं श्री सुधर्मस्वामि इ जंबूस्वामि प्रति इं कहितउं बइ। बा। इति द्वितीयाध्ययनन अर्थलेश ॥ बा। २। चत्तारि परमंगा
णि दुल्लहाणीह जंतुणो। माणुसत्तं सुई सद्धा। संजमंमि य वीरियं॥ इह संसारि जंतु जीवनइ च्यारि परमांगा निइ दुर्लभ। निव
र्ति। का। मिरमानुषत्वं श्रुति रश्रुत्वा संयमे वीर्यं। धर्मानुष्ठनि विद्यमान हाथा तमाहा। चुल्लग पासग धन्ने जूए रयणे सुमिण
चक्के य। चम्मजुगे परमाणू दस दिट्ठंता मणुयलंभे। १ कांपील्य पुरि ब्रह्म राजा। तेह नइ चक्रवर्त्ति नाम प्रवर्त्तिउ ब्रह्मदत्त बेटउ
लेऊ हुउ बडा हमि ब्रह्म राजा परलोकि हवउ। वलणी माता इ राज्य संघलउं आपणा आयति कीधउं। एह ब्रह्मदत्त लणी विषयाधिदा धिप्र
धान बिकी विषयनी वाही दीर्घ प्रधान लक्ष्मी। ब्रह्मदत्त ... जाणी राजसला माहि तेभावी ... देष ना राजा ... काणि णासि
तं। संयोग करी ब्रह्मदत्त कहिपाप्या उपजान जाणी मि वंसंबंध अणमिलतु काई मेलु ए अन्याय ऊनहीं सामऊ। एहवी अनुक्ति दे
षानि वारइ ते प्रधान नइ ... काऊ पनी सही यणइ ब्रह्मदत्ति इऊं वलणी मिवं अणा वार मेकव जाणि ता दीर्घ मति तइ बाइ नइ च
लणा नइं कहिवं। आज पबा आपणी घाति रहा। जव ला रह बहमइ का जव बेटउ विणासि। जेइ तणी ब्रह्मदत्ति इ एहवां चिह्न दे षाडि
यां। तिवारइं राणी इवी नवित्रा। तिम करे सि जिम पइ ऊं विणासेसि। वलणी इ ब्रह्मदत्त एक कन्या पाणिग्रहण करावि उ। नेतु लाष
संध लक्षर कराविउं। एहवइ जे पाटल क जू ना प्रधान नेते हवलणा उआलि प्राय जाणि ता देख विमया धधिका एहवउ नइ या रुअ करि
सि। पवइ नगर बाहिरि विधिका प्रच्छन्न पणइ मध्य वर्ती प्रधान नइ खणावी लाष नाधलेइ वलगइ ए इवत्तउपाय स्वी। ब्रह्मदत्त नइ प्रधा
नि पाटलु कबइ तेणइ कहिउं। माहरी मातउ ऊ नइ मारिवा नइ अर्थि लाषतुं धर करावितं बइ। सो जान मा नइ। बोमरुक बो मरुक इ पणि
मा विन विन उनवा बइ प्रधाने कहि संवा मा कऊ अव ते वान षरा। जुकाई ईणाइ घरि जहीं इम ऊ ते ऊ इ सूंता सा वधान रहियो का
ईवा कुंडु पडइ उ आ या इ पामइ या हूं देई सुरंग उंछार कघाडी नगर बाहिर आवियो। अष्ट सुरंग ना पला णा माहि तमा जकी मूंकाइ बइ।

॥उत्तरा०
॥बाला०

DR. BHAU DAJI

नल्हदेशांनस्वालियो।एहवइ चलणी इमकहइ नजोव नावीकहिउं।अहो उत्तरदत्त नवपरणी नववउ।आ उत्तरदत्त नइ मकह नवीं वडुआ तु
निद्राकरिवा वइरानिद्रा आव्याइ।आव्या पछी नेकहिउं कुंतं सावधान रहिजे निवा रइ पुत्ररत्नदत्तं वा नवइ वइ।तइ कमलावि इआ सु
आविइ पाने किमि उपद्रव कूमि।एहवउं वानव इवइ।एहवइ अकन्या नू पापनाउ छिद्र माता आ श्रितयो गकाधु।एहवइ अग्नि
नायो गमक्षउनकालयारूदइ श्रंगनी कुलइ।अश्ववडीनाकलइ।देशांतरलणी केतली एकभुइ उलंघी वनमाहि आवी विश्राम
बांइहेठलि नरसलागो वइ।एहवइ देशांतरा मार्ग को एक ब्राह्मणपाणीनालाजनमाहि तनिद्रालणी विश्रामलेवा रहिउ।ब्राह्मण
निइ पाणीमागिउ।तेणइ आवमरिपाणी पायउ।काइंक इमलिफलादिक दीधा ते आल्याव लेउब्राह्मणनइ कहिउं जउमकन इज
म्हारइ करइ राज्य हुआ।तलइ उ।तंमकन इमलिवाकांपि तिइ विपाटणि आवी मिलयो।इमकही ब्राह्मणवि सज्यो।तिहां थकी केन
लइकालि तोपयोगपोकिका।वषर्ड साधीव ककवर्त्ति पदवीकपाजी।मेलावु मेलावी आपणा नगरलणी आवइ वइ।एहवइ वलणी देशा
न्यामली घउ।तेत्रणा वावारी विणामा।दिग्विजयकरी आपणइ राज्य वइठउ।तेहवइ ते ब्राह्मणइ ब्रह्मदत्तराजा हुउ।सांभली नग
रमाहि आवि उ।घणा काइं उपायकी धा।पणि तेनइ ब्रह्मदत्त राज्य हुं दर्शन किमइ न लहइ।एहवइ नगरमाहि बुद्धि पटअ गिणपू वइ।बु
द्धिनेदेणहारे कहिउं जउ अह्मनइ लाषदीनार आपइ उअहबुद्धि दिउं।पवइ ब्राह्मणिइ कहिउं जुराजदर्शनकिमइ हुइ॥ बुला
षदीनार देवेनइ हुआ।तिका रइ बुद्धिहि नइ देणहारइ कहिउं।एकमोटउलेबायमान वांस लेइ वाटमांजुओ।दूटो षासडीलेइ ते
नो मालकरी वांसडानइ अग्रि वलगाड।राजमार्ग अइ वांसउक अबुराषी रहे।एहवइ राजा आवतइ वंशदृष्टि।पडिसि अतिनहुं
आश्चर्यविषाकअबुरहिसि।इ।तिवारइ उचं आवास आ वादिदेजे।एहवउउपायकरी राजइ जेनइ मिलि।अहो विप्रमागि तुम्ह उ। ३३
वलेउ ब्राह्मणकहिस्वामीघरिजइ स्त्रीपूछी आवुं।राय नइ कहिउं जावहिलउ पूछी आवे।ब्राह्मण घरिआवी स्त्री कवइ पू

बइ।दहिद्रीये अंगणास्पदिरिराजा रुंदरशनहुवुं।राय तुंम्ह पहव बइ कुंउ कनइ पूछिवा आवि उवांकहिनइ शिसंमागंगिमिन।तिवार इस्त्रीवो
लवइबहुरु पस्याम अघवाबा जइ का ईमागि मिउमकन इमानमि उपरणा मि नहीं।नवनेइ कउंकाई मगावउं।जेणइ नपमरहइ नएजा वइ।
एहवउ श्रीद्विवार काढिवा लागा।आपणपे ब्राह्मणनीजा तिआमला।जद्ध दिनांवेव रउकणाकरइ।जुधन धान्यमागइ।इ उस
घलुं इव्यापार घरस्तवला किउ जोई इ।स्वामी एकपरि बइ।शनस्ते जइ मयूआन गरमाहि दिन प्रति घरिघरि वाहिहाडीपणा श्री
घर जेतलं राधि उं अन्न अनइ केवडोनार परनल अलावाणेणइ जइ राजा कहइ मागिउं।राय इकहिउंसिइ कअलाग पड्
षरयार्थिमबुही ब्राह्मण एहवउं मागि उं वलतउं कहिस्वा मा उत्तममुदिइ उ अह्म एतलइ वलीया यलराय इहीलणी।जाउ नग
रमाहि कन्जा जेरा पुत्र आदेस एहवउ बइ।जे ब्राह्मणनइ घर बदीवव के कंजिमण अनइ एकदीनार आपिव उ।वलतुं विप्रकहि
स्वामी जुपाहिलउं लोजनबसे जमउ तेहवउं आषु पहिलामकउ रुउ हस्ते आधुउबीजा परिक्माली मानइ।तिवारइ कहिउं वउकवे
र्तिउं जिमणनइ जो वांछनहीं।अह्मराजिमणा टलतव्रीजउ श्रवा कूंजिमणालिणिवा रइ।लाग्य हीन ब्राह्मणजीननास्वादविउकन
हिस्वामी जेउंपायसाथीरस्मवालापगाइनाउधघानापरमानना पाइ बइ नेमाहरा सुकरबनइजिमाडि।राइं अनेकपरि विप्रबु
झिउ वकहिमहीएउवुं जिमणअपणा हारनहीं।अनुक्रम करकरू बउपवइ मध्यान्हकालिषोरल रिउंलाजनश्रापिउं
घरि जइ एपहिलुं स्त्री वडा वोजिमा। एतलइ अन्नवकवानि टालोऊणादिनजीर वाइ ननु कालअजीर्णपीड्त तफपाम्या। ब्राह्मण
सहस्वाननविउयणाइराजाना विषमि अनकरी लोजनश्रालि उं।अनइ माहराकुटुंब म्हतफपाम्या।तेन इजिमणदेवव इसानुव
लीन मिलइ।अनइ मिलइ पणि मनुष्य जन्मलहीजो णइ पमाहि हारिउ।ते वलीन लहइ॥१॥ पासगइ थान्य वाणकूउ॥
पाटलीपुत्रनगरविनंदराय जीपाषा णाक्यनामा मित्रलगो वंसउ पमरा जा राजापवइ कउ नि साव धउमराजा राज्यकरइ।तेनन

ष्वाणाकेप्रश्नतएहवइरायनउलंडावृवक्षावावा॥ निईहैनिवाणाक्यइदेवनाआराधिवादेवनाइंयासाध...प्राकहिउं॥एयां
सावक्रीतेहारमिनहा॥तेदेवमादत्तपाआलईदानारेलरिउत्वालआणीमलाइआवीवाणाक्यअनेरारायमंडलीकवडाक्ष
प्रतिइकहिा॥आपणीमाबयासेरमाइजुउल्लेजीउवबालनासघलाइदानारवज्ञलेयो॥अनइकुजीउंउमकनइएकेकं
दानोंआपियो॥एहवुउंपणकाधुं॥तिवारइंतेहेवांनविउं॥जुजीपामिइउघएपुलानअनइहारामिआवोडंउयानइ...सग॥एहवउं
वीनवीनेवाणाक्यमितंरमवालागा॥पणितेसघलाइहारइइमसर्वमनुष्यमवीवारहार्याविउं॥दानारलेइंवाणाकेइलंडाबइ
मरायवउइमनविउं॥देवनादत्तपाआनइअनउलाविइवाणाक्युरमनउहारइअपिउनहारइ॥पणि॥किवारइदेवतानामा
निध्यथकोतेहइहारइ॥पणिमनुष्यजन्मानरप्रमादिइहारिउंवलीजावनलहइ॥४॥ त्राजउदृष्टांतधान्यनउकहइ एकदेव
नाआपणीदेवशक्तिइंअढीद्वीपनामनुष्यक्षेत्रनाधान्य चउसाठिविदलएकत्रीमउदनादिकसर्वधान्यएकत्रकरी ढिग
करइ॥तेहरुक्षउवरसनीडोकरीमराजलोडा॥अमसघलुंधोइउंहइएहिवलतेइतनइकोएकदेवतासर्पडउंआपीकहइ॥यथा॥
...सर्वएकगांमिलियांबइ॥तेतनउजूजूआकरिउंतीणइलविन॥णइडोकरीइतेधान्यजूजूआकइआअपिउनकइ॥तिममनुष्य
जन्मतेणीडोकरीइकिवारइजूजूकरीइ॥पणिमनुष्यजन्मानरप्रमादिइहारिउवलीउनलहइ॥५॥ वसंतपुरनगरि
जितशत्रुराजातेहनइधारणीराणी॥तेपरबस्यविहइराज्यनइलोमिइराजानइमारूंचाबनवइ॥तेहवइराजाइकहिउं॥पुत्रनइआपणी
आम्ब्रानसतानइंअठोत्तरसइथांभा॥तेणइथांभेअठोत्तरसमोहिससांमिबइ॥तेजूरमतांएकइदाणाइएकइहासिइमकरतांय
कलगइतइदाणाइएकथांभानाहासिअठोत्तरसहिससांमिइमवडतां अठोत्तरसइथांभा॥एकलगनइदाणाइजीपइ ३४
तेहनइराज्यआपउं॥एहवउंराजानुंवचनसांभली॥तेउत्वदीर्घियो॥तिहांसघलाइंजूरमवालागा॥एहवइजूरमतांकिवा

रइदाणाबिनघाल्यारिदाणाआवइतिवारइंतेहनइविजोषरमलागइ॥पुणकिवारइएकलगइदाणाइजिमराजाउंकवुनबइमि
सतेणाइपुत्रिइकिवारइतेकहाइकिमतेआंबानसताजीपाइ॥आपिउनजापाइ॥किवारइतेजीपाइ॥पणिप्रमादइहारिउमनु
ष्यउजन्मांतरवलीनलहइ॥६॥ कुणएकव्यवहारीउमहालोना॥अनेकअमूलिकरत्नएकठांकरीमंजूसमलइ॥तालीदेईने
कइपुत्रपरिवारादिककहिनइवामासइनहा॥तेहवइकुणाकुएकआपणुकराईकेहइएकइगामिप्रउमालललीतउवा
हिउतिहांगामिगयउ॥तेहवइपुत्रविइपरदेसारत्ननांग्राहागआव्याजाणीतेव्यवहारीयानेपुत्रेरत्ननीमजूसउघाडीतेरत्नमूल
करीरत्नउद्रव्यरत्ननाग्राहागकनइआप्या॥तेरत्नग्राहारत्नलेईजूजूआआपापणेदेसिगया॥तेहवइकेतलेएकेदिहाडे
तेव्यवहारीउघरिआवीमजूससंभालइ॥उमजूसमाहिरत्ननहा॥तिवारइपुत्रप्रतिबिया॥पुत्रेकहिउं॥ग्राहागघणाआव्याजा
णीअम्हेवेच्या॥तिवारइअम्हेषिइकहिउंमाहरामेलियामाहरइअणाकदिकांआप्या॥हिवउत्तेमाहरइरत्नवहिरयोजुमाहरा
रत्नआणु॥तिहांथकांतेपुत्रग्राहागजोवारत्नलेवादहोदिसिइंजाइपणितेहपुत्रेसरत्नलाइपावांठामिआवइअपिउनावइअ
थवाकिवारइतेहेगामिनांवामिनोहेपुत्रेतेसघलाइरत्नआवइपणिमनुष्यउजन्मांतरप्रमादिइकरीहारिउंवलीनपामइ॥
७॥ कुजेणीनगरीइराजाजितशत्रुउंतेतेत्रमूलदेवकुमारमलाकुशलाजूरमवानोव्यसनथिकुबापिरोपेलविकुउदिव्यादि
कानइप्रनाविइपाडलीपुरिपुउछउ॥रूपपराववर्त्तकाधउंतिहांतेमूलदेवकुमारनावीणावजाडवानीआनिइकलानइहामाल
लीदेवदत्तागणिकाइवेटी॥तेकुमारतेडवामोकली॥तेणाचेडीइंकुमरनइकहिउं॥उम्हनइमाहरीस्वामिनीतेडिवइनि॥वार
इकुमरइमकहिउं॥णविचित्रविदाफानिग॥उहिइपणितेडीइंपनेकविनयवचनबोलीघरितेडिउं॥तिवारइदेवदत्ताइमधुरो
वचनेबोलाविउं॥अहोउत्तमअनूपआपणुंप्रगटकरि॥तिहांगणिकानेवचनेरइजिउंउ॥आपणापणुंप्रगटकीधुं॥तिहांरवि

॥उत्तराध्य०
॥बाला०॥

आ तेहवइ एकवार अचल विवहारीउ आवितो तेहवइ अकांइ कहिउं नहीं अचल व्यवहारीउ राय निं निर्धन मूलदेव प
रहउं मूकिउ। तिवारइ देवदत्ताइं कहिउं एह मूलदेव निर्धन नइ अउगुणवंत बइ अनइ अचल धनवंत नइ अनइ निर्गुण बइ तिहां इका
इ कहिउं किम जाणी॥ तिवारइ देवदत्ताइ अक्काइ बिहु जणां तेडावी स्वरूप जणाववा वांछाणी। बिहु कहइ मेलडी आणावी तिवारइ अच
लइ एक गाडलु लाभ मूली मेलडी वइस्साडिनं आणी नषावी अनइ मूलदेव कुमर बिहु बोली कातली करी छाबडी मेलडी आणी॥
आपी। तिवारइ देवदत्ताइ अक्का नइ कहिउं ए बे विवेक जोउ कपट अनइ निविवेकिवे पणु जोउ जे अचलइ हीरवी आगलि जिम नाखी आणी।
नाषी इति मनाषी। मूलदेव कुमरइ बोली कातली करी जिम लीमाणी मनइ आयाइ तिम आणी आपी। तउइ अक्का नइ अचल व्यव
हारी याउ यत्रालवि जूमूलदेव कुमर वेयं नादे तेलणावालितो तिहां वाटइ जातां एक ब्राह्मण मिलिउ साथइ वालइ। जिम ए वे
लाइं ब्राह्मण नालेजननी आमघु तिवारइ पबी कवघइ दिहाडइ एक गांमि तेह मूलदेव कुमर नइ भूषि दिषी अइ हनाबाक
ला कणइ कहइ दीधा। तेबाकुला लेई गामि बाहिरि आवतां महात्मा देषी नावक पत्र जाणि वालबधा इणु सांतु तपां इम
वानवी तेबाकुला दीधा। तिहां मूलदेव कुमर वहीर्षि जइ तुनाव इसु षिइइम कहिउं धन्नाणं खुनराणं। कुम्मासा कुंति
सा कुणा वराया। तेक्वन्सांलली देवी नामहिमा षिकवन देवतां कहिउं आगिलि बिहु पदे जे काईसा वइ वइ इवाकुइ तेमा
गि। तिवारइ तिहां मूलदेव कुमर कहइ। गणिआं देवदत्ता इिभिस हस्स रज्जं च॥ १॥ तिवारइ तिणइं त्रिइ मूलादेव कु
मर नइ एकका पडी पकडइ देवल सूतां तिहां बिजं जणे अक्लणोदय वेला इसोलकला संपूर्ण अमा कवत्रवं इमा आप
णा मुख माहि प्रवेसकीध उदीउ आपइ वइ तेबि हइ जाग्या तिहां मूलादेव कुमर कूलत फलाल ईस्वप्न पाठक कहइ जइ वि
धिपूर्वक पूछइ। तिहां स्वप्न पाठक कहइ ओहो उत्तम पहिलु माहरी कन्या परणी पछइ सुहणानुं विचार कहुं। तिहां बेटी ३५

आपणी परणावी। पछइ कहिउं तुम्ह नइ आज षिकां एसुहणानइ प्रमाणिइ सातमइ दिनि राजकुमारि तिहवइ कुणांउंएक राजा अपु।
त्रीउ मृत्युयांमिउ। तिवारइ प्रधाने पांच दिव्य मंत्रीअ वेस्सूक्या। तेह्यां पांच दिव्ये देव ताना अनुभाव षिकु मूलदेव कुमर नइ राज्य दीधउं
तिवारइ कुतेणा षिका देवदत्ता गणिका आणावी। सुखिं रहइ राज्य करइ। इवि तेका पडी ते सुहणा नुं आपणा सुखि किया रकरइ।
आज एक मोटउ एक रोटघा। उलमां दिन तिसालरहिम। इमयवा नवइ कुंनइ पुछि स्वप्न विमासिजं ने स्वप्नं जिलाधउं तिवारइ पबी
कहइ कुआगलि कहिउं। तिवारइ तिणइं कहइ ए सुहणानइ फला विडंराज कर। बइ काई आपणु छिइ विमासिउं मूलदेव कुमर न
इ एसुहणा नाम हिमाषिका राज्य पाम्यां। आप सुसंघा तो मूलदेव कुमर नइ राज्य फलउंआ। नलते आणइमनि अंते नाषधवइ। कहइ
आप पुछि स्वप्न नकाइ विमासिइजं। तिहां षिकु तेका पडी राज्य वांछइ वलइ इसु जाणइ वली केमपडुं सुहणुं लडं। इम वांछइ वइ
नेका पडी राज्य वांछइ। ते सुहणुं किम लइइ। अपि उनल हइ। कहइ अथवा किंवा वइ एक कापडी ते सुहणुं सुहणउं लहइ। पणि न
लहइ। इम मनुष्य जन्मांतर प्रमादि करी इ हारिउं वली न लहइ॥ ६॥ चक्केति॥ इंद्रपुर नगरि इंद्रदत्त राजा तेहनइ बावीस बेटा तेह वइ
राज्ञाइ मंत्रि पुत्री परणी तेहनइ तु रजस्वला तेइ तं सुरेंद्रदत्त नाम दीधउं। काई एक वचन बलि राजाइ तेहं परिहरी। पाहविरक्की व
डा अनुक्रमि मंत्रीअ विइ आपणा बेटी तु बेटउ वलणा। वितो। बकतरि कलापा सीणकु। तेहवइ मथुरा नगरी राजा जितशत्रु
ना पुत्री नह निवृति कन्या तेइ मकहिउं जे राधावेध साधइ जाण मि ते परणसि। तिहां षिकु जितशत्रु राजा राधावेध मंडावितो। तिहां देस देमू
ना राजा कुमर वते आवी या तिवारइ इंद्र दत्त वनगरि षिकु राजा आपणा बावीस उत्तरलेई आवितु तिहां मंत्रीअ वइ पणि बेटी बेटउ वले
ई तेहनइ तिहां आवितु देस देसांतर ना राजा कुमरस्यु नेइ राजा जितशत्रु राजा तणा बावीस पुत्रे राधावेध साधइ जो यउ पणि कुणइ
इन साध्यउ। तेस घला इ कुमरवत गांमा वीत्र कालगुषां कस्यां। तिवारइ मंत्रीअ विइ कहिउं। स्वामी जाकुं पुत्र माहरी ओजि

॥उत्तरा०
॥बाला०॥

णिउ।तेपणिअहींमसमाधिइआविउबइ।तिवारइराजाइकाहिउं।तेतेडीआवउ।तिवारइमंत्रीश्वरिइतेउत्रउगटकीधूत।
नाणाइंकेमारिइनकालराधावेधनइस्तंभलिजई।तेलनीकडाहीमाहिनीचउंजोतां।ऊंचाखूंविंधवउ।मऊआराहुंकतेहमाहिं
मोलआराश्रेष्ठिइफिरता।मोलआरासंहारविइफिरता।तेरेआरेबत्रामच्छतली।तेहमाहिलीबत्रीममामूंछतली।तेहनीडावीआंषि
नीकीकीवाधी।इममसइकोइदेषतां।तेराधावेधसाधीजयवादलेइ।तेनिष्टतिकन्यापरणी।राजाघणानइहर्षहूउ।जिमतेय
इंसुरेंइदत्तकुमारिइएकवारराधावेधसाधिउ।तेहवुवलीरथकिमितसाधइ।अपितुनसाधइ।अथवाकिवारइजिपणितेहइसाध
इ।पणिएकवारत्तनवलहाजुधमा।दृष्टांतवलवैतनलवइ॥७॥कुम्मा।गंगानदीतुमहइचउजोआणप्रमाणइहइ।तेसेवालइसथ
लुइढांकिउ।तेहवइएकवारवायनइयोगिइंसेवालपाडइ।ऊइएकइइकइछिद्रइकाछिवइंसुइकाढीजोयउं।तेरवइनक्षत्रताराअ
मावाशानाचंद्रनाआकाशदेषीवानविउ।एकाईअपूर्वफलक्ष्या।मादर्शनकुटंबनइदेषाडउं।एहवुंजानवांकुटंबनइतेडी।जिमजिह
हमाहिउंजाइतेडीआवइतेहवइतेनिमजिसेवालिइसेवालवायनइयोगिमिलिउ।तेकाबबउनेइहमाहिक्किकवली।किवारइसइआप
णाकुटंबसहितनेहवुफलितक्षलितनेहवुआकाशदेषइ।अपितुनदेषइ।अथवानेहेकिवारइदेषइपणि॥८॥जुयेन।कोएक
देवतादेवशक्तिधूसरूंपूर्वसमुद्रलेईनाषइ।अनइसमिलपश्चिमसमुद्रिनाषइ।तेसमिलआपहिणीधूसरइआवीबिसइ।अ
पितुनबइसइ।अथवाकालविशेषइतेइसमिलतीणइधूसरइजइबइसइपणि॥९॥एपरमाणु।कुणएकरूपणी
इआजन्मकालधनऊपार्जी।तेरतारत्नलेइथांभुकरावइ।तिथांभुदेवतानावाटीवत्तासंलिविशालनकरी।सूक्ष्मकरीनलीनरी
मेरुपर्वतऊपरिविडाए।मसवायकिऊरवीनेरत्नचूर्णउडाडइ।तेहवइतेरूपणदेवतानइआराधीकइ।अहोतेहजिरत्न
नायरमाणुआजिहांरडइतेतिहांथीलेई।तेहवाजिरत्नेकरीतेहवुथांभुजोडीआपि।तेतिणदेवताइंपेतेरमाणुआनावमेली ३६

तेहवुथांभुतेरूपणनइकरीआपइ।अपितुनापइ।अथवाकदाचितकालविशेषिइतेथांभुकरीनापइपणि[illegible]
पामइ॥१०॥इतिदशदृष्टांतानिज्ञेया॥१॥ समावन्नाणसंसारे।नाणागोत्तासुजाइसु।कम्मानाणाविहाकट्टु।पुढोविस्संभिया
पया॥२॥नावाकुयालेकारेभ्रजालोकाएषकविश्वत्ततोवर्त्तते।णगाइतिअस्यइवाकुयालेकारिभ्रजालोकेजूजूयेविश्वतबइ
इस्याववर्त्तइ।किं०अत्रजातःसंसारेनानागोत्रासुजातिषु।समापन्ना।संसारमांहिजूजूएगोत्रेजूजूजातिइसमापन्नालहीणा
इ।पामीबइसालोकः।किंकृत्वा।नानाविधानिकर्माणिकृत्वाअनेकप्रकारेजूजूएमानेजूजूआकर्मकरीनइ॥३॥एगयादेव
लोगेसु।नरएसुविएगया।एगयाआसुरंकायं।अहाकम्मेहिगच्छइ॥३॥जीवएकदादेवलोकेषुगच्छइ।जीवएकदानरगे
षपिगच्छति।जीवएकदाआधाकर्मभिःआसुरंकायंगच्छति।जीवएकदा[illegible]कर्मनि
णइकरीआसुरीकायगच्छति॥३॥एगयाखत्तिओहोइ।तओचंडालबोक्कसो।तओकीडपयंगोय।ततोकुंथुपिपीलिया॥४॥
एगयाजीवःएकदाक्षत्रियोभवति।ततोचांडालोभवति।ततोवर्क्कसोभवति[illegible]मलिनवर्णकुइ।
अन्यजाति।पुकसतेहजेउत्तनन;कीटपतंगोभवति।कुंथपिपीलिकाभवति॥४॥एवंमावट्टजोणीसुपाणिणोकिम्मकिव्व।
सा।णणिवज्जंतिसंसारे।सव्वट्ठेसुवखत्तिया॥५॥एवंआवर्त्तयोनिषुप्राणिनःकर्मकिल्बिषिका॥संसारेननिर्विद्यंते
॥५॥कम्मसंगेहिंसम्मूढा।दुक्खियाबहुवेयणा।अमाणुसासुजोणीसु।विणिहम्मंतिपाणिणो॥६॥प्राणिनःअमानुषासुयोनिषुविहन्य
ते।प्राणीयाजीवमनुष्यरहितयोनिमाहिहणाइ।किं०प्राणिनःकर्मसंयोगैःसमूढाःकर्मतणइप्रसंगिइकरीनइमूढमूर्खाबइ।कि
दुःखार्त्तिकाः;किं०प्राण्बहुवेदना॥६॥कम्माणंतुपहाणाए।आणुपुव्वीकयाइउ।जीवासोहिमणुप्पत्ता।आययंतिमणुस्सयं॥
७॥तुपुनःकर्मणांप्रहाण्या।कदाचितजीवामनुष्यत्वंआयांति।तेपणिकर्मतणाइनाशलगाइ।अनुक्रमिहणतणाइआपतणा।

॥उत्तरा० ॥बा।ला०।

ध्या॥ तिहां नइ कदाचित् नरग। किवारइ जीव मनुष्य पणउं पामइ। कया आउखइ व्यां। किसिइ करी नइ अनुक्रमि। पाटइं करी नइ। किं जीवा। सोधिअनुप्पाया। कर्म तणी सोधि पाम्या बइ। मा्णुस्सं विय दुल्लहं। मुइंध म्मस्स ऊहइ। जसो च्चापाडिवज्जंति। नवंरव निम हिंसयं॥ जे जीवा मनुष्य पणुं विशुद्ध देहलह्या धर्म सांभलिउं। उर्लना यंध मसुचा। तप क्षान्ति अहिंसा प्रतिपद्यंति॥ आ हम्म सवणं लद्धं सद्धा परम दुल्लहा। सोच्चा णे आउयं मग्गं। बहवे परिभस्सइ॥ एकदा वितस्स वर्णं लब्धा पवं श्रद्धा धर्म्मसु दुर्ल भा। यत् यस्मात् कारणात्। नैयायिकं मोक्षमार्ग श्रुत्वा। बहवो जीवाः परिभ्रस्यंति॥ श्रोत्र समति निह्नव दृष्टांत माह॥ बहु अरजमालि प्रमुखा। जीव पएसा य तीसगुत्ता उ। अव्वत्ता सामुच्छे या सुमित्ता उ॥ १ गंगा उ दो किरिया। बहु राते णा आसु उप्पन्ना। वेरा यत्रउ ठमा हिल। ऊवृमबइ पक्ववंति॥ जे उत्कृष्ट सत्य माहि निवर्त्तइ। ते अयोगि कर्म ना पत्रिधिकी॥ एवा निह्नव दृष्टांता। आ जीव गम तेषां रछ। सिविपड इ दिन जय माली। दियमप्पणो करंतो। नयवय णिंछेइ दयडंतो॥ ओ जाव० बा। दावे पमाहि। जि। जीवइ एहलणा। आ जी वा निह्नवकइ। इत्ते निह्नवना उत्पन्न सहस्रमाहि नेता नायक हूलउ। रद्ध। कि वि० श्री महावीरनु जमाइ एवड़ी एव डी राज ऋद्धि। बांडी दीक्षा लेई। सिद्धांत पढी नइ हीअ अप्पणो करंतो। जआपणुं हित परमेश्वर नुं वचन ऊथाप तन हो। आपणा ई कदाग्रह रका। विन वा हो ततनयवय। णिजि० वचन थापतो इहलोक माहि अनइ आमिनि। मास आविपडतो तंदाघपणउं नलहि तो॥ कथा॥ कुंड नगरि नगरि श्री वीर नइ सुदर्शना नाम बहिन तेहनु पुत्र जमालि इसिइ नामि। श्री महावीरनी पुत्री जमालिपरणी तेकमिइ अनु क्रमि तेणि श्री महावीरनी वीवाणी सांभली वैराग्य प्रियदर्शना नाम नी कलत्र सहित श्री वीर नइ हाथि दीक्षा लिधी। इग्यार अंग ना ण्या। जमालि पांच सइ सहाय्या नइ परिवार इसिउ। आर्य्या प्रियदर्शना नाम हासत सहस्र साध्वी नइ परिवारि परिवरी आगमना णा हा हूई। एहवइ एकदा परिवार परिवरि उ। श्रीमहावीरनुं वचन लेई श्रावस्ती नगरीइं गिउ। तिहां तिंदुक वन माहि कोष्टक यज्ञ नइ ३१

तवनि जमालि कत्तलिउ। एक वार हो क्षठिउ। ज्वरपीडित श्रमनि वइसी नसकइ। तेह वइ महात्मा नइ कहिउं संथारु करु। इम कहि नइ महात्मा ए संथारु किविउ। आ रंभिउ। तेहइ वली जमालि पूछिउं संथारु उक रिउ। तिवारइ महात्मा कहिउं हाकी धुं एह वुं वचन सांभली जमालि संथारइ आवी उदेषवउ संथारु ज्ञा करइ छइ। तेहवइ महात्मा नइ कहिउं अहो असत्य वादी उ एव उ तं हष्टा कांइ बोलउ। अधूरा नइ पूरु कांइ कहउ। तिवारइ महात्मा एकहिउं। कयमाणो कडेना एहवुं श्री महावीरनुं वचन न बइ जे काज करिवा आ रंभिउं ते कीधउं जि कहीइ। तेहतणी असत्य नथी बोलता। तिवारइ वली जमालि इ कहिउं। एश्री महावीरनुं वचन घोटउं जे करवा मांडिउं ते कीधउं न हो की जइ बइसम कहीइ। पूरुं कीधाइ विइ कीधुं कहीइ। एहव उं कदाग्रह तावल उं महात्मा। एहवइ दृष्टांते हठा कना हठा करणा करइ। एवउ वचन परमेश्वरनुं। महात्मा गामि जावा लागा। उकष्ट गां। मिगिउ कहाइ घो डउं कटकना जनइ कटकता जं कहीइ। बेहउइ वस्त्र फाटइ। फाटउं कहीइ। अधूरइं कांजिइ कीधुं कहीइ। आसा अनेक युक्ति करी नारी बवस्तुणा हीवइ नहीं महात्मा बांडी श्री महावीर कहइ गया। आर्या प्रियदर्शना जमालि नइ कदाग्रह लागा। तेहवइ एकदा ढंक श्रावक कुंभ कार श्री महावीर स्वामी श्रावक नइ घरि प्रियदर्शना पसुष महात्मा साध्वी अपाश्रय कराव्या। वारक वनां आ णि ढंक श्रावक कांबली बांधी। एहवइ कुंभ कारि श्रावकि मसम सनी बूझवा नणी कांबला बेइ उइ अग्निरमूं किउ। तिवारइ महासती ए वारू कंरना कहिउं। अहो कुंभ कार कांबली बली। तेहवइ कुंभ कारि श्रावकि इ कहिउं। अहो महासती उ। असत्य म बोलउ। एवडा कांबल न हीं। उत्तम श्रावक। कांबली बली नइ बली कहउ। परि णि घोडीवा बली नइ बली न कहउ। श्री महावीर नइ मनि बली कहीइ पणि हवणा आविस्सई। नि बलवा न तणी। बइ बली। कइ वबली कहउ। इत्यादिक अनेक दृष्टांत दिषाडी महात्मा महासती बूझवा। मिथ्या मिच्छा मि दुकड दिउं। श्री महावीर कन्हई लेई आलोय्या। तिवारइ बीजा असर्व परिवार बूझवा। पणि जमालि न बूझिउ। ते निह्नव ह्रवा नन

॥उत्तरा०॥
॥बाला०॥

पघणा कीधा। नउ हिव अनंत अनंत संसार ऊपार्जिउ। महावीरनां वचन सद्दहां नहीं। विराधक थई दुर्गति गई। इसी परि
जमालि विपरीत वचन निह्नव इसी वचननी थापना धामी। ते मरी लांतकि देवलोकि तेरसागरोपमनइ आऊखइ किल्बिषि
उ देवता हूउ। इम जीव जिनमार्ग ऊवेषी अनुमार्ग वर्त्तता म हवई घणउं पडइ। तिहां थिकउ ते घणु काल रुलिसि
इ॥ प्रथम निह्नव॥ राजगृह नगरि गुणशिलइ चैत्य वसुराचार्य तेहनउ शिष्य तिष्यगुप्त आत्मप्रवाद पूर्व भणतां
एह सूत्र आलावउ आविउ। एगे भंते जीवपएसे जीवेत्ति एआलावउ भणतां मनि विपर्यास ऊपनउ। जउ सघला इ जीवना प्रदेस
एकगमिलइ तउ जीव कहीइ। एकइ प्रदेशइ ऊणउ जीव न कहीइ। ते जीव नु कहीइ। सघला इ छेहिलउ प्रदेस जीव कह
इ। किम ते एहथी जीव नीपजइ। तिणि तेहनइ ऊपनी। तेहवइ अनेक दृष्टांते बूझविउ। पणि न बूझइ। तेहवइ एक वार आम
लकल्पा नगरीइ विहार करतां विहरवा गया। तिहां मित्रश्री श्रावकि इक इ एकइला तउ एक दाणु इसी घदी तउ। तिवारइ
महात्मा ए कहिउं। अहो श्रावक ए किसिउं। तिवारइ श्रावकि कहिउं। एतउ म्हांकइ मतइ। उत्तो जे छेहलउ अवयव मात्र। अनइ जउ
ईणइ एकलइ इसी बिहुं जु सघला इसी घडं काज न सरइ तउ जाणो तुम्हांकइ मतनथकं। पणि सघले अवयव मिली काज सीझइ
इम कही बूझविउ। पणि न बूझइ। ए बीजउ निह्नव महावीर जीवतां ऊपनउ॥२ श्री महावीरनां निर्वाण थकी बिसइ चउद
ह वरसे सेतंबिका नगरीइ पोलास इ सिइ नाम्नि उद्यानि तिहां आषाढाचार्य आपणा शिष्यांनइ योग वहावतां
अकालि मूआ। मरी देवलोकि गया। मोह थिकउ तेहज काया अधिष्ठी शिष्यनां योग पूरा करइ। आपणइ पाधिनउ आ
चार्य थापी आपणु स्वरूप जणावी देवलोकि पहुता। ते स्वरूप जाणी शिष्य कहिवा लागा। आपणि एतला दिहाडा अ
इ देवनां वंदाव्या। तिम रषे कोइ देवता हुइ। इम माहोमाहि अव्यक्त मती आणा मिलता असंबद्ध माहोमाहि वांदता २८

नथी हुडऊता। तिहां सूर्यवंशी बलिभद्र राजाइ ते चोर करी बांध्या। कपटइ हिंसा करावा नइ अधिज्जणावइ आप्या। तेहवइ राजा
ननी अक्रम तिहां बसाहूय। तिवारइ महात्मा कहइ। अहो महाराज तुम्हे श्रावक अम्हे महात्मा। अम्हनइ किम परावन करे छ
इ। तिवारइ राजा कहिउं तुम्हे इम मकहु। एतम्हारइ मतइ महाजाइव छउ तम्हाकइ अव्यक्त मत न जाणीइ। कुंण श्रावक कउं वा तुम्हे महा
त्मा। बजाइ मकही तेणइ श्रावकि इ बूझव्या। पणि बूझइ नहीं॥३ श्री महावीरनां निर्वाण थकी बिसइ वीस वरसे गए हुंते मिथिला
नगरी लक्ष्मीगृह उद्यानि श्री महागिरि स्थविरि शिष्य कोडिन्य तेहनउ शिष्य अश्वमित्र तेहनइ अनुवाद पूर्व भणतां एहवउ आ
लावउ आविउ। पढमसमय पडिउत्तने रइया वुच्छिज्जस्संति। आव वेमाणीया ति इह सूत्र देषी क्षणक्षयवादमति ऊपनी। तेहवइ
राजगृह हुंता तिहां खंडरक्ष आचार्य दाणइ ते महात्मा कूट वांडिया। महात्मा ए कहिउं तुम्हे श्रावक अम्हे महात्मा। तुम्हे अम्हन
इ किम हणावो। तेहवइ दाणइ कहिउं एतउ तुम्हारइ मतिं क्षणक्षयीइ पणा थिकउ ते तुम्हे महात्मा नहीं। अम्हे श्रावक नहीं। ऊणइ कहिनइ
ऊटइ इम कही बूझव्या। पणि बूझइ नहीं॥४ श्री महावीर थिकउ २२८ बिसइ अठावीस वरस गए हुंते उल्लुका नदी तीरि श्री
महागिरि स्थविरि शिष्य धनगुप्त तेहनउ शिष्य गंगाचार्य ते नदी नइ उत्तलिइ पासइ रहइ। अनइ गुरु पेलइ तटि। तेहवइ गंगाचार्य
शिष्ययुक्त वांदवा ऊतरइ। पगे नदी नुं ताढूं पाणी वेइ माथइ सूर्य नु ताप वेदइ इम वेदना वेदतां युगवंदी नहि चउ वनगा। एहवउ आ
वीतरागनूं वचन जे एककालइ बि उपयोग न हुइ। एहवउ अन्यथा मानतउ राजगृह नगरि तिहां उद्यानि मणिनाग यक्ष प
ह्वनइ सविनिज ऊतरिउ तिहां लोक आगलि समकालि बि उपयोग अम्हनइ वेदाइ एहवूं प्ररूपइ। तेहवइ यक्षइ मोगर
ऊपाडी कोप देषाडी। निग्रहिउ। रे पापी महावीर सर्वज्ञनूं किसिउं कूडं इम कही बूझविउ। पणि न बूझइ॥५ श्री महावी
र थिकउ ५४४ पांचसइ चुमालीस वरस गए हुंते अंतरंजिका नगरीइ। श्रीबलश्री नइ उद्यानि श्रीगुप्ताचार्य शिष्य रोहगुप्त शिष्य

MEMORIAL

॥ उत्तरा० ॥ बाला० ॥

बइ ते हवइ एक परिव्राजक इम कहि विद्याइं पेट फाटइ ते भणी लोहपाटइ पेटि बांधउं जंबूवृक्षनी शाखा साथि धरउ आलिमां
निष्प्रतिआ राजसभाइं जई वाद मांडइ तेहइ राजा नइ कउ पटहो घोषि संघना कहियाथिकी श्रीगुप्ताचार्य रोहगुप्त शिष्य वाद करवा मोक
लिउ रोहगुप्त दत्त विद्यानइ बलिइ परिवाजीनइ जीतउ जीतउ पतात्री गुरु पदार्थ तिहां नोजीव थापी वादजीपी गुरु कन्हइ आविउ
तिहां गुरि इम कहिउं जीपणहार युक्ति परवादी मिथ्यावादी जीव नेत्रलंबा पणि नोजीव थापिउ एम सूत्र तेह भणी तु मिथ्या
मिच्छाकड दिउ एहवुं युक्त तुं वचन सांभलां ते रोहगुप्त युक्त संघातिइं बमणा वाद्याबाद कइ तिहां वलाइ द्रव्य गुण कर्म सामान्य
विशेष समवाय एहवा षट्पदार्थ नवा थापइ तिहां थिकु गुरे ते शिष्य बूझवा भणी कहिउं कुत्रिकापणि हाट
ला नइ विद्यमान सर्व वस्तु आपइ उतिहां जई त्रिरूप पदार्थ लेई आवि तिहां शिष्य कुत्रिकापणि हाटि जई जीव वस्तु मागी ते
आपी अजीव वस्तु मागी तेहइ आपी जिवारइ नोजीव वस्तु मागी तिवारइ देवताइं निषेधिउ तेहइ आपणु कदाग्रह न
मूंकिउ तिहां गुरे गच्छ बाहिरि कीधउ तिवारइ ते गाइ वैशेषिकमत प्रवर्त्ताविउ श्रीमहावीर थिका पांचसइ अस्सी वरसी
गए दसपुर नगरइ गोष्ठामाहिल फल्गुरक्षित नउ दुर्बलिका पुष्य एहव
इम मथुरा नगरीइं अक्रीयावादी आव्यो तेह सांस्मु प्रतिवादी कोनथी तिवारइ तिहां नइ संघि दसपुर नगरि आर्य रक्षितसूरि
नइ जणाविउ तिवारइ गुरे महावाद विजय लब्धिधरणी गोष्ठामाहिल मोकलिउ ताणइ तिहां जई वाद जीतउ तिवारइ पबामो
इ तेणे गोष्ठामाहिल चउमासइ आयरह्यो करावा मथुरानगरीइं तेहवइ आर्यरक्षितसूरि दसपुर विरह्या चउमासामाहि आपणु आ
यु कहइ आवितं जाणी आपणइ पाटि आचार्य पदस्थापना वीनवी यतः बूढोगण इम वीनवी सघला इंस घनइ कहिउं अहो
श्रीसंघ कंड दुर्बलिका पुष्य प्रतिइं निष्पाप घटवत फल्गुरक्षित आश्रीतेल नाघडा समान बउं अनइ गोष्ठामाहिल आश्री घी

दो

३९

नाघडा समान बउं इम कहाआ संघनी अनुमति लेई दुर्बलिका पुष्य नइ आचार्यपद देई अणसण लेई देवलोकि पुहुता चउमासा पछी
मथुरा थिकु गोष्ठामाहिल आव्या विजाणु उपाश्रय रहा वेषइ करी आव कलन्नचित्तक रूव जाणी अरे पोसालि इं आणिउ जेतला
एजूउ रहिउ सलनुनही तेह इएक वार दुर्बलिका पुष्य आचार्य महात्मानइ अर्थ पोरसी करावइ तेहवइ महात्माय कुगो
ष्ठामाहिल नइ कहिउं तुम्हे अर्थपोरसी कहि तिवारइ गोष्ठामाहिलि कहिउं तुम्हे जिम निष्पाव घट कहइ अर्थपोरसी कर
नेहवइ महात्मा अर्थपोरसी कीधा पूठिइं वीकइ सिइ ना मि शिष्य आपणा वंदीहइ ल णिउं तेवीनवइ बइ यथा अष्टमे क
र्मप्रवादे ते वीकइ शिष्य एहवु कंत्री नकुसांभलां गोष्ठामाहिलवा बइ अनेयु कहइ इम सांभलिउं नथी जु कर्म बद्ध स्पृ
ष्ट निकाचित त्रिकं ले देहु आउ जीवनइ नोहनक तिहां वलीवी कइ बइ जुइम नहोउ किम तिहां गोष्ठामाहिल क
हइ जहा कंचुक जिम अड रषिइं मनाइ पहिरि उकुइ ते सन्नाह ज्ञारीर नइ स्पर्शविहिउ बइ पणि काया नाप्रदेशमा हु
मेलिउ नथी तिम जीवनइं कर्म स्पर्श्या रहियां बइ पणि कर्म इं जीवना प्रदेश स्पर्श्या का इनथी अनइ जु जीवना प्रदे
श संघातिइ कर्म संलग्न हुइ ता कर्म तद्रूप कहाइ नहु इ एह कवं अनेयु कहइ सांभलिउं बइ एहेन व अश्रावा
नजाणइ तिवारइ वीकशिष्य युक कहइ जई गोष्ठामाहिलइं कहिउं सर्व दृष्टि बिइ तिहां गुरे वीकशिष्य नइ कहिउं जेम इ
कहिउं तेह जिम श्री गोष्ठामाहिल कुंकं कहिउं पोटउं तिहां थिकु गुरे वीकनइ साथ वामोकलि उवीकइ गोष्ठमाहिलन
इ कहिउं जिम लोहइ उं अगिमाहि धमिउ हुं सर्व एक पिंड था इ अनइ जूजूइ था इ तिम जीव कर्मना प्रदेश संघातिइं मि
लइ अनइ जूजूई थाइं एहवो अकनो कहो युक्ति करीनी ताणइ वीकशिष्यइ कर्मजीवना स्थापना कीधा पणि गोष्ठामाहि
लन मानइ तेहवइ एक वार वली उक महात्मा नइ लणावइ उमाष्पूर्व नव पदं जिम प्राणातिपात महात्मा प्रति विधि

त्रिविधिइं जावज्जीव पच्चक्खाइ इति म पच्चक्खाणउं ॥ गिज्झं इम मांनता गोष्ठामाहिल कहइ एषोटउं पच्चक्खाण ... ण रहि नकीज
इनलेतउं । परिमाणसहित पच्चक्खाण कांई नहीं ॥ अमारा कहइ इवेला जेहलगी पच्चक्खाणना अवधि हवइ तेतलउं ते पच्चक्खाण । वस्तुलेवा
नीवांबाधाइ इति संउरे कहिउं । महा मानइ कालविधि पच्चक्खाण नहीं ॥ जुइ म कहइ उत्सुव्याइ त्सिवाइ नवा देवतान नावज्ञी स्तवा
दिकरी मिउ किसि उं ब्रत लगनकइ । एहवी भुनेघरागी इसुति कहइ । परिणामानइं नहीं निहाथिका सांघिइ काम गकरी शासनदेवता आ
राधी । श्रीमंधरस्वामि कहइ श्रूबा आवी । शासनदेवनाइ निवावइ कहिउं । जे कुम कहइ ते षकं । एहवुं संघसमस्त प्रं शासनदेवताइ क
हिउं । तु हि गोष्ठामाहिल न मानइ इति हां निन्हव करी संघि इवा रिउ । गवबाहरि कीधउ । छाडउं ईं उवयन श्रणमानता पनिन्हव कहिया ।
बली हिव डां घणा वचन ऊथापक तेहइ बोटिक मतन कहीइ ॥ इति सप्तनिन्हवा ॥ सुनिवलहुंसहंवा । वारियं पणउद्दहं । वही कसाय
माणोवि । णोयणं पडिवज्जए ॥१० स्तुति व अन्यत्र शब्दालब्बहाउ न; वीयं उल्लेलं बहुवो जीवा । रावमानात्र्यपिणाइ इति वालो लंकारो ने
बधूति पद्यं ते ॥११ माणुसत्तंमि आयाउ । जो धम्मं सोच्च सद्दहे । तवस्सी वीरयं लहं । संवुडो निद्धुणो रयं ॥१२ मानुष्यत्वं आमनः शाम्यो
धर्मं श्रुत्वा श्रद्दधाति । स रजो निर्वर्त्तो ति रजपाप निईनोति । निईनलगा इपापते हनइ फेडइ किम्म तपस्वी । किंकु वावीर्यं लब्ध्वा
ख्वन किंसु संवृत्त ॥१२ सोधिउज्जुयभूयस्स । धम्मो सुद्धस्स चिट्ठति । निव्वाणं परमं जाइ । घयसित्तेव पावए ॥१२ ऋजुकभूतनलणा
इमाया वर्हितनक्तासो धिक्रइ स्सुद्धस्स धम्मो निष्टति । परमं निर्वाणं याति तक्षीत्वा रपरम प्रकृष्टउ निर्वाण मोक्षपद जाइ किंप
साधु घृतसिक्त पावक इवा घाइ स्माविउ । पावक विश्वानर तेसरी षउबइ जे कूषा श्ववरजिम घाइस्मा विउ । श्रग्निनिर्वाण स्वस्तुपणाइ
तलइ इस्तउ कोइ नहीं ॥१३ विगिंच कम्मुणो हेउं । जस्सं संचिणु खंतिए । पाढवं सरीरं हिच्चा । उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥१३ प्रार्थिव शरीरं निह्कवा
ऊर्द्धं दिशं प्रक्रामिति । पार्थिवलगी इमाटी मय शरीर त्यजी छाडी मडऊ र्द्धदिसि इ जाइ कम्मुणो हेउं विगिंचा कर्मरहइ हेतु कारण ५०

PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

FOLIO NO. 40 to 49 MISSING
(IInd) (Ist)

सघलु इस बिहु कीधउ। तेहवि इराजा नुपुत्र धाडइ गयु हूंतु तिहां आविउ। तेहवइ सघे दूपत्र वडलु देषी रा
जपुत्रइं ते अजापाल पूछिउ। करिरे कूणइं पत्र वीध्यां। तेह्नार इं तेणइ अजापालिइं कहिउं मइं क्रीडाइं वीध्यां
। तेवात सांली रलीआइति हूउ। तेह्पतिइं राजपुत्रिइं कहिउं। जेहनी आंषि कह्निं तेहनी आंषि विधे दिइउ
उकनइं घणुं गुरूपव आप्युं। इम घणु काल सादषाडी आपणाइं नगरि लेई गयु। पछइ ते राजकुमर तेनुं वडु लागुंति
हां राजा बइठा एकवार तेघोडा खेलावा सणी। जेवाट इनी कलिउ। तेहवइ राजकुमरिइं अजापालनइं ते
साईं देषाडिउं। एहनइं लोचन निविलास करि। तेणइं गोली इं करी बिहिं आंषि लोसना वंत्रीधकी काढी।।
तेराजा राज्यप्रकूप घापीलघु साईं राजाइंह कउ। तिह्नार इं तेय स्थया लराजा बोला विउ। जं जोई इतं मागि
स्वामी माहरइं तुं वडा नी वलि वा वी बइ। तेहरउं बाडनी पानकां तजिमइं वडानइं गुलसुखिड्ढं घरि बइठउ षा
उं। तिम करि। राजाइं तेहवुं जि ग्रासत्र आपिउ। तेघरि बइठउ जगु लत्रनइं तं बडां षाइं। अनइं मकुंडइ एहवुं गाइ।। अहं
मइं पुत्रि खिड्या कि रिकियं ननन रि ह्वयं। अहं मइ प्यसाएसा। षडाएगुलतंबयं।। तेताइं अजापालिइं वडनां पान
निरर्थक वेध्यां। आंषि सार्थक पणाइं लालिइ। बदी। तिमाहं जीव सार्थक निरर्थक। जडीनव धइं। तेदुषी थाइ।। ब
हिंसा बालेखु सा वाई। माइ। इत्रपिसुस्सो मढे। सुंजमा रो ग्गुरा मंसं। सयमेयं तिमन्नाई।। एबाल हिंस्य मृषावादी माया
वान्नु पिसुन। सिढ्ढ सुरा मांसं सुंजान। एतत्तास्त्रयइ तिमन्यते। बाल मूर्षी हिंसाय रिकुं तेउ। मृषावादी कुं तेउ। माया
वीकुं तेउ। पिसुन स्वरा। चाडकुं तेउ। सिढधूर्तकुं तेउ। सुरा मांस सोग वड कुं तेउ। एयाश्रयकुं तेउ प्रधानइ तिइ
सिउं मानइ।। एकाय सावय सामि त्ता चित्तगिद्धे यइ द्धि सु दुहउ मलं सा चराति। सुसिसा गा छ्ठम दिद्यं।।२०।।
कायेन वचसा मत्तः चित्तस्त्री गृद्धः द्विधा मलं संचिनोति। कायइं करी मत्तप्रबलकुं तेउ। चित्तअनइं स्त्रीनइं विषइ

गध्यं कृतउद्विधाबिहुंप्रकारिरागद्वेषसहितहुंतामलकहीइ पापमलसंचिनोति। कहीइ कृपाडीइ। कइवस
सिनागइ वयघा। शसिनागद्विधासमृत्तिकांचनोति। कुंणनीपरिइं। शिशनागनीपरिइं। जिम शिशुनाग कहीइ अ
लसीऊं मुखिचूनइ यद्यपि इं द्विधाबिहुंप्रकारि मृत्तिका कहीइ माटी संचु करइ ॥१०॥ ततो पुट्ठो आयंकेणं गि
लाणो परितप्पई। पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥ ततआतंकेन स्पृष्टः ग्लानः परितप्यते। स्वेदवतत्त
त्ति द्वार सूं विहइ आतंक न कहीइ रोग इंकारी स्पर्शिउ हुंतउ गिलाण हूंतउ परितपइ। तापकरइ परलोकात्पर
भीतः परलोकथुबीहतु थकउ। आत्मानः कर्मानुपेक्षी। आपणुं कर्म तउ ॥११॥ सुया मे नरए ठाणा। असीलाणं
च जा गई। बालाणं कूरकम्माणं। पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥ मया नरकस्थाना निश्रुता नि मइं नरकतणां स्था
नकस्थान सत्यां। अशीलानां या गतिः सा श्रुता असीलरहइं येगति तेगति सांभली। यत्र बालानां मूर्षीणां क्रूरकर्मणां प्रगाढ
वेदनाभवति। जीणइ गतिइं मूर्षइ क्रूरकर्म करतां हूंता प्रगाढ कहीइ तीव्र वेदना हुइ ॥१२॥ तत्थोववाइयं ठाणं। ज
हा मेयमणुस्सुयं। अहाकम्मेहिं गच्छंतो। सो पच्छा परितप्पई ॥१३॥ तत्र नरके उपपातिकं स्थानं वर्तते। तीणइ गतिइं ना
रकीतणउं कय जाविउ स्थानक जिम वर्तइ। तन्मया अनुश्रुतं। ते मइं सांभलिउं। यथा कर्मभिर्गच्छन् स पश्चात् परितप्य
ते। यथा कहीइ जिम नीपजावे करी गछउ जाउ हूंतउ पछइ पश्चात्तापकरइ ॥१३॥ जहा सागडिओ जाणं। समं हेच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोतिण्णो। अक्खे भग्गम्मि सोयति ॥१४॥ यथा शाकटिकः ज्ञानन् समं महापथं समं त्यक्त्वा विषममार्गं अवतीर्णः अक्षे
भग्ने शोचते। जिम सागडीजाणउ महापथ राजमार्ग मुकीनइ विषममार्गि अवतीर्ण कहीइ आवउ चक्रांगभागइ
हूंतइ शोचनाकरइ ॥१४॥ एवं धम्मं विउक्कम्म। अहम्मं पडिवज्जिया। बाले मच्चुमुहं पत्ते। अक्खे भग्गेव सोयति ॥१५॥ एवं धर्म ५०
मतिक्रम्य अधर्मं प्रतिपद्य बालः मृत्युमुखप्राप्तः अक्षे भग्न इव शोचते। एवईणइ प्रकारिइं धर्म अतिक्रमीनइ उल्लंघीनइ

+मर४

अधर्मपडिवज्जीनइ बाल मूर्ष मृत्युमुख कहीइ मरणमुख पामिउ अक्षांग भंगप्राप्त हुंतउ अरिकनग्न
हइ सागडीपरिइं सोचाकरइ ॥१५॥ ततो से मरणंतम्मि। बाले संतस्सती भया। अकाममरणं मरई। धुत्ते वा क
लिणा जिए ॥१६॥ ततः स मरणान्ते बालो भयात् संत्रस्यति। ततः [illegible] त्ति द्वारसूं विहइ। ते मूर्ष मरणांति आ
वइ हूंतइ भयथकु त्रसइ। अकाममरणेन म्रियते। अकाममरणि इं करीनइ मरइ। कइवत् धूर्तइ वयथा
धूर्तः कलिना शोचते। जिम धूर्त जूआरी कलि कहीइ दाइं करी जीतउ हुंतउ शोचाकरइ ॥१६॥ एयं अका
ममरणं। बालाणं तु पवेईयं। एत्तो सकाममरणं। पंडियाणं सुणेह मे ॥१७॥ एतत् अकाममरणं तु पुनः बाला
नां मूर्षाणां प्रवेदितं। ए अकाममरण उपरि बाल मूर्ष रहइ प्रवेदितं कहीइ कहिउं। इतः सकाममरणं
पंडितानां मम कथयतः शृणुत। एतला अनंतर सकाममरण पंडित रहइ मझ रहइं कहितां हूं
तां सांभलु ॥१७॥ मरणं पि सपुण्णाणं। जहा मेयमणुस्सुयं। विप्पसण्णमणाघायं। संजयाण वुसीमओ ॥१८॥ ततः म
रणमपि सुपुण्यानां। विप्रसन्नं भवति। ते मरण इ पुण्यवंत रहइं विशेषिइं प्रसन्न हुइ। किं मरणं यथा मे मम
कथयतः श्रुतं तत् अनुश्रुतं यथा जिम मझनइ कहितां हूंतां ए मरण सांभलु। पुनः किं मरणं अनाघातं। व्या
घातरहित थइ। किं सुपुण्यानां। संयतानां संवरिउ आत्मा थइ। जे हे पुण्यवंत ते पुनः किं वशी पन्यानां वशी मनो। वसि
की थइ। आत्मा जेहइं ऋषीश्वर ॥१८॥ न इमं सव्वेसु भिक्खूसु। न इमं सव्वेसुगारिसु। नाणासीला यगारत्था। विसमं
सीला य भिक्खुणो ॥१९॥ सर्वेषु भिक्षुषु इदं सकाममरणं न वर्तते। सर्वि भिक्षुनइं सकाममरण न हुइं। सर्वेषु आ
गारिषु सकाममरणं न वर्तते। सवि हूं आगारी गृहस्थनइ सकाममरण न हुइ। अगारी गृहस्थ नानाशीलवं
ता। च अन्य भिक्षवो विषमशीला वर्तते। अनइ भिक्षु ऋषीश्वर विषमशीलवर्तइ ॥१९॥ संति एगेहिं भिक्खूहिं

हिं।गारच्छासंजमुत्तरा।गारच्छेहिय सव्वेहिं।साहवो संजमुत्तरा॥२०॥केचिद्भिक्षुभिः अगारस्थाः संयमेनोत्तरा भवंति।एक भि
क्षुरूषी श्वरपाहिं आगारी गृहस्थ संयमे उत्तरा वर्त्तंति।सविक्षु गृहस्थपाहिं साधुरूषी श्वर संयमे उत्तर वर्त्तइ॥२०॥दृष्टां
तकहइ छइ।राजगृह नगरि एक भिषारी वर्त्तइ।ति हवइ लोकऊ जाणीइं गया छिइं।भीषारी ति हांत्ती भवा गयु।
पणि।ते हनइं भीषन चडी।तिहां थिकु ते हनइं रीस चडी।विभार गिरि पर्वत ऊपरि चडी कडणी रह्या लोक ऊप
रि शाला नाषइ।शाला नाषतां आपणइं शिलि लाऊपरि थी पडिउ।पापना वशथी सातमी ऊपरि पडी।आगसर्वचू
णीकृ आ।री सिइं मरी आपणइं छाणाइ नरगावास इ नारकी हऊउ।अकाममरणथी एहवुं कुउं॥वी राजिणां नगणि
णं।जडी संघाडिमंडणं।एयाणि पि न तायंति।दुस्सील परियागयं॥२१॥एतान्यपि प्रयोग लोदुःसीलं न त्रायंति।एतला
बोल प्रयोग न सणीइ चारित्र पामिइं कुं ताइ।दुस्सील कुं तार ज्ञान करइ।एतानि कानि चीर सणीइ वा।कुलां पहिरांयां
तु कि मृग जिन सणीइ।मृग चर्म पहिरियां तु किम्।नग्न थी वस्त्र रहित पणु।मुंडणं मुंडणा सणीइ।मस्तकि सद्दइं
किस्यिउं तु दुस्सील पणु रहऊ उतु एतला बोल रक्षा न करइ॥२१॥पिंडोलए व दुस्सीले।नरगाउ न मुच्चइ।भिरका
ए वा गिहत्थे वा।सुव्वए गमई दिवं॥२२॥पंडितापि दुःशीलो नरकान्न मुच्यते।भिक्षाचर इदुःसीलकुं त उ दिवं क्रा
म्यति।सणीइ देवलोकि जाइ॥२२॥अगारि सामाइयंगाइं।सड्ढी काएण फासए।पोसहं दुहउ पक्खं।एग राइं ण हा
वए॥२३॥सद्धा सद्धावान् अगारि सामाइकांगानि कायेन स्पृशति।श्रद्धावंत अगार सणीइ गृहस्थ।सामायकतणां
अंग कायाइं हइ करीनइं स्पर्शइ।द्वयोरपि पक्षयोः एकरात्रिं प्रोषधं न हापयेत्।बिहुं पष वाडि एकरात्रिं इ पोस
ह तणी हानि न करइ॥२३॥एवं सिक्खा समावण्णे।गिहवासे वि सुव्वए।मुच्चई छविपव्वाओ।गच्छे जक्खसलोगयं॥ ५२
२४॥एवं अमुना प्रकारेण शिक्षा समापन्नः गृहस्थवासेपि सुव्रतः छविपर्वात् मुच्यते।एवइ राइ प्रकारि।सषा

सहित कुं तउ छविपर्व ते सणीइ।ऊदारिक देहथकु मुकाइ।जक्ष सलोकतां गच्छेत्।यक्ष सिलोक सणीइ देवलोकि जा
इ॥२४॥अह जे संवुडे भिक्खू।दोण्हं अन्नयरे सिया।सव्वदुक्खपहीणे वा।देवे वावि महिड्ढिए॥२५॥अथ यः संवृत्तो भिक्षुः द्वयोः
न्यतरस्यात्।अथ एतला उ अनंतरइं जसु संवृत्त भिक्षु रूषीश्वर आश्रव बिहुं मांहि एक काईहुइ।सर्वदुःख प्रक्षीणो वा।अ
थवा महर्द्धिको देवो भवति।सर्वदुःख प्रक्षीण सणीइ सिद्ध वा अथवा महर्द्धिक देव हुइ॥२५॥उत्तराइं विमोहाइं।जुइमंता
णुपुव्वसो।समाइण्णाइं जक्खेहिं।आवासाइं जसंसिणो॥२६॥एवंविध आवासा भवंति।अस्या आवास कहइं।किं० आवासा उत्त
राः।उत्तरा सणीइ सर्वोत्कृष्ट छइ।अथवा उत्तरा सर्वोत्कृष्ट विमांन छइ।पुनः किं० आवासाः विमोहाः विगतमोह हुइ
छइ।जइ विमांने।पुनः किं० आवासाः ताइ तिवा क्याल्लंकार आनुपूर्व्याः क्रमेण ताइ सिइवा क्याल्लंकारि आनुपू
र्व्या सणीइ अनुक्रमिइं क्रमेण तसणीइ तेज वंत छइ।जे आवासा पुनः यक्षैः समाकीर्णा।यक्ष देव करीनइं समाकी
र्ण सणीइ सम्याछइं।भरिया छइं।किं० देवा यशस्वी छइं॥२६॥दीहाउया इड्ढिमंता।समिद्धा कामरूविणो।अहुणोववन्नसंकासा
भुज्जो अच्चिमालिप्पभा॥२७॥पुनः किं देवाः दीर्घायुषः घणुं आऊखुं छइ।अनइ रूद्धिवंत छइ पुनः किं० समृद्धा परिवा
रिइं करी सहित छइ।पुनः किं० कामरूपविकुर्विणः।स्वेच्छाचार रूप विकुर्वइ छइ।अधुनोत्पन्न सं काशा।ततकालोत्प
न्न शरीर पामइ।भूयोऽर्चिमालिप्रभा।भूय सणीइ घणी अर्चिमालि सणीइ सूर्य तेहना ते सिरीषी प्रभा कांति छइ।जि
हि वतणी॥२७॥ताणि ठाणाणि गच्छंति।सिक्खित्ता संजमं तवं।भिक्खाए वा गिहत्थे वा।जे संति परिनिव्वुडे॥२८॥जीवाः संयमं
तपः शिक्षयित्वा तानि स्थानानि गच्छंति।जीव संयम तप अभ्यासीनइं।तेहे स्थानके जाइ।भिक्षुको वा गृहस्थो वा।यत्रांतपरि
निर्वृत्या भिक्षाचर अथवा गृहस्थ।जिहां तिहां उपशम रसिइं करीनइं परिनिर्वृत्त सणीइ समाधि प्राप्त छइं॥२८॥तेसिं

सुचाणपूज्जाणं।संजयाणवुसीमउ।णसंतसंतिमरणंते।सीलवंताबहुस्सुया॥२९॥तेषांसझ्जनानां।संयतानां
वचनंश्रुत्वाशीलवंताबहुश्रुता।मरणांतेनसंत्रस्यंति।नीहसंपूज्यसंयतवसात्मना।ऋषीश्वरतणांवचनसां
भलीनइ।शीलवंतबहुश्रुतमरणांतिआविइंहूंतिइ।त्रासनपामइं।त्रायनपामइं॥२९॥तुलिया।विसमा
दाय।दयाधम्मस्सखंतिए।विप्पसीएज्जमेहावी।तहाभूएणअप्पणा॥३०॥मेधावीतोलयित्वा।दयाधर्मस्यविशेष
।आदयक्षांत्या।विप्रसीदेत्।मेधावीज्ञाणीइमआराहइआपणपूं तोलीइ।दयाधर्मतणुंविशेषजाणीनइ।खां
तिज्ञाणीइक्षमाकरीनइंविशेषिइं।प्रसन्नहुइ।केनतथाभूतेनआत्मना।किसिइंकरीनइं।तथाभूतज्ञाणी
इ।शांतरूपआत्माकरीनइं॥३०॥ततोकालेअभिप्पेते।सड्ढीतालिसमंतिए।विणएज्जलोमहरिसं।भेयंदेहस्स
कंखए॥३१॥ततःअभिप्रेतेकालेसड्ढी।श्रद्धावान्तादृशंमरणंज्ञात्वा।समुत्पन्नो।गुरूणांअंतेसमीपेअथवामरणांतेमर
णसमीपेलोमहर्षंतिविनयेत।ततःतिह्वारपछिइं।अभिप्रेतेकालकहीइमरणकालिआविइंहूंतइंश्रद्धावान्
ज्ञाणीइश्रद्धावंततिसिउमरणतणान्यायअनुसमुत्पन्नरूपअनुगुरुतणइंअंतिसमीपि।अथवामरणनइंविषइंलो
मरूषज्ञाणीइ।रोमांचकंपउर।देहस्यभेदंकारयेत्।देहतणुंभेदवांछइ॥३१॥अहकालंमिसंपत्ते।आघा
यसमुस्सयं।सकाममरणंमरइ।तिण्हमन्नयरंमुणित्तिबेमि॥३२॥अथानंतरंकाले।संप्राप्तेसमूछयं।आघा
त्यासंलिख्यसकाममरणेनत्रयाणांअन्यतरेणमुनिर्म्रियते।अथएतलाअनंतरमरणकालिसंप्राप्तिपा
मिइंहूंतइ।समूछायज्ञाणीइदेह।आघात्यसंलेषीनइ।सकाममरणिकरीत्रिहुंमांहिएककोइक
रीनइमुनिऋषीश्वरमरइ।अतिब्रवीमि।इसिउंबोलिउं॥३२॥अकाममरणाध्ययनंसमाप्तं॥५॥ जावंति ५२

विज्जापुरिसा।सव्वेतेदुक्खसंभवा।लुप्पंतिबहुसोमूढा।संसारंमिअणंतए॥१॥यावंतःअविद्याःपुरुषाःतेसर्वेदुःख
संभवाभवंति।यावंतजेतलाअविद्यापुरुषतणाइं।कुत्सितज्ञानसणनहारपुरुषअथवाज्ञानरहितपुरुष
तेसघलादुःखसंभवहुइ।मूढाःमूर्खा।अनंतसंसारबहुशोभवंति।मूर्खअनंतइसंसारिबहुघणुंदुःखछइ
नपामइ॥१॥जेपुरुषविद्यासंपूर्णनपामइ।तेपुरुषपदइशोचाकरइ।बड्डा॥अथदृष्टांतमाह॥ कोएकसिद्धाच
र।अतिहिदरिद्री।तृणादिकेंदेवसर्वस्तिःनिर्मोह्निमादेषीइमकहिउपृथ्वीमंडलिसमइ।अनेकउपायन्यायतर
करइ।ताकहींद्रव्यनउपार्जीइ।तिहांचींतविउं।निर्धनकस्मिंउसमुद्रिउपायवलिउ।वाटइंएकगामिदेवकुलमां
हिकोएकविद्यासाधकविद्यासाधउंदेषीहाथमांहिघडुदेषीतिहवारइंघडानूंस्वरूपजोयउं।तदषइकिसिउं।
घडानइंपूजीघरगढमंदिरवस्त्रसोनांघाल।धनजेकांइमागइ।तेघटआपइ।तेघटनइंप्रसादिइंविद्यासाधक॥
स्त्रियादिकसर्वमनवांछितसुखभोगवइ।रात्रिनइविषइ।अनइविद्यारांमांहिसर्वेसेषीपीएकहुंएकाकीनिरा
हृघईबइसइ।तिह्वारइताणइसिद्धाचरइंचींतविउं।बीजघरांउत्तलागसिउंबइइ।एहज़िउलगं।इमचींतवीनइं
लगवालागुकेतलेदिहाडेविद्यासाधकरूबउ।सीघारीकनइरहिउं।बिउं।अरंकुणातणइंकहिउं।अस्त्राग्यस
षरादालिद्री।कुणाहरइंआरष्यो।आविउ।जिमसुखीथाउंतिमकरि।तिह्वारइतेणइंकहिउंकिंअपेलइ।त
कहिउंघटआपि।विद्यासिद्धिपुरषिइंकहिउंविद्याएलिइंकहिमइंसघीनइंघटआलिपबइ।तराइंकांमघटआपिउपणि
मंत्रनआपिउ।दालिद्रीरलीआयतहुउ।तकंसपूजिउंअर्चिउमाथइचडावीनाचिवालागु।अज्ञानयोगउकं
समस्तकंउपडिउ।भातखंडथयु।तिमअविद्यापुरुषपद्रुजीवतीविद्यानलीधीउ।तेशोचाकरइ।देष्टमस्तुवि

ष्यारूपी इ पश्चिमार्थी।जाश्रउ सत्विसुदुरकपामिंउ॥१॥समिकपंडिए तम्हा।पासजाईपहेबहू।अप्पणा सच्चमेसेज्जा।मेत्ति
भूएहि कप्पई॥१॥पंडितःकर्म्मविकारणात्पाश्चाजातिपथान्बहून्समीक्ष्यआत्मना सत्यमेषयेत्।पंडितडाहुउइ रूष
तिहकारण तउपासरूपजातिपथानूसणी सपासमरीषा संसारतणापंथमार्गबहूघणासमीक्षालणीइदेषीन
इ।सत्य जिवाबइ।स्यातष्टमित्रीकल्पयेत।भूतप्राणीनइ विषइमित्री कल्पइ॥२॥माया पिया ण्हुसा भाया।भायाभज्जा
पुत्ता य ओरसा।नालंते मम ताणाय।लुप्पंतस्स सकम्मुणा॥३॥माता पिता स्नुषा भ्राता।भार्या पुत्रा अंगोद्भवाः।त
स्मै ममत्राणाय अलं।न समर्थ।मातापितास्नुषा सणीइ वधू ताईकलत्र अंगथकी ऊपना पुत्रा तसघलाइमर
रइ।राषिवानइकारणिनहीसमर्थ।किं०।मम स्वकर्मणा लिप्यमानस्य।स आपणाइकर्मिइंकरीनइ बिद्यामि
बइ॥३॥एयमट्ठं सपेहाए।पासे समियदंसणे।छिंद गेहिं सिणेहं च।न कंखे पुव्वसंथवं॥४॥एतं अर्थं स्वप्रेक्ष्यया
समितदर्शनः पश्येत्।इ सिउं अर्थ इसिउं विचार।स्वआपणी प्रेक्षया सणीइ।बुद्धिइं करीनइं समितसणीइस
म्यकू प्राकारिइं पामिउ दर्शन।सम्यक अ सिउ अर्थ लई तदपश्येत्।जाणीइ जोइ।।२।समगृद्धि पणउ छेदिस्नेहं च छेति।पूर्वसंस्तवन
वांछेत्।गृहवासनु परिचय तेन वांछइ॥४॥गवासं मणिकुंडलं।पसवो दासपोरुसं।सव्वमेयं चइत्ताणं।कामरूवी भविस्स
सि॥५॥एतत्सर्वं त्यक्त्वा कामरूपी त्वं भविष्यसि।एसघलुं तज्यखंडीनइ कामरूप जाणीइ।वैक्रीयरूपधारी देव होइसि।
एतत्किं।गवाश्वं गाय तणुसमूहां।अश्व तणा समूहा।मणि रत्न तणुसमूहा।कुंडलतणुसमूहा।पुत्रादिदासपोरुषं।पशुनुस
मूहा।अनइ दासवर्ग॥५॥थावरं जंगमं चेव।धणं धन्नं उवक्खरं।पच्चमाणस्स कम्मेहिं।नालं दुक्खाय मोयणे॥६॥एतानि
कर्मभिः पच्यमानस्य दुःखात् मोचनेन अलं समर्थानि।एतलापदार्थ करी पचता हंता जीवनइ दुःखथउ मूकावानइ कारणि
तहा अलं समर्थ।एतानि कानि।थावरं चापत्रादस मुख्य।जंगम स्त्रीपुरुष रथ नइ धान्यथ घर पवाषर द एतलापदार्थ सम

र्थ नइ॥६॥अज्झत्थं सव्वओ सव्वं।दिस्स पाणे पियायए।न हणे पाणिणो पाणे।भयवेराउ उवरए॥७॥व्याख्या।अध्यात्मस्थं सर्वतः सर्वं दृष्ट्वा प्राणिनः प्रियात्मकान् दृष्ट्वा प्राणिनः प्राणान् हन्यात्।अध्यात्मस्थं जाणीइ सुखदुःखा
दिक सर्वत।सघलेसघलुंदेषीनइ प्राणीया आत्मा ष्टा त्मा आशा देषीनइ प्राणीया तणां प्राणना हणइ।किं०साधु
भयवैरात् उपरतः भयाविरउ निवृत्तिउ थउ।जो साधु॥७॥आयाणं नरयं दिस्स।नायएज्ज तणामवि।दोगुंछी
अप्पणो पाए।दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं॥८॥अदानं नरकं दृष्ट्वा तृणमात्रमपि न आददीत।अदत्तादान नरगरूप देषीन
इ।जो साधु तृणमात्र रइ।आणदीधउं न लेइ।आत्मनो दुर्गंछी पात्रदत्तं भोजनं भुंजीत।आपणी इदुगंछाकरउ
उं पात्र जाणीइ विष्टारखानइ समइ पात्र नइ विषइ दत्त दीधउं भोजन जिमइ॥८॥इहमेगे उ मन्नंति।अप्पच्चक्खा
य पावगं।आयरियं विदित्ताणं।सव्वदुक्खा विमुच्चई॥९॥इहास्मिन् संसारे एके परवादिना एवं मन्यते।इहा एण
इ संसारि एक परवादी इसिउं बोलाइं मानइ।एवं किंप्रपाप कं अप्रत्याख्याय अर्थं विदित्वा सर्वदुःखान् विमु
च्यते।इम किम पापकर्म अप्रत्याख्याय जाणीइ अणखंडीनइ आर्य जाणीइ रूडउं आतवजाणीनइ सर्वदुःख उ
मूकाइ॥९॥भणंता अकरंता य।बंधमोक्खपइण्णिणो।वयाविरियमित्तेणं।समासासंति अप्पयं॥१०॥भणंतः अ
कुर्वंतः बंधमोक्षप्रतिज्ञानिनः वाग्वीर्यमात्रेण आत्मानं समाश्वासयंति।भणता हुंता क्रिया अणकरता हुं
ता बंधमोक्षप्रतिज्ञा सहित हुंता।वचनवीर्यमात्रिइं करी आपणपूं आस्वासइ॥१०॥ण चित्ता तायए भासा।कओ वि
ज्जाणुसासणं।विसण्णा पावकम्मेहिं।बाला पंडियमाणिणो॥११॥चित्रा भाषा न त्रायते चित्र विचित्र भाषा नी रक्षा क
रइ।विद्या अनुशासनं कुतः विद्या नुं अनुशासन किहां।उरक्षा करइ।बाला पंडितमानिनः पापकर्मभिः

॥उत्तरा०
॥बालाव॥

विषणा सवंति।बालस्मर्षयिंडि तमानी कृता पापकर्मकरीनइं विषाद प्राप्तकइ। विषादसहितकुइ ..तिके इस्सरीरस
त्तावशे स्लेयसवसो। मरामाकाय चाक्कणा। सावतिदुरक संसवा॥१२राजा कपिसरीरसत्ता। यकोएकजीवसरीरन
इ विषइ प्रासकइ। वशे स्लप सर्वत: आसक्तकइ। वल्ली स्लप सर्वत: आसत्तो सवंति। वर्ल्ली नइ विषइ। स्लप नइ
विषइ। सविकं प्रकारि प्रासक्त कुइ। कनमन सावचसा। कायेन किंसिइं करीम निंवचनिइं काया इं करी। तस्सवे
दुरकसं सवा सवंति। तिसघला इं दुरकसं सवकुइ॥१३रत्ना वणादी हमद्दारो। संसारिमित्र अरंतयं। तम्हा सव्वदिसं
पस्सा। अप्यमत्त परिव्वए॥१३जीवा: अनातसंसार दीर्घेत्र ध्वानत्रापन्ना सवंति। जीव अनंतइ संसारि दीर्घेला
बु अध्वा मार्गयाम्याकुइ। तस्मात कारणात्। सर्वे दिशादृष्ट्वा अप्रमत्त: परिव्राजत्। तिहकारणतु सघला इस्साव
देषीत्र प्रवा सघली इदिशि अनइं जीवजीवा नां अढारइ दिसिदेषीनइं अप्रमत्त कुतउ चालइ॥१३बहिया उड्ढ
मायाय। नावकंरवे कयाइवि। पुव्वकम्मरकयट्ठाए। इमं देहं समुद्धार॥१४बहि: ऊर्ध्व आदाय कदापि निवकांरव्यत्। सं
सारनुबाहरि लोक ऊर्द्धंलणीइ मुक्ति लोक आदाय लणाइ अंगीकरीनइं। कदापि स०कहीइं संसारादिक नोगन
वांबइ। पूर्वकर्मक्षयार्थ इमं देहं समुद्धरेत्। पूर्वकर्मक्षयनइं अर्थिएदेह पालइ॥१४विविंकिविक म्मणा हेउं।
कालकंरवी परिव्वए। मायंपिंडि स्लपाणस्स। कडलधूण सरकए॥१५कर्मणो देतुंगिविवा। त्यउपकर्मीणो नहेउ कारणा
त्यजइ। बांडइ। आश्रवद्वार त्यजइ। कालकां रवा परिव्रजे: कालानुष्ठानवांबतुकुतउ चालइ। पिंडस्य मात्रांज्ञा चा
कृतलबधा सञ्जयेत्। आहार पाणी तणी मात्रा त्यजीबांडीनइं। कृतलणीइनीपनु प्रासुक आहार लहीनइं।
आहार करइ॥१५सन्निहिं चन कुव्वेज्जा लेवमायाय संजए। पखीपत्तं समायाय। निरवेरको परिव्वए॥१६संयतो लेप
मात्रयासंनिधिं नकुर्यात्। संयत रुषीश्वर। लेपमर्यादा लगइ थोडाइसंनधि नकरइ। पखीवपत्रं समादाय निरूपा
क्ष: परिव्राजेत्। पखीया नी परिइं पात्रेपात्र लेईनइं निरपेक्ष लणीइ। अनापेक्षारहित चालइ॥१६एसणासमिउ ५५

लज्जा गामे अणियओ चरे। अप्पमत्तो पमत्तेहिं। पिंडवायं गवेसए॥१७एषणा समितः। लज्जा संयमवान् ग्रामे अ
नियश्चरेत्। एषणासमितकुतउ। लज्जासहितकुतउ संयमवंतकुतउ ग्रामि अनियतवासी कुतउ चालइ। अप्रमत्त: प्रम
त्तस्य: पिंडपातगावेषयेत्। अप्रमत्त रुषीश्वर प्रमादीस्य लणीइ गृहस्थ। कइइ उपिंडपात लणी आहारगावेषयेत्।
अप्रमत्त लणीइ लेवा बांबइ॥१७एवं से उयाकु अणुत्तरनाणी। अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे। अरहा णाय
पुत्ते। लगवं विसाले वियाहिए त्ति बेमि॥१८एवं समुना प्रकारेणस्मदाकृतवान्। एवंईणाइ प्रकारिंइ तीणाइ लगवंतिप
रमेश्वरिइं बोलिउं। किं० लगवान्। अनुत्तरज्ञानी सर्वोत्कृष्टज्ञानी बइ। जे लगवंत: पुन: किं० लगवान्। वली किसिउ बइ
अनुत्तरदर्शी। सर्वत्रिसुवनगत वस्तुदेषइ बइ। पुन: किं० अनुत्तरज्ञानदर्शनधर:। सर्वोत्कृष्टज्ञानदर्शनिधरइ बइ
इ। पुं० अर्हन् चउ: षष्टिइंद्रतणी पूजायोग्य बइ। पुन: ज्ञातपुत्र सिद्धार्थराजा तणु पुत्र बइ। पुन: लगवान्। परमैश्व
र्यसहित बइ। पुन: विशालिक: विशालघणा शिष्य बइं जेहपरमेश्वर तणाइ। पुन: किं० वियाहिए। विख्यात: स
र्वोत्कृष्ट शास्त्र वषाणइ बइं॥इति समाप्तो ब्रवीमि॥१८षष्ठाध्ययनार्थलेशः॥६॥ जहाएसंसमुद्दिस्स। कोइ पो
सेज्ज एलगं। उयणं जवसं दिज्जा। पोसिज्जा विसयंगणे॥१यथा निश्चितं कोपिविप्र आदेसं समुद्दिश्य एडगं पोषय
त्। यथा निश्चिइं जिमकोएक ब्राह्मणादइ्रा विप्र। विइं प्राहुणउ दासी नइं लक्षिनइं कारणि एडकु पोसइ। त।
स्य उदनं यवसदद्यात्। तेएडकानइं ओदन कूर। यवमुद्गादिक धानादइं। स्वकां मंगणे एवपोषयेत्। आपणाइघ
रतणइ आंगणाइ जिम पुष्ट उकरइ॥२ततो सेपुट्ठे परिवूढे। जायमेदे महोदरे। पीणिए विउले देहे। आदेसं परिकंरव
ए॥२तत: सपुष्ट: सन्। आदेशो परिकांक्षतीव। तिहवार पूठिइं एडकु पुष्ट उ थियुकुतउ। आदेशा प्राहुणाउ वां

बतउं छं तउ कहइ जिसउ किं० किसिउ छइ ते एउ अपरिग्रहः समर्थ छइ। पुनः किं० ...दरः अतएव म
हो दरः ज्ञात अनुपमे द छइ। एह जि कारण मोटउं उदर छइ जेह तणुं। पुनः किं० पीनितः सकम पानि इं
करी उपचित अंग छइ। अतएव विपुल देह छइ। एह जि कारणि मोटउ देह छइ ॥ २ जीवन पति आएसो ता
व जीवति से दुही। अहप तं मिआ एसा सी संबे तं नु जाति ॥ ३ यावत् आदेशो तेति। तावत् स दुखी जीवति
×हो× जीं लगइ प्राहुणु नावइ। तिं लगइ तत मरिवानी वात आणसो अउ दुखी उ जीवइ। अथा देशा प्राप्ते शीर्ष
छिन्ना नुभ्यति। अथ विहि इं प्राहुणइ आविइं सीर्ष मस्तक छेदीनइ जिमी इ॥ ३ जहा खलु से उरब्भे। आएसा
ए समीहिए। एवं बाले अहं मिहे। ईहती णिरआ उयं ॥ ४ यथा खलु निश्चित स उरभ्रः। आदेशाय समीहितो।
भवति। यथा जिम खलु निश्चइं ते उरभ्र एडक आदेश प्राहुणा नइ कारणि। समीहित कल्पित छइ। एवं।
बालः अधर्मिष्ठ स नरकायुः ईहती वा। एवं ईणि इ प्रकारि इं। बाल मूर्ख अधर्मिष्ठ पापनइ विषइं आसक्त हूं उ
पापना करवा उ नरक नुं आउखुं वांछउ हूइ जिसिउ ॥ ५ हिंसे बाले मुसावाई। अद्धाणंमि विलोवए। अन्नं दत्त
हारे तेणे। माई कण्हु हारे सढे॥ स बालः एवं विधो भवति। तेषु मूढ इ शापापनु करणहार हुइ। किं० किसिउ
छइ मूर्ख हिंस्रः अपरः मृषावादी जीवहिंसा नइ विषइ तत्पर। अनइ कूडूं बोलइ छइ। पुनः किं बालः अध्वनि
विलोपकः। वाटपाडइ छइ। पुनः किं० बालः अन्यादत्तहर ॥ ५ अतएव स्तेनः। अनेराइ अणदीधउ हरइ। चो
रइ। एह कारण स्तेन चोर छइ। पुनः किं० मायावंत छइ। पुनः किं० किं उहर। नु अतिवितर्की। कंहरामि। इति
अभिप्रायवान्। अतएव शठ। ७ इसिइं विचारि रात्रि दिवसि कुण लूसुं। इशा अभिप्राय सहित छइ। एहं हक ५५

रणा सा मूर्ख छइ ॥ ८ इत्थी विसय गिद्धे य। महारंभ परिग्गहे। भुंजमाणे सुरं मंसं। परिवूढे परंदमे ॥ ९ पुनः किं० स्त्री विष
य गृद्धः स्त्री तणा भोग नइ गृद्ध आसक्त छइ। पुनः किं० महारंभ परिग्रहः। मोटइ आरंभ नइ परिग्रह मेलवउ छइ। पुनः
किं० सुरा मांसं भुंजानः। मदिरा अनइ आमिष आहरइ छइ। बालः पुनः किं० परि... वृढः। अतएव परंदमः। समर्थ छइ
एह जि कारणि परस्स बिलोकनइ दमइ छइ॥ ९ अय कक्कर भोजी वा तुंदिले चिय लोहिए। आउयं निरए कंखइ। जहा एस
व एलए ॥ १० एवं विधो बालः नरकायुः कांक्षती वा इसिउ मूर्ख नरकनइ विषइ आउखुं वांछउ हूइ जिसिउ। किं०
अजः कर्कर भोजी। अज बाली तणउं काकरा सरीखु आमिष आहारइ छइ। पुनः किं० तुंदिलः अतएव तुंदिलः। पेट उडी। ए
ह जि कारण चित्त पुष्ट लोहित रक्त छइ। जेह तणु। कइ इव एडक एव। यथा एडक एव। यथा एडकः आदेशं कांक्षति। कः
हिनी परिइं। जिम एडक पुष्ट उछउ आदेश प्राहुणा नां वांछउ होइ जिसिउ ॥ ११ आसणं सयणं जाणं। वित्तं कामाणि भुंजिआ। दुस्सा
हं धणं हेच्चा। बहुं संचिणिआ रयं ॥ १२ ततो कम्म गुरू जंतू। पच्चुप्पन्न परायणे। अएव आगयाएसे। मरणंतम्मि सोयति ॥ १३ ततो
जीवा मरणं ते सोच्यते। तिह्वार पछि जीव मरणं तिआ विहइं तहइ सोचइ। किं कृत्वा। आसनं शयनं वित्तं कामान् भुक्त्वा किं
सिउं करीनइ। आसन मांचीप्रमुष शयन पल्लंकादिक। वाहनगजादिक। वित्त लक्ष्मी काम पंचेंद्रियना सुख भोगवीनइ। पुनः किं
कृत्वा। दुःखाहृतं धनं हित्वा। वली किसिउं करीनइ। दुखिइं मेलिउं धन छांडीनइ। तथा बहु रजः संचित्य। तथा तिम बहु घणुं रज पाप
संचित्य संचीनइ। किं लक्षणो जीवः। कर्मभिः गुरुः भारी कर्मे उ छइ। पुनः किं० जीवः प्रत्युत्पन्नपरायणः। वर्त्तमान वस्तुनइ विषइं
इ तत्पर छइ। एतलइ परलोक नरकादिक तउ बीहतउ न थी। क इव। यथा आदेशो अजः शोचते। कहिनी परइं। एडका नी परिइं
जिम प्राहुणइ आविइं तइ एडक मरणांति शोचइ॥ १४ तउ आउपरिक्खीणे। चुआ देहविहिंसगा। आसुरीयं दिसं बाला। गच्छंति

।उत्तरा० बाला०।।

अवसातमं।।१०।।ततो बालाः तमोदिशं नरकंगच्छंति।ति वारइं ग्रहिंइ बालस्वरूप तमअंध्कारनु जेणइं दिसि इं एहवी नरकग
तिपामइ।किं० बाला आयुषिरपाक्षीणे च्युत देहा।आऊषइंषीणइ छतं तइ च्युतवाडिउमनुष्यनु देह छइ।जे देह।किं० बालाः वि
हंसकाः विशेषि इं जीवहिंसानइ विषइ तत्पर छइ।कि नरकगति आसुरी रौरव छइ।पुनः किं बाला।अवशाः कर्मेंद्रियरवशि इं व
या छइ।।२०।।जहा कागिणि एहेउं।सहस्सं हारइ नरो।अपथ्थं अंबगं भोच्चा।राया रज्जं तु हारए।।११।।पहिलुं एड कनु दृष्टांत बषा
णिउ।बीजउ कागिणीनु।त्रीजउ आंबानु दृष्टांत कहइ छइ।यथा कोपि नरः काकिण्या हेतो कार्षापणसहस्रं हारयति।जिम कोए
क पुरुषं वीसे कउडे कागिणी कहीइ।ते कागिणीनइ कारणि सहस्र सोनईआ हारइ।अबदृष्टांत माहे।।एकदा रिद्धी धन ऊपार्जवा
विदेसि गउ।तिहां दालिद्र मं जरा सहस्र दीनार ऊपार्जी वाटइं साथ संघाति इं आवतां।संबल निमित्त एक रूपउ वटावी।तेहनी
ऊडी लिइ।संबल जिमउ रत्नविड़।दिहाडीनी एकेकी ऊडी वावरइ।इम करता एक ऊडी एक ठइं गामि वीसरी।आघु चालिउ।के
तलिइ एक ठइ साथ संघाति जातां जिमण वेला थइ।एतलइ ऊडी तिहां रही सांभरी।मनि चींतविउ।वली माहरइ रूपउ वटावि ऊजो
ईसि।तेतणी पाछउ जई ते स्थानक थी ऊडी लेईं आवुं।इम चींतवी पाछउ वलवा लागु।मनि चींतविउं।कहिंलि सहस्र दीना
रनी वासणी किंहा एकसा उं।इम चींतवी एक जाला मांहि वासणी सात वा लागु।ते वासणी सातिहां सातउ कुणहइ एक ठइं दी
ठउ।ते दालद्री वासणी सातां पाछउ ऊडी लेवा गउ।ते हजि जो ना हार लेई गउ।दलद्री इती णइं गामि ऊडी जोई पणि तेह्नको
एक लेई गउ।गलउ पाछउ वलिउ।जिहां वासणी साती हती तिहां आवी वासणी जोई।देषइ तउ वासणी गई।तिह्नारइं महा
कालमु क्ष ऊचाट करि वा लागु घरि गउ।आपण पुंरो चइ।मइं अनागाइ थोडइ काजि घणुं नीगमु।एक ऊडीनइ काजि।
घणुं नीगमिउं।सहस्र दीनार हारिउ।इम मई णइ दृष्टांतं तिइं जो गसौष्य वांछता ऊडी प्राय।उत्तम सौख्य मोक्ष नां हारियां।ए।
बीजउ दृष्टांत।।२।।छ।।

५६

सघा।कपि राजा अपथ्यं आम्रकं भुक्त्वा।राज्यं हारयति।तथा।तणइं प्रकारिइं ऊणकं एक राजा नइं आंबां वावरिवानुं व्यसन अति
घणुं।एकदा प्रस्ताव विलोलितां इं आंबा घणां कांई वावरियां अजीर्ण विषूचिका ऊई।तेह वइ महा वैद्यक ष्टिइं घणु उकां
ई उपचार करी सा जु कीधु।तिवार पछी वैद्य राजा नइं कहिउं।जउ तुम्हे आज पछी आंबा वावरिसिउ तउ मरण छइ।सिइं इ
म कही राजा नइं आंबा षाइवानी विद्ये आषडी दीधी।इम करतां राजा नइं व्यसन आंबानुं देषी रहीन सकइ।अनइ जु आंबा
लिइ तु असमाधि थाइ।तिह्नार पछी देसमांहिला सर्वे आंबा राजाइं कपाविया।।तेह वरकालांतरि घोडा वगनु कढिउ
परं सि पडिउ।।तेह वरघाक्र।महा तापनु पीडिउ।एक आंबा हेठि जई ऊतरिउ।महिनानइं वाव रतां जिम हाथु थाकां तिथि कांति
हां नां आंबा लेई नासिकाइं परिमल लेई।रसास्वादयता थिऊ।तत आंबा वावरियां।।तेह थिऊ ग्रारीरि विकार ऊपनु।।तेणइ विकारि
इं मूउ।एक आंबानां स्वाद थी राज्य चूकउ।एची जउ दृष्टांत।।३।।।एवं माणुस्सगा कामा।देवकामाण अंतिए।सहस्सगुणिया
भुज्जो।आउं कामायदिव्वआ।।१२।।देवकामानां अंतिके समीप एवं कां किणी सहस्रा आम्रसहस्रा मनुष्यकाकामभोगा सव
नि।।दवतानां भोगनइं समीपि एवंइं णइ सा कोटि कागिणी सिरीषा।आंबा सरीषा मनुष्य संबंधीया कामभ छइ।दिव्यं आयुः।दिव्या
कामभोगाः मनुष्यभोगेभ्यः स्वयः सहस्रगुणितास्तवेति।देवनूं आऊषूं।अनइं देवनां कामभोग।मनष्यनां भोग पां
हि स्वय घणी वार सहस्रगुणां कीजइ।एतलां छइ।एह कारणा थोडा भोग नइ कारणि घणा भोग कीइं बोडीइ।इसिउ अर्थ
।।१२।।अणगवासाणउआ।जा सा पन्नवउ ठई।जाइजीवंति दुम्मेहा।ऊणा वाससयाउए।।१३।।प्रज्ञावतः अनेकवर्षां
नियुजिता।नियासा आगमप्रसिद्धा देवलोके सुखमया स्थितिः प्रज्ञावंत छपस्य वंत रहइं।अनेक वर्ष तणां नियुजिताय।।
त आगम प्रसिद्ध देवलोकि सुखमय स्थिति आऊषउ।मेधा सक ऊन वर्ष शत।तायुषिया निश्री निपुजिता मिजीयात हारय

ति॥ दुर्मेधस कुबुधी जीव नइ ऊणइं वर्षशत नइं आऊषइं कुंतइ जे घणा नियुत तिहा रइं नियुत दिइं तेह वधीया वर्ष
तणु आंक चउरासी लाष गुणउ कीजइ। एतलइ नयुतांग कहइ। एतलइं नियुत कहइ। एहवी घणां असुत पल्योपम सागरोप
म देवनइं आऊषइ वर्तइ॥१३॥ जहा य तिन्नि वणियो। मूलं घित्तूण निग्गया। एगो त्थ लहए लाभं। एगो मूलेण आग
उ॥१४॥ यथा त्रयो वणिजः। मूलधनं गृहीत्वा परदेशं प्रति निर्गताः। जिम त्रिणि वाणीया मूलधन लेई नइं परदेसि चाल्या
। अत्र कालांतरे तेह त्रिहुं वाणीया माहि एक लाभ रूप पावइ। द्वितीयो मूलेनागतः। बीजु मूल मायु लेई घ
रि आविउ॥१५॥ एगो मूलं पि हारित्ता। आगउ तत्थ वाणिउ। ववहारे उवमा एसा। एवं धम्मे वियाणह॥१६॥ एको मूल
मपि हारयित्वा वणिग् गत आगतः। एक वाणीउ मूलधन नीगमी घरि आविउ। एषा उपमा। एष दृष्टांत व्यवहार वृत्तांत
। ए दृष्टांत व्यवहार उ नइ विषइ वर्त्तइ। एवं धर्मे विजानीत। इम तीणइ प्रकारि इं धर्म नइ विषइ दृष्टांत जाणउ॥ ए
क एक व्यवहारीउ। तेह नइं त्रणि पुत्र। तेहनी सामग्री परीक्षा करणी पिताइं सहस्र दीनार सरीखा आपी विद
शि चालिया। एहनु विवसाय करी मूल गीठी अनइं लाभ रूप जीविका आविया। तत्र एक आपणी रहुं जीवि
ई जूआ इदम्य उरि गया। वरु पुत्र विचार षाऊ तार हरि विकइ अधिक वरू संषेपी सर्व प्रकारि आपणपइं द्रव्य क
माडी। बीजु पुत्र आदस्या उरि गयु क्रइ मची तवइ महाराणा पिता नइ घरि घणी लक्ष्मी बइठी लाभ रूप जइ तगीत वा
जित्र पान खादिम स्वादिम चि कुप्रकार भोग सोरव्य भोगवइ। अनइ मूल गीठी राषउ जाउ। त्रीजु वली तवइ पिता वसु
ही जा अर्थ नाग वणहार अन्हा झिउ त्र नइं वि द्रव्यो कलइ तसिउं। सात ग्री या लगइ सुहव इसिइ एते लु
धनवह। तसिउं धन कमाईवा निमित्त सिउं काय कष्ट कीजइ। इम तेणइ मूल गीठी इवा धी। ए ह वडाक तालके॥

दिने। तत्र प्रथमो पुत्र देसाउर कोरी आव्या तिहवार इ पिता इं त्रिहुं कहइ धन कमाईवा सुसमाचार पूछिउं जे
जेणइ मूल गीठी राषी लाभ विउ कांई नहीं। तेह घर नु कमारू कीधु। बीजउ जेणइं पूंजी राषी। तेह घर नइ
व्यापार लगाडिउ। त्रीजु जेणइ लाभ आणिउं तेह घर नु धणी कीधु॥१५॥ माणूसत्तं भवे मूलं। लाभो देवइ
भवे। मूलछेएण जीवाणं। नरग तिरिक्खत्तणं धुवं॥१६॥ उत्तममध्यमपुरुषाणां। मानुषत्वं मूलधनं भवति। उत्त
ममध्यमपुरुष रहइ मनुष्य गति मूलधन हुइ। पुण्यवतां देवगति भवति। पुण्यवंत जीव नइ देवगति लाभ
रूप हुइ। जीव नइ पाप करतां मूल छेद। नरकगति तिर्यक्त्वं भवति। पापकारी आ जीव रहइं मूल छेद
करी मनुष्य नइं नीगमी करी। नारकी पणुं तिर्यंच पणुं धुव निश्चइं हुइ॥१६॥ दुहउ गई बालस्स। आवई
वहमूलिया। देवत्तं माणुसत्तं च। जं जीए लोलया सढे॥१७॥ बालस्य मूर्खस्य द्विधा गति आपतति। मूर्ख नइं
पापनइं प्रसादि इ द्विधा बिहुं प्रकारि। नरकनी गति। तिर्यंचनी गइं आविइ। किंभूता गति वधमूलिका वध
जीवहिंसा प्रमुष पापकर्म मूल छइ जेहरइं। यत् यस्मात् कारणात् जीव पापकर्म जितदेवत्वं च अन्यत्
मनुष्यत्वं जे एहारित्ता। जेह कारण उ जीव पापकर्म्म करी देवपणुं मनुष्यपणुं हराविउं। किंभू जीवः लोलुप
युक्तः। अत एव शठः लोभ निइं हितवइं। एह कारण शठ धूर्त्त वइ॥१७॥ तउ जिए सयं होइ। दुविहं दुग्गइं गए। दु
लहा तस्स उमग्गा। अद्धाए सुचिरादवि॥१८॥ ततो जीवः जितो हारितः सन् सदा द्विधा दुर्गतिं गतः अवा
प्ता। तिवार पूर्छि इं जीव देवगति मनुष्यगति हराविउ हुंतु सदा इ निरंतर द्विध प्रकारि इं दुर्गति नरकगति
तिर्यंचगति ... तउ। उन्मज्जना नीकलिवुं दोहिलूं हुइ॥१८॥ एवं जियं सपेहाए। तुलिया बालं च पंडियं। म्र

लियं तपावसिति। माणसं जोणिमंतिज्जे॥१९॥ तजीवा मूलिकं अविसंति। तजीव [illegible]यामइ। जमानु
षीयो निउयर्यात्ति जे जीव मनुष्यजन्म पामइ। किं कृत्वा। सिउ करीनइ। स्वबुध्या एव बालं इति पंडितं अजि तंतो लियिवा।
आपणी बुद्धिइं करी एवं एणइ प्रकारिइं। बालमूर्ष हराविउ। पंडित आदराविउ। तालयित्वा विचारीनइ॥२०॥ वि
मायाहिं सिरकाहिं। जनरा गिहिसुया। उवेति [illegible]रावि[illegible]मा णुसंजोणि। कम्मसच्चा हु पाणिणो॥२०॥ जे नराः वि
मात्रा सिः शिक्षणो। पिसुहृता नवंति। यनरमनुष्य विमात्र विचित्ररूप अणुव्रतादि करि ग्राह्यांइ करी गृहस्थ
व्रतासु हृतसदाचारी हुआ। तकर्मसत्या प्रमाणीनः मानुषीयो निउययांति। तथा ते जीव कर्म कामनइ वि
षइ सत्य व्यवहारहुं ते मानुष्य पामइ॥२१॥ जेसिं तु विउला सिरका। मूलियं ते अइछिया। सीलवंता सविसेसा।
अदीणा जंति देवयं॥२२॥ उपुनः यषांनराणां विपुला शिक्षा नवंति। जेह मनुष्यरहइं विपुल विस्तीर्ण महाव्रतशि
क्षा हुइ। दीक्षा यालइ। ते मूलिकं अतिक्रांता देवयं यांति। तमनुष्य मूलधन मनुष्यजन्म क्रम्या हुं ते देवपणउ।
पामइ। किंतनराः सीलवता सीलसहित बहु पुनः किं० सविशिक्षा उत्तरगुण प्रतिक्रमण प्रतिलेषना पिंडवि
शुद्ध्यादिक गुणसहित छइ। पुनः किं० नरा अदीनाः दीनपणारहित छइं जे जीव॥२२॥ एवमदीणवं भिरकं। अगा
रिंच पाणिया। कहं णु जिच्चमेलिरकं। जिच्चमाणो न संविदे॥२३॥ सुधी एवंविधं अदीनवंतं भिक्षुं च अगारिणं॥ वि
।ज्ञायई हसंसारे कथं जीयत्त्वहार्यं ते। सुधी विद्वांस एवं [illegible]इ एणइ प्रकारि। अदीनवंत नराइ दानपणारह
ति भिक्षुक षाअर अनइ अगारी गृहस्थ जाणीनइ। ईहराला भमनवेदा। इह लाभ किमहराइ। केवलं जीयमानो न संवि
ते। परं केवलं जीयमानम पिनरणाइ। हरावी उ जाणइ नेही॥२३॥ जहा कुसग्गे उदगं। समुद्देण समं मिणे। एवं माणुसगा

कामा। देवकामाण अंतिए॥२४॥ यथा कुसग्रे उदगं समुद्रेण समं मुनियात्। यथा जिम कुश तणइ अग्रि उद
क जलबिंदु पाणी तणु बिंदु उ समुद्र सिउं हके कमइ। एवं मानुष्यकाः कामाः देवकामानां अंतिके समीपे नवंति। ए
वेई एणइ प्रकारिं मनुष्यसंबंधीया कामा न गतणाइ समीपि जाणि वाकुई॥२५॥ कुसग्गमित्ता इमे कामा। संनिरुद्धं
मि आउए। कस्स हेउं पुराकाउं। जोगक्खेमं न संविदे॥२६॥ इमे कामाः कुशाग्रमात्रा नवंति। एकाम नग कुसणा तइअ
ग्रवि लागिया पाणी तणु बिंदु ए। तेह सारीषा छइ जीवः आयुषि सन्निरुद्धे सति कि० हेतु पुरस्कृत्य न संवेत्ति। जीव आउ
षइ रूद्धिइं रूतइ किसिं ए हेतु कारण। पुरस्कृत्य आगलि करीनइ। योगक्षेम नजाणइ। अलब्धलाभो योगः
। अणलाधी वस्तु लहइ ते योग कहीइ। लाधी वस्तु राषीइ ते क्षेम कहीइ। लब्धस्य परिपालनं क्षेमः॥२६॥ इह कामानियट्ट
स्स। अत्तट्ठे अवरज्झइ। सुच्चा नेआउयं मग्गं। जं भुज्जो परिभस्सई॥२७॥ अस्मिन् संसारे कामात् निवृत्तस्य आत्मार्थं अपरा
ध्यति। इहइ एणइ संसारि कामभोग तणी हहा उ अणनिवर्त्ततां हुंतां। आत्मार्थ स्वार्थ पामइ। नियायिकं मोक्षमार्गं श्रु
त्वा यतस्मात् कारणात् जीवस्य पुनः परिभस्यति। नियायक सणीइ मार्ग मोक्षमार्ग सांभलीनइ। जे जीव सणीइ वली स्व
ार्थ पामइ॥२७॥ इह कामनियत्तस्स। अत्तट्ठे नावरज्झई। पूइदेहनिरोहेणं। भवे देवित्ति मे सुयं॥२८॥ इह अस्मिन् सं
सारे कामान् निवृत्तस्य आत्मार्थो नापराध्यति। ईहइ एणइ कामभोग हहा उ निवर्त्ततां हुंतां आत्मार्थ स्वार्थ न यामइ। प्रति
निरोधनाद वः स्याव इति माया श्रुतं। अपवित्रदेह तणइ निरोध सणीइ रूधवइ करी देव हुउ॥२८॥ इड्ढी जुई
जसो वन्नो। आउं सुहमणुत्तरं। भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु। तत्थ से उववज्जई॥२९॥ स का देवो[illegible]यः सात्र उत्पद्यत। ताता देव व
लीताणइ मनुष्य सवि उपजइ। यत्र मनुष्य ऋद्धिः द्युतिः यश वर्ण आयुः अनुत्तरं सुख [illegible]। तजीह मनुष्य

उत्तराध्य० बाला०५८

नविऊपजइ।यत्रमनुष्येषुऋद्धिः द्युतिः यशः वर्णः आयुः अनुत्तरसुखं च वर्त्तते।तजीहमनुष्यमांहिं ऋद्धिदीप्ति कां
तियशवर्णआऊखुंअनुत्तरसुखादिसर्वोत्कृष्टसुखवर्त्तइ॥२७बालस्सपस्सबालत्तं।अहम्मंपडिवज्जिया।
चिच्चाधम्मंअधम्मिट्ठे।नरएसुउववज्जई॥२८बालस्सबालत्तं।अहम्मंपडिवज्जिया।चिच्चाधम्मंअधम्मिट्ठेन
रएसुउववज्जई॥२८बालस्यअधर्मंप्रतिपद्यअधर्मिष्ठः। धर्मंत्यक्त्वानरकेषुउत्पद्यते।बालमूर्खअधर्म
पडिवज्जीनइअधर्मकरइ।धर्मत्यजीनइ छांडीनइ।नरकमांहिऊपजइ॥२८धीरस्सपस्सधीरत्तं।सव्वधम्माणुवि
त्तिणो।चिच्चाअहम्मंधम्मिट्ठे।देवेसुउववज्जई॥२९धीरस्सधीरत्वंपश्य।विद्वांसपणुंजोइ।किं० धीरस्यसर्व
धर्मानुवर्त्तिनः।अनुगमकरइपालइ।धर्मार्थीअधर्मंत्यक्त्वादेवेषुउत्पद्यते।धर्मनइअधर्मनिनइ
कारणइ।अधर्मत्यजीनइछांडीनइ।देवमांहिऊपजइ॥२९तुलियाणबालभावं।अबालंचेवपंडिए।चइऊणबा
लभावं।अबालंसेवएमुणि त्तिबेमि॥३०पंडितबालभावं।चअत्यक्त्वा।अबालभावंतालयत्वा।बालभावत्यक्त्वा
मुनिअबालत्वंसेवते।इतिब्रवीमि।पंडितमुणीइविद्वांसबालभावअनइ अबालभावतोलीनइ।बाल
भावत्यजीनइछांडीनइमुनिऋषीश्वरअबालपंडितपणुंसेवइ॥३०एलयअध्ययनसमाप्तं॥७॥ ॥अधुवेअ
सासयंमि।संसारंमिदुक्खपउराए।किंनामहुज्जतंकम्मयं।जेणाहंदुग्गइंनिगच्छिज्जा॥१॥नामअंतेकोमला
मंत्रेण।संसारेतत्किंकर्मभवेत्।नाम इतिअस्यकोमलामंत्रणं।संसारमांहिंतेकिंसउकर्मकरुइ।येनअ
हंदुर्गतिनगच्छेयं।जेणइकर्मइहुंदुर्गतिनजाउं।किं० संसारअध्रुवअनइनिश्चलनथी।पुनः।किं० संसा
रे।अशाश्वते।अशाश्वतउछइ।जोसंसार।पुनः किं० संसार।दुखप्रचुरघणुंअचलाऊरइछइजिहां॥रविज्ञ ५९

हिऊपुव्वसंजोगं।नसिणेहंकहंचिकुविज्जा।असिणेहसिणेहकरेहिंदोसपएहिंमुच्चएभिक्खू॥२पूर्वसंयोगत्यक्त्वापिस्ने
हंनकारयेत्।स्नेहकारकेष्वपिअस्नेहस्सन्भिक्षुःदोषप्रदोषात्मुच्यते।स्नेहकरइविषइअस्नेहअणकरतउहूंतउसिद्धु
ऋषीश्वरदोषनथीमइ।दोषप्रदोषमांकीइवधबंधनात्दोषःकथ्यते।वधबंधनउऊपनाततेदोषकहीइ।२अत्रक
पिलऋषीश्वरदृष्टांतमाह॥कोशांबीनगरीइजितशत्रुराजा।तेहनइकाश्यपपरोहितजितसीनामभार्या।तेहनइपुत्रक
पिल।पुत्रनान्हायिकपितामृत्युकिउंयरालाकप्रासहुउ।तयपरोहितनीपदवीराजाइबीजानइदीधी।तिहांवारइतेनवुप
रोहितपिताबाजतइगाजतइ।आपणइमंदिरिजावालागु।तिहांवारइकपिलनीमाताइनवीपरोहितनीपदवीदेषी
दुखकरयनउ।आपणुपतितेन्नीरसरिउ।गाढइस्वरिइरोवालागी।तिहांवारइकपिलइपूछिउंमातकांरोइंवछता
हरूपिताएहवइमंडाणिविद्यावंतनीकलत।तयपदवीताहरापितानीइणइलीधी।तिहांवारइपुत्रइकहिउंहूंरसणुं
अनइमाहरापितानीपदवीलिउं।तिहांरइमाइकहिउंवछइहांतुरुजनइअमर्षिनाविद्याकानहीसणावइ।जुसणावा
नीइछाधरइवइतुसावस्तीइजा।जिहांतिलीइकपिलसणावानमित्रतिहांगयु।तिहांवारइइंद्रदत्तिइकहिउंजेतूंसणावा
आविउ।तेअपारिस्रुडउ।जेहसणीपक्षमेनइविद्याषिकुंजिस्रुडउंकुइ।विद्यानामनरस्यरूपमधिकंप्रच्छन्नगुप्तंधनं
॥रतसणावानीसामग्रीमिलतादोहिली।सज्झावृत्तिनिजन।नइविद्यासणतांदोहिलीथइ।नगरमाहिसालिभद्रनाम
ष्टिविकुंजरोजईयाचिउं।तिहांश्रेष्टिइजिमणदिवुपडिविजिउ।श्रेष्टिइघरनीदासीनइकहिउं।एविद्यार्थीबइएहनइ
जिमतिइंदवु।तदासीसदानिरंतरपीसइ।कपिलजमीरइइंद्रदत्तकन्हइंसणइगुणइ।इमकरतांहसतांबोलतांदासी
कपिलसंबंधहुउ।एहवइएकवारदासीनइइंद्रोछववआविउ।चाटमुखदेषीकपिलिइ।पूछिउं।आजकालसुंदरीको

तिहांतोहरा पितानुमित्र इंद्रदत्तपंडित छइ।तेहूनइ सणाववि।मातानुवचनमानी।अनुमति।

दासीइं कहिउं। आज नगरमांहि स्त्रीउ छव आवितउ बइ। अनइ मझ रहिउं। किसिउं वस्त्र आभरण फूल तंबोल लेवा
ते तणुं द्रव्य नथी। जे कांई वस्त्राभरण पहिरूं बीजी सखी मझनइं शृंगार रहित तंबोल विना [illegible]। ए वात सांभली
कपिल कालमुहुं हूउ। तिवारइं दासीइं कहिउं। तम्हे ऊचाट म करउ। एक धन आणिवानुं उपाय बइ। इंहां धनश्रे
ष्टि नगरमांहि वसइ बइ। जे पहिलुं प्रभाति आसीर्वाद दिइ। तेहनइं बि मासा सोनुं आपइ। तेणइं लोभिइं रात्रिइं भव
ला अणजांणतु निद्रा अणआवतइं रात्रिइं नीकलिउ। वाटइं तलार धरिउ। लेई राजानइं आपिउ। राजाइं हवीत
पूछिउ। अहो ईं कोण। तेणइं कपिलिइं यथास्थित आपणुं वृत्तांत कहिउं। तिहां राजाइं तुठइं हूंतइं कहिउं जे
तम्हे सो तुं ताहरइं जोईइ। ते तलुं मागि। तिहवारइं कपिलइं कहिउं स्वामी निवरइ छंदे सिबइसी आलोची आ
वुं। इम कही वाडीमांहि गयु। चीतवइ सुमासा मागुं। तथा सहस्र लाख कोडि मागुं। कालिइं तेहइ घट सिइं।
उ अधिके रू मागुं। लोभ देषो लोभिइं वाधिवा लागु। तिहां वाडीमांहि इम चीतवइं जातिस्मरण ऊपनइं। संय
म सबद्ध हू। आफणी लोच करी देवतानुं दीधउ वेष लेई राजा कन्हइं आविउ। राइं पूछिउं ए सिउं कीधउं। तिआ
पणा मननु विस्तर कहिउ। जहा लाहो तहा लोहो। लोहा लोहो पवड्ढई। दो मासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं॥१॥
यथा लाभस्तथा लोभो लोभ वति। तिमई तेणइं प्रकारिइं लाभ तिम लोभ हुइ। लाभात् लोभः प्रवर्द्धते। लाभउ लोभ वाधइ।
द्विमाषकृतं कार्यं कोट्यापि न निष्ठितं। बि क्रमासे प्रारंभिउं काज कोडिइं न निष्ठितं सणी इम पूरुं न हुउं॥ उहइ संते
ष न ऊपजइ। तेह सणी एइम कीधउं। तिहां राजा कहइ तुम्हनइं कोडि मासा दिउं। तिवारइं कपिलइं कहिउं। मा
रइ ईंणइ इंसरिउं। महं गृहस्थावास मूंकि उंह वइं उम्हइं धर्मध्यानि बइसुं। इम उ पाद सादई राजानी मसावा
वि ६०

दि रिनी कलिउ। बय मासा केवलज्ञान ऊपनुं॥ आ वस्ती उ राजा गृह जाइ। अढार जोयणानी अटवी। तिहां बल
नइ प्रमुख दासय पांचसइं चोर बइं। ते ज्ञानिइं करी तेहनुं लाभ जाणी॥ तिहां गयु। तेहू कउ आवउ आदषी चोरे मांहे
मांहि कहिउं ए एहनइं परा सवीई म चीतवीत आपणा स्वामी कन्हइं लेई गया। तेणे कहिउं ए नाचि। तिहां कपिलइं क
हिउं। आम्हना वंउ उत्तन चिंवरा सार कोन थी। तेह वइ ५०० सइं ताल। नोबद करइ। कपिलइं कहिउं आम्ह ध्रुवा
गमइ। अध्रुवे एह वइ शमलिइं कितलाइ पहिलइ ध्रूए। कतला बीजइ। इम ५०० पांचसइं प्रबूझवी दीक्षा दीधी॥१॥ तानां
१ स्ता। राद संसार समग्गां हियनिमाय सव्वजीवाणं। ते सिंचमुरकणट्ठाए। नामइ सुरणि वाराविगयमोहो॥ इ मुनिवर क
पिलः संपूर्णज्ञानदर्शनं तरं एवं साषात। मुनि कपिल ऋषीश्वर तिवारइं विइ एवंई णइ प्रकारिइं बोलइ॥ किंमुनिवर
ज्ञानदर्शनसमग्र। संपूर्णसमग्र संपूर्ण ज्ञानदर्शनसमग्रसहित बइ। किमर्थं उ वानां विशेषहितार्थः स विक्कं जी
वरइइ। नित्य पंचसमस्त हितनइ कारणि। पुनः किंमर्थी तेषां विमोक्षार्थं तेहं पांचसइ चोरनइ विशेषिइं मुक्ति
नइ कारणि। पुनः किंमुनिवरः विगतमोहः। विगत गिउ मोह बइ॥ इ सव्वं गंथं कलहं च। विप्पजहे तहाविहं भिरकू॥
सव्वेसु कामजाएसु। पासमाणो न लिप्पई॥२॥ भिक्षुः तथाविधं सर्वं ग्रंथ व अन्यत् कलह विप्रजहात। भिक्षु ऋषीश्व
र तथाविध सणीइ तस्य सर्व संघलउ इ ग्रंथ परिग्रह अनइ चित्र जइ ग्रथत सणीइ बाडइ सर्व कामजात सुयस्प।
मा न न लिप्यते। सघलाइ कामसो नों ज्ञात समूहनइ विषइ दोषदेषतुं हुंतु। लेपन पामइ। आस्तन न हुइ। किं भिक्षु
त्राई त्राई सणीइ जीव कृष्यानुकरण बइ॥ भोगामिसदोस। विसन्ने हियनिस्सेयसबुद्धि वोच्चत्थे बाल मंदिए मूढे
बुज्झई मच्छिया वि खेलंमि॥३॥ बाल: मंद: मूढ: बुध्यति। बाल मूर्ष मंद आलसू कृतज्या मूढ चित्त हुउ मोहग्रस्त

उ। कर्मबंधिबांधीइ। किं० जीवः भोगामिषदोषविसन्नः भोगरूपीया आमिष तेहना दोषनइं विषइं आस
क्त छइ। जे जीवः पुनः किं० जीव विपर्यस्त हितनिःश्रेयस बुद्धिः विपर्यासपामी हितनइं विषइं निःश्रेयस समस्त इ
बुद्धि छइ। इसिउ जीव। कहइ वमंद केहूवा। कहिना पइं। मक्षिका नीपरिइं। जिम मक्षिका खेलेबध्यति। जिम मा
खी श्लेष्मा इं बंधनपामइ॥५ दुपरिच्चया इमे कामा। नो सजहा अधीरपुरिसेहिं। अह संति सुव्वया साहू। जे तरंति
अतरं वणिआवा॥६ इमे कामाः दुःपरित्यजा। ए कामभोग जीपवा। असकय अधीरपुरुषैः नासुहाः अधीरजणी
इं कायरपुरुषनो सुजहा त्यजणी इसुखिइं बांडीन सकीइ। अथ साधवः सुव्रताः संति। अथ साधु ऋषीश्वर सूव्र
तजणीइ क्रियावंत छइ। अथवा विषयरूपीउ समुद्र तरइ। कहइवा वणिज इवा। यथा वणिजः अतरं समुद्रं त
रंति। जिम वाणीया अतरं समुद्र। अ शक्य विषयाभिलाष तरइ॥६ समणामु एगे वयमाणा पाणवहं मिया।
अयाणंता मंदा नरगं गच्छंति। बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं॥७ मृगा मु वयं एके श्रमणा इति वदमाना संति। मृगमूर्षे
एक श्रमण इ साधीश्वर वदमानजणी इं। इसिउं बालता छइ। मृगाः प्राणवधं अजानाना मंदा बाला नरकं गच्छंति
मृगअजाणी मुग्ध प्राणीयानु वध। अजाणता बालमुर्षनर कि जाइ। कालि दृष्टि निपाप मुइं दृष्टिइं करीनइं
॥७ नहु पाणवहं अणुजाणे। मुच्चेय कयाइ सव्वदुक्खाणं। एवं आयरिएहिं अक्खायं जेहिं मो साहू धम्मो पन्नत्तो
॥८ साधुः ह्न निश्चितं प्राणिवधं अनुजानन् अपि कदापि सर्वदुःखेभ्यः न मुच्यते॥ न हि इ प्राणीयानु वध अ
जाणतो हंता कदापि जणीइ। किंबा छूटइं। सर्व दुःखकी मुकाइ। एवं आचार्यै आख्यातं। एवंई ए इं प्रकारिइ। आ
चार्य कहिउं। यै अयं साधुधर्म प्रणीतः। जे हे आचार्ये। साधूधर्मउपदिसिउ॥८ पाणाइ नाइ वा इज्जा से समिइत्ति वु ६१

च्चई। तउ से पावयं कम्मं निज्जाइ उदगं व थलाउ॥९ यः साधुः प्राणान् न अतिपातयति। जे महात्मा प्राणीआ
जीव रहइं हिंसा न ऊपजावइं। स समितः अतिईणइं प्रकारिइं कहीइ। एतलइं पंचसमतिइं समतउ कुइ
किंचित्र कुत्राई जणीइ जीवरक्षं करइ। जे ऋषीश्वर ततो अनंतरं से तस्मात् पापकर्म निःऽर्याति निवारइ ग्रि
इं ते जीवनु पापकर्म नीकलिइ। कमिव उदकमिव। यथा स्थलात् उदकं निर्याति। जिम थलनूं उदक पा
णीनीकलइ॥९ जगनिस्सिएहिं भूएहिं। तसनामेहिं थावरेहिं। नो तेसिमारभे दंडं। मणसा वयसा कायसा॥१०
तेषु भूतेषु त्रसनामकेषु। वन्यत्। स्थावरेषु न दंडं न आरभेत्। ते भूत प्राणी मात्र त्रस अनंइं स्थावर तेनइं विषइं दं
ड जणीइ हिंसा न आरंभइ। केन मनसा वचसा कायेन। किसिइ करीनइं मनिइं वचनिइं करीनइं। किं० भू
तेषु। जगन्निश्रितेषु। जगविश्वतणी निश्रां छइ। जे जीव॥१० सुद्धेसणाउ नच्चाणं। तत्थ ठविज्ज भिक्खू अप्पाणं। जाया
एवा सिमेसिज्जा। रसगिद्धे न सिया भिक्खाए॥११ भिक्षुः शुद्धैषणां ज्ञात्वा तत्र आत्मानं स्थापयेत्। भिक्षु ऋषी
श्वर शुद्ध निर्मल एषणा जाणीनइं तिहां आपणपइं स्थापइ। यात्रार्थं ग्रास एषयेत्। संयमयात्रानइ अर्थिं ग्रास ज
णीइ। आहार लेवा छइ। भिक्षुः रसगृद्धो न स्यात्। भिक्षान एलेण हार भिक्षु ऋषीश्वर ग्रधनु हइं॥११ पंता
णिचेव सेविज्जा। सीयपिंडं पुराणकुम्मासं। अदु बुक्कसं पुलागं वा। जवणट्ठाए निसेवए मंथुं॥१२ साधुः प्रांता
नि सेवेत। साधु ऋषीश्वर जोता रीजणीइ नीरस आहारसेवइ। सीत पिंड पुराण कुल्माष अथवा पलाक बुक्क
स मंथु रवरे दचूर्ण यापनार्थं निषेवेत्। सीत पिंड पुराण जणीइ। जूनी कुलथ माष अडद अथवा पुलाक नीर
स नाल। बुला बुक्कस जणी कुलथ। चिणा मिश्र धान्य मंथ जणीइ बदर चूर्ण यापनार्थं। रक्षानइं कारणि नि

पावत्तसणीइ अतिहिं सेवइ॥१२॥ जलरकणं समिणंचा। अंगविज्जाय जे पउंजंति। न हु तासमणी वुच्चंति। एवं आयरि
एवं आयरिएहिं अक्खायं॥१३॥ जलक्षणं स्वप्नं अंगविद्यां प्रयुंजंति। जे महात्मा लक्षण ... अंगविद्या प्रयुंजम
क्न निश्चितातिश्रमणा न उच्यंते। कु निश्चिइं ति श्रमण ऋषीश्वर न कहीइ। एवं आचार्ये आख्यातं। एवं एणइ प्रका
रिइं आचार्ये कहिउं॥१३॥ इह जीवीयं अनियमित्ता। पब्भट्ठा समाहिजोएहिं। ते कामभोगरसगिद्धा। उव
वज्जंति आसुरे काए॥१४॥ इह अस्मिन् संसारे। जे जीवितं अनियम्य समाधियोगेभ्यः प्रभ्रष्टाः॥ इहइ एण
इ संसारि जे जीवितव्य सणीइ संयम अनियमसंउ श्रमणा संवरी नइ समाधियोगतु भ्रष्ट हुआ। ते कामभ
गरसइ गृद्ध हुंता आसुरी योनि ऊपजइं॥१४॥ ततो वि य उवट्टित्ता। संसारं बहुं अणुपरियडंति। बहुकम्म
लेवलित्ताणं। बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं॥१५॥ ततोऽपि उद्वृत्य संसारं बहु पर्यटंति। प्रचुर कर्मलिप्तानां तेषां आसु
रीयोनि थिकउ उद्वृत्य सणीनइ नीकली नइ बहुघणउ संसार भमइ। बहुकर्मलिप्तानां तेषां बोधिः सुदुर्लभा स्या
त्। बहुघणउं कर्मरूपीउ लेप तेणइ करी लीप्या हुंता तीहं जीवरहंइं बोधि सम्यक्त्व हुइ अतिहिं दुर्लभ हुइ॥
१५॥ कसिणंपि जो इमं लोयं। पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स। तेणावि से न संतुस्से। इइ दुप्पूरए इमे आया॥१६॥ यः पुनः
कृत्स्नमपि लोकं प्रतिपूर्णं सणीइ सरिउ पूरिउ एकरहइं दिइं स्यात् तेनापि न संतुष्येत्। तेणि सघलउ जा
इ लोक इस्यउ भरिउ पूरिउ करी संतोष न हो। अयं आत्मा इति दुःपूरको वर्तते। एउ आत्मा इति इणइ प्रकारि
इं दुःपूरक वर्तइ॥१६॥ जहा लाहो तहा लोहो। लाहा लोहो पवड्ढई। दोमासकयं कज्जं। कोडीए वि न निट्ठियं॥ ६२
१७॥ यथा लाभस्तथा लोभः स्यात्। जिम ईणइ प्रकारिइं लाभ सति मनोरथ कहुइ। लाभात् लोभः प्रवर्द्धते।

लाभ तउ लोभ वाधइ। द्विमाषकृतं कार्यं कोट्यापि न तिष्ठते। बि माषे सोनइं सिउं काज कोडि न इ न निष्ठितं। स
णीइं संपूर्ण न हुउं॥१७॥ नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा। गंडवच्छासु णेगचित्तासु। जाओ पुरिसं पलोभित्ता। खेल्लंति जहा व दासे
हिं॥१८॥ राक्षसीषु स्त्रीषु न गृध्येत। राक्षसी रूप स्त्रीनइ विषइ गृध्रपणउं न करइ। आसक्त न हुइ। किं स्त्रीषु गंडवक्षासु
गडस्थलि गडुपणइ सणीइ स्तन बइ। ये स्त्री नइ पुनः किं स्त्रीषु अनेक चित्तासु। अनेक घणा चित्त बइ। ये स्त्रीनइ।
याः स्त्रियः पुरुषं प्रलोभ्य यथा सेवकं क्रीडंति। जे स्त्री पुरुषनइ लोभवीनइ यथा जिम दासनी परिइं क्रीडा
करइ॥१८॥ नारीसु नो पगिज्झेज्जा। इत्थीविप्पजहे अणगारे। धम्मं च पेसलं नच्चा। तत्थ ठविज्ज भिक्खु अप्पाणं॥
एनारीषु न प्रगृध्येत। नारी स्त्रीनइ विषइ न प्रगृध्येत। सणीइ आसक्त न हुइ। अतिहिं अणगार स्त्री विप्रज
ह्यात्। अणगार ऋषीश्वर स्त्रीनइ छोडइ। पेशलं धर्मं ज्ञात्वा भिक्षु तत्र आत्मानं स्थापयेत्। पेशलं रूडउं
धर्म जाणीनइ भिक्षु ऋषीश्वर तीहं धर्मनइ विषइ स्थिर करइ आपणउं स्थापइ॥१९॥ इइ एस धम्मे अक्खा
ए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं। तरिहिंति जे उ काहिंति। तेहिं आराहिआ दुवे लोग त्ति बेमि। कपिलन विशुद्ध प्रज्ञ नइ इति
एष धर्म आख्यातः कपिल ऋषीश्वरइ इति सिउं धर्म कहिउ। किं कपिल न विशुद्ध प्रज्ञेन। विशुद्ध निर्मल प्रज्ञा बइ
। य कपिल ऋषीश्वर करिष्यंति ते तरिष्यंति। जे धर्म करिस्यइ ते तरिस्यइ॥ तेहिं द्वौ लोकौ आराधितौ। ते महात्मा
एइ बि इहलोक आराध्या। इति ब्रवीमि इति इसिउं बोलिउं॥२०कपिल अध्ययनं समत्तं॥८॥ अथ प्रत्येकबु
द्ध अष्टमाध्ययन लिख्यते ॥ करकंडु कलिंगेसु। पंचालेसु य दुम्मुहो। नमी राया विदेहेसु। गंधारेसु य नग्गई॥१॥ वस
ने १ इंद्रदेश्व केऊ वलए ३ अंबाय पुप्फे बाही करकंडु दुम्मुहस्सा। नमिस्सु गंधाररायाय॥१॥ ते प्रत्येकबुद्ध

पुष्फोत्तर पुंडरीक विमानथिका च्यारि जीव देवतासुख भोगवी आऊषो पूरो करी ... सुख्याल किहां ... स्थानकि अवत
रिया। तेहमांहि पहिलो पहिलु कलिंग देसनु धणी करकंडु राजा हूउ। राज्य प्रतिपालि। एक ... वार ते वनक्रीडायैं जाती एक
इ षाइ दीठो महाबलिष्ट रूपवंत जनुधर्णी। गंभीर वृषभ वल्लभ मन्हनी परि इ गर्जीव करतु बीजा जीवनइ बीहावतु अतिदृ
ती हुण सींग अतिहिं इ पूठउ। राजाइं सांढ दीठो। तेहनी रूप संपदा गुण स्तवना प्रसंसा करी। राजाइं आघु वन
क्रीडा हूउ। वली केतलइ एकइं कालांतरि तीणइ ठिराजानि व निजातइ घिकइ वली। ते सांढ दीठो बलइ अंगालो च
नगल्यो बीजा वृषभ सांढइं दीणो उपरा सवस हितु सांढ कंककरडइ पडिउ दीठो। चीतविउं। अहो एसंसार नइ धिगस्तु
हूउ। जेम महा बलिष्ट बीजा जीवनइ बीहावतु हूंतु। तेहजि घाडइ कालांतरि एआज विगत दर्प हूउ। बीजा नायरा सव ष
मइ बिहइ। जिम ए सांढ मोटउ नइ हूउ ते कर्मनी गति। किम दुषीउ हूइ बइ। तिम बीजाइ जीव सुषी हूउ दुखी थाइ। इम चींतवी
। वैराग्य पामी। राज्य मूंकी दीक्षा लीधी॥१ पहिलो प्रत्येकबुद्ध नइं ईणइं दृष्टांतिइं वैराग्य आणीउं॥१ हिव बीजउ जीव पं
चाल देसनु स्वामी द्विमुख राजा हूउ। तेहइ राजा तीणइ जिदिहाडइ वनक्रीडा जातां एकइ थाप्या सइ घणा लोकसमुदाय।
मलीया दीठो। उतीहवइ तिहां पूजा हूउ तेहवइ तिहां घडाबद्धउ टलीउ परिस्वल। एकपट्ट ... सो नेस्तूप ध्वजा वंटी फूले
करी पूजिउ अर्चिउ घंटा तणइ निनादि इत्यादि लोके पूजीउ अर्चीउ दीठो। राजाइं चींतविउं। केहवु दीसइ छइ॥
कल्पद्रुम समान अपूर्व। इम कही गुणस्तवना करी आघु वनक्रीडाइं गयु। वली पाछउ तणीजि वाटइं। तत्र थांभा कइहइ
आवइ। तेहवइ तत्र थांभो लोके जिम शृंगारिउ हूतउ। तिम शृंगाररहित कीधउ तिह वारइ। राजाइं महाविरूप स्तंभ दीठउ इ
म चीतविउं। केहवु विरूप दीसइ छइ। दंस संसारनुं अस्थिरपणुं। जेह थासउ दीसइ छइ लोकने समवायकरी पूजाइं अ
र्चिउं। महामनोरम दीसउ हूंतउ। ते सघलुं क्षणमांहि। सर्व शृंगाररहित केहवु दीसइ छइ। इम चीतवी वैराग्य पामी दीक्षा ६३

लीधी॥२ बीजउ द्विमुख राजा प्रत्येकबुद्ध हूउ॥२ त्रीजउ विदेह मिथुला नगरीनु स्वामी। नमि राजा हूउ। राज्य भो
गवतां एकदा दाघज्वर ऊपनु। तत दाघज्वर सामावाना अनेक उपाय कीधा। पणि सामइ नहीं। तदा दाघज्वर सामावानइं
अर्थि राणी बावनां चंदन घसइ। तदा राणीनां हाथनां कांकणमांहोमांहि आबडइ। सलहइ। तिम रराय नइं अणखि ऊपजइ
इ। तिहारइ राजा कहिउं। एकां कांकणानु शब्द गमउ नथी। तव बोलसा सघली सर्वे कांकण उतारी। इक इक कांकण मंगलीक रा
णी राषइं। तिहारइं राजा पूछइ। हवडां कांकणनु शब्द कांइ नथी। सा सघली उ। तिहारइं राणीइं कहिउं। एकेकां कांकण अ
हिवातन राणी राषिउं छइं। बीजां सर्व ऊतारियां छइं। अनइं जु विमलइ हूउ तु शब्द ऊपजइ। पणि एकलां शब्द न ऊपजइ। एवा
ते सांभली राजा मनि इं चींतवइ। इणइं संसारि घणामांहि रहियां जीवनइं सुष नथी। घणइ दुष छइ। कांकणनु दृष्टांत।
तिम जीव एकलु रहि सिइ तिवारइं सुखीउ था सिइ। उक्तं च। यो संग्रहंणो दुच। एकोह विवरयस्तु। कुमारी वलयस्य वा॥ तु आ
रोगसमइ हूं सर्व संग परत्याग करूं। एणइं वैराग्य ऊपनइं धिक इं नमि राजाइं दीक्षा लीधी॥३ हिवइ चउथउ प्रत्ये
कबुद्धनु जीव। गंधार देसनु स्वामी। नइगई नामइ राजा हूउ। एकवार वसंतमासि वनक्रीडाइं पहुचतइं मार्गि एक आ
म्रवन मांहि मांजरि उ सभ्रीयसी तलसो हा मणु देषी राजा हरषिउ। आंबा हथिनी कलतो राकुन स्मणी एक मांजरि लीधी। ते
हवइ पाछलि लोके आवणहार। गकरिका प्रवाहे सरीकणहइं फल कुणइं मूल। कुणइं पत्र कुणइ शाषा। कुणइ प्रतिशा
षा सर्वे लेई गया। तउ अंब दरसकाष्ठरूप कीधउ। जिम पुरुष स्त्रीषी विना जिम अणलषी उदीसइ। तेहवु निरूप कीधउ। ते
राजा वनक्रीडा करी वली। तीणइं आंबइ आविउ। पणि तेहवु तिहां आंबु नहीं। तिहां सेवक कहइ पूछइ। तत्र आंबु किहां ते
कहिइ स्वामी आ ते आंबु। तिवारइं राजा कहइ। एत्र काष्ठात्र कूं कां। स्वामी तुम्हे नइ एक मांजरि लीधी ... लोके सर्वे

ऊपाडीलीधुं। तिवारइ ते आंबु सूकउ देषीराजाइं आंबानुं अनित्यपणूं देषीवि... ...आलीधी॥ तथ्य... ...जूलइ दमिषि
कइं वैराग्य ऊपनं। दीक्षालेई च्यारि सम कालइं तप्रतिष्ठित नगरि सम काल च्यारि चिहुंदि सिद्धिइं गया॥ ए प्रत्येकबु
द्धविकूनां संबंध विस्तरइं। चरित्र थकि जाणिवा। हवइ विशेषि इं नमिप विज्झाध्ययन नुं मुं वीर वर्द्धमान स्वामिकहि
बइं॥ चइऊण दवलो कात् च्युत्वा मनुष्यलोके उत्पन्नः। पोराणीका जातिस्मरणा इति। नमिराजा देवलोकउ चवी।
मनुष्यलोकि उत्पन्न ऊपनउ हुंतउ। पोराणी कीजे तणीइ गति जन्मांतरि जातिस्मरणइं करी स्मरइ। किं० नमिराजा उपशमा
वितमोहनीकर्म बइं। जीराइं नमिऋषिइं॥ २ जाईसरित्तु भयवं। सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे पुत्तं ठवेउ रज्जे। अभिनिक्ख
मई नमीराया॥ ३ भगवान् नमिराजा जातिस्मृत्वा अणुत्तरे धर्मे सहसंबुद्धः। किं कृत्वा। पुत्रं राज्ये स्थापयित्वा। अभिनिष्क्रामति। भगवंत न
मिराजा जातिस्मरीनइ। अणुत्तर अनुपम सर्वोत्कृष्ट धर्मनइ विषइ स्वइ सा जाणीइ तत्काल संबुद्ध जाणीइ। प्रतिबोध पामिउ ब
इ पुनः किं० सोगान् सो म्यान् नमिराजा मिथिलां सपुरजनपदां बलं अवरं सकलं परिजनं त्यक्त्वा। अभिनिःक्रांत भगवंत ज्ञानवं
त नमि नरेश्वर। मिथिला नगरी पुर नगर जनपद सहित ऊउ। बल कटक अवरोध जाणीइ अंतःपुर सकल समस्त परिवार छांडी त्य
जीनइ। अभिनिःक्रांत जाणीइ नीकलिउ। किं० नमिराजा एकांत अधिष्ठित। एकांत जाणीइ मोक्षमार्ग आश्रय बइ। जे नमि नरेश्व
रा॥ ४ कोलाहलगब्भूयं। आसी मिहिलाए पव्वयंतंमि। तइया रायरिसिंमि। निमंमि अभिनिक्खमंतंमि॥ ५॥ तदा अस्मिन् प्रस्तावे।
राजर्षि नमि परिव्रजामि नमिथिलायां कोलाहल मइ हुई। किं० नमि। अभिनिःक्रामति। नगरी उनीकलइ बइ। जे नमि नरेश्वर
॥ ५॥ अब्भुट्ठिअं रायरिसिं। पव्वज्जा ठाणमुत्तमं। सक्को माहणरूवेण। इमं वयणमब्बवी॥ ६। राजऋषिं नमिं शक्रो ब्राह्मण रूपे
ण इमं वचनम् अबवीत्। राजरिषि नमि प्रति इंद्र शक्र ब्राह्मणनइ रूपि इंद्र करीनइ। इसिउं वचन बोलिउं। किं० राजऋषिं। उत्त ६४

मं प्रव्रज्या स्थानं अभ्युत्थितं। उत्तम गरूउं प्रवज्या स्थान जाणीइं वारित्र नुं स्थानक ते हप्रति अभ्युत्थित जाणी
इ उद्यम परबइ। जे नमि नारश्वर॥ ६ किं नु भो अज्ज मिहिलाए। कोलाहलगसंकुला। सुव्वंति दारुणा सद्दा
पासाएसु गिहेसु य॥ ७ भो इत्यामंत्रणे नु इति वितर्के। अद्य मिथिलायां प्रासादेषु च दारुणाः शब्दाः किं श्रूयं
ते। भो इ राइ आमंत्रणि उइ इसिउं विचारि। आज मिथिला नगरी इं प्रासादे घरे दारुण रौद्र शब्द कां सांभलीइ।
किंः शब्दाः। कोलाहल गसंकुला। कोलाहल करी व्याप्त बइ। ये शब्दाः॥ ७ एअमट्ठं निसामित्ता। हेऊ कारण चो
ईओ। तओ नमी रायरिसिं। देविंदं इणमब्बवी॥ ८ ततो नमिराजर्षि देवेंद्रं। इदं अब्रवीत्। ...ति कारपूर्वक इं नमि
राजर्षि इंद्र प्रति इं इसिउं वचन बोलिउं। किं कृत्वा एतदर्थं निशाम्य। इसिउ विचार सांभलीनइं। किं० ना
मि राजर्षि हेतु कारण प्रेरितः हेतु न इं कारणि करीनइं प्रेरिउ बइ। जे नमि नरेश्वर॥ ८ मिहिलाए चे
इए वच्छे। सीअच्छाए मणोरमे। पत्त पुप्फ फलोवेए। बहूणं बहुगुणे सया॥ ९ वाएण हीरमाणंमि। चेईयंमि म णो
णोरमे। दुहिआ असरणा अत्ता। एते कंदंति भो खगा॥ १० युग्मं भो इति आमंत्रणे मिथिलायां चैत्य एते खगा क्रंदं ति।
भो इस इं आमंत्रणि इं मिथिला नगरी तणा इ चैत्य वनि मणोरम इसिइं नामि इं एखग पंखीआ आक्रंद कर
इ। किं० चैत्य। ... ...। वृक्ष सीतल बायं वृक्ष तणी सीतल बायं बइ। जेणइ वनि पुनः किं० चैत्य प
त्र पुष्प फलोपेत। पत्र पुष्प फलि करीनइं उपेत जाणी इं संयुक्त बइ। ये वन। पुनः किं० चित्य वातेन हृदयमा
न। वा इं करी हलावा बइ। जे वन। पुनः चि० पीडिका बद्ध मूल पीठिकाइं करी बद्धवां ...मूल बइ। जे ह वन त
णुं। पु० किं० मनोरमे। रूडउं बइ। जे वन भो एते खगा। क्रंदंति। भो ... ...पंखीया आक्रंद करइ। किं

।खगाः दुःखित दुखीया छइ। जे पंखीयाः पुनः खगाः अशरणा शरण [illegible]। पुनः किं० खगाः आर्त्ता त्राण
इ पीडिया छइ जे पंखीया॥१०॥ एअमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइओ। तओ नमिरायरिसिं। देविंदो इणमब्बवी
॥ततो देवेंद्रः नमिराजर्षिं इदं अब्रवी। तिवार पछइ इंद्र नमिऋषिप्रति इअसिउं बोलइं। किं कृत्वा अर्थं निशम्य। इ
सिउ अर्थ विचार सांभलीनइ। किं० देवेंद्रः हेतुकारणप्रेरित। हेतु कारणे करी प्रेरिउ छइ॥११॥ एस अग्गी य वा
ऊ य। एअं डज्झइ मंदिरं। भयवं अंतेउरं तेणं। कीस णं नावपेक्खह॥१२॥ हे भगवन नमिनरेश्वर। अग्नि एष वायुः
एतद् मंदिरं दह्यते। हे भगवन एअग्नि वायु ए मंदिर दाझइ। हे नमि अंतेउरा भिमुखं किमति नावेक्षसि।
नावलोकसि। हे भगवन अंतेउर साम्हुं न जोइ॥१३॥ एअमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइओ। तओ नमिरायरि
×दे× सिं देविंदो इणमब्बवी॥१३॥ नमिराजऋषि इंद्र प्रति इं इसिउं बोलिउं। किं कृत्वा। एवं निशम्य। इसिउ अर्थ विचार
सांभलीनइं॥१३॥ सुहं वसामो जीवामो। जेसिं मो नत्थि किंचणं। मिहिलाए डज्झमाणीइ। न मे डज्झइ किंचणं
॥१४॥ वयं सुखं वसामः। आह्म सुखिइं वसुं। वयं सुखं जीवामः। आह्म सुषिइं जीवुं। येषां अस्माकं किमपि ना
स्ति। जे अह्मारइ कांई नथी॥ मिथुला यां दह्यमानायां। मे मम किंचिन दह्यते। मथिला नगरी दाझतइ। माहरुं
कांई न दाझइ॥१४॥ चत्तपुत्तकलत्तस्स। निव्वावारस्स भिक्खुणो। पियं न विज्जई किंचि। अप्पियं पि न विज्जई॥१
८ भिक्षोः किमपि प्रियं न विद्यते। अप्रियमपि न विद्यते। भिक्षु ऋषीश्वरनइं कांई इष्ट न कुइ। अनइं अ
प्रिय न कुइ। किं० भिक्षोः त्यक्तपुत्रकलत्रस्य। तज्या छइ पुत्र कलत्र छइ। जीणइ ऋषीश्वरिइं। पुनः किं० भिक्षु
ः निर्व्यापारस्य। गृहस्थना व्यापाररहित छइ। जे ऋषीश्वर॥१५॥ बहुं खु मुणिणो भद्दं। अणगारस्स भिक्खुणो। ६५

णो। सव्वओ विप्पमुक्कस्स। एगंतमणुपस्सओ॥१६॥ खु निश्चिइं तं मुनेः बहु भद्रं भवति। खु निश्चइं मुनि ऋषीश्वरनइं घणां
भद्र कल्याण हुइ। किं० मुनेः अनगारस्य। गृहस्थावासरहित छइ। पुनः किं० मुनेः भिक्षोः भिक्षु ऋषीश्वर छइ। पु
नः किं० मुनि। सर्वतो विप्रमुक्तस्य। सविहुं प्रकारिइं विप्रमुक्त छइ। मूकाणु छइ। जे मुनिः पुनः किं० एका
त अनुपश्यतः। एकांततणी इं मोक्षमार्ग जोइ छइ। ये मुनि ऋषीश्वर॥१६॥ एअमट्ठं निसामित्ता। हेऊ
कारणचोइओ पूर्ववत् ज्ञेयं॥१७॥ पागारं कारइत्ताणं। गोपुरट्टालगाणि य। उस्सूलग सयग्घीओ
तउ गच्छसि खत्तिया॥१८॥ हे क्षत्रिय प्राकारं। गोपुरं अट्टालकानि। उस्सूग खातिका शतघ्नीका यि
त्वा ततो गच्छ। हे खत्रिय प्रकार त्रणी इगढ। गोपुर त्रणी इ पोलि। अट्टालका नि त्रणी इ पोलि ऊप
पली भूमिका। मूलग त्रणी इ खाई। शतघ्नी त्रणी इ वासुगढ। नेकोठे ढीकली यंत्र मगरवी प्रमुष
कराबीनइं पछइ ज्जा॥१८॥ एअमट्ठं निसामि०॥१९॥ सद्धं नगरं किच्चा। तवसंवरमग्गयं। खंती निउणपागारं
।तिगुत्तं दुप्पधंसयं॥२०॥ धणुं परक्कमं किच्चा। जीवं च इरियं सया। धिर्ति च केयणं किच्चा। सच्चेणं पलिमंथ
ए॥२२॥ सुध्धु श्रद्धां नगरं कृत्वा। तपः संवर अर्गला कृत्वा। क्षांति निपुण प्रकारं कृत्वा। पराक्रमो धनुः कृत्वा। ई
र्याजीवां कृत्वा। धृतिकेतनं कृत्वा। असत्यनलपिमंथयपत्। साधु ऋषीश्वर श्रद्धा त्रणी इ वासना। नगर क
रीनइ। तप संवर रूप अर्गला करीनइ। खांति त्रणी इ क्षमा रूप निपुण रूडउ प्राकार गढ करीनइं। परा
क्रम रूपीउं धनुष करीइं। ईर्यासमिति रूपिणी जीवा जीइ प्रत्यंचा करीनइं सदा सर्वदा धृति त्रणी इ संतोष
रूप उकेतन त्रणी इ चाप ड उ करीनइं सत्यइं करीनइं पडिमंथयेत्। [illegible]। किं० आकारं त्रिगुप्ता।

त्रिहुं गुप्तिरूपीया। त्रिणि पडाकोटा बइं जिहां॥ किं० प्राएइ इह हंसकं। करणइ नीं [illegible] इ। छ[illegible]श्च। रगढ॥२१
तव णाराय ज्जुत्तां। त्रिहूणी कम्मगं चयं। मुणी विगयसंमो। नाबार्ठ परमुच्चई॥२२ तप नाराच युक्तेन। पराक्रम
धनुषा कर्मकंचुकं भित्वा मुनि। विगतसंग्रामो भवेत् परिच्यते। तप रूप नाराच बाण तीणइं सहित पराक्रम रूप
१३। कंचक जाणीइ जारेन्ने दीन इ। मुनि रूषीश्वर विगतसंग्राम जाणीइ संग्राम रहित हंत उ। भवसंसार उमूं
काइ॥२२ एयमट्ठं निसामित्ता॥०२३ ततो देविंद्र नमिराजऋषि प्रति इंद्र बोलिउ॥ पासए कारइत्ताणं॥ व
ड्ढमाण गिहाणि या। वालग्गापोयियाउ य। तिउ गच्छसि खत्तिया॥२४ हे क्षत्रिय प्रासादान् वर्द्धमान गृहाणि वा
लग्रपोतिका इति वलत्रीकारयित्वा ततो गच्छ। हे क्षत्रिय प्रासाद। वर्द्धमान जाणीइ। विचित्र घर वेलत्री जाणीइ।
ऊपली भूमिकरावीन इति झारखइगि इं जाए॥२५ एयमट्ठं निसामित्ता०२५ संसयं खलु सो कुणई। जो मग्गो कुण
ई घरं। जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा। तत्थ कुव्वेज्ज सासयं॥२६ खलु निश्चितं यो मार्गे [illegible] करोति। खलु निश्चि इंये मार्ग
नइ विषइ घर करइ। ते संदेह सहित करइ। करूं कि न करूं। माहरइ संसार स्वरूप मार्ग वर्तइ। तिहां घर न करूं
। मूकि इं जावा वांछउं। तिहां घर करिसिउं॥२६ एयमट्ठं निसामित्ता०॥२७ आमोसे लोमहारे य। गंठिभेए तक
रे। नगरस्स खेमं काऊणं। तउ गच्छसि खत्तिया॥२८ हे क्षत्रिय तस्करेभ्यः नगरस्य क्षेमं कृत्वा ततो गच्छ। हे क्षत्र
य तस्कर जाणीइ चोर लूंटइ तेन नगर रहइ क्षेम करीनइं तिहां रहइ [illegible] हि। किं० तस्करेषु। आमासेषु। असिमस्तइ सु
मुसइ बइ। पुनः तस्क० लोमहारेषु। लोमहारे षु जाणीइ। प्राण हरइ बइं। पुनः किं तस्करेषु ग्रंथिभेदेषु। गांठ
छोडइ छइ। जे तस्कर॥२८ एयमट्ठं निसामित्ता०॥२९ असइं तु मणूसेहिं। मिच्छादंडो पउंजय। अकारिणो ऽत्थ

मो

६६

बज्झंति। मुच्चई कारउ जणो॥३० असकृत् निरंतरं मनुष्यैर्मिथ्यादंडः प्रयुज्यते। निरंतर मनुष्य मिथ्यादंड प्र
युंजीइ। अकारिणो बध्यंते। अत्र इह अणकरिइं प्रकारिइ बांधीइ। करइ कोइ जनो मुच्यते। पापकरण हारलो
क मूंकाइ॥३१ एयमट्ठं निसामित्ता॥३२ जे केइ पत्थिवा तुब्भं। नानमंति नराधिपा। वसे ते ठावइत्ताणं। तउ ग
च्छसि खत्तिया॥३२ हे नराधिप ये केचित् पार्थिवा तुभ्यं न नमंति। हे नराधिप। [illegible] ये पार्थिव गक्र रउ
ऊ रहइ इं जाइ॥३३ एयमट्ठं निसामित्ता०॥३३ जो सहस्सं सहस्साणं। संगामे दुज्जए जिणे। एगं जिणेज्ज अप्पाणं। ए
स से परमो जउ॥३४ यः सहस्राणां सहस्रं दुर्जयं ग्रामे जयात्। जसहस्र नां सहस्र दुर्जय जाणीइ। जीपवा असक्य सं
ग्रामांगणि जीपइ। अन्य एक आत्मानं जयेत्। अनेक कोए एक [illegible] आपणपउं जीपइ। सेतस्य एष पर
मो जयः। ते हरहइ एय परम [illegible] जउ॥३४ अप्पाणमेव जुज्झाहि। किं ते जुज्झेण बज्झउ। अप्पाणमेव अप्पाणं। जइत्ता
सुहमेहए॥३५ आत्मानेव आत्मानं युध्यस्व। आत्मा जि सिउं आपणपुं झूझइ। तह व बाह्य युद्धेन किं। तुझ रहइं बाह्य यु
द्धि इं किसिउं। आत्मानेव आत्मानं जित्वा सुखं एधते। आत्मा जि सिउं आपणपउं जीपीनइं सुख पामइ॥३५ पंचेंदिया
णि कोहं। माणं मायं तहेव लोहं च। दुज्जयं चेव अप्पाणं। सव्वमप्पे जिए जियं॥३६ एतत् सर्वं दुर्जयं। एसलुं जीपिवा अ
सक्य। एतत् किं। क्रोध मान माया तथा लोभ तत्र या आत्मानं। एकिन्स पांच इंद्रिय क्रोध मान माया लोभ तिम चित्त आत्मनि
जिते सति सर्वे जितं। आत्मा जीतइ हूंतइ सर्वे जीतउं॥३६ एयमट्ठं निसामित्ता॥३७ जइत्ता विउले जन्ने। भोइत्ता समण
माहणे। दत्ता भोच्चा य जट्ठा य। तउ गच्छसि खत्तिया॥३८ हे क्षत्रिय विपुलान् यज्ञान् इष्ट्वा [illegible] श्रमणान् ब्राह्मणा
यच्च दत्वा भुक्त्वा इष्ट्वा ततो गच्छ। हे क्षत्रिय विपुल विस्तीर्ण याग करीनइं [illegible] ब्राह्मणा जिमा

नमतानह
इतेवसिक
री

उत्तराध्य०
बाला० ६७

डीनइं दक्षादईनइं। तुच्छा ते गवीनइं। दृष्ट्वा जोईनइं। तिहांर पूंछिइं ज्ञा॥३८॥ एयमट्ठं निसामित्ता०॥३९॥ जो
सहस्सं सहस्साणं। मासे मासे गवं दए। तस्सावि संजमो सेउ। अदितस्सवि किंचणं॥४०॥ […] र गवां सहस्राणां
सहस्रं दद्यात्। जे मासि रगाइ तेणुसहस्र सहस्र गुणु दूसलक्ष दिइ। किमपि अददातापि संयमः श्रेयः। कोई अण
दितं कंतां दस लक्ष गाइ थी हि संयम श्रेयः॥४०॥ एयमट्ठं निसामित्ता०॥४१॥ घोरासमं चइत्ता णं। अन्नं पत्थेसि आसमं।
इहेव पोसहरउ भवाहि मणुयाहिवा॥४२॥ घोराश्रमं त्यक्त्वा अन्य आश्रमं प्रार्थयति। हे नरेश्वर घोर दोहिलउ गृह
स्थाश्रम त्यजी बांडीनइं आनेरु आश्रम प्रार्थी छउ। वांछउ। हे मनुजाधिप हे नरेश्वर इहै वापि सधर ता सवाई णा
इं जि गृहस्थावासि पोषधनइं विषइ रत। आसक्त हुइ॥४३॥ एयमट्ठं नसामित्ता॥४३॥ मासे मासे तु जो बालो। कुसग्गेणं
तु भुंजई। न सो सुयक्खायधम्मस्स। कलं अग्घइ सोलसिं॥४४॥ यो बालो मास मासक्षपणाग्रेण भुंक्ते। ये बालस्य
मासिक्षपणाग्रे प्रमाण आहार जिमइ। अथवा मासनइं खेडइ जिमइ। धर्मस्याखवाइ सी गलो नार्घति। तस्य […] तधर्म
सणीइ। चारित्रधर्म तणी सोलमी कला अर्घइ नपामइ॥४४॥ एयमट्ठं निसामित्ता०॥४५॥ हिरिण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं। कं
सं दूसं च वाहणं। कोसं च वड्ढावइत्ता णं। तउ गच्छसि खत्तिया॥४६॥ हे क्षत्रिय हिरण्यं सुवर्णं मणिमौक्तिकं। कां
स्यं दूष्यं। वाहनं। च अन्य त। कोशं। वर्द्धयित्वा ततो गछ। हे क्षत्रिय। हिरण्य तणीइ अघटित सुवर्ण। अनइ सुवर्ण
इ घटित सुवर्ण नाग निगादर रूप सोइ त्यादि। मणि तणी इरत्न। मोक्तिक तणीइ मुक्ताफल। कंस तणीइं कांस्य
दुष्य तणीइ पट्टकूल। वाहणा कोस तणीइ भंडार। वधारीनइं। तिहांरइ पछइ विइ जाए॥४६॥ एयमट्ठं निसामि
त्ता०॥४७॥ सुवण्णरूप्पस्स उ पव्वया भवे। सिया हु केलाससमा असंखया। नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि। ६७

इच्छा हु आगाससमा अणंतिया॥४८॥ स्यात् कदाचित्। हु निश्चितं। सुवर्णरूप्यस्य पर्वता भवेयुः। स्यात् कदा
चित् किहारइ निश्चिइं सुवर्णरूप्य तणा पर्वत हुइ। किं पर्वता। कैलाससमा। कैलास पर्वत सरीषा। बहु जे पर्वत। किं प
र्वता: असंख्याता। असंख्याता बहु। लुब्धस्य नरस्य तैः न भवंति। लोभीया नर पुरुषरहइं। ते हे करीनइं काइं न हुइ। हु नि
श्चितं इच्छा आकाशसमा अनंता वर्त्तते। हु निश्चइं इच्छा आगाश सरीषी अनंती वर्त्तइ॥४८॥ पुढवी साली जवा चेव। हिरन्नं प
सुभिस्सह। पडिपुन्नं नालमेगस्स। इइ विज्जा तवं चरे॥४९॥ एतत् प्रतिपूर्णं एकस्य इच्छापूर्त्तये। नालं एतत् प्रतिपूर्णं तणीइ
एकरहइं इच्छा पूरवीनइं विषइं नही अलं नही समर्थः। एतत् किं पृथिवी शालिः यवहरण्य पशुभिः सह। एकि सिउं पृथवी
तं भूमिका शालि तणीइ ब्रीहि। अव हरण्य तणीइ अघटित सुवर्ण। पशुभिः सह तणीइ ढोरसहित को इदातार इत्यादिक
दानदिइ तु हि तेइ छा निवर्त्तइ नहीं। इति विज्ञाय तपश्चरेत्। असिउं जाणीनइं डाहु तप करइ॥४९॥ एयमट्ठं निसामित्ता०
॥५०॥ अच्छेरगमब्भुए। भोए चयसि पत्थिवा। असंते कामे पत्थेसि। संकप्पेण विहन्नसि॥५१॥ हे पार्थिव अच्छेरगं आश्चर्यं अ
द्भुतं संतो भोगान् त्यक्त्वा असतः कामान् प्रार्थयसि। हे पार्थिव हे नरेश्वर अच्छेरग तणीइ आश्चर्य जिम हुइ तिम अद्भुत छ
उ। संप्राप्तिउ छता भोग छांडीनइ। अछता काम प्रार्थइ। संकल्पेन विहन्यसे। उसंकल्पि करीनइं हणी इ छइ॥५१॥ एय
मट्ठं निसामित्ता०॥५२॥ सल्लं कामा विसं कामा। कामा आसीविसोवमा। कामे य पत्थेमाणा। अकामा जंति दुग्गयं।
॥५३॥ इमे कामाः शल्यरूपा वर्त्तंते। ए काम भोग शल्यरूप वर्त्तइ। इमे कामा विषरूपा वर्त्तंते। ए काम भोग विषरूप
वर्त्तइ। इमे कामा आशी विषोपमा वर्त्तंते। ए काम भोग दृष्टिविषसर्प ते सरीषा वर्त्तइ। कामान् प्रार्थयमानाः अ
कादुर्गतिं यांति। काम भोग वांछता जीव अकाम तणीइ अप्राप्तिलाभइ […]॥५३॥ अहे वयइ कोहे

उत्तराध्य०
बालाव॥
६८॥

णं। माणेणं अहमा गई। मया गई पडिग्घाओ। लोभा उ दुहओ भयं॥५४॥ क्रोधेन अधो व्रजति। क्रोध इं करी नइं अ
धो व्रजइ। मानेन अधमा गति। मानि इं करी नइं अधम गति कुगति। माया गति प्रतिघातो। मायाइं गति हरइ
प्रतिघात करइ। लोभात् द्विधा भयं भवति। लोभ सउं बिहुं प्रकारि भय कुण इह लोक नउ परलोक नउ॥५५॥ अ
वउज्झिऊण माहणरूवं। विउव्विऊण इंदत्तं। वंदइ अभित्थुणंतो। इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं॥५६॥ इंद्रो ब्राह्म
णरूपं त्यक्त्वा इंद्रत्वं विकुर्व्य वंदते। इंद्र ब्राह्मण नउं स्वरूप छांडीनइं इंद्रपणउं विकुर्वी नइं वांदइ। किं कुर्वन्
आभि मधुराभिर्वाग्भिः। अभिष्टुवन्। किस्युं करतउ थकउ इसी मधुर वाणी करी अभिष्टवन् नमीइ स्तवतु
करतउ॥५६॥ अहो ते निज्जिओ कोहो। अहो माणो पराजिओ। अहो ते निरक्किया माया। अहो लोहो वसीकओ॥५७॥ अ
हो इति आश्चर्ये त्वया क्रोधो निर्जितः। अहो इति आस्यइ आश्चर्यि तइं क्रोध जीतउ। अहो इति आश्चर्ये
त्वया मानः पराजितः। अहो इसउं आश्चर्य तइं मान पराभविउ। अहो इति आश्चर्ये त्वया माया निराकृता॥
अहो इसिइं आश्चर्यि तइं माया निराकरी केडी। अहो अति आश्चर्ये त्वया लोभो वसीकृतः। अहो इति आ
श्चर्यि इं लोभ वसि कीधउ॥५८॥ अहो ते अज्जवं साहू। अहो ते साहु मद्दवं। अहो ते उत्तमा खंती। अहो ते मुत्ति
उत्तमा॥५९॥ हे साधो अहो इति आश्चर्ये तव आर्जवगुणा वर्त्तते। हे साधु ऋषीश्वर तउ अरहइ। आर्ज
वगुणा वर्त्तइ। हे साधो इति आश्चर्ये तव आर्जवगुणा वर्त्तते। हे साधु ऋषीश्वर अहो इसिउं अरह
इ उत्तम सर्वोत्कृष्टा क्षांति वर्त्तइ। हे साधु अहो ते नव उत्तमा मुक्ति वर्त्तइ। हे साधु ऋषीश्वर अहो इति आ
श्चर्य तउ रहइ उत्तम सर्वोत्कृष्ट विरागपणु गुण वर्त्तइ॥५९॥ इह सि उत्तमो भंते पिच्छा होहिसि उत्तमो। लोगुत्त ६८

मं

मुत्तमं ठाणं। सिद्धिं गच्छसि नीरओ॥६०॥ हे भगवन् अस्मिन् संसारे त्वं उत्तमोसि। हे भगवन् ईहइ
पणइ संसारि तउं उत्तम छइ। प्रेत्य परत्रापि त्वं उत्तमो भविष्यसि। प्रेत्य परत्र विइ तउं उत्तम होइसि। त्वं नी
रजः सन् लोकोत्तमं उत्तमं स्थानं सिद्धिं गमिष्यसि। तउं नीरज सन् नमीइ निःपाप हूंतउ। लोकमाहि इसवो
त्कृष्ट उत्तमस्थानक सिद्धिमुक्ति जिसि॥६०॥ एवं अभित्थुणंतो रायरिसिं। उत्तमाए सिद्धाए। पायाहिणं क
रेंतो। पुणो पुणो वंदई सक्को॥६१॥ शक्रः पुनः पुनर्वंदते। शक्र राजऋषि प्रति पुनः पुनः वली वली वांदइ
किं कुर्वन्। एवं अभिष्टुवन्। किस्युं करतउ थकउ स्तव करतउ थकउ। कश्रद्धया॥ किसिइं करीनइ। उत्तम सर्वोत्कृ
ष्ट श्रद्धा तउ करीनइ। किं कुर्वन्। किस्युं प्रदक्षिणां कुर्वन्। किसिउं करीनइ प्रदक्षिणा करतउ थकउ॥६२॥ तो वंदि
ऊण पाए। चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स। आगासेणुप्पइओ। ललियचवलकुंडलकिरीडी॥६२॥ ततोनंत
रं शक्रः मुनिवरस्य पादौ वंदित्वा। आकाशे उत्पतति। तिवार पछी शक्र इंद्र मुनि ऋषीश्वर तणां पादत्रणी
इ चरणकमल वांदीनइ। आकाशि ऊडिउ। किं० भूतौ चक्रांकुशलक्षणौ इ लक्षण लांछन छइ। जेह तणइ
किं विशिष्टः शक्रः ललितचपलकुंडलकिरीटी। ललित मनोहर इं लाइकानी। चपल चंचल तिरीड मणीइ
मुकट छइ जेह तणइ॥६३॥ नमी नमेइ अप्पाणं। सक्खं सक्केण चोइओ। चइऊण गेहं वैदेही। सामन्ने पज्जुव दे
ट्ठिओ॥६४॥ आत्मानाम यति। नमि ऋषीश्वर आपणपुं संयमनइं विषइ तत्पर करइ। किं विशिष्टो नमिः साक्षात्
शक्रेण प्रेरितः। किस्युं छइ नमि। साक्षात् प्रत्यक्ष शक्र इंद्रि प्रेरिउ छइ। किं विशिष्टः नमिः श्रामण्ये पर्युपस्थितः
श्रामण्य चारित्रनइं विषइ पर्युपस्थित उद्यम परछइ॥६४॥ एवं करेंति संबुद्धा। पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति

तिन्नो गोसु। जा हासेन मीराय रिसिइ त्तबेमि॥३६॥ पंडिताः संबुद्धा एवं कुर्वंति। पंडितज्ञाणी श्रवि द्वांस संबुद्धज्ञाणी
इ प्रतिबोध पाम्या हुंता। एवं ईण इ प्रकारि इं मकर इ। किं० पंडिताः प्रविचक्षणा। सिद्धांतना अर्थना जाण इ ब इ।
यथा सन मिराज ऋषि। तथा भोगेभ्यो विनिवर्तंते। यथा डोमतेन मिराज ऋषि तथा तिम भोगनइ विषइ निवर्त्त
इ। इति ब्रवीमि इसितं बोलिउं॥३६॥ इति श्री नमि प्रव्रज्याख्यमध्ययनं नवमं समाप्तं॥ ९॥ ॥ अथ द्रुमपत्रकाध्ययन
वदे॥ दुमपत्तए पंडुयए जहा॥ निवडइ राइगणाण अच्चए॥ एवं मणुआण जीवियं। समयं गोयम मा पमायए॥१
यथा द्रुमपत्रकं रात्रिगणानां अत्यये सति पाण्डुकं पतति। जिम वृक्षनुं पानडउं। रात्रितणा गणसमूहतण इ अ
तिक्रम वइ हुंतइ। पाण्डुरं हुंतउ निपतित पडइ। एवं मनुष्याणां जीवितं रात्रिगुणानां। अत्यनिपतति। एवं ईण
इ प्रकारि इं मनुष्यतणउं जीवितव्य रात्रिदिवसतणा गणसमूहतण इ अतिक्रम वइ हुंतइ पडइ। हे गौतम तत्त
स्मात् कारणात्। समयं मम प्रमादीः हे गौतम तिरह कारण उ समय मात्र प्रमाद म करि॥१ कुसग्गे जह
उस बिंदूए थोवं चिट्ठइ लंबमाणए। एवं मणुआण जीवियं। समयं गोयम मा पमायए॥२ यथा कुशाग्रे अ
वश्याय बिंदुः लंबमानः स्तोकं कालं तिष्ठति। जिम डाभतण इ अग्रि विभागि। अवश्यायज्ञाणी थिवा रित
णउ बिंदु आवीर हि। मुक्ताफल सरिखउ पमाल हि। क्षणमात्र माहिं वृथा थाइ। तिम मनुष्यनुं जीवितव्य मा
ज्ञाणी समयं मपि मा प्रमादी॥२ इत्तरियं मि आउए जीवियए बहु पच्चवायए। विहुणाहि रयं पुरेकडं। सम
यं०॥३ हे गौतम इति इत्वरे आयुषि सति जीविते बहु प्रत्यपाये सति पुराकृतं रजः विधुनीहि स्फटय।
हे गौतम इति ईण इ प्रकारि इं स्तोक काल निरुपक्रम। आयुष इ हुंतइ अनइ जीवितव्य ज्ञाणी सोपक्रम

आयुषइ। अनइ बहु घणाइ प्रत्यपाय विघ्नसहितइ हुंतइ तइं पूर्वजन्मांतरि कृत कीधां रजः पाप विधुनीहि। स्फेडउ।
हे गौतम तस्मात् कारणात् समयमपि प्रमादी मा सर्व॥३ दुल्लहे खलु माणुसे भवे। चिरकालेण वि सव्वपाणिणं। गाढा य
विवाक कम्मुणो। समयं गोयम०॥४ खलु निश्चितं मनुष्य भवो दुर्लभः। खलु निश्चि इ मनुष्य भव तर दुर्लभः स
र्व प्राणानां जीवानां चिरकालेनापि। कर्मणां विपाका गाढा तीव्राः। सर्विकुं जीव रइं तु चिरकालि घणाइ कालि
घणाइ कालि कर्मना विपाक गाढा तीव्र हे गौतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादीः॥४ पुढविकायमइग
ओ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखाईयं। समयं गोयम०॥५ हे गौतम जीवः पृथ्वीकायं अतिगतः सन् उत्कृष्ट संख्या
तीतकालं संवसति। हे गौतम जीव पृथ्वीकाय माहि गत गिउ हुंतउ उत्कृष्ट संख्यातो काल वसइ। हे गौतम तस्मात् का
रणात् समयमपि मा प्रमादी॥५ आउकाय मइगउ उक्कोसं जीवो उ× संख्यातीत काल उत्कृष्ट संवसति। हे गौतम
जीवो। तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादीः। तेउकाय मइगउ। उक्कोसं जीवो संवसे। कालं संखाईयं। समयं गो
य०॥७ हे गौतम जीवो तेउकायं अतिगतः सन् उत्कृष्ट संख्यातीत कालं संवसति। हे गौतम तस्मात् कारणात् समय
मपि मा प्रमादी॥७ वाउकाय मइगउ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखाईयं समयं गोयम०॥८ हे गौतम जीवो वायु
कायं अतिगतः सन् उत्कृष्टं संख्यातीत कालं संवसति। हे गौतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥८ वणस्सइ
कायमइगउ उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालमणंत दुरंतं समयं गोयम०॥९ हे गौतम जीवः वनस्पतिकायं अतिगतः
सन् उत्कृष्टं संवसति। अनंतकाल दुरंतं हे गौतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥९ बेइंदियकायमइगउ। उ
क्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखिज्ज सन्नियं समय०॥१० हे गौतम जीवो द्वींद्रियकायमय अतिगतः सन् उत्कृष्ट संख्य

×हे गौतम तस्मात् कारणात् वनस्पति माहि गउ हुंतउ उत्कृष्ट उ अनंतकाल दुरंत। ३-२

×संवसे। कालं संखाईयं। समयं गोयम मा पमायए। ६। हे गौतम जीवो अपकाय अतिगतः। सन्॥ ५.३.८

उत्तरा०अ०
बाला०

पिसति कालसंखवसंति। हे गोतम जीव बेंद्रियकायमांहि गिउ उत्कृष्टउ संख्यातु काल वसइ हे गोतम त
स्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी मा सव॥१०॥ तेंद्रियकायमइगउ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखिज्जसन्नि
यं। समयं०॥११॥ जीव तेंद्रियकायं अतिगतः सन् उत्कृष्टं संख्येय संज्ञितं। कालं वसति। जीव त्रेंद्रियमांहि गिउ
उत्कृष्ट संख्यात उ काल वसइ। हे गोतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी मा काथी त॥११॥ चउरिंद्रियका
यमइगउ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखिज्जसन्नियं। समयं गोयम०॥१२॥ हे गोतम जीव चउरिंद्रियकायं अ
तिगतः सन् उत्कृष्टं संख्येयसन्नितं कालं वसति। हे गोतम समयमपि मा प्रमादीः॥१२॥ पंचेंद्रियकायमइगि
गउ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। सत्तट्ठ भवग्गहणे। समयं॥१३॥ हे गोतम जीवः पंचेंद्रियकायं अतिगतः सन् उत्कृ
ष्टं सप्ताष्ट भवग्रहणानि वर्त्तते। हे गोतम जीव पांचेंद्रियमांहि गिउ उत्कृष्टउ सात आठ भव लगइ वसइ।
हे गोतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥१३॥ देवे नेरइए य मइगउ। उक्कोसं जीवो उ संवसे। एक्केक भ
वग्गहणं। समयं०॥१४॥ हे गोतम जीव देवे नेरयके। अतिगतः सन् उत्कृष्टं एकैक भवग्रहणं संवसति। हे गोतम
तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥१४॥ एवं भवसंसारे। संसरइ सुहासुहेहिं। जीवो पमायबहुलो। समयं
गोयम मा॥१५॥ हे गोतम जीवः अमुना प्रकारेण भवसंसारे शुभाशुभैः कर्मभिः संसरइ पर्यटन करइ। किं० जी
वः प्रमादबहुल बहु जीव हे गोतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥१५॥ लद्धूण वि माणुसत्तणं। आरिय
त्तं पुणरवि दुल्लहं। बहवे दसुया मिलक्खुया। समयं०॥१६॥ हे गोतम मानुषत्वं लब्ध्वापि पुनरपि आर्यत्वं दुर्ल्ल
भं वर्त्तते। हे गोतम मनुष्यपणुं लहीनइ पुनः वली आर्यदेशपणुं दुर्ल्लभ वर्त्तइ। [illegible] हे गोतम बहवो दस्यु
वो म्लेच्छाः भवंति। हे गोतम बहु घणा दस्यु चोर अनइ म्लेच्छ हुइ। हे गोतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा॥

हे गोतम जी
वइ पाइ प्रका
रि इ नवतियं
च नारकादि
के करी भमा
र मांहि शुभाशु
भैः कर्मभिः
करी नइ संस
रइ।१५

७०

ग

प्रमादी॥१६॥ लद्धूण वि आयरियत्तणं। अहीणपंचेंद्रियता हु दुल्लहा। विगलिंदियया हु दीसइ। समयं गो॥१७॥ हे गो
तम आर्यत्वं लब्धापि कुनिश्चितं। अहीनपंचेंद्रियता दुर्ल्लभा वर्त्तते। हे गोतम आर्यत्वं आर्यपणुं लहीनइ। कुनि
श्चितं अहीन पांचेंद्रियपणुं दुर्ल्लभ वर्त्तइ। हे गोतम कुनिश्चितं विकलेंद्रिया दृश्यंते। हे गोतम कुनिश्चिइ विगलेंद्रि
य असंपूर्णेंद्रिय जीव दीसइ। हे गोतम तस्मात् कारणात् समयमपि मा प्रमादी॥१७॥ अहीणपंचेंद्रियत्तं पि से लहे
। उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा। कुतित्थिनिसेवए जणे। समयं०॥१८॥ हे गोतम जीवः अहीनपंचें
द्रियत्वं संपूर्णपंचेंद्रियपणुं लहइ। हे गोतम कुनिश्चितं। उत्तमधर्मश्रुतिः दुर्ल्लभा वर्त्तते।
हे गोतम पुनः वली धर्मनउ श्रुति सांभलिवउं दुर्ल्लभ वर्त्तइ। हे गोतम जनो लोकः कुतीर्थनिसेव
को वर्त्तते। हे गोतम जन लोक कुतीर्थिक शासनीनां अतिहि सेवक वर्त्तइ। तस्मात् कारणात्
समयमपि मा प्रमादी॥१८॥ लद्धूण वि उत्तमं सुइं। सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा। मिच्छत्तनिसेवए जणे। स
मयं॥१९॥ उत्तमां श्रुतिं लब्धापि श्रुता दुर्ल्लभा वर्त्तते। हे गोतम आर्यत्वं। आर्यपणुं लहीनइ। पंचेंद्रिय
पणुं दउल्लभ वर्त्तइ। हे गोतम कुनिश्चितं विगलेंद्रिया दृश्यंते। हे गोतम कुनिश्चिइं विगलेंद्रिय असं
पूर्ण इंद्रीय जीव दीसइ। हे गोतम तस्मात् कारणात्। समयमपि मा प्रमादी॥१९॥ धम्मं पि हु सद्दहंतया
दुल्लहया काएण फासया। इह कामगुणेहिं मुच्छिया। समयं॥२०॥ हे गोतम श्रद्धतामपि कुनिश्चितं। कायें
न स्पर्शना दुर्लभा वर्त्तते। हे गोतम धर्म सद्दहतां हूंतां कुनिश्चिइं कायइं देहइं करी स्पर्शना क्रिया दुर्ल्लभा
वर्त्तइ। हे गोतम इह अस्मिन् संसारे जीवाः कामगुणैः मूर्छिता भवंति। हे गोतम स्फट निश्चइ एणि संसा॥

रिजीवकाम गुणकरीनइ सूर्वइतकुइ। हे गौतम तस्मात् कारण। समयमात्रमा प्रमादी॥२०॥ परिजूर
इतसरीरयं। केसा पंडुरया हवंति ता। सेसो अबले य हायई। समयं०॥२१ हे गौतम तव शरीरं परिजीर्यते
हे गौतम स्मर निश्चिइं शरीर जीर्णथाइ। ते तव केशाः पांडुरका भवंति। ता हराके शपांडुरा हुइं। अथा
श्रोत्रबलं हीयते। अथ एतला अनंत श्रोत्रबल कान नूं बल हीण हे गौतम तस्मात्कारणात्। समयं
मात्रमा प्रमादी॥२१ परिजूरइतसरीरयं। केसा पंडुरया हवंति ता। से घाणबले हायई। समयं०॥२२ हे
गौतम तव शरीरं परिजीर्यते। ते तव केशा पंडुरका भवंति। से अथ घ्राणेंद्रिय बलं हियाते। हे गौतम तस्मा
त्कारणात्। सम-यमात्रमा प्रमादी॥२२ परिजूरयरत सरीरयं। केसा पंडुरया हवंति ते। सा जिभ्यबले हा
यई॥ समयं॥२३ हे गौतम तव शरीरं परिजीर्यते। ते तव केशाः पांडुरंका भवंति। से अथ जिह्वेंद्रियस्य।
बलं हीयते। हे गौतम तस्मात्कारणात्। समयं म पिमा प्रमादी॥२३ परिजूरइतसरीरयं। केशा पंडुरया
हवंति ते। से फास बलेय हायई। समयं॥२४ हे गौतम ते शरीरं परिजीर्यते। ते तव केशा पांडुका भवंति। से
अथ स्पर्शबलं हीयते। हे गौतम तस्मात्कारणात्। समयं मात्रमा प्रमादी॥२४ परिजूरइतसरीरयं। केशा
पंडुरया भवंति ते। सव्वरकू बलेय हायई॥ समयं॥२५ परिजूरयते॰ केसा॰ सेसब बलेय हायई। समयं
०॥२६ हे गौतम ते तव शरीरं परिजीर्यते। ते तव केशा पांडुरका भवंति। से अथ बलं हीयते। अथ एतला नु
अनंतरस विहुं ईइंद्रियतणो बल हीन थाइ। हे गौतम तस्मात्कारणा। समयमात्रमा प्रमादी॥२६ अरई गं
डं विसुई आ। आयंका विविहा फुसंति ता। विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं। समयं॥२७ हे गौतम ते तव अरति ७१

त्ते विसूचिका विवधा आतंकाः स्पृशंति। हे गौतम अरति गंडत्रमा लाविसूचिका विविधि नाना प्रकारि आतंक रोगस्य वृद्धि। हे
गौतम ते तव शरीरं विपतिति। विद्धंसति। हे गौतम ताहरूं शरीर रूप महाशत्रु पडइ। अनेरइंद्रियहाणो विद्धंसपामइ।
तस्मात्कारणा तस्समयमात्रमा प्रमादी॥२७ वोछिंद सिणेह मप्पणो। कुमुअं सारइअं च पाणिओ। से सव्वसिणेहव
ज्जिए। समयं गोयम मा पमायए॥२८ हे गौतम से अथ स्नेह वर्जित। सन् समयमात्रमा प्रमादीः हे गौतम अथ एत
ला अनंतर स्नेह छूटस्नेह रहित इहूं तइ। समयमात्र प्रमादी॥२९ चिच्चाण धणं च भारियं। पव्वइओ हि सि अणा
गारियं। मा वंतं पुणो वि आइए। समयं०॥३० धनं च अन्य तत्सार्यां। तिकचा अनगारितां च परिव्रजितो सि। धन सार्यो बां
डी नइ। अनगारितादीक्षां उपामितइ। वांतं पुनरपि मा पिबवांतं वमितं पुनरपि वली म पीए। हे गौतम तस्मात्कारणा
त् समयमात्रमपि प्रमादीः ३१॥ अवउज्झिअ मित्तबंधवं विउलं चेव धणोहसंचयं। मा तं बिइअं गवेसए। समयं०॥३१ मित्र
बांधवान् त्यक्त्वा विपुलं अन्य तद्धनउघसंचयं त्यक्त्वा द्वितीय पुनमा गावषयेः। मा पर्णधिये। मित्र बांधव बांडी नइ
विपुल विस्तीर्ण धन नु उघ समूह संचय बांडी नइ द्वितीय वली म पर्णधि। मवांछे हे गौतम तस्मात्कारणात्
समयमात्रमपि प्रमादी॥ नहु जिणे अज्ज दिस्सइ। बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए। संपइ नेआउए पहे। समयं गो
॥३२ हे गौतम अस्मिन् संसारहू निश्चिइं जिनान दृश्यात। हे गौतम [illegible] ईणाइकालि हू तिश्चिइं जिन वीतरा
गदेव दीसइ। मार्गदेसकाबहू मातपंथका दृश्यंते। हे गौतम मुक्तिमार्गनु देखाडणहार बहू मत पंथीमार्ग दीसइ। हे
गौतम संप्रति नियायिकपडि समयमात्रमा प्रमादीः हे गौतम तस्मात्कारणात। समय सपि प्रमाद म करि॥३३ अ
वसोहिअ कंटयापहं। उत्तिन्नो सि पहं महालयं। गच्छसि मग्गं विसोहिआ। समयं०॥३३ हे गौतम कंटकार्यपथं अव
सोध्य त्वं। महालयं पंथानं अवतीर्णोसि। कंटा लु मार्ग पामिउ बडा यंते हे गौतम। मार्ग बिसा [illegible] ब। हे गौतम

ते मार्ग्गे सो धी जाए। हे गौतम तस्मात् कारणात् समयं मा प्रमादी॥३२ अबले जह भारवाहए मा मग्गे विसमेवगा
हिया। पछाणुतावए। समयं॥३३ यथा अबलो भारवाही विषम मार्गे अवगा [illegible] अबल
भारवाहनी परि हं। विषम मार्गे अवगाहीनइ आदरीनइ पछइ पश्चाताप करइ एहवा रखे हुस्ये। हे गौतम तस्मा
त् कारणात् समयमात्रं मा प्रमादी॥ तिन्नो हु सि अन्नवं महं किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ। अभितुर पारं गमित्तए
समयं॥३४ हे गौतम त्वं महांतं अर्णवं उत्तीर्णोसि। हे गौतम तं महांतं मोटउ अर्णव समुद्र हुं निश्चि
त तरिउ छइ। किं पुनः तिष्ठसि वली कांइ रहइ छइ तीरं आगतः तीरइ आविउ। पारं गंतुं अभित्वरः शीघ्र थाउ पार
जाइवा नइ कारणि विहिलउ थाउ। हे गौतम तस्मात् कारणात् समय॥३५ अकलेवरसेणिमूसिया सिद्धिं
गोयम लोयं गच्छसि। खेमं च सिवं अणुत्तरं। समयं॥३६ हे गौतम अकडेवर श्रेणिं सिद्धं लोकं गमिष्यसि। हे
गौतम अकडेवर श्रेणि सिद्ध श्रेणि मुक्ति अस्सिउ लोकं प्रति पामिसि। किं० सिद्ध उहता अंचीवइ किं० हला हषे
मं वा अन्यत् सिवं अनुत्तरं। खेमं कल्याणमय छइ लोक सिव निरुपद्रव छइ अनुत्तरं सर्वोत्कृष्ट लोक छइ।
हे गौतम तस्मात् कारणात् समयं मात्रं मा प्रमादी॥३६ बुद्धे परिनिव्वुडे चरे। गाम गए नगरे व संजए। संतिमग्गं
च बूहए। समयं॥३७ हे गौतम बुद्धो ज्ञाततत्त्वो परिनिर्वृतः ग्रामगतः वा अथवा नगरे वा चरेः हे गौतम ज्ञातत
त्त्व परिनिर्वृतः ग्रामगत। वा अथवा समाधि प्राप्त हुंतइ। गामि गयउ हुंतउ वा अथवा नगरि विहार क्रम कर
द्रिय किं। संयमः जितेंद्रिय छइ। हे गौतम च अन्यत् शांति मार्गं बृंहये। गौतम अनइ उपशम मार्ग वधारे। हे गौतम तस्म
ात् कारणात् समयमात्रं मा प्रमादी॥३७ बुद्धस्स निसम्म भासियं। सुकहियं अट्ठपओवसोहियं। रागं दोसं
गवं च छिंदीयां सिद्धिगइं गए गोयमं ति बेमि॥३८ गौतमः सिद्धिगतिं गतः इति ब्रवीमि। गौतम गत जाणी इ मुक्ति इंइ सि ७२

तु गो लिउं। किं कृत्वा। बुद्धस्य भाषितं निसम्य किं श्रुत्वा करीनइ बुद्धस्य ज्ञाततत्त्व वीतराग देवतणुं भाषित बोलि
उं निसम्य सांभली नइ किं भाषितं सुष्ठु कथितं कहिउं छइ। अर्थपदोपशोभितं अर्थसहित पदे करीनइ शोभ
तुं छइ। जे भाषित। पुनः किं कृत्वा। च अन्यत् रागद्वेषं छित्वा। किस्युं करीनइ रागद्वेष छेदीनइ॥ इति द्रुमपत्र
काध्ययनो दशमं समाप्तं॥ ब॥१० जे गाई श्री गौतमस्वामि सुप्रसिद्ध॥ मोह वीतराग कीय [illegible]। श्री महावीर
विहार करतां पृष्ठचंपाइं समोसरिया। तिहां साल राजा राज्य करइ। महासाल युवराजा। तेहनी बहिन य
शोमती। कांपिल्यपुरि पिठर राजा नइ परिणावी बइ। तेहनु गागिलि बेटउ। एकवार पृष्ठचंपाइं श्री महावीर स
मोसरिया। तिहां सालि राजा धर्म सांभली वैराग्य ऊपनउं। पिछइ महासाल युवराजाई नइ कहइ। हे बांधव तुं
राज्य लइ। हुं दीक्षा लेस्युं। तिहां सालि कहइ माहरइ राज्यनी षप नहीं। जिम तुम्हे [illegible] म्हारी सेवा करउ छउ ति
मइं हुं पणि दीक्षा लेई तुम्हारी सेवा करिसु। तिवारपछी कांपिल्यपुरिथी कु आपणुं भाणेज गागिलि तेडावी तेहनइ
राज्य देई महा महोछव इं सालि महासालि राजा एहे दीक्षा लीधी। इग्यार अंगना भणनार हुआ। अनुक्रमिइं श्री
महावीरनी अनुमति लेई पृष्ठचंपाइं संसारी आवंदावा गया। तिवारइं श्री गौतमस्वामि मोकल्या। तिहां गागि
लि माय बाप सांघि इं आविउं। जिनोक्त धर्म सांभलिउ। वैराग्य ऊपनुं। आपणा पुत्र नइ राज्य देइ। गागिलि माय
बाप सहित दीक्षा लीधी। श्री गौतम स्वामि आप छइं श्री महावीर वांदिवा जाता। वाटइं सालि महासालिनी प्रशंसा
करइ ता आपणा पइं चारित्रनु महात्मा समानता। शुक्लध्यान ध्यातां केवलज्ञान ऊपनुं। गागिलि मायबापनइ सा
लि महासालिनी प्रशंसा करतां आपणा पइं चारित्रनु महात्मा समानता। शुक्लध्यान [illegible]। केवलज्ञान ऊपनुं। गौतम

त्रणि प्रदक्षणा श्रीमहावीरनइ देईनइ वांदइ। तियांचइ केवलीनी पर्षदइ जा बालागा। गौतम कहइ ए नइ वांदउ। हिवउ। अहो
विष्णातुरहा आवउ। श्रीमहावीर वांदीइ। श्रीवीरिइ कहिउं। हे गौतम केवलीनी आशातना मकरि। ए पांचइ केवली
हुआ। तिहां श्रीगौतम मिथ्यामिदुक्कड दिइ। मनमाहि श्रीगौतम चींतवइ। हुं सम्यग् अथवा असम्यग्। जउ हुं नइ प्रति
बोधी दीक्षा दिउं ते हनइ केवल ऊपजइ। पणि मझ नइ न ऊपजइ। इम चींतवइ श्रीवीर तणुं वचन सांभलिउं॥
उ सइ स्वसरहृपिउणो। तियलुक्कपयासनिगायिजसस्स। जो आरूढं वंदइ। चरमसरीरो य सो साहू॥ ज्योतपोल
बधिइं करी अष्टापदि चडी ऋषभ सजिनरहइ वांदइ। चरमसरीरी ... ति इणा हिं जि सविमुक्तिगामी हुइ। तउं जे
तलई अष्टापदि चालिउ। जिनवचनुं पूर्वं सांभलिउं सांभली अनेराइ कोडिन्य दिन्न सेवाल नाम पांच पांच स
इ तापस मुक्तिनिमत्त तिहां चालिया। तेह माहि कोडिन कुलपति पांच सइ तापस सहितउ एकोपवास करी पारणा
इ आर्द्रमूलाहारी। पहिली मेषला लागयु। दिन्न कुलपति पांच सइ तापस सहितउ बिइ उपवास करी पारणाइ शुष्क
मूलफलाहारी बीजी मेषला चडिउ। सेवाल कुलपति पांच सइ तापस सहितु त्रिहुं उपवास करी पारणाइ।
शुष्क सेवाल आहारी त्रीजी मेषला चडिउ। त्रिहुं कुलपति ऊपहरा चडिवा असक्त हुंता। ख्यविहं तिहां र
हिया बइ। तीहं रहइ तिहां रहियां हुंता श्रीगौतमस्वामि। मूर्त्तिवंतु। जिसिउ सुरपरासि ऊइति सिउ पचिंतस
वांदेत्तावयक उकाय कांति करी दीपितदास आदेसावका सुआ विउ। ते तापस स सवेइ गौतमरहइं देषी करी।
चित्त चिं... तवइ। आम्ह तपे करी सो सिया काय इहां वडी न हीं सकता। ए उ सिउ पचिंता दहि करीय धाकां ७३
× अष्टापद यात्रा मनोरथ मन माहि धरइ। ते तलइ सगवंति यात्रा विषय आदेश दीधउ। तउ गौतम ×३.८

मार्गासंभावी उए किसी परि इहां चडसिइ। इसिउं चींतवइ। त्रिहुं तापस रहइं चींतवतां श्रीगौतम
स्वामि गुणनायक रविकिरण अवलंबी करी अष्टापदि पर्वति चडिउ। तीहनइं मनि महा विस्म
य ऊपनु। तत्र पबइ मनमाहि चींतविउं। जइ कि मूहइ पाबउ वलउ। अम्ह आगलि आविसइं। तउ अ
म्हे ईहनां शिष्य होईसिउं। श्रीगौतमस्वामि अष्टापदपर्वत ऊपरि चडिया। उदेषइं किस्युं लार
तचक्रवर्तिइं स्वर्णधर रत्ननइं आदेश दीधा। उ सिंहनिषिद्या प्रासाद इं सिइनां मिइ उद्धरिउ। अष्ट
ापदि अष्ट योजन रूप्यमय प्राप्ते किं प्रौकि ३। अष्ट योजन एकेकं योजन प्रमाण सोपान श्रेणी इं
मावडीयारा। श्री अष्टापदि गिरि शिखरि तेह ऊपरि श्री भरतचक्रवर्तिरवि बिहुं गाऊ नइ विस्तारि च्या
रि गाऊ प्रलंबायमान। त्रणि गाऊ विस्तर ऊंचु। चउद्वार। मणिमय पीठभूमि रत्नजटित स्वर्णम
इ स्तंभ। झालतली तोरण नृत्यारंभ दंड कलस आमलसारा ध्वजपताका। वर्णमानोपेत प्रमाणोपेत
सिंहनिषिद्या प्रसाद देषी। मनि हर्ष ऊपनु। पूर्वद्वारि संस्थित ऋषभ १ अजित २ नाम बि तीर्थंकर वां
दइ। अनइ दक्षण द्वारि संस्थित संभव। अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ नाम च्यारि जिन वांदइं
पश्चिम दिसि द्वारि संस्थित। सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ सीतल ४ श्रेयांस ५ वासपूज्य ६ विमल ७
७ अनंत ८ एहे नाम आठ जिन वांदइ। अनइं उत्तर द्वारि संस्थित धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मु
निसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर नाम दस इं जिन वांदइ। इम एणइ परि इं चुमति इं चउवीस इं जिन
निज निज प्रमाण वर्ण लांछन सहित देवदानव। विद्याधर नरेश्वर महित बिंब सिउं वांदउ संस्तवउ

हूंउ विस्राष्टआवनानावउसघलुइदिवससीमदेवगृहसिंहनिषद्यायतननामप्रसिद्धमाहिरहिउ। संध्या
समइ देवग्रहबाहिरि शुद्धशिलातलि बइठउ गौतम। समाधि सिउं। तिहां प्रतिजाणि करी स्वाध्याय करइ
ते तलइ प्रस्तावि विचित्य वांदना निमित्त उसमागउ धनद यक्ष। श्रीगौतमस्वामि देषी करी आवउ वांदी आगलि
बइठउ। श्रीगौतमस्वामि तदाकालि साधुगुणस्तवन संस्तवउ पांचसइं ग्रंथप्रमाणु पुंडरीकाध्ययनु व
षाणिउं। धनदतणउ इंद्रसामानिक पुंडरीकाध्ययनु संभाली करी मुखि अणावउ अर्थ हियामाहि धर
इ। सम्यक्त तदाकालि त्रिणि रूपा र्जिउं। स आयुःक्षयि मरी करी। दशपूर्वधर श्रीवज्रस्वामि हूउ। बीजइ
दिन प्रभातिसमइ पुनरपि चउवीस जिन वांदी करी। श्रीगौतमस्वामि तिणि जि मार्गि आवउ हुउ। तापस मा
हि आविउ। तापसे वांदी करी वीनविउ। भगवन् पसाउ करी अम्हारइ दीक्षा दिउ। गौतमस्वामि योग्य ताजा
णी करी तस घलाइ दीक्षा। पारणा अवसरि पूछिया। वछ उं किसीइ गाउ अम्ह नइं छइ। ते हे चीतविउं अम्हारा
आंत्र फल फूल कंद मूल सेवाले। एहवइ अज्ञानपणइ तिषिइ करी त्रूषइ करी। देहदाझ विउ छइ। जिइ मा
गिउं भोजन लाभइउ। मनोवंछित कोइ न मागीइ। इसिउं चीतवी करी। परमान्न भोजन मागिउं। श्रीगौतमस्वा
मि पात्र प्रतिलेषना पूर्व लेई करी विहरवा पुहता। कुणहिं सान्निवेसि। कुणीएक कुटंबतणि आगइ आपणिइ आ
वि परमान्न नीपनुं हुंतुं। ते तलइ प्रस्तावि ते हतणइ घरि। श्रीगौतमस्वामि अव्या। तिणि कुटंबीइ आपणपुं ध
न्य मानतउ हूंतइ। भावइं करी श्रीगौतमस्वामि परमान्नु पात्र पूरि विहराविउं। पात्र भरि तलेई आवतां मनइं चीत
तवइ छइ। षीर थोडी। टीलाइं पणि एतली षीरिइं अम्ह नइं नीपजइ इन हुं अथवा अचिंतीय महिमा माहरुआ

तणुं छइ। इम चीतवइ। पारणां करवा गौतमि अनुज्ञा तह्ंतां बइसवा अरवीणमहानसीलब्धि तणइ प्रभावि जांसी
म आपणउ अंगूठउ बाहिरउ काढिइ नही। तां भीम पात्रु वालउं थाइ नही। तिणि कारणि भगवंत गौतम नी हरइ परी
सइं तउ जे त्रिहुं उपवासे करी पारणुं करतां सेवाली तापस पांचसइं नइं पारणुं करतां गौतम ना गुण अनुमोदतां षीर
नी हथिलवधि देषी शुक्लध्यान धारा वर्त्तमान हूंतां। केवलज्ञान ऊपनुं। जि बिहुं उपवासे पारणुं करतां। दिनतना
पस पांचसइ तीहरइ गौतमस्वामि इं मागि आवतां चीतवइ जेह तणु गौतम आपइ स्यइ तउ लब्धिमात्र छइ। गौतम तणउ
गुरु तिकिसिउ छइ। इसी परि इ चीतवइ जेह तणु गौतम शिष्य इसिउ लब्धि शुक्लध्यान धाराधिरोहइ। केवलज्ञान ऊ
पनुं। जे एकि उपवास पारणुं करतां। कोडिन्न तापस तीहरइं समवसरण देषी। श्रीमहावीरनी देशना ध्वनि सांभ
ली करी शुक्लध्यानना लइउ केवलज्ञान ऊपनुं। तिवारइ ते पंनरसइं त्रडोत्तर गौतमस्वामि सिमा थिइं त्रणि प्रदक्षणा दे
ई करी केवली नी परषदइं जावा लागा। तिहां गौतमइं कहिउं। अहो शिष्यो वांदउ। श्रीमहावीर वंदिव। भगवंत भणइ
गौतम केवली नी आशातना म करि। तउ गौतमस्वामि खमावीय थास्या निपक्षु। तिहां गौतम कहिवा लागु। भगवन् त्र
हनीं दीक्षा दीइ आरांपू। ते केवली जि थाइ। पणि मझ नइ केवलज्ञान न ऊपजइ। तिहां श्रीगौतमनइं श्रीमहावीर कहइ। उऊ
नइ अम्ह ऊपरि मोहराग छइ। तीणइ रागिइं कर्म नुं डि क्षय छइ। पणि केवलज्ञान न ऊपजइ। जेह कारणइ मकहिउं छइ
अरिहंतेसु य रागो। रागो साहम्मिएसु बंभयारीसु। एस य सत्थो रागो। अज्ज स रागाण साहूणं ।।१।। हे गौतम ऊचाट म करेसि
बिहुइ आपणा सरिषा थासिउं। एतावता मोक्ष पामीए। दिवी तिहां एकवार हसिउं। तिहां श्रीमहावीर गौतम मध्य महालब्धि
धिनुं धरणी तद्भव मोक्षगामी तिहनुं नाम लेई चउद सहस्र महात्मा उद्ध सहस्र माहासती। श्रावक श्राविका देवता देवांगना

आगलि एदुमपत्रका अध्ययननउ अरूपइ॥ इतिद्रुमपत्रकाध्ययनं समाप्तं॥ संजोगाविप्पमुक्कस्स। अणगारस्स भिखु
णो। आयारं पाउकरिस्सामि। आणुपुव्विं सुणेह मे॥१ संजोगात् विप्रमुक्तस्य। अनगारस्य भिक्षोः आचारं प्रादुःकरिष्यामि
संयोग उ विप्रमुक्त कहुता। अनगार गृहस्थवास रहित रूषीश्वरनइ। आचार प्रगट करिसुं। आनुपूर्व्या मे मम कथयतः श्रृ
णुत। क्रमि अनुक्रमिइ करी मुझ रहइ कहिताहुंता सांभलउ।१ जे यावि होइ निविज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। अभिक्खणं उ
ल्लवई। अविणीए अबहुस्सुए॥२ य एवंविधः अविनीतो भवति। एवंविध अभिउ अविनीत निर्विद्यो भवति। जे निरव
घ ० विद्यारहित कहइ। यः स्तब्धो भवति। जे लोभीउ कहइ। यं अनिग्रहस्थापि भवति। जे अजितेंद्रिय कहइ। यः अभीक्ष्णं
निरंतरं उल्लपति जे निरंतर बहुघणुं बोलइ। यः अबहुश्रुतो भवति। जे अल्पश्रुत कहइ। एवंविधा अविनीतो भवति॥२
अह पंचहिं ठाणेहिं। जेहिं सिक्खा न लब्भई। थंभा कोहा पमाएणं। रोगेणालस्सेण य॥३ अथ पंचभिः स्थानैः यैः शिक्षा
न लभ्यते। तानि कानि स्तंभेन क्रोधेन २ प्रमादेन ३ रोगेन ४ आलस्येन ५ अथ अनंतर जे ए पंच स्थानके करी जीव शिक्षा
बहुश्रुतपणुं न पामइ। ते केहा स्थानक स्तंभ अहंकारी। क्रोध रीसा॥२ प्रमाद ३ निद्रादिक ३ रोग कष्टादिक ४ आलस्य
आलसपणुं॥५ अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीलित्ति वुच्चई। अहस्सिरे सया दंते न य मम्ममुदाहरे॥४ अथ अष्टभिः स्था
नकैः यैः शिक्षाशील इति उच्यते। अथ एतला अनंतर आठ स्थानकि करीनइ शिक्षाशील इति अभ्युक्त कहीइ आठ॥
स्थानानि आह अहस्सिरे। कोनि केहा रे अहस्सनशील हास्य नइ विषइ तत्पर नहुइ॥१ सदा दांतो सर्वदा
जितेंद्रिय रच अन्यता मम्मे न उदाहरः। अनइ मर्म न बोलइ॥४ नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए। अक्को ७५
हणे सच्चरए सिक्खासीलित्ति वुच्चई॥५ न अशीलः न थी शीलरहित। सदा शीलसहित। न विशील। अतिचारस

हितशील न थी निरतीचार सहित शील बइ॥५ स्यात् कदाचित् अतिलोलकः कि वारइ लोलचंचल न थी॥६ अक्रोधेन
। क्रोधरहित य। सत्यरतः सत्यवचन नइ विषइ रत आसक्त॥७ एवंविधः शिक्षाशील इति उच्यते। एवंविधइ सुशिक्षानइ
विषइ सिउ कहीइ॥८ स्थानकैः विनीतनां॥५ अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणो अ संजए। अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं
च न गच्छइ॥६ अथ चतुर्दशभिः स्थानैः वर्त्तमानः संयतः अविनीत उच्यते। अथ एतला अनंतर चउद स्थानक करी
वर्त्तमान वर्त्तउ संयत अविनीत इति कहीइ। च अन्य स निर्वाणं न गच्छति अनइ ते निर्वाण मुक्तिनु जाइ॥६
चतुर्दश स्थानानि आह। चउद स्थानक कहइ छइ। कोनि॥६ अभिक्खणं कोही हवइ। पबंधं च पकुव्वई। मेत्तिज्जमाणो
वमेई। सुयं लद्धूण मज्जई॥७ अभीक्ष्णं निरंतरं क्रोधी भवति॥१ प्रबंध दीर्घरोषं प्रकरोति। प्रबंध सणीइ दी
र्घरोष करइ॥२ मित्रीयमाणः वमति मित्र की जउ बाउइ वमइ॥३ श्रुतं लब्ध्वा माद्यति। श्रुत ज्ञान लहीनइ मांचइ। अ
हंकार करइ॥४॥७ अवि पावपरिक्खेवी। अवि मित्तेसु कुप्पई। सुप्पियस्सावि मित्तस्स। रहे भासइ पावयं॥८ अपि सं
ला वने पापक्षेवी। अपि इस्यो संभवना करी समिति करी आचार्यादिकनी निंदा करइ। मित्रे अपि कुप्यति। मित्रनइ कों
प करइ। सुप्रियस्यापि मित्रस्य रहः पापं भाषयति सुष्ठु प्रधान अभीष्ट मित्र तणुं रहस्य एकांतिइ पापरूप भाषइ॥८
पइन्नवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई॥९ प्रकीर्णवादी॥१
असंबद्ध भाषी। मुखि आवइ ते कांई बोलइ। द्रुहिला द्रोह करी छइ॥९ स्तब्धता १० बध लोभीउ छइ॥११ अनिग्रह अजि
तेंद्रिय छइ॥१२ असंविभागी संविभाग न करइ॥१३ अवियत्ते अप्रियकारकः १४ एवंविधो अविनीत इति उच्यते॥ इसि
उ कहइ। ते अविनीत कहीइ॥९ अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई। नियावत्ती [illegible] माई अकुऊहले॥

अथ पंचदशभिः स्थानैः सुविनीत इति उच्यते। अथ एतला अनंतर पनरस्थानके करीनइ सुविनीत कहीइ। पंचदश स्थानानि आह। पनरस्थानक बोलइ। कानि रके हीरनी विवर्जीइ॥१॥ अचपल चपलाइ पणा रहित अ
माई माया रहित॥३॥ अकुतूहल कुतिग पणा रहित॥४॥१० अप्पं च अहिक्खिवई। पप्रबंध न कवई इम जिन्न डमारो
सयई॥८॥ सुयलद्धं नमजई॥११॥ अल्पं आक्षोनिषेधार्थे च अन्यत्र अधिक्षिपति। अनइ कर्कशवचन न बोलइ। प्रबं
धं दीर्घ न करोति। दीर्घरोसन करइ॥६॥ मित्रीयमानो भजति। मित्रकी जउ कुत्ति सजइ सेवइ॥७॥ श्रुतं लब्ध्वापि न माद्य
ति। श्रुतलहीनइ माचइ नहीं॥८॥११ नयपावपरिक्खेवी। न यमि ते सुकुप्पई। अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई॥१२
न च पापैः परिक्षेपी। दुष्टपापकर्म करीनइ आचार्यादिकनी चिंता करइ॥१० मित्रेषु न कुप्यते मित्रनइ विषइ कोप न करइ॥
१० अप्रियस्यापि मित्रस्य रहः कल्याणं भाषते। अण अभीष्ट मित्र तेणां रहइ एकांति इ। कल्याण रूडउं भाषइ॥११॥१२ कल
हडमरवज्जए॥१२ बुद्धे अभिजाइए॥१३ हिरिमं पडिसंलीणे॥१४ सुविणीए त्ति वुच्चई॥१३ कलहडमरवर्जकः वचन
कलहडमर सरीर अतिविरोध वर्जइ॥१२ बुद्धो ज्ञाततत्त्वज्ञाता इ बइ॥१३ अभिजात सए सुविनीत। ह्रीमान् लज्जासहित
पडिसंलीणो संगोपितगात्र लज्जाइं करीनइ संकोच्यु गात्र बइ। एवंविधो सुविनीत इति उच्यते। एवंविध सुविनीत इति श्रि
जुक हीइ॥१४॥१३ वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं पियंवाई। से सिक्खं लद्धुमरिहई॥१४ स शिक्षालब्धुं अर्हति। ते
शिक्षा लहिवा नइ कारणि अर्हइ योग नित्यइ निरंतर गुरुकुलि वसति। नित्य निरंतर गुरुकुलि वसइ। योगवान सव
ति। योगवंत कुइ। उपधानवान् भवति। उपधानवंत कुइ। श्रुताभ्यासी धन तपसंयुक्त कुइ। प्रियंकारो भवति। अभीष्ट कारी
उ कुइ। प्रियवादी कुइ। रूडं बोलइ॥१४ अथ दृष्टांत कहइ छइ॥ श्रीयशोभद्रसूरि तेहनइ शिष्य कुआ तेहनइ संबा

द्ध। अनइ विहरा मेरवि शिष्या तेहमाहि जिनद्रबाहु स्वामि गुरुनु विनय कीधउ। पाटनी पदवी लीधी
अनइ विराम हिरसंयती नु छइ॥१५॥ जहा संखंमि पयं। निहितं दुहउ विराई। एवं बहुस्सए भिक्खू धम्मो
कित्ती तहा सुयं॥१५ यथा शंखे पयो निहितं द्विधापि विराजते। शंख पय दुग्ध निवेसिउ हूंतउं द्विधा बि
हूं प्रकारि इं अभ्यंतर अनइ बाह्य नइ विषइ शोभइ। एवं अमुना प्रकारेण। बहुश्रुते भिक्षौ धर्म कीर्तिस्तथा श्रु
तं भवति। ईणइ प्रकारि इं बहुश्रुत भिक्षु। ऋषीश्वर नइ विषइ धर्म हुइ। कीर्ति हुइ। तथा तिम शास्त्र हुइ॥१५॥
जहा से कंबोयाणं। आइन्ने कंथए सिया। आसे जवेण पवरे। एवं हवइ बहुस्सए॥१६ यथा स कंबोजानां मध्ये। आकी
र्णः कंथक अश्वः जावन प्रवरः स्यात्। जिम ते कंबोजदेसोत्पन्न। घोडा मांहि आकीर्ण सुविनीत कंथक प्रधा
न अश्व घोडउ जवनि वेगिइं करी प्रवर प्रकृष्ट उ हुइ एवं बहुश्रुतो भवति एवं ईणइ प्रकारि इं बहुश्रुत हुइ॥१६
जहाइन्नसमारूढे। सूरे दढपरिक्कमे। उभओ नंदिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सए॥१७ यथा आकीर्णः समारूढः शूरो
दृढपराक्रम उभयतो नंदिघोषेण शोभते। जिम आकीर्ण सुविनीत घोडइ समारूढ चडिउ। शूरसुभट दृढ परा
क्रम सबवंत उभय बिहुं पासे नंदिघोषेण द्वादश तूर्यनादि घोषि इकरी शोभइ। एवं अमुना प्रकारेण बहु
श्रुतो भवति॥१७ जहा करेणुपरिकिन्ने। कुंजरे सट्ठिहायणे। बलवंते अप्पडिहए। एवं हवइ बहुस्सए॥१८ यथा
कुंजरः करेणुपरिकीर्णः षष्टिहायनः सा षष्ठिवरस तणउ बलवंत प्रतिहतो न केनापि अणपडिहणिउ इ हसिउ हुइ एवं
बहुश्रुतो भवति॥१८ जहा से तिक्खसिंगे। जायक्खंधे विरायइ। वसहे जूहाहिवई। एवं हवइ बहुस्सए॥१९ यथा से वृषभस्तीक्ष्ण शृं
गजातस्कंधः विराजते। जिम ते वृषभ तीक्ष्ण शृंग प्रौढ स्कंध इहसिउ हुउ शोभइ। किं० यूथ नः यूथाधिपतिः यूथ

तेणउअधिपतिस्वामीछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥१९जहासेतिरकदाढे।उदग्गे।दुप्पहंसए।सीहेमियाणपवरे।एवं
भ०॥१९यथासेसिंहतीक्ष्णदाढउदग्रअप्रहंसाकामृगाणांभवति।जिमतेहसीहतीक्ष्ण दाढउदग्रअणीइ।उत्कृ
टदुप्रहंसकभ०अनाकुलनीयदुर्जयमृगपशुमांहिप्रवरप्रधानछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२०जहासेवासुदेवेसं
खचक्कगयाधरे।अप्पडिहयबलेजोहे।एवंह०॥२०यथासेवासुदेवःशंखचक्रगदाधरे।अप्रतिहतबलोयोधाभवति
जिमतेवासुदेवशंख।चक्र।गदाधर।अणपडइहणाणउबलइसिउयोधसुभटछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥जहासे
चाउरंते।चक्कवट्टीमहड्ढीए।चौदसरयणाहिवई।एवंमह॥२१ यथासेचतुरंतचक्रवर्तिःमहर्द्धिका।चतुर्दशरत्न
अधिपति।भवति॥जिमतेचाउ रंतचक्र।वर्तिमहर्द्धिकलक्ष्मीपतिचउदरत्नतणउअधिपतिस्वामीछइ।एवंबहु०॥
॥२२जहासेसहस्सक्खे।वज्जपाणीपुरंदरे।सक्कोदेवाहिवई।एवंह०॥२२यथासहस्राक्षःवज्रपाणिपुरंदर।शक्रो
देवाधिपतिर्भवति।जिमतेसहस्रलोचनतणुधणी।वज्रपाणिर्भवति।हाथिवज्रसहितपुरंदर।भणीइदानवतणापु
र।नगरतणउविणासणहार।शक्रइंद्रमहाराजदेवतणउस्वामीअधिपतिछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२३जहासेति
मिरविद्धंसे।उत्तिट्ठंतेदिवायरे।जलंतेइवतेएणं।एवंहवइबहुस्सुए॥२४यथासउत्तिष्ठमन्।दिवाकरतिमरवि
ध्वंसन्।तेजसाज्वलन्निवभवति।जिमतेऊगतउदिवाकरसूर्यतिमरअंधकारविध्वंसतउछइ।तेजिकरीज्वलतउछइजि
मिउ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२४जहासेउडुवईचंदे।नक्खत्तपरिवारिए।पडिपुन्नेपुन्नमासीए।एवंह०॥२५यथासेउडु
पति।श्चंद्रोनक्षत्रपरिवारपरिवृतः।पूर्णमास्यांप्रतिपूर्णोभवति॥२जिमतेउडपतिसं०प्रहतणउस्वामीचंद्रमानक्षत्र। ११
परिवारपरिवृतछउ।पूनिमिइसंपूर्णछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२५जहासेसामाईआणं।कुट्ठागारेसुरक्खि

ए।नाणाधन्नपडिपुन्ने।एवंहवइबहुस्सुए॥२६यथासामाजिकानांकोष्ठागारे।सुरक्षतोभवति।जिमतेसामटलोकतणुअ
ववासुमदायसहितव्यवहारीयातणुकोठारसुरक्षितछइ।किंभूतकोठारः।नानाधान्यप्रतिपूर्णविविधनानाप्रकारिइं
धान्यकरीप्रतिपूर्णछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२६जहासादुमाणपवरा।जंबूनामसुदंसणा।अणाढिअस्सदेवस्सएवं
ह०॥२६यथासद्रुमाणांप्रवरा।जंबूःसुदर्शनानामअनहातस्यभवति।जिमतेद्रुमवृक्षमांहिप्रवरश्रेष्ठजंबूवृक्षसिइंना
मिइंअनाढियादेवतणाछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२७जहासानईणपवरा।सलिलासागरंगमा।सीयानीलवंतप्पवहा
एवंह०॥२७यथासानदीनांप्रवरा।सलिला।सागरंगमासीतानीलवतप्रभवाभवति।जिमतेनदीमांहिप्रवरश्रेष्ठसलिला
नदीसागरगमाःसमुद्रगामिनीसीतानदीनीलपर्वततुप्रभवसं०उत्पन्नछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२८जहासे
नगाणपवरे।सुमहंमंद रगिरी।नाणोसहिपज्जलिए।एवंह०॥२८यथासनगानांप्रवरःसमहान्मंदिरोगिरिःनानौष
धीप्रज्वलितोभवति।जिमतेनगरपर्वतमांहि।प्रवरश्रेष्ठसमहामंदिरगिरिमोटउपर्वतविविधनानाप्रकारिंऔषधीप्र
ज्वलितदहदीप्यमानछइ।एवंबहुश्रुतोभवति॥२९जहासेसयंभूरमणे।उदहीअक्खउदए।णाणारयणपडिपुण्णे
।एवंह०॥३०यथास्वयंभूरमणोदधिअक्षयोदकोनानाप्रकारिरत्नेकरीप्रतिपूर्णोभवति।जिमतेस्वयंभूरमणोदधि
अक्षयोदकक्षयरहितपाणी।असंखउविविधनानाप्रकारिरत्नेकरीप्रतिपूर्णछइ।एवंविधोबहुश्रुतोभवति॥३०समु
द्दगंभीरसमादुरासया।अचक्कियाकेणइदुप्पहंसया।सुयस्सपुन्नाविउलस्सताइणो।खविउकम्मंगइमुत्तमंगया॥३१॥
विपुलनश्रुतेनप्रतिपूर्णाजीवाउत्तमांगतिंगताभवति।विपुलविस्तीर्णश्रुतिशास्त्रिकरीनइप्रतिसंपूर्णजीवउत्तमगतिगया।
मुक्तिइप्रहुंताछइ।किंभवा।कर्मक्षेपयित्वा।कर्मक्षपीनइ।गंभीरत्वेनसमुद्रसमा।गंभीरपणइंकरीनइसमुद्रसरीषाछइ

पुनः किं० जीवा। अचकिता। अजस्ता। अजस्त्रा नं० निर्लयबद्धा जीवः पुनः किं० जीवा। आकिंनाचितु… ॥ जीवा असंख्यबद्ध। जे
जीवा। पुनः किं जीवा। त्रायनूः षट्‌जीवनिकायनइ विषइ रक्षक बद्ध। जे जीवा॥ … ॥ उत्तिमिइग
वेसर। जेणपाणंपुरं चेव। सिद्धिपाउ हीला सिक्ति बेमि॥ ३१ तस्मात्‌ कारणात्‌ माधीगवेषक श्रुतं अधिष्ठेत्। ते
तेह कारणाउ उत्तमार्थ वांछणहार मुरुष मुक्ति वांछणहार मुरुष श्रुत सिद्धांत आश्रइ सेवइ। येन श्रुतेन आ
त्मानं च अन्यत्परं सिद्धि संप्राउयान् जीणइ श्रुतिज्ञा स्त्रिइ करी आपणुं अनइ परअनेक सिद्धि मुक्तिपामइ। ३२
बहुश्रुतपूजा अध्ययनं समत्तं॥ ११ नकुलइ श्वपदानां। हरिएसबलस्स किं कुलं आसि। आकंपियातदेवा। सुराविं
त्थपङ्गवा संति॥ १ नकुलं० इहां धर्म्मे ताणइ विचारि मोटउं कुल कांई प्रधान नहुइ। हल्लक कर्म पिणुइ जिकारण। हरि
एहर केसबल मातंग ऋषिनुं सिउं कुल। कुउं कांई मातंग कुल सतीरूडउं कुल नहुतुं। आकंपि० तप प्रतपिइं करी आ
कंप्या आवर्ज्योकृता। सुरा विण्दे कइ जेह ऋषिनी पर्युपास्ति सेवा करइ उत्तम मनुष्यनुं कहिवउं किसिउं। अत्र हरकेसबल
दृष्टांत माह॥ मथुरा नगरीइं शंख नामि। युवराजा इं उत्तमकालि उत्तम तापणा प्रियकुकरणइ जई नसकइ जेजाणउं कुंउं आ
इतमरइ। तेणइ पुरीइं सम उरराजर्षि आवइ। परोहित नु पुत्र मिथ्यादृष्टी तेलिहां हउ। तेकहइ ऋषीश्वरे मार्गे पूछ
इ। एणी सेरीइं जवाइ। तिरिइं तऋषीश्वरऊपरि द्वेषीकुं। जे वितरादि ष्टत अग्निमइ सेरी छइ। तेणी सेरीइं कहिउं
एणइ मार्गि जावाइ। परोहित पुत्र इं अवन्या सावधिकी ऋषिनइं मार्गे कहिउं। ऋषीश्वर पांचे सुमते गुप्तिउ। त्रि
कुगुप्ति गुप्त ऊजिम ते वेतरादिष्ट अग्निमय सेरीइं ऋषिनइ जाता तपनइं प्रसा विद्ध उं ही कुंती सेरी ताढी थई। ते से ७८
रीनुं स्वरूप देखी सोमदेव परोहितनइ मनि धर्मनुं प्रसाद। देखी पश्चात्तापथिउ। महात्मा नेपगे लागु ते णइ महा

त्मानइ प्रति बूझिउ दीक्षा आव राम्यपदी दीक्षा लिइ तप करइ। पण जातिमद करइ। जेह कारणाउ सिद्धांतमाहि इम क
हिउं छइ। जाइकुल वलसूय तवलाभमिरीय अह मयमितो। एयं चिय बंधइ असुहाइं बहुं च संसारा ॥ १ जा
इ० ब्राह्मणादिक जातिनउ गर्व अनइ कुल। आपणुं पूर्वे उनुं जातिह नुगर्वे रूप। आपणा सयरनुं सोलाग्यनुग
र्व इ बल आपणा सयरनां बलनु गर्व धसुय आपणा शास्त्रनां जाणि वानुगर्व। तप० आपणा तपीया पणानुग
र्व इहला स आपणा ऊपार्जीवानुगर्व० अस्मिरि० आपणा गाकुराई नुगर्व० अहमण एहे आठमद गर्व करउ कुंउ।
जीव एयाइं एहनि जातिकुलादिक असुहाइं संसारमांहि करतउ बहुं घणीवार अशुभ कर्म ऊपार्जइ। ते किम
जातिनु गर्व करउ कुंउ अनंतीवार हीनजातिइं ऊपार्जइ। कुलनु मदकरउ अनंतीवार हीनकुलि ऊपजइ। रूपनु
मदगर्व करउ अनंते सवेकुरू पथाइ। इसिउ परिजांणीवउं। एह जिवातकहिवइ जाईए उत्तमाए। कुलेपहाणं मिस्स
रयं। बल विज्ञाइ तावं तामाला समए तांच जो खिसे। रजाइ एण्डे आपणी उत्तम जातिइ करी अनेरा रहइ हसइ। नि
दइ। कुंउ उत्तमजातिनु। इसी परि कुलेय० प्रधान कुलि इली धंइ। कुंतइ अनेरा रहइ निंदइ। माहरूं कुल उत्तम। ताहरूं कुल
अधमइ मरूप अनइ ऐश्वर्य बलविद्या तपीला सइ। ते आपणा मदे अहंकारे करी पररहइ निंदइ। हीलइ ते हरइ इस्यि
उ कुइ तेकहइ बइ। संसारमणावयग्गं। नीयवा णाइ याव मासाय। समइ अरं तंकालं। तम्हाउमए विवि जिज्जा॥ २ संसारे
ण। जेह नुं पेलुया रखेह उतनपामीइ। एह वउ वरफिरइ अनंत उकालमहि नुधणी। नियहाण सविरु विवस्मान कहीनजा
तिकुलादिकपामउ। उम्हाण आवइमदनु एवडउ अनर्थ जाणीनइं मद विज्जीवा। तथा सुठ विजई झयंतो। जाइमयाइसु
मजाइ जोउ। सोमि अजा रिसिजहा। हरिएसबलव्व परिहाइ॥ ३ सुठ ण्य ति महात्मा सुठु विगाढउइ तपनियम संयमनइ विष

इयन्न उद्यम करउ इक्कं ३। जाइमयाई० जातिकुलमदादिके करी मानइ। जात्यादिके रूडे बते साचउ गर्व करइ। सो मेत्र्य
जण्ह रीए। ते महात्मा मेतार्य रुषी अनइ हरिकेशी महात्मानी परि इहां इहलोग घाइ। हीणजातिकुलादिक लहइ॥
ते सो मदेव चारित्र स्वरूप लउ वृत्ती लगार कव्हाहलणनी जातिनु मद करउ मरी देवलो कि हुउ। तिहां थिकु चवी
नीचगोत्र नइ उदयि गंगा नइ तीरि बलकोट नइ नामि इं मातंग नु वाकर। तेहनइं गोरी। अनइ गंधारी बि स्त्रीयो
गौरी कुषि ऊपनु। तेहनी माता स्वप्न लीधुं। पूर्वे कर्म विशेषइं कालु कुरूप मातपिताइं नाम दीधुं हरिकेशबल। एहव
उं नाम दीधुं। ते बाधउ कलह प्रीय महारी सालहरु। जिहां बालक मांहि रमइ। तेहनइं मारइ कूटइ मा बाप्त्र जोराइ
रषे कहि सिउं वढइ। एहवइ एकदा अस्ताविति मातंग नइं उच्छवनु दिन आविउ छइ। मातंग एकठा मिली मद्य मांस
खावरइ छइ। टोलइ मिली रह्या छइ। एहवइ ते हरिकेशबल तिहां ढूकडउ आविउ पणि उ बो बला सरणी। कलहिइ
ते तेडिउ नहीं। तिहां यइ सीन सकइ। पासइ रहइ। तेहवइ एक साप पासइ दरहाथि कुनी कलिउ। मातंग ते विणा
सिउ। वली केतलीएक वेला इं वली नीलिकुंड सर्प नीकालिउ। एउ निर्विषइ म कही तेह मातंगे ते जीवतु मूक्यु। किउ। हरि
केशा ते स्वरूप देखी हलुकर्मा सिलीइ सिउ विचार ऊपनु। जीव सघला इं आपणइ जिहो थि दुःखिआ थाइ छइ। कुं राया
मइ। बेइ आपणो जि गुणे करी सुखीया थाइ छइ। सहुए एणे वदो अबा पावइ सहु लिसहइ उ। सविसे हमाइ मेप्यो। लिकुंडो
तजमु वइ। इसिउं चीतवी तां महात्मा मार्गि जातां मिल्या। धर्म सांभलिउ। वैराग्य इ दीक्षा लीधी। महा तपनइ प्रभावि दे
वता एसेवी इ। एकवार वाणारसी नगरी बाहिरि यक्षना सवनइ ढूकडउ अनुज्ञा मागी रहिउ। तिहां थिकइ काउसग्ग ७९
पच्चक्खाण तीव्र तपनां तिय इ यक्ष रुां तिथि उ। ते रुषीश्वरनी सेवा करइ। तेहवइ कोसलिराजानी पुत्री भद्रा प्रमुख्यादिक ले

ई यक्षनइ पूजा करवा आवइ। तिहां ते कालु कुरूप रुषीश्वर देखी थूंकइ। तिवारइ यक्ष रूठु उ थिकु तेहनइं मुख
वांकु कीधउं। सिर विभ्रमिहा पीडा ऊपजावी। महा मूर्छागत कीधी। ऊपाडी घरि लेई गया। राजाइं अनेक उपचार की
धा। करावा पणि गुण किम्हइ नथाइ। पछइ यक्ष वनि आवी अनेक भोग भोगादिक कीधा। यक्ष प्रत्यक्ष थई बो
लइ। ए कन्या राजी थाइ। तउ एह जि रुषि नु पाणिग्रहण करइ। राजइ मानिउं। जक्ष इ साजी कीधी। यक्षइं मा
हात्मा नु सरीर अधिष्ठी रहिउ। राजा इ ते कन्या रुषीश्वर नइ परणावी। यक्षि इ परणी। तरुषीश्वर तेह कन्या नइ कां
ई नवांछइ। प्रभाते कालि रुषीश्वर विहार कीधउ। राजा इ रुषि पत्नी नगर माहि वेजरुदीक्षत परोहित नइं यज्ञ
पत्नी करी सा इ मवीत वी आगी कीधी। यज्ञ विषइ काज काम करइ। केतलइ कालि तीणइ परोहितइं याग करिवा
आरंभिउ छइ। ब्राह्मण यज्ञवाटकि घणा कोई मिल्या छइ। दैवयोगइ तेह जि हरिकेशी मातंगरुषि मासक्षम
इ का जि नगर माहि आवउ ती णइ यज्ञवाट कि ढुकडउ आविउ। मातंग रुषि मइलु कुरूप देखी ब्राह्मण मारवा
धाया। तेह वि इते णइ यक्षि शरीर अधिष्ठिउं। ब्राह्मण प्रति इसिउं कहिवा लागु॥ सोवाग कुलसंभूउ। गुणुत्तरध
रो मुणी। हरिएस बलो नाम। आसि भिक्खू जितेंदिउ॥१ हरिकेसि बलो नाम। भिक्षुरासीत्। हरिकेशी बल इं
इर सिनाम इ सिद्ध रुषीश्वर हुंउ। किं० भिक्षु। स्वपाग कुल संभूतो। चंडाल नि कुलि ऊपनु छइ। पुनः किं० भि
क्षु। उत्तरगणधर। उत्तरगणधर छइ। महामुनि छइ। किं० भिक्षुः जितेंद्रिय। जीतां इंद्री छइ॥१ इरई एसणभासा
ए। उच्चार समिईसु य। जउ आयण निखेवि। संजउ सुसमाहिउ॥२ ईर्यासमिता एषणासमिति। उच्चारपासवण
समितो। यता ईर्यासमिति। एषणा० भा० आदा० उच्चारपासवण समिति नइ विषइ। यतना णीइ जयणापर

छइ।पु०किं०आदाननिपसमितो।हेतो यतः आदाननिक्षेपसमितिनइ विषइ जयणापूरवकछइ।पु०भिक्षु।संयत
गुप्तेंद्रियछइ।किं०भिक्षुसुसमाहिता।सुष्टु रूपी समाधिप्राप्तछइ।जे ऋषीश्वर ऋषीश्वरा।मनगुप्तो वचगुप्तो।कायगुप्तो
जितेंद्रिय।भिक्षु बंभचारी सर्वसुंदिउ।।मनोगुप्ता।वचनगुप्ता।कायगुप्ता जितेंद्रिय।भिक्षानइ कारणइ।
जवाडकियानइ पडिइ आविउ।किं०यज्ञपाडकेद्र ब्राह्मण तणउ ज्याग छइ जिहां।।तनयसोसिऊणमेष जं तं न वे
णपरिसोसियंपंतो बहिउवगरणं उवहसंति अणारिया।।पतं मुनिः आगतं दृष्ट्वा अनार्या उपहसंति।तेह ऋषीश्वरआ
वतदेखीनइ।अर्थ अकुलीन हसइ।किं०मुनि तपसा परिशोषित तपि करी परिशोषित छइ।पुनः किं०तं मुनिप्रांतउ
पधिउपकरणं।प्रांतजाणीइ नीचउपगरण छइ।जे ऋषीश्वरनइं।।जाईयमयपडिबुद्धा हिंसगा अजिइंदिया।अबं
भचारिणो बाला।इमंवयणमब्बवी।।पबाला इदं वचनं अब्रवीत्।बाल मूर्ख एवचन बोलिउं।किं०बाला जाति
मदं ध प्रतिस्तब्ध।जातिमद करीनइ स्तब्ध छइ।जे ब्राह्मण पु०किं०बाला हिंसगा जीवहिंसा सहित छइ
जे बाल मुर्ख पुनः किं०बालः अजितेंद्रीआ।अजितेंद्रिय छइ।पुनः किं०बाला अब्रह्मचारिण।अब्रह्मचारी छइ।जे
बाल मुर्ख।।पकयार आमछई दित्तरूवे।कालेविमराले फोक्कनासे।ओमचेलए पंसुपिसायभूए।संकरदूसंप
रिहरियकंठे।।कंतर आगछति कृण आवइ।दित्तरूवे सीतिलिका स्फोटकवत्।दीप्तरूप।सीलीनाफोडा
नी परिइं।दीप्तरूप।निंद्यरूप छइ।जे ऋषीश्वर।किं०करंकाल कंकाल विकराल छइ।जे ऋषीश्वर किं०कतर
पुक्कणासः देसी भाषया [illegible] विषमनासा।विषमनासा छइ।जे ऋषीश्वर नी पु०किं०कतरः अवमचेलकः पांसुपि
शाचभूत [illegible] जीर्णवस्त्र इ करीनइ पांशु रजणीइ रजरेणु करीनइ।पिशाचरूप उपम छइ ८०

पुनः किं०कतर संकरदूसपरिहरियकंठे संकर लणीइ कुकरडी तेहनु दूष्य वस्त्र परिहरित लणीइ नित्रात कंठछइ।जे
ऋषीश्वर।।कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे।काए व आसा इह आगउसि।ओमचेलगा पंसुपिसायभूया गच्छ खलाहि किमिह
ठिउसि।।व्व कतरः त्वं कुण।कथं भूत त्वं अतिदर्शनीय।इतिई एणइ प्रकारिइ जोवा अयोग्य छइ।जे तु काया आशाया
इह आगतोसि।किसी आशा करीनइ इहां तुं आविउ छइ।हे अवचनचेलगा अपिशाचभूतग छनीच वस्त्र रज
रेणु करीनइ पिशाच प्राय जार खलाहि निवर्त्तस्व।पाछउ वलिउ टलि।इह किं स्थितोसि।इहां कांइ रहिउ छइ।।जक
खो तर्हि तिंदुयरुक्खवासी अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स।पच्छायइत्ता नियगं सरीरं इमाइं वयणाइं उदाहरि
त्था।।तत्र कंदुक वृक्षवासी यक्ष निजं शरीरं प्रच्छाद्य अमू निवचनानि उदाहरितवान्।तिहां कदूक लणीइ वा
सीय यक्ष देवता निज आपणा शरीर छादी गोपवीनइ।ए वचन बोल्यां।।किं०यक्षः तस्य महामुनिः अनुकंपका
ते महामुनिरहइ अनुकंपा लणीइ दया करइ छइ।यक्ष देवता ब्राह्मण प्रति कहइ छइ।।समणो अहं संजओ बंभया
री विरओ धणपयणपरिग्गहाओ।परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले।अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि।।अहं धनपचनपरिग्रहात्‌ विरतः।हुं धनपचनं
परिग्रह तु विरमिउ।निवृतिउ भिक्षाकालि।अन्नस्यार्थे इह अहं आगतो स्मि।भिक्षा कालि अन्न रहइं कारणइ
इहां हुं आविउ छइं।किं०अन्नस्य परप्रवृत्तस्य परआनरान दूकारणि प्रवृत्त स्य लणीइ निष्पन्न छइ जे अन्न।।
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य।अन्नं पभूयं भवयाणमेयं।जाणाहि मे जायणजीविणुत्ति।सेसावसेसं लहऊ तवस्सी।।
भवता एतत्‌ अन्नं प्रभूतं वितीर्यते।खाद्यते।भुज्यते।तम्हारइ घरउ अन्न वितीर्य [illegible]।इहां न दीजइ।खाद्य
ते।आस्वादीइ।भुज्यते।भोगवीइ।अयं मायां वनजीवन।।इति जानीतः।तुम्हे मुं [illegible] जाणो

अस्मय च दाइ
नमागउछे
।।आ।।कुं अस
णाकुं माहा
णआ अहं सं
यता।हुं गुणे
द्रिया।अहं
ब्रह्मचारी
हुं ब्रह्मचा
री।अहं तु
४६

उ।मा गवइं करीजी वउ। अनिअसिउं जाणिउ। ओषाव ओसंतपस्वीलसउ। तपस्वीऋषीश्वरस्स..वशेषलक्ष्ण॥२०तक
रकडं लोयणामंहणाणं अतिह्रियंसिधिदेगवस्कं। नयहवयंएरिसमन्नपाणं। दाहाम्रउ झंदि भिद्दड्डिनसि॥२२६
दब्राह्मणानोएतल सोउजनंतपस्कृतइदइईणाइप्रकारिइंब्राह्मणारदइंएलोउ नउपस्करिउनीपनुं किं लोउजनं आ
मोषिसिधं आयणा आत्मानइंकारणा। सिद्ध निष्पन्न बइ। जे लोजना। पुनः किं लोउजनाएकपद्मएक ब्राह्मणानुपद्म
बइजितांउपुनः वयईद्रओ अन्नपानं। उरुरइइकोईनहीदिउं। इहकिसिउं तोसि। ईइइकारहिउबइ॥२३ घलेसु
बीयाइंववंतिकासगा। तहविणान्नसुयआससाए। एयाइंसिद्धाइंदलोहमआत्राणएंदेपुन्नमिणासुखेत्तं॥२२क
र्षिकास्थलेषुताथेवनिम्नेषुआज्ञायाबीजानिवपंति। कोटबिककराबीस्थलिस्तमिकाएताथेवतिमजिनिम्निषु
लणीइयोलिजलस्तमिकाएबीजाआकरीनइवावइ। एतयाश्राद्धयामघेदतांईणाइश्रुद्धाइंवासनाइंकरीम
ऋनइदिउ खलुनश्चितं। एतनूपुणंपद्मेत्रं आराधते। खलुनिश्चितपुणपद्मेत्रआराधुसाधु॥२२ खेत्राणिअ
म्हं विदियाणलोय। जहियकिन्नाविरहंतिपुन्ना। जेमाहणाजाइविज्जोववेया। ताइंउखेत्राइंसुपेसलाइं॥२२ विप्र
प्राह॥ अस्माकं क्षेत्राणिविदितानिसंति। अम्हारइ क्षेत्रिजाणयां डिबइ। जेब्राह्मणाजातिविद्योपपेता। जे
ब्राह्मणाजातिविद्याइकरीनइउपेतसंयुक्तछइ। तुपुनाः तानिक्षेत्राणिसुपपेसलानिसवति। उपणांतखेत्र
सुपेसलवर्त्तइ॥२३ कहोयमाणो यवहोयजेसिंमासेअदत्तंचपरिग्गहोयतेमाहणा जाइविज्जाविहूणा॥
ईतोउखेत्राइंसुपावयाइं॥२४ जेब्राह्मविद्याविहीनाः उपुनः तानिक्षेत्राणिसुपापकानिसवंति। तेब्राह्मणा ८२
जातिविराहितछैतांतेयणांतेखेत्रसुपापवर्त्तइ। येषांक्रोधःय इरइंक्रोधयेषांमानयेषांवधयेषांम्हषां। येषांअ

दत्तादानंपरिग्रह॥२४ उपेत्र लोलारधराणिराणां। अत्थं नजाणेहअहिज्जवेए। उच्चावयाइंमुणिणोचरंति। ताइंउखेत्ता
इंसुपेसलाइं॥२५ लोब्राह्मणाः अत्रपूर्यंगिरोलारधरा। लोब्राह्मणाइंहउम्हेगिरावाणीनालारधरवत्तेउ। वेदानअधी
त्यअर्थनजानीत। वेदसणीनइअर्थनजाणाउ। यमुनयः उच्चावचानिस्थानानिचरंतियेमुनिऋषीश्वरसमविषम
स्थानकविहारक्रमकरइ। उपुनः तानिक्षेत्राणिसुपेसलानिसवति। उपणांतिखेत्रसुपेलरूडांवर्त्तइ॥२५ स
ज्झावयाणाय डिकूलभासी। पभाससेकिंउसगासिअम्हं। अविएयंविणस्सउ अम्हरइसमीपिकिसिंबोलइबो
इ। अपिएदन्नपानं चविनस्येत्। वरिएअन्नापानविणासउ। हे निग्रंथयरंउस्यानेवस्यामहे। हेमाहणाम्। नयणोउरुर
हइनहीदिउं। हइसमिईहिमइसमाहियस्स। गुत्तीहिगुत्तस्सजिइंदियस्स। जइमेणादाहिज्जअहेसणिज्जं किमज्ज
जन्नाणलहित्थलाहं॥२७ लोब्राह्मणाअघयदिमअएषणीयं। नदास्यथ। लोब्राह्मणाअघयरतलाउअनंतरजाइ
किमइमजरहिकारणी सरूउअन्ननहीदिउं। किंमइसमतिलि। सुसमाहितायपंचसुमितिइं करीनइसुमि
तउबउं। गुप्तालिगुप्तायत्रिकगुप्तेकरीनइगुप्तउबउं। पुनः किंमअजितेंद्रियायजितेंद्रियबउं। अधयंयज्ञा
नालाससकिंतस्यथ। आजहम्हेयजनतणाउलालसकिस्यउलहिसु॥२७ केअत्थखत्ताअवाज्झाईयावाअज्झा
वयावासहखंडिएहिं। एयंउदंडेणाफलेणाहंताकंवमिघहूणाखालज्जेरां॥२८ पंडितप्राकः अत्रकेपिखि
त्रियासंतिइहांकेखित्रयबइ। वाअघवाउपज्योतिकाः केसंति। वाअघवाउपायातिकासणीइअग्निहोत्रीकेबइ।
खंडकेः सह अध्यायकाः केसंति। खंडकायस्सहितउअध्यायकेबइ। तांअतिवाक्याअलंकारयेएदंडेनफलेहि
वा। कंठेगृहीत्वास्वेलयुः। णाइसइवाक्यालंकारियेएतपस्वीदंडिकरीफलिकरीहिवासणीइनकंविइलइ

*अन्नपाण। नयणंदाहा मुत्तमेनिअ गा॥२६×उ·५

नइ खलइ॥१७ अज्झावयाणं वयणं सुणित्ता। उद्दाईया तत्थ बहुकुमारा। दंडेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव। समागया तं असि
ताडयंति॥१८ व्या० अध्यापकानां वचनं श्रुत्वा। बहवः कुमाराः धाविताः। तिहां पंडित तणुं वचन सां
भलीनइ बहु घणा कुमर धाया समागता। दंडेन चित्रकत्वाभिः कुमाराः तं ऋषिं ताडयंति। आव्या कुमर
दंड करी वेत्रि करी। कशाभिः स० सांटि करी। तं ऋषिनइ ताडइ॥१९ रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया। भद्द त्ति ना
मेणा अणिंदियंगी। तं पासिया संजय हम्ममाणं। कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेई॥२० भद्रा प्राह। तत्र कोसल राय तणी
बेटी भद्रा इसिइं नामिं ते महात्मा हणातु देषीनइ कुपिया कुमारनइ उल्हवइ। वत्रां तकरइ। किं० भद्रा अनि
हिंतांगी। प्रसंसनीय अंग बइ। जे भद्रानुं॥२० देवाभियोगेण नियोइएणं। दिन्नासु रन्ना मणसा न झाया। नरिंद देव
विंदाभिवंदीएणं। जेणाम्हि वंता इसिणा स एसो॥२१ स एष ऋषिर्येन ऋषिणा देवाभियोगेन नियोजिते। न राज्ञा अ
हं दत्तापि। मनसा न ध्याता। जीणइ ऋषिइ महात्माइ। बलात्कारिइं नियोजिते। न स० परिइं दीधी हुंती मनसां इन
ध्याइ। येन ऋषिणाहं वांता। आस्मि ऊलाइ ऋषिइ हुं वमी छउं। किं० येन ऋषिणा नरेंद्रदेवेंद्राभिवंदितेन। नरेंद्र राज
रदेवेंद्र ऋषि तेऊ अभिवंदितस णीइ वांदिउ बइ। जे ऋषि॥२१ एसो हु सो उग्गतवो महप्पा। जिइंदिओ संजओ बंभयारी
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं। पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना॥२२ हु निश्चितं स एष उग्रतपा महात्मा। हु निश्चइं
ते एउ उग्र तप महात्मा। किं० महात्मा। जितेंद्रिय इंद्रीनु जीपणहार बइ। जे महात्मा। किं० ब्रह्मचारी। जे महात्मा ब्रह्मच
र्यनुं पालणहार बइ। यः ऋषि कोसलके नराज्ञा पित्रा स्वयं दीयमाना। मां न दानइ छति। जे ऋषिइ कोसल
राजा पिता आपहणीइ दीजति हुंती। ते णइ अवसरि। हुं नवांछी पणीय रिइ बांडी॥२२ महाजसो एस महाणु

x करी कः दुहिता भद्राइ तिनाम्ना तं सयतहन्यमानं दृष्ट्वा कुद्धान् कुमारान् परिनिर्वापयामास। तिहां कोसल x ३-५

८२

भागो। घोरव्वओ घोरपरक्कमो य। मा एयं हीलह अहीलणिज्जं। मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा॥२३ एष महायशाः एष महा
नुभावो उग्रव्रत तणु धणी। एष महात्मानुभाववंत। एष घोरव्रत। एष घोरव्रत तणउ धणी। एघोरपराक्रम। एघोरप
राक्रमनु धणी। एषं अहीलनीयं मा हीलयंत प्रनंदीआ मा अवहेलउ। एऋषिः सर्वान् युष्मान् युयं। तेजसा मा अभि
निर्द्धक्षी। ए ऋषि एसघला तुम्हा ते जिइं करी मदह उ। भस्म करउं ३३॥ एयाइ तीसे वयणाइं सोच्चा। पत्तीइ भद्दा
ए सुहासियाइं। इसिस्स वेयावडियट्ठियाए। जक्खा कुमारे विणिवारयंति॥२४ तस्याः पत्न्या निवचनानि श्रुत्वा।
यक्षाः कुमारान् विनिवारयंति। तेन भद्रा तणा वचन सांभलीनइ। यक्ष कुमर वारइ। किंभूतानि वचनानि भद्रया।
पत्न्या सुभाषितानि। भद्रा पत्नीइ सुभाषित रूडां वचन बोल्यां छइ। किमर्थं ऋषे वैयावृत्यार्थं। ऋषिरहइं वेया
वच्च करवानइ कारणि॥२४ ते घोररूवा ठिय अंतलिक्खे। असुरा तहिं तं जणं तालयंति। ते भिन्नदेहे रुहिरं
वमंते। पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो॥२५ तत्र घोररूपा असुरा। अतिरोष आकाशे स्थिता तं जनं ताडयंति। ति
हां ते घोररूप असुर आकाशि रह्या हुंता। ति जन लोक ताडइं। भद्रा तान् भिन्नदेहान् रुधिरं वमंति। दृ०
भूय। इदं उदाहरते वती भद्रा। ते बाह्मणना कुमर भिन्नदेहान् भणीइ खंडित देह। रुधिर वमता। इस्या दे
॥२५ षीनइ। भूयवली असिउं बोली॥ गिरिं नहेहिं खणह। अयं दंतेहिं खायह। जायतेयं पाएहिं हणह। जे भिक्खुं अ
वमन्नह॥२६ ये यूयं भिक्षुं अवमन्यध्वं। जे तुम्हे भिक्षु साधु रनइं अवज्ञा करउ। ते तुम्हे गिरिं नखैः खनथ
ते तुम्हे गिरि पर्वत नखि करीनइ खणउ छउ॥२६ आसीविसो उग्गतवो महेसी। घोरव्वओ घोरपरक्कमो य। अगणिं
व पक्खंद पयंगसेणा। जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह॥२७ अयं महर्षि आसीविष आसी०। विषा वर्त्तता। परमर्षिः आसी विषला

घोरव्रतो एमहर्षि

बधितगुणलीवर्त्तइ।अयंमहर्षीउग्रतपा।महर्षिउग्रतपतणउधणी।अयंमर्षिघोरपराक्रम।येयूयंअन्नकाले
लिक्षुरूपीअवरनइपीडाकरउछउ।तेयूयंपतंगसेनावत्।अग्निप्रस्कंदथवतेतम्हेपतंगसेनानीपरिइ।अग्निआक्रम
ताकुरुइ।जिसा॥२७सीसेणएयंसरणंउवेह।समागयासव्वजणेणतुझे।जइइछह्जीवीयंवाधणंवा।लोगंपीएसो।
कुविउडहेज्जा॥२८ यदियूयंजीवितव्यं।वाअथवाधनंइछता।जइकिम्हइजीवितव्यवाअथवाधनलहवाछउ
तदाएतं।ऋषिसीषेणसरणंउपैत।उतम्हेऋषिनीषिमस्तकिकरीनइशरणपडवजउ।किंयूयं।सर्वजनेन।
समागता।सर्वलोकनइसमागतानइसहितछउ।जेतम्हेयऋषिःकुपितोदहेत्।एऋषिकुपिउकुंतउ
।दहइ।भस्मकरइ॥२८ अवाहडियपट्ठिसउत्तमंगे।पसारियाबाहुअकम्मचिट्ठे।निब्भेरियच्छेरुहिरंवमंते
।उढंमुहेनिग्गयजीहनेत्ते॥२९ तेपासियाखंडियकट्ठभूए।विमणोविसन्नोअहमाहणोसो।इसिंपसाएइसभारी।
याउ।हीलंचनिंदंचखमाहभंते॥३० अथसब्राह्मणःभार्याकःऋषिप्रसादयति।अथएतलाउअनंतरतेब्राह्मण
भार्यासहितहूंउ।ऋषिप्रसन्नकरइ।किंकृत्वातान्।स्कंडकान्काष्टभूतान्।दृष्ट्वा।किसिइकरीनइ।तेषंडकारी
ष्यकाष्टप्रायदेषीनइ।किं०षंडकान्।अवाहृतिपृष्ठसदत्तमांगान्।अवहेठिनणीइनसाडिउं।पृष्टपूठिइंसतु।
प्रधानउत्तमांगमस्तकछइ।जेहनांपुनः।किं०खंडकान्।प्रसारितबाहून्।प्रसारियाबाहछइ।जेहनांपुनःकिं
खंडकान्।अकामचेष्टान्।कार्यचेष्टारहितछइ।जेशिष्यपुनःकिं०खंडकान्।निर्गतनीकल्पाअक्ष।लोचनछ
इ।जेहनां।पुनःकिं०शिष्यान्।रुधइरवमंतान्।लोहीनाषछइ।पुनःकिं०खंडकान्ऊर्ध्वमुखान्।ऊर्ध्वउपह
रा ...मुषछइ।जेहनां।पुनःकिं०खंडकान्।निर्गतजिह्वानेत्रान्।नीर्गतनीकल्यांजिह्वानेत्रछइ।जेहशिष्यनां।किं ८३

ण।ब्राह्मणइविमनकुमरणादूमणुछइ।पुनःकिं०ब्राह्मणविषन्नविषादआपन्नपामिउछइ।येब्राह्मणदेहेभदंत।
यूयंहीलांचअन्यत्निंदांक्षमध्वांहेभगवन्।तम्हेअवाहलीअनइनिंदाषमु॥३०बालेहिंमूढेहिअयाणएहि
जंहीलीयातस्सखमेहभंते।महप्पसायाइइसिणोहवंति।नहुमुणीकोवपराहवंति॥३१हेभदन्तयंबालैःमू
ढैःअज्ञानियैत्।यस्यंअवहेलिता।तत्क्षमध्वाहेभगवन्।तम्हेबालमूर्षअज्ञानेजेउ।म्हा।अवहेल्यातेखमु
मुनयः।महत्प्रसादासवंति।मुनिऋषीश्वरमहांतमोटाप्रसादेसहितहुइ।कुनिश्चितंमुनयःक्रोधपरानभ
वंति।कुनिश्चितांमुनिऋषीश्वरक्रोधनइतत्परनहुइ॥३१पुव्विंचइण्हिंचअणागयंच।मणप्पदोसोनमेइत्थि
कोइजक्खाहुवियावडियंकरंती।तम्हाहुएएनिहयाकुमारे॥३२सब्राह्मणःपूर्वचअन्यत्इदानींअनागतंमे
ममनप्रद्वेषःकोपिनास्ति।हेब्राह्मणापूर्वेपहिलूंअनइहवडांअनइअनागतमकरहइंमननुप्रद्वेषकोइइनथी।
कुनिश्चितंयक्षावियावृत्तिंकुर्वेति।तस्मात्कारणात्।एतेकुमारानिहता।कुनिश्चिंयक्षावियावच्चकरइ।तेण
हुकरीनइएकुमरहणीया॥३२अत्थंचधम्मंचवियाणमाणा।तुम्भेणविकुप्पहभूयपन्ना।तुम्भंतुपाएसरणंउवे
मो।समागयासव्वजणेणअम्हे॥३३हेमहाभाग्यूयंअर्थंचअन्यत्धर्मंविजानाना।नानिचकुप्यते।हेमहाभाग
तुम्हेअर्थअनइधर्मजाणताकुतानकुपउ।किंयूयंभूतिप्रज्ञाभूति।मांगलिकमइ।प्रज्ञाबुद्धिछइ।तुम्हनंव
यंयुष्मत्पदान्शरणंउपेति।पगिवाअम्हेतुम्हारीचरणशरणपडवजउं।किंवयंसर्वजनेनसमागताःसर्व
लोकिइसमागतसहीइसहितछउं।जेअम्हे।तेब्राह्मणासर्वेपगिलागा।खमावइ।महात्माकहइ।पहिलुंइअनइहिव
डांइमाहरइकोपनथी।एयक्षनुंकर्त्तव्य॥३३अच्चेमुत्तेमहाभागा।नातेकिंचिणअच्चिमो।भुंजाहिसालिमक्कूरं
।नाणावंजणसंजुयं॥३४हेमहाभागोअर्च्चयामःहेमहाभागतेतवकिनअर्च्चयामःहेमहाभागतास्कंकि

सिउंनप्पूजउं।सालिमऋूरसंजा।सालिनिष्पन्नऋूर।जिमिकिंण्ऋूरन।नाव[illegible]नसंयुक्तं।विविधनानाप्रकारव्यंजन
तेहेकरीसंयुक्तछइ।जेऋूर॥३४इमंचमेअत्थिपभूयमन्नं।तंभुंजसूअम्हअणुग्गहट्ठा।बाढंतिपडिच्छइभत्तपाणं
माससऊपारणएमहप्पा॥३५चअन्यवमेममअन्नंप्रभूतं।अस्तिमाहरइएघरतेअन्नछइ।अस्माकंअनु
ग्रहार्थेतत्भुंक्ष्वअम्हाराअनुग्रहनइकारणि।जिममहात्माबाढंति।एवमस्तुइत्युक्त्वामाससऊपारणाकेभक्तपा
नंप्रतीछति।महात्माऋषीश्वरइम्हजिक्रि।असिउंबोलीनइ।मासखमणउपवासेतणाइपारणिभुक्तपानलिइ॥३५तहियंगंधो
दयपुप्फवासं।दिव्वातहिंवसुहारायवुट्ठा।पहयाउदुंदहिउसुरहिंआगासे।अहोदाणंचघुट्ठं॥३६तदातत्र
गंधोदकपुष्पवृष्टिः।दिव्यावसुधारादेवावृष्टा।तिहांतीराइअवसरिसुगंधअन्नपानदीधुंयक्षनाहर्षनइका
रणिमहात्मालिइ।तिसियक्षदिव्यप्रधानवसुधाररणाइ।सुवर्णनीधारादेववर्षवा।सुरैःदुंदुभयः।प्रहितासुर
देवेंदुंदुभिवाई।चअन्यत्आकाशे।अहोदानंघुष्टं।अनइआकाशि।अहोदानइसिउंघोषिउं।तेदेषीघणाकों
ईजीवरहइ।धर्मप्रतिबोधकइ॥३६सक्खंखुदीसइतवोविसेसो।नदीसइजाइविसेसकोई।सोवागपुत्तंहरि
एससाहू।जस्सेरिसाइड्ढिमहाणुभागा॥३७खुनिश्चितंसाक्षात्तपोविशेषोदृश्यते।खुनिश्चइंसाक्षात्प्र
त्यक्षतपनुविशेषदीसइ।जातिविशेषःकोपिनदृश्यते।जातिनुविशेषकांईनदीसइ।स्वपाकपुत्रंहरिकेशब
लंसाधुंपश्यत।स्वपाकपुत्रचांडालनुपुत्रःहरिकेशऋषीश्वरजोउ।तिसिउमहात्मानुसांवंपश्य।येहतणीमहा
तमोटीऋद्धिछइ।जेऋषीश्वरतणी॥३७किंमाहणाजोइसमारभंता।उदएणसोहिंबहियाविमग्गहा।समग्गहाबा
हिरियंविसोहिं।नतंसुदिट्ठंकुसलावयंति॥३८हेब्राह्मणा।यूयंउदकेनबाह्या।शुद्धिकिंमार्गयत।हेब्राह्मणोतुम्ह ८४
पाणीकरीनइबाह्यशुद्धिकिस्युंवांछउ।किंण्यूयं।ज्योतिसमारभंता।अग्निनुआरंभकरतछउ।यत्यूयंबाह्या

शुद्धिंमार्गयत।कुशलानंतत्।सुदिट्ठंनवदंति।जंतुम्हेबाह्यशुद्धिवांछउ।कुशलडाहापुरुषतेसुदिष्टनकेह
उंनबोलइ॥३९कुसंचजूयंतणकट्ठमग्गिं।सायंचपायंउदगंफुसंता।पाणाइभूयाइंविहेडयंता।भुज्जोविमं
दापकरेहपावं॥३९ब्राह्मणायूयंपापंप्रकुरुथ।ब्राह्मणातुम्हेपापकरउछउ।किंण्यूयंकुशं।चअन्यत्।यूपंतृणं
काष्टअग्निं।सायंचअन्यतप्रातः।उदकंस्पृशंतु।कुशडाभयूपयस्तंभतृणकाष्टअग्निसंध्याअनइप्रभाति
उदकपाणीस्पृशंताछउ।पुनःकिंण्यूयंप्राणानिभूतानिविहेठयंति।प्राणाद्वेन्द्रियादिकभूतकहितांवनस्प
तिकायविणासतउ।पुनःकिंण्यूयंभूयोपिमंदा।घणातेहमंदमूर्षछउ॥४०कहंचरेभिक्खुवयंजयामो।पा
वाइंकम्माइंपणोल्लयामो।अक्खाहिणोसंजयजक्खपूइया।कहंसुइट्ठंकुसलावयंति॥४०भिक्षोवयंकथंचराम
हेभिक्षुअम्हेकिमचालउं।हेभिक्षोवयंकथंजयाम।अम्हेकिमयागकरउं।हेभिक्षोःपापकर्माणिवयंकथं
प्रणोदयाम।हेभिक्षोअम्हेपापकर्मकिमफेडउं।हेयक्षपूजितसंयत।अस्माकंआख्याहि।हेयक्षपूजितसंयत
अम्हरहइंकहि।सुइष्टंकुशलावदंति।सुष्टुप्रधानरूडउं।यागसुष्टुरूडउंतेवकुशलाडाहापुरुषजिम
बोलइ॥४१छजीवकायेअसमारभंता।मोसंअदत्तंचअसेवमाणा।परिग्गहंइत्थिउमाणमायं।एयंपरिन्ना
यचरंतिदंता॥४१दांताःएवंचरंतिजितेंद्रियइसाइप्रकारिइंचालइ।किंण्दांताखट्जीवनिकायान्।असम
मारंता।षट्जीवनिकायनुआरंभनवीकरता।पुनःकिंण्दंताःमृषांचअन्यत्अदत्तंअसेवनानामृषाअ
नइअदत्तादानअणसेवइछइ।किं।स्त्रीपरिग्रहंस्त्रियं।मानमायांपरिज्ञायकिसिउंकरीनइ।परिग्रहस्त्रीमा
नमाया।परिज्ञायजाणीइछांडीनइ॥४२सुसंवुडापंचहिंसंवरहिं।इहजीवियंअणवकंखमाणा।वोसट्ठका

यासुइवतादेहा।महाजयंजयतिजन्नसिट्ठं॥४२साधवःमाहायज्ञंयज्ञश्रेष्ठंयजंति।तेमुमाहात्माम
होतमोटउजयागकरइ।किं०साधवः पंचभिः संवरैः ससंवृता पंचसंवरिकरीनइ।प्राणातिपातादिकथा॥
वादइश्रदत्तादानइमैथुनधपरिग्रहपएहपांचेकरीससंवृतबइ।यसाधु।पुनः।किं०साधवः।श्रुविनि
कदेहा।श्रुविनिर्मलपणिइकरीत्यक्तकोडिउदेहबइजेहे॥४२केतेजोईकेवतेजोइगाणा।कातेसुया।
किंचतेकारिसंगं।एहायकयरासंतिभिरकू।कयरेणहोमेणहुणासिजोइं॥४३तेतवकिंजोतिः ताहरइछ
ैतिविश्वानरकुणतेतवडोतिस्थानंकिंः ताहरइजोतिवैश्वानरैस्थानककुण।तेतवःश्रुचिःताहरइ
सरूआचाहश्राकुण।तेतवकराषांगंकिं।ताहरइसंषांगमोरकुणसिद्दिा।ततएधांसिःकतराणिसंति।ताहरइ
ईधणकेहांबइ।कतरेणहोमेनजोतिंजहोपि।केणइहोमिइंकरीनइजोतिवैश्वानरहोमइबइ॥४३त
वोजोईजीवोजोइगणं।जोगासुयासरीरंकारिसंगं।कम्मएहासंजमजोगसंती।होमंहुणामिइसिणंपस
त्थं॥४४तपोज्योतिः तपरूपिउज्योतिवैश्वानरजीवोज्योति।कस्थानंः जीवरूपिउज्योतिवर्धिनेनउस्थान
कः योगश्रुतिरूपिउ।होमहोमुं।किं०होमं।ऋषीणांप्रशस्तंऋषिनइप्रशंसनीयबइयहोम॥४४केते ॥४५॥
हरएकयतेसंतितित्थे।कहिंसिह्नाउवरयंजहासि।आयरकणोसंजयजरकपूइया।इछामुनाउंभवउसगासे
तेतवकोद्रहतारइइद्रहकुण।तेतवकोतितीर्थनिसंति।ताहरइकुणतीर्थबइ।कत्रास्नातोरजोहरसि।की
णइस्थानकिनाहिउइ।उरजपापफेडइ।यक्षपूजितअस्माकंआख्याहि।हेयक्षपूजितसंयत।अम्हरइ
कारणिकिहांभवतसंगासेज्ञातं।इछाम।ताहरइसमीपिजाणवावांबउं॥४५धम्मेहरएबंभेसंतितित्थे।अणा ८५
इलेअणाविलअत्तपसन्नलेसे।जहिंसिण्हाउविमलोविसुद्धो।सुसीउतिभूउपजहामिदोसं॥४६धर्मोहृदःधर्मरू
पीउद्रह।ब्रह्मशांतितीर्थ।यत्रब्रह्मतीर्थस्नातोहं।देषप्रजहामि।जीणइब्रह्मव्रतरूपीशांतीर्थनाहिउकुं
उदेषबांडउं।किं०अस्नतीर्थअनाविलंविमलनिर्मलबइ।पुनःकिं०अरहंविसुद्धाविशेषिशुद्धबउं।जेकुंपु
नःकिं०सुशीतिभूत।सुष्ठुअतिहिंशीतलथिउबउंजेहं॥४६एयंसिणाणंकुसलेहिदिट्ठं।महासिणाणं
इसिणंपसत्थं।जहिंसिण्हायविमलाविसुद्धा।महारिसीउत्तमगणपत्तेबेमि॥४७एतत्स्नानकुशलैर्दृष्टं
एस्नानकुशलजउहेतीर्थंकरदेवेदीठउं।किंस्नानं।महास्नानं।महास्नानबइ।किंस्नानं।ऋषिप्रशस्तं।ऋषिनइ प्रसरत्न
प्रशंसनीयबइ।एस्नानमहाऋषयः।यत्रउत्तमस्नानंप्राप्ताः।महाऋषिजीणस्नानिनाहा।उत्तमस्थान
कपामिया।किं०विमलनिर्मलबइ।किं०विसुद्धा।अतिहिविसुद्धबइ।जेमुनिइसिउंबोलिउं॥४७इतिहरिएसज्ज-
यणंसमत्तं॥ ब ॥ १२ ॥ब॥ श्री॥ अथचित्रसंभूतिदृष्टांतमाह॥ ॥साकेतपुरिचंद्रावतंसकराजानउपुत्र
मुनिचंद्रकुमार।सागरचंद्रगुरुकन्हइदीक्षालीधी।एकदागुरुसाथिविहारकरतउ।एकइगामिभिक्षार्थि
जातिइसाथउचूकउ।अटवीइपडिउ।मूर्छित।तेहवइच्यारिगोवालीयादेषीदयाऊपनी।शीतलउपचारकरी
नइऊखिरवइरनइसमाधिकरइ।धर्मसांभलीतेदीक्षालीतिमाहिलो।बिहुगंवाकर्मउपार्जियो।चारित्रपा
लीदेवलोकिगया।तिहांथिकांआऊषानइअंतिच्यवीदसपुरिसंडिलब्राह्मणनइघरिजसोमतीदासी।तेह
तणइपेटियुगलपुत्रजीहूइजाण्या।यौवनवयपहुता।षेत्ररषवालइसदाइहरइछइ।एकेवडहेठिसूतानिद्रा
गतमाहि।कर्मनायोगउसर्पडस्या।विषनाप्रयोगथीकीमूआ।कालिंजरपर्वतनइमासइ।तेजोडइमृगला

क्र आया बली प्रीतिइं। जमला साधिइ चरतां हींडइ। एहवइं आहेडी नी दृष्टि ... मातंगनइं कीवि लाख्या। ते
मरी गंगा तटि राजसनी रूपइ नोडइं ते राजहंस हूआ। तिहां रहितां वुषि वणता। बेटा ... इ या सि बाधी
निजीव कीधा। तिहां थिकू वारं णारसी स्तु तिदिन्नमातंगनइ घरि जोडइ चित्र संस्तूतइ। सिइनामिइ बेटा हूआ।
तेहवइ वाणारसीइ त्रूं रखराजा न नइ नुमचि मुहतनउ बइ। किसिउएक तेणइ राजसवनिउपराध कीधउ। रा
जास्तूवइ थिक इ नुमचि महिउ विणास वानइ अर्थि स्तूतदिन्नमातंगकनइ आपिउ। मातंगि मुहिता नइ कहइ
उं जु माहरइ घरि सुंहिरामाहि रहीमाहरा बिहुं पुत्र नइ सणावइ। तउ ते हनइ मरण हुंउ राखुं। तिवारइ मरणा स
यथकी नुमचि पडिवजी रहिउ। बेटाने सणावइ। गीत शास्त्र प्रमुख वीणा विद्या सीषविउ। अनेकि कलावि
द्याइ करी महाराजा राणी यना नुमचि प्रधान प्रछन्नपणइ सदीव तिहां सुंहिरामाहि रहितां। मातंगनी कलत्र सो
जन सश्रूषा करइ। एहवइ तिहां रहितां थिकां मातंग स्त्री सिउं लबधहूउ। चेष्टा विचेष्टमइं मातंगि आपणी स्त्री सिउं अ
णाचार जाणिउ। मारविउं चीतविउं। पिता बेटा नइं कहि वछ उम्हे सणावुं हूउ तेवहिलामई सणु। एह नइं आहां
रहितां घणा दिवस थया। राजा कदाचि तजाणिसिइ उ आपणा घरसघला नइं पाहूउं करिसि। तेहवइ सणी ए
ह जिनइ हणी इं उ राजदंड न हूइ। तिवारइं उ बेटे चीतविउं। जेकहइं आपणइं नेकलाक लाविज्ञान सीष्यां
। तेह सणी आपणा विद्यागुरु सणी। अगिमिवसमाचार पितानु कहिउ जणाविउ। तिहां विद्यार्थी एन साडिउ।
तिहां थिकू महिउ नासी जतां वलुइ हस्तिनागपुरि सनतकुमार चक्रवर्त्तिनी राजधानी आवी सलावष अलंकर ८६
णाय रिधा निकरी चक्रवर्त्तिनइ आपणी विद्याकलाबुद्धि दिषाडी रा... जारीज विउ। मंत्रिपद थापिउ तिहां रहिउ थि

रूपाबलि उ वर्त्तीत कोडइं न जाणइ। सुखिइं रहिवा लागु। ते मातंगना बेटा यौवन वइ आवि विद्या गइ कला वाजित्र कला इं
करी लोकनइं हृदय आनंद रूपजावइ। तेहवइ नगरमाहि मदनमहोछव आविउ। तेहमातंगने बेटिइं नाटक मां
डिउं। गीत गातां वीणा वजंडतां सघलु लोक रंका ग्र यथ्रणि हूउ। तिवारइं राजा नइं कहिउं। राजन ए मातंगने बे
टे नगर विटालिउं। तिवारइं राजाइं मातंगनइं। नगर प्रवेश नेषेधिउ। एकवारकउमदी महोछवि कुतिगइं न
गरमाहि पइठा। मुखढांकी गाना उ जर्षंलोके हूंट वामांडिया। नगर बाह्य आविया। दुखिइ विराणिइ हि
ह्रिया नइ घात इ झंपापात करवा सणी पर्वत चडतां विचालइ महात्मा मिलिउ। महात्माइं उपदेश देई बूझ
वी दीक्षा दीधी। महातपतपतां विहार करतां हस्तिनागपुरि हूता। एकवार संभूति मासषमणा नइ पार
णइं नगरमांहि आवतां मागिनुमचि महितइ दीठउ। नलषिउ। मनिचीतविउं। एमहात्मा रषे आ नगरमांहि
कहि आगलि माहरू संबंध रषे प्रकासइ। एहवी सयशंका ऊपनइ आपणा जरासेवक पाहि बाहरि कढाविउ
ते निरापराध ऋषीश्वर नइ हणतां कोपि थिकू तेजोलेश्या ऊपनी। नगर सघलुं इं धूम्रमय यथयुं। जन लो
क माहि हाहाकार प्रवर्त्तिउ। तिथिं चक्रवर्त्ति आवी शामावइ। पणि न समइ। तेहवइ ऋषीश्वर आवी क्रोध
शमाविउ। नगरमाहि धूम्रटलिउ। उद्यानवनि बिहु ऋषीश्वरे अणसण लीधां। तिहां थिकू चक्रवर्त्ति ऋषी
श्वर नइ वंदणा करावणहार जाणी मकू उ बांधी। ऋषीश्वर आगलि लीधउ। तेमहिउ मकाविउ। मिछामिदुक्कडं दिइ
ते कारणि नइ चक्रवर्त्ति अंतेउर सहित हर्षिइ प्रकर्षिइ वांदइ। तेहवइ सुनंदाइ सिइमांभिइ स्त्री रत्न पगेलागी समाव
इ। आपणी वेणी नेनी मालि करी ऋषीश्वरना पगस्पर्शइ। ते अतिसुकमाल ... तिइ। ...

रूं कीधउं। जु माहरा तपनुं प्रमाण कांई छइ तउ हुं आवतइ भवि चक्रवर्त्ति [illegible] हुयो। तिवारइ
चित्र ऋषि साईं इ घणुं जिनो क्रवांणाइ करी वारिउ। मिछामि दुक्कड दिइ पणि नहीं दीधउ। महारइ चक्रव
र्त्तिनी पद। तिहां विमरी सौधर्मइं देवलोकिं विहूं देव थयणाइं। अवतरिया तिहां देवतानां सुख भोगवी चित्र
नु जीव पुरिमतालि नगरि व्यवहारीयानु पुत्र हूअउ। संभूतिनु जीव पांचालानी याणा बंधउ कांपील्यपुरि
ब्रह्मराजा चुलणी राणीनी कूखइं चऊदस्वप्नसूचित ब्रह्मदत्त इसिंइं नामि पुत्र हूअउ। ते पुत्रना हाथ थिक
इ पिता नइ मस्तक नइं रोगिं ब्रह्मराजा परभव पुहतु। तीणइं अतिकालि आपणु ब्रह्मदत्त पुत्र ग्यासीया चुरासी
आनइ बोलइं मूंकिउ। एउ त्रनइं तु म्हारा राज्य करावयो। ते वयण थकी सघले विमासी राज्य चलावक ल
णी दीर्घमहित तन्न रक्षा करा मूंकिउ। क्रमिइं अनुक्रमि रायतणी मुख्य हती जिचुलणा राणी तेसिउं अण
चारि लुबुध हूउ। ते विक्रम मिली लाख हरघर नइ। प्रपंच इ करी बाहिरि काढिउ। केतलइ एक कालि दिग्वि
जय करी दीर्घ महित उछेदी। ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति आपणइ राजि आपणापइं बइठउ। तेह वइ एक नाटक दीठउं ची
तविउं। राजेंद्र एक अपूर्व नाटिकी णी आवी बइ। ते [illegible] उम्ह आगलि गीतनाद गावा वांबइ। तिवारय बी
राजानी अनुमतिइं गावा नाचवा सिउं। तेह वइ दासीइं एक इं पंच सुगंध फूलनी माल आणी चक्रवर्त्ति
नइं केवि ववी ते गाती देखी चीतविउं। एह वउं मइं आगइ केहीदीठउं बइ इम चीतवतां जातिस्मरण रूप
नुं देषइ उपाछिलइ भवि सौधर्मइं देवलोकि नलिनीगुल्म विमान तिहां एमइं सर्व फूल माल भोगवि ८१
दीठउं। पाछिला भवें भाई। पांच भवना संबंध देखी पाछिला भवनु भाई नइं मिलवा वांछतइ एक पद की

धं। आस दासो म्हगो हंसा। मातंगो अमरो वता। वर ध णुम रहतान इ कहिउं। ए विपदनां विपद जो कहइ त
हनइं राज्य अर्द्धराज्य आपइ। म हित इं नगर मांहि घोषणा करावी। तिवार पछी। विपद आबालगोपा
ल सहू को लोकनइं आवयो मि। पणि आगलियां पद को न कहइ। ने हवइ जे चित्रनु जीव पुरिमताल
नगरि व्यवहारी आनु पुत्र हुउ इ जातीस्मरण पामी दीक्षा लेई। तेणइं कांपिल्यपुरि उद्यानमांहि सूद्ध भूमि
कांइ ऋषि आनइ पास इ। काउसग्ग करी रहिउ। तेह वइं ऋयानां अरहटना षेडणहार नइ मुखि विपद सां
भलियां। आसद दासो म्हगो हंसा। मातंगो अमरो तहा। तेणइं ऋषीश्वरइं तिवारइ पछवां पद सांभली। आप
णा भवन इ मिलता जाणी। आगलियां विपद लषी तेह माली नइं आप्यां। एता मे ष छिका जाता। अन्योना
भ्यां वियुक्तयो। ऋयानु माली वीगले इं हुस उ राजद्वारि आविउ। ते चीगीरा जान इवां चतां दृष्टि देखी
मूर्छा आवी। तिवारइ राज पुरुषे माली हणवउ आरंभिउ। तिवारइ तीणइं कहिउं। ए पद मइं नथी कयां। ए
क इ महात्माइं मूझनइं कहिउं। तिवारइ ते मूंकिउ। राजा सर्व भ्यान घयु। ऋषीश्वर ते आवउ। सांभली अत्यंत
स्नेह धरउ परिवार परिवरिउ राजा वांदिवा गउ। विनय पूर्वक वांदी ऋषीश्वरनी कहइ वैराग्यमइ धर्म सांभल
णनइं। तिहां ब्रह्मदत्तइं कहिउं। जिम तुम्हे ईहां आवी संतोष कीधउ। तिम हवइ आ राज्य लेई संसारना भो
ग भोगवी संतोष करु। पछइ आपणि बिहूं जणा चारित्र लेसिउं। ए राज्यतपनुं फल कहीइ। तिहां ऋषीश्वर क
हइ। ए राजादिक भोग संयोग अनंतीवार लाधां। पणि ए गंडी चारित्र पाली नइ मनुष्य जनम सफल कीजिइ।
पाछिलां भवनां दूख संभारी। धर्म नइ विषइ उद्यम करि। तिहां चक्रवर्त्ति कहिउं। देषीता स्वाधीन सूष मु

की। अणदीसतो सूय झूरणा वा ॥ ऋषीश्वर प्रतिबोध निमित्ते। आपापणा बन्धु स्वरूप ... हित्व ॥ १॥ जाई
पराजिओ खलु। कासि नियाणं तु हत्थिणपुरंमि। चुलणी इ बंभदत्तो। उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १॥ ब्रह्मदत्ते मि।
खलु निश्चितं। जातिपराजितेः हस्तिनागपुरे नितदानं आ कार्षीत्। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति खलु निश्चिइ जाति
पराभवि इहां तइ हस्तिनागपुरि पाटणि नीयाणु कीधउं। किं० ब्रह्मदत्त ततः पद्मगुल्म विमानां। चुलिणी उत्प
न्नो। तिवारपछि इं। नलिनीगुल्म विमान उचिवी नि। चुलणी कूख इ अवतरि उ। तिब्रह्मदत्त। कंपिल्ले संभूउ चि
त्तो। पुणो जाउ पुरिमताले मि। सिट्ठि कुलंमि विसाले। धम्मं सोऊण पव्वई उ ॥ २॥ संभूतः कांपीले जातो। संभू
तनु जीव कांपील्यपुर पाटणि ऊपनु। पुनः चित्रः पुरिमताला पुरे विशाले। श्रेष्ठि कुले जातः वली चित्र नु जीव
पुरिमताल नगरि विशालि विस्तीर्णि श्रेष्ठि कुल ऊपनु। चित्रः धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः चित्र इं धर्म सांभली न इ दीक्षा
लीधी ॥ कंपिल्लंमि य नयरे। समागया दो वि चित्त संभूया। सह दुक्ख फल विवागं। कहंति ते इक्कमिक्क
स्स ॥ ३॥ नगरे द्वावपि चित्र संभूतौ। कांपिल्यपुरे समागतौ। ते बिन्हइ चित्र अन इ संभूत कांपील्यपुरि पाटणि समा
गतौ एकठा मिल्या। तौ सुखदुःखफलविपाकं। अन्योन्यं कथयतः। ते बिन्हइं सुख दुःखनुं फल विपाक अन्योन्य नि
इ फल कहइ ॥ ३॥ चक्कवट्टी महिड्ढिउ। बंभदत्तो महायसो। भायरं बहुमाणेणं। इमं वयणमब्बवी ॥ ४॥ ब्रह्मदत्तः
महर्द्धिकः चक्रवर्ति भ्रातरं बहुमानेन इदं वचनं अब्रवीत्। ब्रह्मदत्त महर्द्धिक चक्रवर्ति भाई प्रति इं बहुमा
न इं करीन इ एवचन बोलइ। किं० ब्रह्मदत्तः महायशाः महांत मोटउ यश तणु धणी छइ ॥ ४॥ आसिमो भा
यरा दो वि। अन्नमन्नवसाणुगा। अन्नमन्नमणुरत्ता। अन्नमन्नहिएसिणा ॥ ५॥ आवां द्वावपि भ्रातरं अभूत। आप ८८

ण बिन्हइ साई हूंता किं० अन्योन्य वसानुगे। अन्योन्य परस्परिं इं वशवर्ती वर्तंउ। पुनः किं० आवां अन्योन्या
नुरक्तौ। अन्योन्य परस्परिं इं अनुरक्त वर्त्तउं। पुनः किं० अन्योन्य परस्पर हितैषिणौ। अन्योन्य परस्परिं इं हितवांछ
क वर्तउं ॥ ५॥ दासा दसन्ने आसी। मिया कालिंजरे नगे। हंसा मयंगतीराए। सोवागा कासिभूमिए ॥ ६॥ आवां दशार्णदे
शे। दासा अभूव। आपण पहइलइ भवि दसार्ण देस दास हूआ। कालिंजरे नगे मृगा अभूव। कालिंजर पर्वति मृग हूआ। मृत
गंगा तीरे। मृतगंग नदी तीरि हंसा जह हंस हूआ। काशिभूम्यां श्वपाकौ अभूवं। वाणारसी नी भूमि का इं श्वपाक चं
डाल हूआ ॥ ६॥ देवा य देवलोगंमि। आसि अम्हे महिड्ढिया। इमा णो छट्ठिया जाई। अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७॥ आवां देवलोक म
हर्द्धिकौ देवावपि अभूवं। आपण पहइ देवलोकि महर्द्धिक देव हूआ। नौ आवयोः एषा षष्ठिका जाति। आपण पाछइ एव
छट्ठी जाति। या अन्योन्येन विना वियुक्त या जाति। अन्योन्य परस्परिं इं करी वियोगवंत ॥ ७॥ कम्मा नियाणपयडा। तुमे
राय विचिंतिया। तेसिं फल विवागेण। विप्पओगमुवागया ॥ ८॥ हे राजन् त्वया निदानं कृतानि। कर्माणि विचिंतिता
नि। हे राजन् नियाणइ कीधइ कर्म चींतव्या। ते कर्मणा फलविपाकेन विप्रयोगं अपागतौ। ती इं कर्म तणइ फल
विपाकि करीनइ वियोग पाम्या ॥ ८॥ ब्रह्मदत्त प्राहुः ॥ सच्चसोयप्पगडा कम्मा। मए पुरा कडा। ते अज्ज परिभुंजामो। किं
नु चित्ते वि से तहा ॥ ९॥ मया सत्यस्वत्वानि कृतानि कर्माणि। पुरा कृतानि। मइ सत्य स्व चइ प्रकट तनी य जा ... क
र्म पुराम्हा विइं कीधां। तानि कर्माणि अद्य परिभुंज्महे ते कर्मइ तानि आज भोगवं। वितो ताानि कर्माणि किं नु
ते चित्र इं ते कर्म तिम काई न भोगवइ ॥ ९॥ चित्र प्राहु सव्वं सुचिन्नं सफलं नराणं। कडाण कम्माण न मोक्ख
अत्थि। अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं। आया ममं पुन्नफलोववेए ॥ १०॥ नराणां मनुष्याणां सर्वं सुचीर्णं सफलं

की।अणदीसतोसूभऊंणा वां ठ२।रूषीस्वरप्रतिबोधनिमित्त।आपापणास्रवर्नुस्सरूप॰ दित्व३।जाई
पराजिउखलु।कासिनियाणं तुदत्तणपुरंमि।चुलणी३बंभदत्तो।उववन्नोपउमगुम्माउ।।ब्रह्मदत्तेमि।
खलुनिश्चितं।जातिपराजितेहस्तिनागपुरनिदानेआकार्षीत्।ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तिखलुनिश्चि३जाति
पराजविइहूंतइहस्तिनागपुरपाटणिनीयाणुकीधउं।किं०ब्रह्मदत्ततत:पद्मगुल्मविमानात्।चुलिणीउत्प
न्नो।तिवारपछिइ।नलिनीगुल्मविमानउचिवीनि।चुलणीकूषइअवतरिउ।जिब्रह्मदत्त।कंपिल्लेसंभूउचि
त्तो।पुणोजाउपुरिमतालेमि।सिट्ठिकुलंमिविसालं।धम्मंसोऊणपव्वईउ।।२संभूत:कांपील्येजात।संभू
तनुजीवकांपील्यपुरपाटणिऊपनु।पुनःचित्र:पुरिमतालपुरेविशाले।श्रेष्ठकुलेजात:वलीचित्रनुजीव
पुरिमतालनगरिविशालिविस्तीर्णश्रेष्ठिकुलऊपनु।चित्र:धर्मश्रुत्वाप्रव्रजित:चित्रइंधर्मसांभलीनइदीक्षा
लीधी।।कंपिल्लंमियनयरे।समागयादोविचित्तसंभूया।सहदुक्खफलविवागं।कहंतितेइक्कमिक्क
स्स।।२तद्वावपिचित्रसंभूतौ।कांपिल्यपुरेसमागतौ।।तबिन्हइचित्रअनइसंभूतिकांपील्यपुरिपाटणिसमा
गतौएकठामिल्या।तौसुखदु:खफलविपाकं।अन्योन्यंकथयत।तेबिन्हइंसुखदुखनुंफलविपाकअन्योन्य नि
इफलकहइ।।२चक्कवट्टीमहिड्ढिउ।बंभदत्तोमहायसो।भायरंबहुमाणेणं।इमंवयणमब्बवी।।४ब्रह्मदत्त:
महर्द्धिक।चक्रवर्त्तिभ्रातरंबहुमानेन इदंवचनंअब्रवीत्।ब्रह्मदत्तमहर्द्धिकचक्रवर्त्तिभाईप्रतिइंबहुमा
निइ।करीनइएवचनबोलइ।किं०ब्रह्मदत्त:महायशा:माहातमोटउयशतणुधणीछइ।।४आसिमोभा
यरादोवि।अन्नमन्नवसाणुगा।अन्नमन्नमणूरत्ता।अन्नमन्नहिएसिणा।।५अवांद्वावपिभ्रातरंअभूत।आप ८८

णबिन्हइसाईहूंता।किं०अन्योन्यवसानुगे।अन्योन्यपरस्परिइंवशवर्त्तीबउं।पुन:किं०आवांअन्योन्यात्र
नुरक्तौ।अन्योन्यपारस्परिइंअनुरत्तेरबउं।पुन:किं०अन्योन्यपरस्परहितेषिणौ।अन्योन्यपरिइंहितवांछ
तबउं।।५दासादसन्नेआसीमियाकालिंजरनगे।हंसामयंगतीराए।सोवागकासिभूमिए।।६अवांदशार्णदे
शे।दासोअभूव।आपणपइदशार्णदेसदासहूआ।कालिंजरेनगेम्रगाअभूव।कालिंजरिपर्वतिमृगहूआ।।मृ
तगंगातीरे।मृतगंगनदीतीरिइंराजहंसहूआ।काशिभूम्यांश्वपाकौअभूव।वाणारसीनीभूमिकाइंस्वपाकचं
डालहूआ।।६देवायदेवलोगंमिआसि अम्हेमहड्ढिया।इमारोबट्ठियाजाई।अन्नमन्नेणजाविणा।।७आवांदेवलोगम
र्द्धिकौदेवावपिअभूवं।आपणपेदेवलोकिमहर्द्धिकदेवहूआ।नौआवयो:एषाषष्टिकाजाति।आपणपारहइएव
छ्ठीजाति।याअन्योन्येनविनावियुक्तयाजाति।अन्योन्यपरस्परिइंकरीवियोगवंत।।७कम्मानियाणपयडा।तुमे
रायविचिंतिया।तेसिंफलविवागेणं।विप्पउगमुवागया।।७हेराजन्।त्वयानिदानेरूतानि।कर्माणिविचिंतना
नि।हेराजन्नियाणइकीधइ।कर्मचींतव्या।तेकर्माणफलविपाकेनविप्रयोगनआपागतौ।तीहकर्मतणइफल
विपाकिकरीनइ।वियोगपाम्या।ब्रह्मदत्तप्राह:।।७सच्चसोयप्पगडाकम्मा।मएपुराकडातेअज्जपरिभुंजामो।किं
नुचित्तेविसे तहा।।७मयासत्यस्वचानिरूतानिकर्माणि।पूर्वारूतानि।मइसत्यस्वचइंपहूतनीपजाव्यां।कं
मपुरापूर्वविइंकीधां।तानिकर्माणि।अद्यपरिभुंज्म्हे।तिकर्मइहूंतानिआजभोगवउं।चित्तोपितानिकर्माणिकिंनभु
क्तो।चित्रइंतेकर्मतिमकाईनभोगवइ।।७चित्रप्राह।सव्वंसुचिन्नंसफलंनराणं।कडाणकम्माणनमोक्खअ
त्थि।अत्थेहिकामेहियउत्तमेहिं।आयाममंपुन्नफलोववेते।।एनराणांमनुष्याणांसर्वंसुचीर्णंसफलंस

वति। मनुष्यनइ सघलुं सूडउं कीधउं। सफल हुइ। कृतानां कर्मणां मोक्षो ना[...] कीधां कर्मनु मोक्ष न
थी। उत्तमै अर्थैः कामैः मे आत्मा पुण्यफलोपपेतो वर्त्तते। उत्तम अर्थ नइ कामे करी नइ म्हारू आत्मा पुण्यफल
उपपेत संयुक्त वर्त्तइ॥९॥ जाणासि संभूय महाणुभागं महिड्डियं पुन्नफलोववेयं। चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं।
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया॥१०॥ हे संभूत यथा त्वम् आत्मानं महानुभावं महर्द्धिकं पुण्यफलोपपेतं जानासि।
हे संभूति जिम तुं आपणपुं महानुभाव सलाघ्य रूपं महर्द्धिक सलाइ लक्ष्मी सहित अनइ पुण्यफलोपपे
त जाणीइ। हे राजन् तथैव चित्रमपि जानीहि राजन् चित्र तिम इ जिम जाणि। तस्यापि ऋद्धि प्रभूता आसीत्
तेह चित्र तणी इ ऋद्धि द्युति कांति प्रभूत घणी हुई॥११॥ महत्थरूवा वयणप्पभूया। गाहाणुगीया नरसंघ
मज्झे। जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया। इहं जयं ते समणो मि जाओ॥१२॥ नरसंघमध्ये गुरुसाखि गाथा। अनुगाथा मनु
ष्य सहस्र मध्ये गुरु साखिइं तनी गाथा प्ररूपी। किं गाथा वचनात्य भूता। वचनिकरी अल्प भूत बइ। इहां सील
गुणोपपेता भिक्षवः या गाथां श्रुत्वा यत्नाता इह गुण सील सहित भिक्षु ऋषीश्वर जे गाथा सांभली नइ उद्य
ता थ्या रहइ। सा गाथा मया श्रुता। ते गाथा मइं सांभली। तेन कारणे श्रमणो जातोऽस्मि। ती णइ करी श्रमण
ऋषीश्वर हुउ॥१३॥ उच्चोदए महु कक्के य बंभे। पवेइया आवसहा य रम्मा। इमं गिहं चित्त धणप्पभूयं। पसा
हि पंचालगुणोववेया॥१४॥ मम देवि एते पंच रम्या। आवासा प्रावदिता। मकरहेदेव ए पांच रम्य रूडा आ
वास दीधा। एते वेश्मत्या उदयः २ मधुः २ कर्क ३ ब्रह्माख्य मध्य ५ हे चित्र इदं गृहं प्रभूतं। पंचालगुणोपपेतं। ८९
प्रशाधि हे चित्र ए आवास पंचाल देह सेनागुणा सहित पालि॥१५॥ नट्टेहि गीएहिं य वाइएहिं। नारीज

णाइं परिवारयंतो। भुंजाहि भोगाइं इमाइ भिक्खू। मम रोयई पव्वज्जा हु दुःखं॥१५॥ हे भिक्षो त्वं इमान् सि क्षु हि सिद्धुक।
भोगान् भुंक्ष्व लोग लोगवि। कथं भूतस्त्वं नृत्यैर्गीतैर्वाद्यैः नारीजनैः परितः। नाटक गीत वाजित्र नारीजन तेहे परि
वरिउ बइ। हु निश्चितं मम मनसि प्रव्रज्या दुःखं रोचते। हु निश्चइं माहरइ चित्तइ दीक्षा दुःख लागइ॥१६॥ तं पुव्वनेहेण
कयाणुरायं। नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं। धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही। चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था॥१७॥ चित्र तं न
राधिपः इदं वचनमुदाहृतवान् चित्र इं तेराय प्रति इं इसिउं वचन बोलिउं। किं० नराधिपं। पूर्वस्नेहेन कृतानुरागं पूर्वे
जन्मांतरे स्नेह करी नइ कृत कीधउ अनुराग बइ। पुनः किं० नराधिपं कामगुणेषु गृद्धं। कामगुणनइ विषइ गृ
द्ध बइ। किं० चित्रः धर्माश्रितः धर्मनइ विषइ आश्रित बइ। पुनः किं० चित्रः तस्य हितानुप्रेक्षी। तेहवा यन इहित वांछ
इ बइ॥१८॥ सव्वं विलवियं गीयं। सव्वं नट्टं विडंबणा। सव्वे आभरणा भारा। सव्वे कामा दुहावहा॥१९॥ सर्वं गीतं विलपितं।
सघलुं गीत विलापहेतु। सर्वं नृत्य विटंबितं। सघलुं नाटक विडंबना हेतु। सर्वाणी आभरणानि भारप्रायानि। स
घलाइं आभरण सरिखा भार प्राय। सर्वे कामा दुःखावहा। सघलाइ काम दुःख हेतु कारण॥१९॥ बालाभिरामेसु दुहावहेसु। न
तं सुहं कामगुणेसु रायं। विरत्तकामाण तवोधणाणं। जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं॥२०॥ हे राजन् तत्सौख्यं कामगुणेषु
न ववर्त्तते हे राजन् ते सौख्य कामगुणनइ विषइ वर्त्तइ। किं० विशिष्टेषु कामेषु बालाभिरामेषु बाल मूर्ख नइ अभिरा
म लागइ रमाडइ बइ। पुनः किं० कामगुणेषु दुःखावहेषु दुःख हेतु कारण बइ। विरक्त कामानां। तपोधनानां य
त्सौख्यं भवति। काम उ विरक्त विरम्या तपोधन रहइ। जे सौख्य हुइ। पुनः किं० तपोधनानां भिक्षुणां शिक्षाचार्याभि
क्षावर्त्ति चालइ। पुनः किं० तपोधनानां सीलगुणे रतानां। सील गुणनइ विषइ र[...]॥२१॥ नरिंद जाई अ

हमानराणं।सोवागजाईदुहउगयाणं।जहिंवयंसव्वजणस्सवेसा।घसीयसोवागनिवेसणेसु॥१७॥हेनार
दआवयोद्वयोरपिस्वपाकजातिकूई।यत्रआवांसर्वजनस्यद्वेष्याःस्वपाकनिवेसनेषु।अतआवः।जीणइचंडाल
नीजातिइआपणपेसविकूजनलोकनइमाहिद्वेषनिंदनीयकुंता।स्वपाकनइघरिवस्या॥१८तीसेजाईयउपावि
याए।वुच्छामुसोवागनिवेसणेसु।सव्वस्सलोयस्सदुगंछणिज्जा।इहंउकम्माइंपारकडीइं॥१८तस्यांपापका
र्यांजातौआवांस्वपाकवेश्मसुउषितौ।तीणीइपापमयजातिइंआपणपेचंडालनइघरिवस्या।किं०आवां
सर्वस्यलोकस्यदुगंछनीयौ।सविकूलोकनइदुगंछनिंदीयछउं।उपुनःइहपुराकृतानिकर्माणिवर्त्ततेउ
पणिइहइजन्मिपूर्वजन्मांतरकृताकीधांकर्मप्रवर्त्तेइ॥१९सोदाणिसिंरायमहाणुभागो।महिड्डिउपु
×वेत्रा।चइत्त भोगाइअसा सयाइं।आ दाणहेउंअ भिनिक्खमा हिं॥२०॥उ०८
न्नफलोवहेराजन्महानुभागतेतुंहिवडांमहर्द्धिकवर्त्तेइ।पुण्यसहित।हेराजन्त्वंत्राज्यस्वतान्।सोगा
नत्यकूचा।आदानहेउअभिनिःक्कमः।हेराजनत्वंत्राज्यस्वतालोगबांडीनइं।आदानहेउसत्ताइमोक्षनिइ
कारणिदीक्षालिइ॥२०इहजीविएरायअसासयंमि।धणियंउपुन्नाइंअकुव्वमाणो।सेसोयईमच्चुमुहो
वणीए।धम्मअकाम्मकरणपरंमिलोए॥२०हेराजन्सजीवइहजीवितव्येअशास्वतेसतिअधिकंअत्यर्थंपुण्या
निअकुर्वाणःपरलोकेशोचति।हेराजन्जीवईणइविश्विइजीवितव्यअसास्वतउकइ।अतिहिंपुण्यकरउ
कूउपरलोकिसोचइ।किं०सजीवःमृत्युमुखोपनीतः।मृत्युनइमुखिगयउ वइ।किं०कृत्वाधर्मअकृत्वा।किसिउं
करीनइधर्मअणकरीनइ॥२०जहेहसीहोवमियंगहाय।मच्चूनरंनेइहुअंतकाले।नतस्समायावपियावभाया ८७
कालंमितम्मंसहराहवंति॥२१कृनि।श्चितंमृत्युनरंअंतकालेनयति।कृनिश्चिइमृत्युयमनरमनुष्यनइअ

×हो×

तकालिअवसानकालिलिशाकइइव।सिंघइव।यथाइहसिंहम्रगंगृहीत्वा।अंतकालेनयति।जि
मइहांसिंहम्रगहरणलेईनइअंतकालिलिइ।तस्मिन्कालेतस्यमाता।पिता।भ्राता।अंशहरीभव
दुःखविभागकारीनभवंति
ति।तीणइकालितेहनांमाता।पिताभ्राताअंशहारीहोइपणिभोगहारीनहुइ॥२१नतस्सदुक्खंविभयं
तिनाईउ।नमित्तवग्गानसूया।नबांधवा।इक्कोसयंपच्चणुहोइदुक्खं।कत्तारमेवंअणुजाइकम्मं॥२२ज्ञात
यःदुःखंनविभजंति।ज्ञातिसगांतेहनाणंदुःखवहचइनहीं।मित्रवर्गःसुताबांधवा।तस्यदुःखंनविभजं
ति।मित्रनुवर्गसमुहसुतबेटाबांधवातेहनाणंदुःखविहिचइनही।एकःस्वयंदुःखंप्रत्यनुभवति।एकलुआ
पुंउस्वआपणपउंदुखभोगवइ।कर्मकर्तारमेवअनुयाति।कर्मकरणहारजप्रतिंजाइ॥२२चिच्चादुपयं
चचउप्पयंच।खित्तंगिहंधणधन्नंचसव्वं।सकम्मप्पबीउअवसोपयाइ।परंभवंसुंदरपावगंवा॥२३जीवःद्वि +चितागतं
पदंचतुःपदंक्षेत्रंधनधान्यंसर्वंत्यक्त्वापरभवेसुंदरेवा।अथवापापकेप्रयाति।जीवद्विपदचउप्पदक्षेत्रघरध पावकेनद ह्यते।भार्या
नलक्ष्मीधानसर्वछांडीनइपरभवतरिसुंदरिरूडइअथवापापरूजाइ।किंःजीवःस्वकर्मद्वितीयःस्वआपणुंक पुत्राश्च।त
र्मबीजुंछइ।पुनःकिं०जीवअपरवशपणीइपरवशछइ।डोजीव॥२३तंइक्कंतुच्छसरीरगंसे।चिईगयंदुहिउपावगेणं स्यापिअन्यदा
भज्जाविपुत्तावियनायउया।दायारमन्नंअणुसंकमंति॥२४सेतस्यजीवस्यतंएकंतुच्छसरीरं+चितागतंपावके तारंअनुसं क्रमंति।तजी
विस्वानरिदहीइ।भार्यापुत्रज्ञातयोऽपिअन्यंदातारप्रतिजाइ॥२४उवणिज्जइजीवियमप्पमायं वतणउएक तुच्छशरीर४
वन्नंजराहरइनरस्सराय।पंचालराया।वयणंसुणाहि।मामासिकम्माइंमहालयाइं॥२५हेराजन्जीवित उ०५
व्यंअस्माकंप्रत्यक्षेउपनीयते।हेराजन्जीवितव्यप्रमादरहिता।कुंतउअत्यनइवारणिआषि...रासअस्यपुरुषस्य

वर्णांहरंति। जरावइपणनरघुरषतणीवर्णकांतिहरइ। हेपंचालराजन्नूवचनुश्रणु। हेपंचालराजनवचनसांभ
लि। वंम हांतकर्माणिमाकार्षीत्। तुमा हांत गुरूयांकर्ममकरि॥२५अहंपिजाणामिजहेहसाहू। जंमेतुमंसाहू।
सिवक्कमेयं। भोगाइमेसंगकराभवंति। जेदुज्जयाअज्जोअम्हारिसेहिं॥२७हेसाधवः यथा हस्वंवदत् इदंवाक्यं
मांसाहूसिकथयसि। हेसाधुजिमईहूंतंजेवचनमजप्रतिइंकहिउं। तथाअहमपिजानामि। तिमहुंइजाणउंए
तेभोगाः संगकराभवंति। एभोगआसक्तकारीयाहुइ। जेभोगाः अज्जअस्मादृशैः दुस्त्याज्याः। जेभोगआजअम्हा
रीरेछांडिवाअशक्य॥२८हस्थिणपुरंमिचित्ता। दठ्ठूणंनरवइंमहिड्ढियं। कामभोगेसुगिद्धेणं॥ नियाणमसुहंक
डं॥२९हेचित्रहस्तिनागपाटणि। महर्द्धिकंनरपतिंदृष्ट्वा। कामभोगेषुगृद्धेनमयानिदानंअशुभंकृतं। हेचित्र
हस्तिनागपाटणिमहर्द्धिकलक्ष्मीवंतनरपतिसनत्कुमारनरेश्वरदेषीनइकामभोगनइविषइगृधआ
सक्तहूंतइमइंअसुभपापकूउंनिआणुंकीधउं॥२४तस्समेअपडिक्कंतस्साइमंएयारिसंफलं। जाणमाणोविजं
५५ धम्मं। कामभोगेसुमुछिउ॥३०तस्यनिदानंअप्रतिक्रांतस्यमेममईदृशंफलंजातं। तिअणपडिकम्यानीआणातणउंम
जनइअसुंफलहुउ। यवधर्मजानन्नपिकामभोगेषुमूर्छितः। जंधर्मजाणतउकामभोगमूर्छित॥२९नागोजहा
पंकजलावसन्नो। दट्ठुंथलंनाभिसमेइतीरं। एवंवयंकामगुणेसुगिद्धा। नभिक्खुणोमग्गमणुव्वयामो॥३०यथा
नागपंकजलावसन्नः। स्थलंदृष्ट्वानीरंनअभिसमेति। जिमनागगजेंद्र। कर्दमजलिकासनुहुंतु। स्थलदेषीनइंती
रिनाइएवंअमुनाप्रकारेणवयंकामगुणेषु। गृद्धाभिक्षोःमार्गंतअनुव्रजामः। इणइप्रकारिइंअम्हेकामगुणन
इविषइं। गृद्धआसक्तहूंताभिक्षुरूषीश्वरनुमार्गनपडवजउ॥२९अच्चेइकालोतरंतिराईउ। नयाविभोगापुरि ९२

साणनिच्चा। अवेच्चभोगापुरिसंचयंति। दुमंजहाखीणफलंचपक्खी॥३०कालअत्येतिकालजाइ। रात्रयःत्वरति
रात्रिऊतावलीजाइ। पुरूषाणांभोगानृनित्याःपुरूषनइ। भोगनित्यशाश्वतानथी। भोगाउपेत्यपुरूषंत्यजंति
भोगआवीनइंपुरूषत्यजइछांडइ। कइवपक्षिणइवायथापक्षिणः क्षीणफलंद्रुमंत्यजंति। जिमपंखीया
खीणफलसणीइफलरहितद्रुमवृक्षत्यजइछांडइ॥३०जइतंसिभोगेचइउंअसत्तो। अज्जाइकम्माइंक
रेहिरायं। धम्मेठिउसव्वपयाणुकंपी। तोहोहिसीदेवोइउविउव्वी॥३१हेराजन्यदित्वंभोगान्त्यक्तुंअसक्तो
सि। हेराजन्जइकिम्हइतुंभोगछांडिवाअसमर्थछइ। तदाआर्याणिकर्माणिकुरू। तुआर्यगुरूआधुरण
करि। तत्वधर्मेस्थितः। सर्वप्रजाअनुकंपी। इतादेवोभविष्यसि। तिवारपूठिइंधर्मनइविषइस्थितरहितउकु
नुयविक्कुप्रजालोकरहिइंअनुकंपादया। करतुहुंतुइतएभवांतरउदेवहोइसि। किंएदेवःविक्रयलब्धि
धारीविक्रयलब्धिधरइछइ॥३१नतुज्झभोगेचइऊणबुद्धी। गिद्धोसिआरंभपरिग्गहेसु। मोहंकउएत्तिउवि
प्पलावो। गच्छामिरायंआमंतिउसि॥३२हेराजन्। तवभोगान्त्यक्तुंबुद्धिर्नवर्तते। हेराजन्तुजनइभोगछांडिवा
नीबुद्धिनवर्तेइत्वंआरंभपरिग्रहेषुगृद्धोसिक्तोसि। आसक्तछइ। एतावान्विप्रलापोमुधाकृतः। एतलुविप्रलापं
मुधाफोकटकीधउ। गच्छामिजांउंछउं। आमंत्रितासि। हेराजन्मोकलावीइछइ॥३२पंचालरायाविबंभदत्तो॥
साहुस्सतस्सावयणंअकाउं। अणुत्तरेभुंजियकामभोए। अणुत्तरेसोनरएपविठ्ठो॥३३पंचालराजापिब्र
ह्मदत्तोतस्यसाधोर्वचनंकृत्वा अनुत्तरान्कामान्भोक्त्वा। अनुत्तरनरकेप्रविष्टः। तेपंचालदेश
नुस्वामीब्रह्मदत्तनारेश्वरमुनिनुंवचनअणकरीनइअनुत्तरसवीह्रकामभोगवीनइअनुत्तर

सणीइगाढदुरककारत्तानरकिगिउ।।३३।।अथकथा।। एकदाअन्यदाविदेहक्षेत्रइंजिनइ केइब्राह्मणइचक्र
वर्त्तिकह्यूं।चक्रवर्त्तिनुंभोजनप्राप्तिउदिवसविउं।सकुटंबनइतेभोजनजननइ जमाडिइपशुनीपरिइप्रव
र्त्तिउराजाऊपरिद्वेषधरतुनीकलिउ।वाटइंजातांएकठामिएकगोवालीउगोलाधुणाडीइंकरीपीपलनापाननी
रवीधतुदीठउ।तिवारइब्राह्मणइंतेहनइकहिउं।एगोवालजेऊंकुंनइदिषाडउंतेहनीजुंजुंआंषिकाढइउ
ऊंमइंमागइएंलुजव्यआपुं।गोवालीइपडिवजिउं।इमकरतांषत्रवत्निइतीताइवाटइंआविउ।तिवारइंब्रा
ह्मणइंगोवालीआनइदषाडिउ।गोवालीइंतत्कालबिहुआंषिकाढी।तिवारपछीराजवर्गीएतेसाहिउ।ह
र्षिवालागा।तिवारइतेराइकहिउंकुणजाणुं।ईणइब्राह्मणइंमझनइकहिउं।तिवारपछीचक्रवर्त्तिइतेस
कुटंबनीआंषिकाढी।तिवारपछीचक्रवर्त्तिकहइइहिवइजेतलाब्राह्मणपृथ्वीमाहिछइतेतलानीआंषि
काढीथालभरीमझआगलिआणु।तिवारतेप्रधांनपाकागुंदांथालभरीराजाआगलिआं।राइमुखिइ
मूकइ।स्वामीतुम्हारुआदेशप्रमाणकीधउ।तिवारइतेगुंदाभलतुंकुंतुमुखिइमूकइ।जेईराइंपापीइ
माहरीआंषिकाढी।तेहभणीकुंभलीएहनइआंषिमुभलतंकतु।इमरौद्रध्यानअनुआऊषुभोगवीमहारौद्र
धर्मीसिइमरीनरकिगयउ।।इतिब्रह्मदत्तकथासमाप्ता।। चित्तोविकामेहिंविरत्तकामो।उदग्गचारित्ततवोमहे
सी।।अणुत्तरंसंयमपालयचा।अणुत्तरंसिद्धिगइंगउत्तिबेमि।।३४।।चित्तोपिअणुत्तरंसंयमंपालयित्वा।अनुत्त
रांसिद्धिगतिंगतः।चित्रअनुत्तरसर्वोत्कृष्टसंयमपालीनइअनुत्तरसर्वोत्कृष्टसिद्धिगतिसणीइमुक्तिइगिउ। ८२
इतिब्रवीमिइसिउबोलिउ।किं०चित्रकांमेसुविरक्तकाम।कामभोगनइविषइविरक्तविरमिउछइ।कांमअभि

लाषछइ।जेहनुं।पुनःकिंविचित्रंउदात्तचारित्रतपउदात्तरूडउंचारित्रअनइतपछइ।पुनःकिंचित्रःमहर्षिमहां
तमोटउऋषिछइ।।३४।।इतिचित्रसंभूतज्झयणंतेरसमंसमत्तं।।१३ छः।। ऊचित्रसंभूतिइनापाछि
लाभवनामित्रगोआलीयानाजीवमहात्मानीअनुकंपाइकरीसम्यकत्वपामीकालकरीदेवलोकिऊपनाति
हांथिकुतेच्यवीखितिप्रतिष्ठितनगरिव्यवहारीयानापुत्रहूआ।तेहनइनगरिनिवासीबीजाच्यारिमित्र
हूआ।व्यवहारीयानापुत्रा।तेबइजीवसंसारनाभोगभोगवीबएदीक्षालेईघणुकालचारित्रपालीअ
णसणलेईसौधर्मइदेवलोकिनलिनीगुल्मविमांनिचिऊपल्योपमनइआऊषइबइदेवताहूया।तिहांथि
कातेगोवालीयानाजीवबिऊटालीबीजाजीवकुरुदेसिइषुकारिपुरिइषुकारनामिइंराजाहूउ।बीज
उजीवतेरायनइभार्याकमलावतीराणीऊपनुं।अनइत्रीजुजीवतेहजिराजानइभिगुइसिइंनामिइंपरो
हितहूउ।चउथउतेहजपरोहितनइजसानामिइंभार्यापणइऊपनी।भिगुपरोहितनइजसाभार्यानइसं
ताननीअतिहिआरतिऊपनी।तेदेवदेवतानइमानइछइ।निमत्तीयानइंपूछइ।तेहवइतेपाछिलाबेगोवा
लीआनाजीवदेवतावधिज्ञांनइंकरीजांणइ।अम्हेएपरोहितनइघरिबेटाऊपजिसिउं।तिहांथिकातेदेवता
महात्मानुंरूपकरीपरोहितनइघरिआवइ।पुरोहितंभार्यासहितऊवीवांदइ।बइसणुंमूकइ।बइसीदेव
ताऋषीश्वरनइंरूपिअवधिज्ञाननइबलिइधर्मकहि।तेपरोहितश्रावकनुधर्मपडिवेजइ।वलतुंपरोहितपू
छिइ।भगवनमाहरइसंतानहिसिकइनहीं।हूइ।इमभिउंपूछ्यु।तिवारइमाहोमाहेकहइ।तुम्हारिइबिबेटाऊ
पजिसिइ।इमकहीदेवतावाभिऊक्रमा।थोडाजिदिहाडइतेदेवसाच्यवीनइ।[illegible]।तो
भयलितेनानाथिकादीक्षालेसिइं।तेहनइंउसेअंतराइमकरयो।तिघणालोकनइस्नावबायोगछइसिइं।१३·२

हवइ ते ब्राह्मण नगर थिकुं नीकली एक इहीण गाम मइं जई वसिउ। तिहां रोहनी पुरोहित नी स्त्री इं बिबेटा जाया। जाणिउं एरषेदी आलिइं। इम चीतवी ते हिमाय बाप बालक बीहाव्या। एम हात्मा बालकनइं मारइं पबइ। तेहनो मांसरुधिर खाइं। ते सणी एहनी तम्हे संगति बीसासी करस्यउ। इम कही ते बालक बीहावी मूकिया। एक दा प्रस्तावि तेह बालके गाम बाहिरि रमतें महात्मा आवता देषी। बीहता नासी एक इवडि उं चा चडिया। इणा हारस्यामी महात्मा तेहणाइं वडि जई ऊतरिया। ऊतरएक पडसीइ रिया वहीपडिक्कमीय बरका लापारी सातपाणी वावरवा बइठा। ते बालक चडियां रदेषइं। एसात पाणी वावरइ। पणी जे माय बापे कहितां ऊंउएजो मांसरवाइ ते तां कसीइ वस्तु न देषइ। ते महात्मानां रूप देषी मनि चिंतववा लागा। किहां एकए हवां रूप दीठां बइं। इम ईहापोह करतां जातिस्मरणइं पाभिलउं। सव देषी प्रतिबोधपामी महात्मा वांदिया। माय बाप नइं कहइ। अन्हे देवास विद्या युस वे भुरेमि। केई सूयाएग विमाणवासी सुरसुराणोउं सुयार राणामे। रवाए सुमिथेसु रलोग रम्मे॥२ केपि जीवा पूर्वे सवे एक विमांन वासीनो देवा हूवा। च्युत्वाइं भुकारे नाम्नि पुरे पद्मे मंउत्पन्ना। तेह माहि केतलाइं जीव पूर्वे लउ सवांतरि। एक विमांन वासी देवता कुईनइ। च्यव्या कुता इं भुकार इसिं नामि इं सुरि नगरि पुहिचुं ऊपना। किं॰ सुरे पुर ते ने। सुरातन सणीइं जीर्णे बड़ जे नगर॥२ सकम्मसेसेण पुराकएणं। कुलेसु दग्गेसु यतेसूया। निविन्न संसार सयाज हाय। जिणंद मग्गं सरणं पवन्ना॥२ ते जीवाः जिनेंद्र मार्ग शरणं प्रपन्ना। ते बहू जीवे नेंद्र श्री वीतराग देवतणउ मार्ग शरणं पडिवज्या। किं॰ ते जीवाः पुराकृत कर्म शेषेणउदग्रेषु कुले षु प्रसूता। पूर्वे जन्मांतर नइ कीधइ स्व आपणा कर्म नइ सावि शेषि इं पण करीनइं। उद्ग्रे मोटइ। कुलि ऊपना। पुनः किं॰ ते जीवाः संसार सयान्निर्विन्नाः संसार नयउ निर्विन्न सणीइं ऊसना बइ। किं सद्वा। लोगानु। जहाय लोगबांडी नइं। इसुमत ८३

मा गसम्पन्ना कुमार दो वी। पुरोहित उतरस्स जसा पयती। विसालकित्ती यतहो सूयरो। राय च्छ देवी कमलावती या॥३ पुस्त्रं आमग दो कुमारो। पुरुषपणु पामीनइ बिऊमरा। पुरोहित च्युइ सिनां सिइ तस्य यशाः पत्नी। तेह तणइ यशा पत्नी॥४ तथा विशाल कीर्तिइ षुकार राजा पतथा तिम विशाल विस्तीर्ण। इषूकार नरेस्वर। तत्र देवी राज्ञी कमलावती ज्ञेया॥६ तिहां देवी राणी कमलावती जाणिवी। एबइ जीव जांणिवा। ते हमारि हं बिहुं कुमरे किम धर्म पडिवजिउ। अन इं तेह ने वात कहइ छइ॥३ जाई जरा मच्चु भयाभिभूया। बहिं विहाराभि निविठ्ठ चित्ता। संसार चक्कस्स विमुक्खणठ्ठा। दठूण ते कामगुणे विरत्तो॥४ ते पुरोहित पुत्रौ कामगुणे षु विरक्तौ जातौ। ते बिहुइ पुरोहितना पुत्र कामगुण नइ विषइ विरम्या हूया। किं कृत्वा। यतीन् द्रष्ट्वा। यती महात्मा देषीनइ। किं॰ ततो जरा मरण भयाभिभूतौ। जाति जरा मरण भय अभिभूत पराभव्या छइ। पुनः किं॰ बहिर्विहारा। अभिनिविष्ट चित्तौ॥ बहिं विहार सणीइ। संसार नु बाहरि मोक्ष नइ विषइ अभिनिविष्ट मणीइ सावधान चित्त छइ जेहना। किमर्थं संसार चक्रस्य विमोक्षार्थं संसार नु फेरु मूकावा नइ कारणि पिय पुत्रया दोन्न विमाहणस्स। सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स। सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं। तहा सुचिन्नं तव संजमं च॥५ एतौ द्वावपि ब्राह्मणस्य प्रिय पुत्रकौ। तेउ पागम्य नणीइ तातसमीपि आवीनइ असिउं वचन बोल्या। किं॰ ब्राह्मणस्य स्वकर्मसीलस्य। स्व आपणा कर्मकार्य नइ विषइ शील तत्पर छइ। पुनः किं॰ ब्राह्मणस्य पुरोहित छइ। किं कृत्वा। तत्र पुरातन जातिं स्मृत्वा। किसिउं करीनइं। तीहतणी पूर्व जन्मानी जाति स्मरीनइं। पुनः किं॰ कृत्वा। तथा सुचिर्णं सवसंजमस्मृत्वा। तथा तिम सुची र्णसिउं तप अनइ संयम संभारीनइ। एतेर्व॰

भोगेसु असज्जमाणा।माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा॥मुक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा॥तायं उवागम्म इमं उदाहु॥
६॥ते।मानुष्येषु कामभोगेषु जे वा पि दिव्याः कामभोगस्तेषु अपि।असज्जमानौ।ते [illegible] संबंधीया।कामभो
भोगनइ विषइ जे देवलोकसंबंधीया कामभोग तेहनइ विषइ।आसक्ति नथी [illegible]तौ मोक्षाभिकांक्ष
णौ।मोक्ष वांछइ ते बिहूं।पुनः किं०तौ।अभिजातश्रद्धौ अभिजात पामी श्रद्धा वासना [illegible] एवे बेउ [illegible]।दौ॥
तातं उ[illegible]पेत्य इदं उक्तवंतौ।ताय ढुकता ते बिहूं पिता कन्हइ आवी इसिउं कहिउं॥६॥असासयं दुट्ठु इमं विहारं।बहु
अंतरायं न य दीहमाउं।तम्हा गिहंसि न रइं लहामो।आमंतयामो चरिस्सामु मोणं॥७॥इदं विहारं अशाश्वतं दृष्ट्वा
च अन्यत् बहु अंतरायं न तु दीर्घमाउं आणीइ।घोडलुं आयुषुं देषीनइ ते कारणइ गृहस्थावासि रति आसक्ति न
पामुं।आमंत्रयाम्यो सोकली वउं बउं।मौनं चरिष्याम्यः महात्मानु क्रिया चालिसुं॥७॥अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं त
व वस्स वाघायकरं वयासी।इमं वयं वेयविदो वयंति।जहा न होई असुयाण लोगो॥८॥अथ तातस्तत्र तयो मुन्योः तप
सव्याघातकरं अवादीत्।अथ एतला नु अनंतरं तात पिता तत्र ति होता हे।बिहुं ऋषी श्रमणइ व्याघातकारी उं वच
न बोलिउं।तपनइ वेदविदो वदंति।वेदवेदीया ब्राह्मण इसिउं वचन बोलइ।यथा असुतानां।लोका न भवति
जिम अपुत्रीयानइ परलोक नु हुइ॥८॥अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे।पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया।भुच्चाण भोगे
सह इत्थियाहिं।आरंन्नया होह मुणी पसत्था॥९॥हे जातौ हे पुत्रौ।वेदान् अधीत्य विप्रान् परिवेश्य पुत्रान्।गृहे स्था
प्य स्त्रीभिः सम् भोगान् भुक्त्वा।आरण्यकौ प्रशस्तौ मुनी भवतं हे जात पुत्रौ उ वेद भणीनइ।विप्र ब्राह्मण परि
वेस जमाडीनइ।पुत्र घरि थापीनइ।स्त्री सहित भोग भोगवीनइ अरण्यवासी प्रशस्त रूडा ऋषीश्वर ह ६४

ज्यो॥९॥सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं।मोहाणिला पज्जलणाहियेणं।संतत्तभावं परतप्पमाणं।लोलप्पमा
णं बहुहा बहुं च॥१०॥पुरोहियं तं कमसोणुणिंतं।निमंतयंतं च सुए धणेणं।जहक्कमं कामगुणेसु चेव।कुमारगा
ते पसमिक्ख वक्कं॥११॥तौ कुमारौ प्रसमीक्ष्य विचार्य तौ।पुरोहितं इदं वाक्यं उक्तवंतौ।ते बिहूं कुमर प्रस
मीक्ष विचारी नइ।तात पुरोहित प्रति इस्यां वचन बोल्यां।किं० पुरोहितं।शोकाग्निना परितप्यमानं।शोकरू
पी इ अग्नि इं करी नइ परितप्यमान।पुनः किं० शोकाग्निना आत्मगुणेंधनेन।आत्मानां गुणा रूपियाइ धण बइ जेह
नइ।पुनः किं० शोकाग्निना।अहिता मोहानल।प्रज्वलितेन।अहित [illegible] मोह रूपीउ अनल वायती णाइ
प्रज्वलित सणीइ।बलतुं बउ।किं० पुरोहितं बहुधा बहु लालप्यमानं बहुधा अनेक प्रकार बहु घणउं ला
लप्यमानं सणी निवारइ बउ।किं० पुरोहितं।क्रमशः अनुनयंतं।क्रमि अनुक्रमिइं मनवेउ बउ।सुतौ धनेन नि
मंत्रयंतं।सुत बेटा धन सणीइ लक्ष्मीइं करीनइ।निमंत्रतुं बउ आमंत्रउ बउ।पुनः किं० पुरोहितं।यथाक्रमं।कामगुणै
श्च निमंत्रयंतं।सुत बेटा कामभोगे करी निमंत्रतुं बउ।एवंविधं पितरं प्रसमीक्ष्य तौ।कुमाराइ इदं वाक्यं उक्तवंतौ
इसिउं कहिउं पिता देषीनइ।ते हेकुमर वलतुं इम कहिउं॥११॥वेदा अहीया न भवंति ताणं।भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं।जा
याय पुत्ता न भवंति ताणं।को नाम ते अणुमन्निज्ज एयं॥१२॥वेदा अधीता त्राणं न भवंति।वेद अभ्यास कुं ता त्राण शरण न
करइ।द्विजा भोजिता तमसि तमो नयंति।ब्राह्मण जिमाड्या हुंता नमस्तमस्स णीइ।पापइ करी [illegible] नरग लिइ।जाताः पु
त्राः त्राणं न भवंति।जाया बेटा त्राण न करइ।नाम इकोम लामंत्रणे तो ते तव इदं वाक्यं को [illegible] मन्यते।नाइ न्ति को मं
लामं त्रिणीं ताहरुं एवं वचन कुण मानइ।अपितु न मानइ॥१३॥खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा।पगाममदुक्खा

अणागामिसोक्खा। संसारमोक्खस्स विपक्खभूया। खाणी अणत्थाण उ कामभोगा॥१३॥ कामभोगाः एवंविधाः सन्ति। इति काम
भोग एवंविध इस्यां छइ। किं० कामभोगा। खणमात्रसौख्याः क्षणमात्र सुख बइ। पुनः किं० कामभोगा। बहुकाल घणु
काल दुःख बइ। जेहनु प्रकामदुःखं सौख्यं प्रकाम अतिहिं दुःख बइ। जेहनु। पुन। किं० कामभोगा। अतिकामसौख्या।
अति। काम सणीइ। थोडउं सुख बइ जेहनु। पुन। किं० कामभोगाः संसारमोक्षस्य विपक्षभूता। संसार मोक्षनइ वि
पक्षभूत सणीइ वइरी प्राय बइ। पुन किं० कामभोगाः अनर्थानां खानि। अनर्थनी खाणि बइ। जे कामभोगा॥१४॥ परि
व्वयंतो अणियत्तकामो अहोय राओ परितप्पमाणो। अण्णप्पमत्तो धणमेसमाणो। पप्पोति मच्चुं पुरिसो जरं च॥१५॥
पुरुष अनिवृत्त कामभोग परिव्रजन्। आहातप्पमानः एवं प्रमत्तः धनं प्राप्नोति। पुरुष स्त्री सहित ऊंउ उप
रिव्रजन्। सणीइ। अरइ परइ फिरितु ऊंउ अहोरात्रि परितप्यमान सणीइ। संतापी ऊंउ अन्य अनइ धन नइ वि
षइ प्रमत्त सणीइ। रसगृद्ध ऊंतउ जिजरा अनइ मरण पामइ॥१५॥ इदं मे च मे इत्थि इदं च नत्थि। इदं च मे किच्चं इदं अ-
किच्चं। तं एवमेव लालप्पमाणं। हरा हरंति त्ति कहं पमाओ॥१५॥ हरा तं पुरुषं एवमेव लालप्यमानं। हरंति हर सणीइ रा
ति दिवस ते पुरुष प्रतिइं। असु बोलउं ऊंकुंउ हरइ। अपहरइ। इम चीतवतां जदि वसरा। त्रिजाइ आऊखुं इमजि पु
हुचीजाइ। प्रमादः कथं क्रीयते। प्रमाद कांइ कीजइ। एवं कथइ इम किममेमम इदं अस्ति। माहरइ एव बइ। मिममइ
दं नास्ति। माहरइ एनथी। मेममइदं कृत्यं। माहरइ एकाज। मेममइदं अकृत्यं। माहरइ एनथी काउ॥ इम चीतवतां
जिआऊखुं जाइ॥१५॥ धणं पभूयं सह इत्थियाहिं। सयणा तहा कामगुणा पकामा। तवं कए तप्पइ जस्स लोगो। तं सव्व सा ८५
हाणमिहेव तुब्भं॥१६॥ पिता कहइ बइ। … यस्य कृते लोक स्तपस्तपति। जेह तणाइ कारणि। तप तपिइ

तं सर्वं … युवयोः इह स्वाधीनं वर्तते। ते सघलु इतम्ह नइ कारिणि आइं तीणाइ इह स्वाधीन अछइ। त्याइं ति वर्त्तइ। स
र्व किस्यो स्त्रीसहित धनं वस्त्रं तात। स्त्री सहित सघउं धन तथा स्वजन वर्ग तिम सगां प्रकामं कामगुणाः अतिहिं कामसु
रक॥१६॥ धणेण किं धम्मधुराहिगारे। सयणेण वा कामगुणेहिं चेव। समणा भविस्साम गुणोहधारी। बहिंवि
हारा अभिगम्म भिरकं॥१७॥ एवं लउ पिता प्रतिइं ते बिहु पुत्र कहइ बइ। धर्माधिकारे धनेन किं कार्यं। धर्मनारि
नइ अधिकारि धनिइं किस्युं काज। जउ धनि इरी बूटीइ। तउ अनेक चक्रवर्त्ति वीतराग धन कांई छांडइ। जउ धनि इ
करी नइ मुक्ति जइइ। तउ चक्रवर्त्ति वीतराग देव धन तणाइ प्रमाणिं मुक्तिइं काइ न गया। पणि यदा कालिं मुक्ति
जु तदा कालिं चारित्र पाली नइ सिद्धि इ गया। वा अथवा। स्वजनेन किं कार्यं स्वजने किस्युं काज। कामगुणैः किं का
र्यं। कामसुख किस्युं काज। आवां गुणौघ धारिणो श्रमणा भविष्यामः। अमे गुण तणा समूह। धरणहार श्र
मणा … विष्यां मह। तम्हारो भिरकं। किं० आवां भिरक्षां आविगम्य बहिर्विहारा भिरक्षां … नइ संसार रहु बाहिरि चालता
बउं॥१७॥ एह वचन जेतलइ पितां इसां सांभलियां। ते तलइ पिता पुत्र प्रतिइं इम कहिवा लागु। जीव नथी। पंच भूता … त्यां
छइ। एवात कहइ बइ। जहा य अग्गी अरणी असंतो। खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु। एमेव जाया सरीरंसि सत्ता। संमु
च्छती णासति नावचिट्ठे॥१८॥ यथा अग्नि अरणेः असन्। संमूर्छति। जिम अग्नि अरणि माहि अबतुं ऊंउ। संमूर्छइ। ऊप
जइ। यथा क्षीरे घृतं असत् संमूर्छति। जिम दूध माहि घी अबतुं ऊंउं घी ऊपजइ। यथा महा तिलेषु तैलं संमूर्छति। जिम
महा तिल नइ विषइ तेल अबतुं ऊंउ ऊपजइ। जे जातो पुत्रो एवमेव शरीरे पंचभूत … संमूर्छति। नश्यति ना
वतिष्ठति। हे जातौ हे पुत्रौ इणइ प्रकारिइं शरीरि सत्व प्राणी या संमूर्छइ नासइ। न रहइ। छइ कांइ। परलोक जाइ॥१८॥ एवं लद्धं

पुत्र कहइ छइ। नो इंदियगिज्झ अमुत्तभावा। अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो। अज्झत्थहेउं नियउ स्स बंधो। संसारहेउं च वयंति
बंधं॥१९॥ आत्मा इंद्रियग्राह्यो न आत्मा इंद्रियग्राह्य न हुइ। कस्मात् अमूर्त्तभावात् कस्मात्। अमूर्त्तपणाउ आत्मा ... आ-
त्मा वस्तु। अरूपीपणाउ। अमूर्त्तभावादपि। आत्मा नित्यो भवति। अमूर्त्तपणाउ। अरूपीपणाउ आत्मा नित्य छइ। अ-
स्य आत्मनः। अध्यात्महेतुर्नियतो बंधो भवति। ए आत्मा नउ अध्यात्महेतु रागाइ परिणाम हेतु कारण नियत नि-
श्चइ कर्मबंध छइ। अन्यत् बंधं संसारहेतुं वदंति। अनइ कर्मबंध कर्म संसारनु हेतु। कारण बोलइ॥१९॥ जहा वयं
धम्ममयाणमाणा। पावं पुरा कम्ममकासि मोहा। ओरुज्झमाणा परिरक्खियंता। तं नेव भुज्जो वि समायरामो॥२०
पुत्र कहइ छइ॥ यथा पुरा पूर्वं धर्मं अजानानो मोहात्। पापकर्म अकार्ष्म। जिम अम्हे पूर्वे पहिलुं धर्म अजा-
णतइं हुंते। मोहइ नु पापकर्म कीधुं। तत् पापकं भूयो वयं नैव समाचरिष्याम। ते पापकर्म भूय वली अम्हे न समाच-
रउं। किं वयं परिरक्ष्यमाणा। राषीता छउं॥२१॥ अब्भाहयंमि लोयंमि। सव्वओ परिवारिए। अमोहाहिं पडंतीहिं। गिहंसि न
रतिं लभे॥२१॥ वली पिता प्रति पुत्र कहइ छइ। आवां गृहे रतिं न लभावहे। अम्हे गृहस्थावासि रति आसक्ति न
पामउं। क्व सति। लोके अभ्याहते सति। लोक हणीतइ ... हुंतइ। किं लोको सर्वतः परिवारते सघलइ परिवा
रिवरिउ छइ। परिवरीनइ बुध निग्रहिउ छइ। काभिः अमोघाभिः पतंतीभिः अमोघ धारा शस्त्र धार समस्त कि प-
डती हुंती। एहवुं देखीनइ घरमाहि रहिता अम्हे रति न पामउं। जिहां रहितां एवडउं विघन कष्ट पामीइ दीसइ।
तिहां किम रति ऊपजइ। एहवां वचन सांभलीनइ वलतुं पिता पूछइ छइ॥२१॥ केण अब्भाहओ लोओ। केण वा परिवारिओ। ९६
का वा अमोहा वुत्ता। जाया चिंतावरो हुमि॥२२॥ केन लोकः अभ्याहतः। केन हणिउ लोक हणिउ। वा अथवा केन परि-

वारितः केणइ परिवरिउ। वा अथवा का अमोघा उक्ता। वा अथवा कुण अमोघ धारा शस्त्र धारा बोली हे जा-
ता हे पुत्र अहं चिंतीपुर छउं तेह कहउ॥२२॥ मच्चुणाब्भाहओ लोओ। जराए परिवारिओ। अमोहा रयणी वुत्ता। एवं ताय
वियाणह॥२३॥ वलतुं पुत्र कहइ छइ। तो तात लोक मृत्युना अभ्याहतो हे तात लोक यमि हणीउ छइ। किं लोकः जरया
परिवारितः जराकरी परिवरिउ परिवरीनइ बुध निग्रहिउ छइ। लोक दिवसरात्रय। अमोघा उक्ता। दिवसरात्रि सरा-
त्रि अमोघ धारा शस्त्र धारा बोली। जे जाता आऊषानुं सल खंड त्रूटी पडइ। हे तात एवं विजानीहि। हे तात इम
जाणो॥२३॥ जा जा वच्चइ रयणी। न सा पडिनियत्तई। अधम्मं कुणमाणस्स। अफला जंति राईओ॥२४॥ यायाः दिव-
सरात्रिर्व्रजति। जे जे दिवस सहित रात्रि जाइ। सा न प्रतिनिवर्त्तते। ते पाछी नावइ। अधर्मं कुर्वाणस्य। अफला
दिवसरात्र। यायां ति। अधर्म करतां हुंतां अफल दिवस रात्रि जाइ॥२४॥ जा जा वच्चइ रयणी। न सा पडिनियत्तई॥
धम्मं च कुणमाणस्स। सफला जंति राईओ॥२५॥ या या दिवसरात्रिर्व्रजति। ये ये दिवस सहित रात्रि जाइ। सा न प्रतिनिव-
र्त्तते। ते पाछी नावइ। धर्मं कुर्वाणस्य दिवसरात्रय। सफला यांति। धर्म करतां हुंतां दिवस रात्रि सफल जाइ॥२५॥ एहवं
ते हवे वचने प्रतिबोधया मिउ हुउ पुरोहित वलतुं पुत्र प्रति कहइ छइ। एगओ संवसित्ताणं। दुहओ सम्मत्तसंजुया। प-
च्छा जाया गमिस्सामो। भिक्खमाणा कुले कुले॥२६॥ हे जातो हे पुत्रो वयं एकतः। संवसित्वा सम्यक्त्वसंयुता पश्चा-
त् गमिष्याम। हे जातो पुत्रो एक वार माहरूं घरवासु सम्यक्त्व संयुक्त रहीनइ। केतलउ एक काल नवा सप्तरत्तउ पछइ
आपण दीक्षा लेसिउं। किं कुर्वंतः कुले कुले भिक्षमाणाः कुलि कुलि भिक्षा मागता थकां॥२६॥ वलतुं पुत्र कहइ छइ॥ ज-
स्सत्थि मच्चुणा सक्खं। जस्स वत्थि पलायणं। जो जाणे न मरिस्सामि। सो हु कंखे सुए सिया॥२७॥ यस्य मृत्युना

सख्यं अस्ति। जेहनइं मृत्युसुं मिलिउं मित्राचार छइ। वा अथवा यस्य पलायनं अस्ति। अथवा [illegible] मृत्यु आविइ
जेहनइं नासवानउं बल छइ। यो जानाति अहं न मरिष्यामि। जे जाणइ हुं न [illegible] जिंखितो। अस्यादिति स कां
क्षेत वा। हुं निश्चिंत स्वपस्याति। अमुंकी जीसिइ सिउं ते वांछइ। ते कदाचित गृहस्थावासि रहिवुं वांछइ पर तो अम्हार
इं मृत्युसरसी सुखप्रीति नथी। अनइं नासवानउं रहइ॥२७॥ अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामि। जहिं पवन्ना न पुण
ब्भवामो। अणागयं नेव य अत्थि किंचि। सद्धाखमं ने विणीयत्तु रागं॥२७॥ वयं अद्यैव धर्मं प्रतिपद्यामहे। आज
इ अम्हे धर्म पडिवज्जउं। यतः धर्मं प्रपन्ना वयं न [illegible] पुनर्न विष्यामः। जे धर्म पडिवज्जतां हुंता अम्हे पुनः वली
संसारमाहि न आवउं। अनागतं किंचि त्वं नैवास्ति। अणायामिउं संसारमांहि कोई नथी। अतः नोऽस्माकं रागं
विनियक्रियाकर्त्तुं समर्थो क्षमं। अतः एकारणतु नो अस्माकं स॰ अम्हारइ राग टालीनइ क्रिया करवा समर्थो वा
सेना सहित युक्त। सर्वथा राग निवर्त्तीनइ धर्म अम्हे पडिवज्जिसिउं आज॥२७॥ तदा तेह कुमरनवन वचन वैराग्य पामिउं
छइ। पुरोहित चारित्र ग्रहणनो वांछइ। ब्राह्मणी प्रति कहइ छइ॥२८॥ पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो। वासिट्ठि भिक्खा
यरियाए कालो। साहाहि रुक्खो लहए समाहिं। छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं॥२९॥ हे वासिष्ठि। प्रहीणपुत्रस्य मम
गृहवासो नास्ति। हे वासिष्ठि। फल समुत्पन्न प्रिय बेटा रहितकुं ता मज नइं गृहस्थावास नथी। मम भिक्षाचर्यायाः
कालो वर्त्तते। गोचरचरीनु काल वर्त्तइ। आज मारहइ पुत्र गया छइ। तुं अम्हे आज निराधीर थया। यथा द्रुमः शाखाभिः
शोभां लभते। जिम वृक्ष शाखाइं करीनइ शोभा पामइ। तामेव द्रुमः स्थाणुरिति उच्यते। छिन्नाभिः शाखाभिः। शाखा छेदीकुं
तीए तेह जि वृक्ष स्थाणु रवीला थाय थाइ। तिम हुं पण इहां तिहं पुत्र पाखइ अम्हे आज दीसवा लागा॥३०॥ पंखावि ८७

+ भिच्चविहूणो चरणे नरिंदो। विविन्नसारो वणिओव्वपोए। पहीणपुत्तोमि तहा अहं पि॥३०॥ यथा इह पक्षी॥ + उ॰१

हूणो व्व जहेह पंखी पंख विहीनः शोचते। जिम इहां पंखी पांख विहीनकुं उशोचइ शोचना करइ। यथा नरेंद्र रणे भृ
त्य विहीनः शोचते। जिम नरिंद्र वा करइ रणि सुभट सर्णाइ सेवक रहितकुं उशोचइ शोचना करइ। तथा अहमपि
प्रहीण पुत्रः शोचामि। तिम हुं पुत्र रहितकुं उ शोचा करूं॥३१॥ तेह सर्णाइ हव इ चारित्र ग्रहण करिसिउं। व
लउं ब्राह्मणी कहइ छइ॥ सुसंभिया कामगुणा इमे [illegible] ते। संपिंडिया अग्गरसप्पभूया। भुंजामु ता कामगु
णे [illegible] पकामं पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं॥ इति तव इमे कामगुणा अग्ररसाः सुसंभिता संपूर्णा वर्त्तं
ते। ताहरइ ए कामगुण संपूर्ण वर्त्तइ। किं॰ कामगुणा। संपिंडिताः संपिंडित सर्णाइ एकठा मिल्या छइ। पुनः किं॰ कामगु
णा॥ अग्ररसा उत्कृष्ट रस छइ। जे कामभोग। पुनः किं॰ कामगुणाः प्रभूताः प्रभूत घणा छइ। न तत्स्मात् कारणात्
त्र कामइ त्वं एं कामगुणान् भुंजाम। तेह कारण तु अति हिं कामभोग वउं। पश्चात् प्रधान मार्गं गमिष्याम। पूर्वइ सुक्तिमा
र्गि जासिउं॥ भुत्ता रसा भोइ जहाति णे वओ। न जीवियट्ठा पजहामि भोए। लाभं अलाभं सुहं च दुक्खं संचिक्खमाणो
चरिस्सामि मोणं॥ इस्थ वरह पुरोहित कहइ छइ। हे भवति हे प्रिये रसा भुक्ता। हे प्रिये रस कामभोग भोगव्या नो अ
स्माकं वयो जहाति। अम्हनइं नवयौवन वय बांडइ। जीवितव्यार्थं भोगान् न प्रजहामि। जीवितव्य नइ अर्थि भो
ग बांडउं। लाभं च अन्यत्र अलाभं सुखं च अन्यत्र दुःखं संचक्षमानः। ज्ञानान् मौनं चरिष्यामि। लाभ अनइ अ
लाभ सुख अनइ दुःख संचक्षमान सर्णाइ ज्ञानतुकुं उ मौनम ह ज्ञानी क्रिया चालिसिउं॥ इस्थ वलतं यजाप
त्नी कहइ छइ। मा हा तुमं सोयरियाण संभरा। जुन्नोव हंसो पडिसोयगामी। भुंजाहि भोगाइं मए समाणं। दुक्खं खु भि
क्खायरियाविहारो॥३३ हु निश्चिंत सोदर्याणां बांधव स्वजनानां शोकमां च मां स्मार्षी। स्वां कु [illegible] हे स्वामि मतु

सगां लोग पछइ मसंसारि। कइवजीमांहिं सइव। यथाजीमांहिं सा। प्रतिश्रोतु गमनरूपं ति। जिम तु राजहंस प्रतिश्रोत
गामी सर्पणी हुई। सा हंस इहां रिजा उ कहइ छै। अनुश्रोत सर्पणी हुई। सुखमूरसंसार हुइ। तिम चारित्र आणि निर्वेद हुई
इ पूर्व लोग स्वजन संसार छ। तेह सर्पणी मया सार्द्धं लोगानु सुखमई सहित लोग जो वि खु निश्चिइ सिक्षाचर्या
यां विहारी दुःखसाध्य आवत्ती तस निश्चिइ लोचादिके करी दोहलां हुइ गाढउ दूहिलउं छइ॥ ३४॥ वलतुं पुरोहित कहइ
छइ॥ जहा य भोई तणुयं भुयंगमो। निम्मोयणिं हिच्च पलाइ मुत्तो। एमेए जाया पजहंति भोगे। ते हं कहं नाणुगमि
स्समिक्को॥ ३४॥ ते भोगि नियमा भोगी तनुजां निर्मोको। हित्वा मुक्को निराग्रहः प्रयाति हे भोगिनि हे प्रिये। जिम सर्प तनु दे
ह उतपन्न निर्मोक सर्पणी हुइ कंचक छांडीनइ मूकारु कहउ जाइ इमो ति तव जातो। भोगान् प्रयहति। एतादृशा पुत्र ला
ग छांडी तिम जाइ छइ। अहं तो कथं न अनुगमिष्यामि। एकलु कुं तु कृत्तु पुत्र पूंठिइं किम न जाउं। अपि तु जाउं जि॥ ३
४॥ छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया। मच्छा जहा कामगुणे पहाय। धोरेयसीला तवसा उदारा। धीरा हु भिक्खायरियं
चरंति॥ ३५॥ वलतुं पुरोहित कहइ छइ॥ यथा उ रोहिता मच्छा अबलं जालं छित्वा। चरंति। जिम परोहित मच्छ जातीका म
छ। अबल निर्बल जाल छेदीनइ चालइ। एवं धीरा कामगुणान् त्यक्त्वा सिक्षाचर्यां चरंति। इणइ प्रकारिइं धीरसुभट
जाल सरीखां कामगुणः काम भोग छांडीनइ सिक्षाचर्याइं चालइ। किं॰ धीरा धोरेयशीला प्रधान सनीय शील छइ जेह
नुं पुनः किं॰ धीराः तप साउ रां द। तपइ करीनइ उदार गिरूया छइ॥ ३५॥ तिम अम्हे चारित्र ग्रहण करिसिउं। वलतुं य
शा पत्नी वैराग्य पामी हुंती उ कहइ॥ नहेव कुंचा समइक्कमंता। तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा। पलिंति पुत्ता य पई य म
ज्झं ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को॥ ३६॥ यथा नभसि क्रौंचाः समतिक्रामंतः तंतानि जालानि दलित्वा यांति। जिम नभ

सि क्रौंच पंखीया समतिक्रामंत सर्पणी हुइ चालता तानि विस्तीर्ण जाल छेदीनइ जाइ एवं मम पुत्रौ पतिश्च यांति। ईणइ
प्रकारिइं माहरइ पुत्र अनइ पति भर्तार जाइ छइ। एकाहं तान् कथं न अनुगमिष्यामि। एकली हुंती हुं पूंठिइं किम
न ही जाउं। अपि तु जाइसु॥ ३६॥ हवइ च्यारइ जीव वैराग्य प्राप्त हुंता चारित्र ग्रहण करइ छइ। यदा कालि ते बि
हूं कुमर चारित्र लेवा सज्ज थया। तदा कालि ते परोहित अनइ तेह तणी कलत्र प्रति इं वैराग्य उपनु। ते पुरो
हित अनइ बिहूं कुमर अनइ कुमर तणी माता। ए च्यारइ जणां वीतराग धर्म मार्ग सांभलीनइ। संसार तणा
भोग पद्म सादृश्य कीनी कल्पा। अनइ अनेक स्वजनादिक विपुल विस्तीर्ण छांडीनइ चारित्र रूप रमना धि
र करिवा नइ सज्ज थया। तदनंतरं ते पुरोहित आपणइ इषुकार राजा प्रति इं घर तणी लक्ष्मी सार संडा
र आपिवा राजा तणि घरि गुरु हुंतु वीन विवाला गुण उ मारी लक्ष्मी छइ ते आपूं आवीनइ लउ। अम्हे चारि
त्र ग्रहण चारित्र लेसिउं। ते तम्हे सर्व भंडार संभालीनइ लिउ। तदनंतरं ते राजा अनइ राणी सैन्य सहित
परोहित तणइ घरि आव्या। अनइ सर्व पतिल लक्ष्मी लेवा गया। तदा कालि तेह तणी राणी कमलावती तेह नइ छां
डतां देषी वैराग्य प्राप्त हुंती राय प्रति इं कहिवा लागी। पुरोहियं तं ससुयं सदारं। सुच्चा भिनिक्खम्म पहाय भो
ए। कुडुंबसारं विउलुत्तमं तं। रायं अभिक्खं समुवाय देवी॥ ३७॥ देवी कमलावती राजानं अभीक्ष्णं। देवी उ वाचं क
मलावती राय प्रति इं वार इवली रइसूं बोली। किं कृत्वा पुरोहितं अभिनिःक्रम्य त्यक्त्वा गात् त्यक्त्वा प्रव्रजितं श्रुत्वा
किस्यूं करीनइ पुरोहित बेटा सहित अभिनिःक्रम्य घर थी काढीनी कलीनइ भोग छांडीनइ बेटा कलत्र स
हित दीक्षा प्राप्त सांभलीनइ। किं॰ राजानं विपुलोत्तमं। कुटुंबसारं धन दानं विपुल विस्तीर्ण पुरोहित

तुं धन। आदरानं स्नं॰ लेवउ छइ॥३७ देवी कमलावती राय प्रति कहइ छइ। वंतासी पुरिसो रायं। न सो होइ पसंसिओ
माहणेण परिच्चत्तं। धणं आदाउमिच्छसि॥३८ वंतासी हे राजन् ते वमिउं जिम आहार छर्दरूप वमइ। ते प्रसंसनीया
न वर्त्तइ। ते प्रसंसनीय वर्त्तइ। यत ब्राह्मणे न परित्यक्त धन आदीउं इछइ सि। जे ब्राह्मणे परित्यक्त छोडिउं
धन लेवा वांछइ॥३८ आगइ जाणइ छइ॥ जा सत्ता लक्ष्मी संपति वमइ छइ। असार अथिर कर्म तणुं बंधन संसा
र तणुं हेतु। पूर्वि ऋषीश्वर तणुं वमन एहवी लक्ष्मी असार जाणीनइ। ए ब्राह्मणा वमइ छइ। त्याग करइ छइ। तुं हे
एवमी लक्ष्मी किम वांछइ छइ॥ वली राजा प्रतिइ राणी कहइ छइ॥३८ सव्वं जगं जइ तुहं। सव्वं वावि धणं भवे। स
४ नेव ता ४ व्वं पि ते अपज्जत्तं। ताणाय तं तव॥३९ हे स्वामिन् यदि तव सर्वं जगत् सर्वे त्व। हे स्वामिन् जइ किम् हइ सर्वे वित्त ताह
रूं छइ। ता हरी सेवा करइ। वा अथवा सर्वमपि धनं स्यावत्। अथवा सघलुं तेह रूं छइ। एतत् सर्वमपि ते तव दुःखा
पूर्त्तीय। अपर्याप्त एसघलुं इतजन ईईवा पूरवा नइ विषइ अपर्याप्तं असमर्थ। तत् सर्वमपि तव त्राणाय नेव
भवति। ते सघलुं इतजनइ रक्षण नइ कारणि जिन कहइ॥३९ मरिहिसि रायं जया तया वा। मणोरमे कामगुणे प
हाय। एको हु धम्मो नरदेव ताणं। न विज्जती अन्नमिहेह किंचि॥४० वली राणी कहइ छइ। हे राजन् मनोरमान्
कामान् त्यक्त्वा। यदा तदा त्वं मरिष्यसि। हे राजन् मनोरम कामगुण त्यजी वांडी जइसि [illegible] तुं मरेसि। हे नरदेव कु
निश्चितं एक धर्मो त्राणं वर्त्तते। हे नरदेव कु निश्चइं एक धर्म त्राण रक्षण वर्त्तइ। इह अस्मिन् राज्ये इह अस्मिन्
संसारे अन्यत् त्राणं न भवति। इहईणइ संसार नइ विषइ। इहईणइ राजि अन्यत् अनेरुं कोई त्राण रक्षण
न थी॥४० वली राणी राय प्रतिइ कहइ छइ॥ नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा। संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ९९
अकिंचिणा उज्जुकडा निरामिसा परिग्गहारंभनियत्तदोसा॥४१ हे राजन् अहं संसार नइ विषइ न रमुं

कइ वपक्षिणी इवा यथा पक्षिणी पंजर न रमति। जिम पक्षिणी पांजरइ न रमइ। आसक्ति न पामइ। छिन्न संताना
मौनं चरिष्यामि। सवछेदी नइ मौन महात्मानी क्रिया चालिस्युं। आचरिस्युं। किं॰ अहं अकिंचनानि। परिग्रह व
उ। भवन: किं॰ अहं ऋजुकृता हं ऋजु उपरिणाम इकृत कीधां कार्य बइजीणइ। मइं भवन: किं॰ अहं। परिग्रहारंभनि
वृत्त दोषा। परिग्रह आरंभ तणा निवृत्यो दोष छइ जिमजनइ॥४१ दवग्गिणा जहारण्णे। डज्झमाणेसु जंतुसु। अन्ने सु
त्ता पमोयंति। रागद्दोसवसिं गया॥४२ हे राजन् अरण्य दवाग्निना दह्यमानेषु जन्तुषु अन्ये सत्त्वा प्रमोदंते। हे
राजन् अरण्य अटवी माहि दवाग्नि करीनइ। जंतु प्राणीए दाझी तेहुंते अनेरा सत्त्व प्राणी जिम प्रमोद हइ हर्ष पाम
इ। किं॰ अन्ये रागद्वेषवशं गता। रागद्वेष नइ विषइ गया छइ॥ यथा दवाग्नि लागी हुइ। महा अटवी माहि। अनेक जंतु
धणी दाझइ नइ अनेरा हर्ष धरइ। तेह मजाणइ एजीव बलइ परिण आम्हे ऊगरिया। पणइ मनजाणइ एह
नइ वीतुं तिम अम्हनइ हइसिइ। ते अटवी वेडि केहीक होइ। अनइ दवानल केहु करी होइ। अटवी वेडि संसार क
हीइ। अनंद वानल जरा मरण कहीइ। अनइ जिम एक जंतू मरण पामइ। अनइ वली अनेरू जंतू स्थिरप
णुं वांछइ। पणि एहमन जाणइ। ओ जएह जंतु मरण पामइ छइ। तउ कालि अम्हे मरण तणाइ वसि पड़ीसि
इ। एह आश्चर्य जगमाहि बीज उं न थी। दीसइ उं एक मरइ अनइ बीजा स्थिरपणुं वांछइ॥ एहज वली अर्थ कह
इ छइ॥४२ एमेव वयं मूढा। कामभोगेसु मुच्छिया। डज्झमाणं न बुज्झामो। रागद्दोसग्गिणा जगं॥४३ हे राजन् ए
वमेव वयं मूढा। कामभोगमूर्छिता। रागद्वेषाग्निना जगद्दह्यमानं न बुध्यामहे। राजन् अम्हे मूढ मूर्ख कां
म नइ विषइ भोग नइ विषइ मूर्छां कुंता। रागद्वेषरूपीइ अग्नि करीनइ जगविश्व दाझतुं बलतुं न जाणुं

॥४३॥ एहवुं जाणी नइ उत्तम जीव कहइ ते सिउं कहइ। भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयवि[illegible]णो। आमोद
माणा गछंति दिया कामकमा इव॥४४॥ हे राजन् भोगान् भुक्त्वा वान्त्वा लघुभूतविहारिणः। धीरा आमो
दमाना गछंति। हे राजन् भोग भोगवी नइ। वली वमी नइ लघुभूतविहारी हुंता। धीर सुभट आमोदमाना
संहर्ष पामता हुंता। चालइ। कहइ व कामक्रमा। द्विजा इव। जेणा नी परिइं स्वेच्छाचारी पंखीयानी परिइं॥
४४॥ साधु सर्वसंगरहित हुंता जिहां स्वयं निवीह तिहां रजाइ। वली राणी राजा प्रति कहइ॥४५॥ इमे य बद्धा
फंदंति मम हत्थज्जमागया। वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे॥४५॥ एते कामभोगाः अद्य मम हस्त
आगता। बुद्धा स्पंदते इव वर्त्तते। ए कामभोग आज म्हारइ हाथि आव्या हुंता बांध्या हुंता चंचलनी परिइं। व
र्त्तइ। अन्य च वयं कामेषु सक्ता। अनइ अम्हे कामभोगइ नइ विषइ आसक्त। यथा एते पुरोहितादयः। तथा भवि
ष्यामः। जिम ए पुरोहितादिक करइ छइ। तिम अम्हे करिस्युं॥४६॥ राणी कहइ छइ। सामिसं कुललं दिस्स॥
वज्झमाणं निरामिसं। आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामि निरामिसा॥४६॥ हे राजन् सामिषं कुररं बध्यमानं दृ
ष्ट्वा निरामिषं कुररं च अबध्यमानं दृष्ट्वा सर्वं आमिषं त्यक्त्वा निरामिषा विहरिष्यामि। हे राजन् आमिषसहित
पंषी उपीडातउ देषी नइ। अनइ आमिषरहित पंखी उ बीजि पंषीए अणपीडातउ देषी नइ सर्व संघलउं आ
मिष छांडी नइ विहरेसि। यथा सीचाणु भक्षि आमिष लेई नइ रहइ छइ। हुंतउ अनइ ते जती वारइं सीचा
णु आमिषलागी रहितउ। अनइ ते वइवार [illegible] बीजे पंखीए आमिष खवे तेणइं करी नइ। तेहं सीचाणु महा दु १००
षी कीधउ। अनइ वलगवा लागा। विडंबना करिवा लागा। अनइ तती वारइ तेणइं सीचाणइं मंचीत विं

। अनइ जेह एहवुं कष्ट विडंबना देषी इ छइ। तेह एह आमिष कीधी सइ छइ। अनइ इम जाणी नइ सीचा
णु आमिष छांडी नइ अलगथया। अनइ तति वारइ। सर्वि तेह पंखीया जई इ। तेणइं आमिष वलगा। अन
इ त सीचाणु मोकलुं म्हूं किन सुषी थयुं॥ यथा इह सीचाणुतणउ दृष्टांत देषी नइ। जेह उत्तम सुरुषहुइ
। तेह आपणा आत्मा प्रतिइं सुरुवी नइ निरामिष थाइ। अनइ आमिषसमान परिग्रह जाणि वउ। अनइ इम
जाणी नइ निःपरिग्रही पणइ सुखी थाइ। आमिषसमान परिग्रह छांडी नइ निरामिष। निःपरिग्रही पणा
इ थई नइ विहरेसि॥४६॥ राणी राजा प्रतिइं कहइ छइ॥ गिद्धोवमे उ णच्चाणं। कामे संसारवद्धणे। उरगो
सुवण्णपासेव संकमाणो तणुं चरे॥४७॥ गृध्रोपमान् पुरुषान्। च अन्यत् कामभोगान् संसारवर्द्धमा
नान् ज्ञात्वा सुवर्णपार्श्वे उरग इव। शंकमानः तनु स्तोक वार। हे राजन् गृद्ध पंखीयत्रि रिषा पुरुष अनइ का
मभोग संसारना वधारनाहार जाणी नइ सुवर्णपार्श्वे सपीइ। गुरुड पंखि राजन इसमीपि उरग सर्पनी प
रिइं। शंकाउ हुंतउ तणु स्तोक जयणापर हुंतउ चालो। जिम गुरुड समीपि सर्प त्रयत्रस्त। शंकमान हुंतउ। जिम गुरु
ड न जाणइ तिम चालइ। एहवउ एणइं प्रकारिइं जिम गुरुड समान विषय करी नइ हणाइ तिम यत्नापर हुंतउ
चालइ॥४७॥ राणी कमलावती कहइ छइ॥ नागोव्व बंधणं छित्ता। अप्पणो वसहिं वए। एयं पत्थं महारायं। उसुया
रित्ति मे सुयं॥४८॥ हे महाराजन् नाग इव। बंधनं छित्वा आत्मनो वसतिं व्रजेत्। हे महाराजन् गजेंद्रनी परिइं बंधन
छेदी नइ। आपणाइ स्थानकि जाए। जिम गयवर हाथीउ आपणां बंधन त्रोडी वंध्याचलनी अटवीइं जाइ सु
षी थाइ। तिम हे राजन चारित्र ग्रहणा करी। आपणा कर्मबंधन छेदी नइ मुक्ति नइ विषइ [illegible] जिम सुखीया

इति महराजना देहइ प्रकार नरेश्वर एतलइ पथ्यां। देहइ प्रकार नरेश्वर एप्रथ्या गिरूयं म ।।इति सुतं। मइं इम कहिउं
मुनीश्वर मुखि मां सांभलिउं।।४८।। तिहां राणीनि वचने राजा वैराग्य पामिउ छतु राज्य छांडी चारित्र ग्रहण करइ
। चइत्ता विउलं रज्जं। कामभोगे य दुच्चए। निव्विसया निरामिसा। निन्नेहा निप्परिग्गहा।।४९।। सम्मं धम्मं विया
णित्ता। चेच्चा कामगुणे वरे। तवं पगिज्झऽहक्खायं। घोरं घोरपरक्कमा।।५०।। तो य घाख्यात तपः प्रगृह्य हीं ग्र
हीत्वा। ति बिहू इ राणी राये साचउ तप आचरीनइ दीक्षा लीधी। किं कृत्वा विपुलं राज्यं त्यक्त्वा। विपुल विस्तीर्ण
राज्य छांडीनइ। पुनः किं कृत्वा। दुस्त्यजान् कामभोगान् त्यक्त्वा दुर्जेय कामभोग छांडीनइ। किं० ते निर्विषया विषय
रहित थइ। जे बिहू इ जणा। पुनः किं० ते निरामिषा स्त्रज्ञा रहित थइ। पुनः किं० निस्नेहा। स्नेह रहित थइ। निःपरि
ग्रहा। परिग्रह रहित थइ।।४९।। पुनः किं कृत्वा। सम्यक् धर्म विज्ञाय साचुं धर्म जोणीनइ। पुनः किं कृत्वा वरान्
काम भोगान् त्यक्त्वा। वर प्रधान कामभोग छांडीनइ। किं: तपः घोर रूप घोर आकार थइ। पुनः किं०
तौ घोर पराक्रमौ। घोर गाढउ पराक्रम छइ जेहनु।।५०।। एवं ते कमसो बुद्धा। सव्वे धम्मपरायणा। जम्ममिच्चु
उव्विग्गा। दुक्खस्संतगवेसिणो।।५१।। एवं तानि क्रमशो बुद्धानि। ईणइ प्रकारि इं ते सघलाइ प्रति बोध
पाम्या। किं० तानि। सघलाइं धर्म तत्पर थइ। पुनः किं० तानि जन्म मृत्यु भयो द्विग्नानि। जन्म मृत्यु रूपीइं
भय करीनइ उद्विग्न मनि इ वैराग्य पाम्या थइं ते सघलाइ पुनः किं० तानि दुःखस्यांतगवेषकानि। दुःख
तणउ अंत घाइ थइ।।५१।। सासणे विगयमोहाणं। पुव्विं भावणभाविया। अचिरेणेव कालेणं। दुक्खस्संतमु
वागया।।५२।। तानि अचिरेणैव कालेन दुःखस्यांतमुपागतानि। ते सघला अचिर थोडइं कालि दुःखनु अं १०१

त पामियां।। किं० तानि विगत मोहानां शासने पूर्वे भावना भावितानि। श्रीवीतराग देवनइ शासनि पूर्वे पहिलु भावना
ना भावइ। जे सघलाइ।।५२।। राया य सह देवीए। माहणो य पुरोहिओ। माहणी दारगा चेव। सव्वे ते परिनिव्वुडे त्ति बेमि।।५३।।
देव्या सह राजा। ब्राह्मण श्च पुरोहित। ब्राह्मणी दारकौ चैव। जीवा परिनिर्वृत्ताः इति ब्रवीमि।। देव कमलावती सहित रा
जा। अनइ पुरोहित ब्राह्मणी अनइ बि बेटा ते सघलाइ जीव वृत्या स्तणाइ मुक्ति गया। इस्युं बोलिउं।।५३।। उसुयारिज्ज
यणं चउदसमं सम्मत्तं।।१४ ब।। मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं। सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने। संथवं जहेज्ज अकाम
कामे। अन्नाएसी परिव्वए स भिक्खू।।१।। यो मुनिः मौनं चरिष्यामि इति बुद्ध्या धर्मं समेत्य। ज्ञान दर्शन चारित्र सहितो
भवति। जे मुनि ऋषीश्वर मौन महात्मानी क्रिया आचरिसु इति इसी बुद्धि करीनइ धर्म पामीनइ ज्ञान दर्शन चा
रित्र सहित हुइ। किं० मुनिः ऋजुः कृतः। माया रहित कृत कीधं कार्यं थइ जीणइ ऋषीश्वरइ। किं० भिक्षुः छिन्न निदान
छिन्न नीयाणुं छेदिउं थइ। जीणइ यो मुनिः संस्तवं जह्यात्। जे मुनि ऋषीश्वर गृहस्थ संस्तवनुं परिचय छांडइ।।
किं० यो मुनिः अकाम भोग नइ काम प्रार्थना नथी। जीहं ऋषीश्वरनइ यो मुनिः अज्ञातएषी परिव्रजेत्। जे मुनि
ऋषीश्वर अज्ञान भिक्षा वांछतु चालइ विहार क्रम करइ। स भिक्षु इति कथ्यते ते भिक्षु ऋषीश्वर कहीइ।।१।। राओ
वरयं चरेज्ज लाढे। विरए वेदवियायरक्खिए। पन्ने अभिभूय सव्वदंसी। जे कम्हि वि न मुच्छिए स भिक्खू।।२।। यो मुनि रागो
परं चरत् यो ऋषीश्वर राग रहित जिम हुइ। तिम चालइ। किं० मुनिः लाढ लाढ प्रसंसनीय थइ। किं० यो मुनि विर
तः विरमिउ थइ पुनः किं० यो मुनि। वेदशास्त्र तणाइ विद जाण वइ करीनइ आत्मा राषइ छइ। किं० भिक्षुः प्राज्ञः
डाहु थइ। किं कृत्वा परीसहान् अभिभूय परीसह पराभवी जीपीनइ। किं० भिक्षु सर्वदर्शी सर्व देखइ थइ।।

किं० भि० कस्मिन्नपि नमूर्छितः। कुणानइ विषइ मूर्छित नहीं। स भिक्षुः इति कथ्यते॥२॥ अक्कोसवहं विइत्तु धीरे मुणी चरे
लाढे निच्चमायगुत्ते। अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू॥३॥ यो मुनिः आक्रोशं वधं वदित्वा नि
त्यं आत्मगुप्तः चरेत्। जे ऋषीश्वर आक्रोश नइ वध पर कर्मनुं इम जांणी फल जांणी नइ। नित्य निरंतर गुप्तेंद्रिय थकउ चाल
इ। [illegible] किं० मुनिः धीरः सुभट थइ। पुनः किं० मुनिः मुनि ऋषीश्वर थइ। पुनः किं० अव्यग्रमना
व्याकुलपणा रहित थइ। किं० भिक्षुः असंप्रहृष्टः। असंप्रहृष्ट नाम इं अहंकार रहित थइ। यो मुनिः। कृत्स्नं स
र्व सहेत। जे ऋषीश्वर संपूर्ण सहि। स भिक्षुः इति कथ्यते॥३॥ पंतं सयणासणं भइत्ता सीउण्हं विविहं च दंस
मसगं। अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू॥४॥ प्रांतं शयनासनं भजित्वा सीतं उष्णं वि
विधं नाना प्रकारइं दंशमशक कहुस्य स पूर्ण सहइ। किं भिक्षुः अव्यग्रमना व्याकुलपणा रहित थइ। किं० भिक्षुः
असंप्रहृष्टः अहंकार रहित थइ जे ऋषीश्वर सु भिक्षु इति कथ्यते। ते भिक्षु ऋषीश्वर कहीइ॥४॥ नो सक्कियमिच्छ
ती न पूयं नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं। से संजए सुव्वए तवस्सी सहिए आयगवेसए स भिक्खू॥५॥ यो भिक्षुः सत्कारं न
इच्छति। जे ऋषीश्वर सत्कार वस्त्रादिक नवांछइ। यो भिक्षुः पूजां नइच्छति। पूजा न वांछइ। यो भिक्षुः वंदनकं नइ
च्छति। वंदनक न वांछइ। यो भिक्षुः प्रसंसां कुतः इच्छति। जे ऋषीश्वर प्रशंसा किहांथी नवांछइ। स भिक्षु
ः इति कथ्यते। किं० भिक्षुः संयतः गुप्तेंद्रिय थइ। पुनः किं० भिक्षुः सुव्रतः सुष्ठु रूडउं सुव्रत थइ। पुनः किं० भिक्षुः त
पस्वी थइ। पुनः किं० भिक्षुः ज्ञानदर्शनचारित्रसहितो भवति। ज्ञानदर्शनचारित्रसहित थइ। किं० भिक्षुः आत्मा १०२
गवेषकः। आत्मस्वरूप जांणइ॥५॥ जेण पुण जहाइ जीवियं संयमं जहाति जीणइ करीनइ पुन वली जीवित सणीइ
यं। मोहं वा कसिणं नियच्छई। नरनारिं पजहे सया तवस्सी। न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू॥ इयेन पुनः जावि० उ० २

संयम छांडइ। च अन्य यत्नेन कृत्स्नं मोहं बध्नाति। अनइ जीणइ करीनइ संपूर्ण मोह बांधइ। यो भिक्षुः एवंविधं नरना
रिं सदा विवर्जयेत्। ऋषीश्वर इस्यां नर पुरुष अनइ स्त्री छांडइ। यः कुतूहलं न उपैति। ये भिक्षुः ऋषीश्वर कौ
तिग न करइ। भिक्षुः रिति॥६॥ छिन्नं सरं भोममंतलिक्खं सुविणं लक्खणदंडवत्थुविज्जं। अंगवियारं सरस्स वि
जयं जो विज्जाहिं न जीवई स भिक्खू॥७॥ य एताभिः विद्याभिः न जीवति स भिक्षुः इति कथ्यते। जि साधु एहे विद्याए
करीनइ न जीवइ। ते साधु कहीइ॥ एताभिः काभिः छिन्नं छेदलक्षणं। वस्त्रादिक छेदवानु लक्षण। स्वर ल
क्षणं भोमं भूकंपादि अंतरिक्ष आकाश संबंधी उल्कापातादि स्वप्नः। सकुणानु विचार लक्षणं मानुष कादि
पुरुषस्त्रीहस्त लक्षणादि दंडलक्षणं। वास्तुशास्त्र विद्या। अंगविकार। लोचनस्फुरणादि स्वरस्य विजयं दुर्गा
दि पक्षी सुख असुख कथनं॥७॥ मंतं मूलं विविहं वेज्जचिंतं वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं। आउरे सर
णं तिगिच्छियं च तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू॥८॥ मंत्रं मूलं विविधं वैद्यचिंता वमन करणं। विरेचनं। धूप
दानं नेत्र अंजनं। स्नानं अपत्यार्थे स्नान कराववं। आतुरस्य स्मरणं। रोगीया कुता औषधादिकानुं स्मरि
वउं। अथवा मातपित्रादि स्मरणं चि आपडी गरणां। तत् सर्वं परिज्ञाय परिव्रजेत्। तत्सर्वं छांडी ते विहार
क्रम करइ। स भिक्षुः इति कथ्यते॥८॥ खत्तियगणउग्गरायपुत्ता माहण भोइय विविहा य सिप्पिणो। नो ते
सि वदती सिलोगपूयं। तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू॥९॥ क्षत्रिया गणा मल्लादिकार कोः राजपुत्राः ब्राह्मणाः
भोगिका भोगसंयुक्ताः विविधाः शालिनातथाय: श्लोकपूजन नवदति जिम साधु माती क्षत्रियादिकनइ
श्लोक प्रशंसा अनइ पूजा न बोलइ। न करइ विविध नाना प्रकारि शिल्पी विज्ञानवंता तत् सर्वं परिज्ञाय परि

आयनाम नपानपो जनखादि मस्सादिम परस्यानु देआ तिनि दोनिमय सरनमध्य बेता नानना ६

व्रजेत्। ते साधु बांडी विहार क्रम करइ स भिक्षु॥ गिहिणो जेण वइ एणादि हा अप्पइए॥ ...स भूया। सवेज्जा। तेसिं इह
लोइय फलट्ठा। जो संथवं न करे स भिक्खू॥१० जे गृहस्थात्र हजितन दृष्ट्वा जे गृहस्थ दीक्षा लीधी प्रहिइ दीधा।
वा अथवा प्रव्रजितनां जे गृहस्था संस्तुता सवेयु। अथवा जे गृहस्थः दीक्षा आगली अइ संस्तुत परिचया कुइ।
तेषां गृहस्थानां इहलोक फलार्थं। संस्तवनं करोति। जे महात्मा इहलोक फलनइ कारणि तीह गृहस्थनुं संस्तव प
रिचय न करइ स भिक्षुः॥१० सयणासणपाणभोयणं। विविहं खाइमसाइमं परेसिं। अदए पडिसेहिए णियंठ
जे न तत्थ ण पदूसई स भिक्खू॥११ [illegible] सयनासनपानभोजनखादिमस्वादिमपरस्यां
अददः प्रतिषिद्धो नियंथस्तत्र न प्रद्वेष्टि। शयनासनादिक परगृहस्थनइं आपदेतां कुता। निषेधितुं कुंउ।
ये रूपिति हांघेषन करइ स भिक्षु॥११ जं किंचाहार पाणं। विविहं खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं जो तं तिविहेण णा
णुकंपे मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू॥१२ यत् किंचित् आहार पानक विविधं खादिमस्वादिमं परस्यः ल
ब्धायमं त्रिविधेन नानुकंपाते स भिक्षुः। जे काई आहार पानादिक विविध परगृहस्थ थकी लहीनइ जे सि
क्षु आहारादि। त्रिविध त्रिविधइ। अनुकंपइ नहीं संविभाग न करइ। ते भिक्षु नहीं। मनवचनकायसुसंवृता हता
या अनुकंपते स भिक्षुः इति कथ्यते। ते मनवचकायसंवरसहित परनइं संविभाग करइ। ते भिक्षु कहीइ॥१२
आयामगं चेव जवोदणं च। सीयं सोवीर जवोदगं च। नो हीलए पिंडं नीरसं तु। पंतकुलाइं परिवए स भिक्खू॥
१३ आयाम च अन्यत् जवोदनं यव सक्तु। सीतपिंडं सौवीरं जवोदकं च अन्यत् नीरसं पिंडं न हीलयति जे १०३
महात्मा आयामादिक अवहेलइ नहीं। यः प्रांतः कुलानि परिव्रजेत्। ये सामान्य कुले विहरइ स भिक्षुः॥१३

सद्दा विविहा भवंति लोए। दिव्वा माणुस्सया तहा तिरिच्छा। भीमा भयभेरवा उराला। जो सोच्चा ण वहिज्जई स
भिक्खू॥१४ लोके दिव्या मानुष्यका स्तथा। तैरश्चा विविधा शब्दा भवंति। लोके देवसंबंधी मनुष्यसंबंधी। तिर्यं
च संबंधी विविध नाना प्रकारि शब्द हुइ। किं शब्दाः भीमाः रौद्राः पुनः किं० भयभैरवाः भयकरी भैरव दु
रको त्पादक बइ। यो भिक्षुः। स्तान् शब्दान् श्रुत्वा न कथ्यते। पीडां न प्राप्नोति। जे भिक्षु ते शब्द सांभली पीडा न पा
मइ स भिक्षुरिति॥१४ वादं विविहं समिच्च लोए। सहिए खेयाणुगए य कोविअप्पा। पन्ने अभिभूय सव्वदंसी। उवसं
ते अविहेडए स भिक्खू॥१५ स भिक्षुरिति कथ्यते। किं भिक्षुः लोके विविधं वादं समेत्य महित्य लोकमाहि विवि
धवाद पामी ज्ञानादिकसहित बइ। पुनः किं खेदानुगत खिद्यंते कर्मा यपनेन इति खेदः संयम स्तेन सहितः संयमसंय
क्त पुनः किं० कोविदात्मा। डाहु आत्मा बइ। जे हनुपन्ने अभिभूय सव्वदंसी पूर्ववत्॥१५ असिप्पजीवी अग
हे अमित्ते। जिइंदिए सव्वउ विप्पमुक्के। अणुक्कसाई लहु अप्पभक्खी। चिच्चा गेहं एगचरे स भिक्खू त्ति बेमि॥१६ स
भिक्षुः रिति कथ्यते। पुनः किं अशिल्पजीवी शिल्पविज्ञानि करी आजीविका न घी। करइ पुनः किं० अगृह पुनः
किं० अमित्र घररहित मित्ररहित। पुनः किं० जितेंद्रियः सर्वतो विमुक्तः सघले संसारथी मूकाणु बइ। पुनः किं
अनुकषाई प्रबल कषायरहित। पुनः किं० लघु अल्पभक्षी लघु नीरस अल्प घोउं जिमइ बइ। पुन किं० गृ
हं त्यक्त्वा। एकचरे तु घरबांडी एक रागद्वेषरहित चालइ। स भिक्षुइति ब्रवीमि॥१६ इति नाम भिक्षु पंचद
शमोध्ययनं समत्तं॥१५ सुयं मे आउसं तेणं। भगवया एवमक्खायं। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं। दस बंभचेरस
माहिठाणा पन्नत्ता॥१ जे भिक्खू सोच्चा निसम्म। संजमबहुले। संवरबहुले। समाहिबहुले गुत्ते। गुत्तिंदिए गुत्तबंभ

यारी। सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। हे आयुष्मन् भगवता एवमाख्यातं मया इति श्रुतं। खलु निश्चितं इह जिनशास
ने स्थविरैर्भगवद्भिः दश ब्रह्मचर्यसमाधिस्थानानि प्ररूपितानि। यानि भिक्षुः श्रुत्वा निशम्य सम्यग् हृदये अ
अवधार्य संयमबहुलः संवरबहुलो समाधिबहुलो गुप्तेन्द्रियो। गुप्तब्रह्मचर्यः सदा अप्रमत्तो विहरेत्
ञे महात्मा दस ब्रह्मचर्यसमाधिस्थानक सो संलीनीयमाहि अवधारी संयमबहुलादिको विशेषेण प्रोक्त
कृइ॥ १ कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता। जे भिक्खू सोच्चा। निसम्म संजम ३
बहुले गुत्तिंदिए। गुत्तबंभयारी सदा अप्पमत्ते विहरेज्जा॥ एतत्पूर्ववत्। भगवंत खलु निश्चितं तानि दस
विध ब्रह्मचर्यसमाधिस्थानानि कतराणि स्थविरैर्भगवद्भिः प्रज्ञप्तानि शेषं पूर्ववत्॥ २ गुरु कहइ इमे
खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा जाव अप्पमत्ते विहरेज्जा॥ तंजहा॥ विवित्ताइं सय
णासणाइं सेविज्जा से निग्गंथे नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ तं कहमिति चेत्
आचार्य आह। निग्गंथस्स खलु इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बं
भचेरे संका वा। कंखा वा। वितिगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा। उम्मायं वा पाउणेज्जा। दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा
। केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता॥ १ हवइ से नि
ग्रंथे गुरु कहइ खलु निश्चितं इतो इमानि दश ब्रह्मचर्यसमाधिस्थानानि। स्थविरैर्भगवद्भिः प्रज्ञप्तानि। शेषं
पूर्ववत् यथा स निर्ग्रंथो विविक्तानि शयनासनानि सेवितानि सेवेत। ते महात्मा विविक्त स्त्रीणां निर्वर्जन प्रदेश
स्थानादि रहितं शयनासनं सेवनाहार कृइ। स निर्ग्रंथ स्त्रीपशुपंडगसंसक्तानि शयनासनानि सेवितान् १०४

सेवेत। ब्रह्मचर्यधारक महात्मा जीणइ उपाश्रयि मनुष्यनी अथवा देवतानी स्त्री कृइ। अनइ पशुनी तिर्यंच
नी स्त्री अनइ षंडक नपुंसक नइ। तेह वइस्थानकि तीणइ उपाश्रयि न वुसइ। चेत् यदि कथंजइ।
शिष्य पूछइ एम काइ सिउ पूछइ आचार्य आह। गुरु कहइ। कदाचित् ते गाढ उनीरागमत्त्विं कृइ। परिणाइ ष्टि
स्त्रीपशुनपुंसकसहित शयनासन सेवतां। ब्रह्मचारी नइ शंका कांक्षा विचिकित्सा। ऊपजइ। शंकाप
रिचित एव ब्रह्मचारी बइ केन्या॥ १ कांक्षा स्त्री अभिलाषरूप। विचिकित्सा धर्मफलप्रति संदेह उ चारित्रविना
शल सेवा। अथवा ते महात्मा चारित्र नाशल हइ। अथवा उन्माद प्राप्नुयात्। काममत्त थाइ। दीर्घकालि रोगातंक
सेवेत्। दीर्घकालि रोगच्छरादि आतंक शीघ्रवाती शूलादिक कृइ। केवलि प्रज्ञप्ता धर्मी भ्रुश्यति। केवलि प्र
णीतधर्मनु भ्रंश पामइ। तस्मात्कारणात् स्त्रीपशुपांडगसंसक्तानि शयनासनानि न सेवेत्। ते हकारण
उवस्त्रादिकसहित शयनासनानि सेवइ महात्मा॥ २ नो इत्थीणं कहं कहेत्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति चेत्।
आ। निग्गंथस्स खलु इत्थीणं। कहं कहेमाणस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा। समुप्पज्जेज्जा। जाव
भंसेज्जा। जाव भंसिज्जा। तम्हा नो इत्थीणं। कहं कहेज्जा॥ २ निर्ग्रंथः स्त्रीणां कथा न कथयेत्। ते निर्ग्रंथ महात्मा
स्त्रीसिउ। निर्विड निवीतीन करइ। तेक हइ इत्यादि। पूर्ववत्। तस्मात् स्त्रीः कथा न करइ वर्जइ॥ ३ नो इत्थीहिं सद्धिं स
न्निसज्जागए विहरेत्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति चेत्। आचार्य निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स
विहरमाणस्स। बंभचेरे संका वा कंखा वा। जाव केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थी
हिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा॥ ३ स निर्ग्रंथः स्त्रीभिः सार्द्धं सन्निषद्यागतो विहरन् न सेवेत। स्त्रीसहित एकइ

आसणाणि बहुसइ तं कहमित्यादि तथैव अयं विशेषः स्त्रीभिः सार्द्धं सन्निषद्यागतस्य विहरमानस्य ब्रह्मचारिणो
ब्रह्मचर्ये शंकावीइत्यादि पूर्ववत्। एकद्रु आसणा बहुदोषा शंकाभ्रांत्यादिक अनाचारकृजानस्मान्न स्त्रीभिः सार्द्धं
सन्निषद्यागतो विहारवत्॥३॥ णो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवति। से निग्गं
थे कहमिति चेत्। आ० निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं जाव निज्झायमाणस्स बंभचेरे संका वा कं
खा वा। जाव केवलिपन्नत्ताउ वा धम्माउ भंसेज्जा। तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं इंदियाइं निज्झाएज्जा॥ अस निग्रंथः
स्त्रीणां इंद्रियाणि मनोहराणि मनोन्यानि आलोकितानि ध्यातानि सेवेत्। महात्मा स्त्रीतणां इंद्रियमनोन्यम
नोहर अंगोपांग जोणाहारतरुन तरवी तवण हारकुं नेइ। तं कहमित्यादि पूर्ववत्। अयं विशेषः स्त्रीणां इंद्रि
या[illegible]णि मनोहराणि स्त्रीभिः सार्द्धं मानान्यान् आलोकमानस्य जोसावीतवतो शंकादिक तस्मान्न स्त्रीणां इंद्रि
याणि। मनोहराणि। मनोन्यानि आलोकयेत्। न ध्यायेत्॥४॥ नो निग्गंथे इत्थीणं कुडंतरंसि वा। दूसंतरंसि वा।
भित्तिअंतरंसि वा। कूइयसद्दं वा। रुइयसद्दं वा। सिहियसद्दं वा। गीयसद्दं वा। हसियसद्दं वा। कंदियसद्दं वा। विल
वियसद्दं वा। सुणित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चेत्। आ० निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुडंतरंसि वा। दूसंत
रंसि वा। जाव चुलवियसद्दं सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा। जाव केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ भंसेज्जा
तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कुडंतरंसि वा जाव सुणमाणे विहरेज्जा॥५॥ यस निग्रंथः स्त्रीनाय तलाशाद्धए तलेस्था
नकिरहीनइनसा सलइ। तं कहइत्यादि। पूर्ववत्। अयं विशेषः। स्त्रीनाय तलाशाद्धसा सलतां शंकादिकं तेह
कारणात्। साधुनसा सलइ॥ यनो निग्गंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता सवति। तं कहमिति चेत्। आ० १०५
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा। जाव धम्माउ

भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा॥६॥ स निग्रंथः स्त्रीणां पूर्वरतं पूर्वक्री
डितं नानुस्मरेत्। महात्मा स्त्रीतणां पूर्वभोग पूर्वक्रीडा संसारण हार नकुइ। तं कहमित्यादि पूर्ववत्। अयं विशे
षः स्त्रीणां पूर्वरतं। पूर्वक्रीडितं। मनुस्मरमाणस्य निग्रंथस्य। स्त्रीतणां पूर्वक्रीडासंसारतां ब्रह्मचारी महात्मान
शंकादिक आवि। तस्मात्। स्त्रीणां पूर्वरतं पूर्वक्रीडितं नानुस्मारत्॥७॥ नो पणीयं आहारं आहारे ता हवति
से निग्गंथे तं कहं। मिति वेत्। आ० पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स। बंभयारिस्स। बंभचेरे संका वा जाव
केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहरेज्जा॥ स निग्रंथः प्रणीतं आहारं आहा
रयिता। न सेवेत्। महात्मा दिनर प्रतिइं अतिघणु स्निग्ध आकंठ प्रमाण आहार नुजिमण हार नकुइ॥ उक्तं च।
श्री उत्तराध्ययनि जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे। समारुओ नोवसमं उवेइ। एविंदियग्गी। वि पगामभोइणो न बंभयारि
स्स हियाय कस्सई॥ १ अइबुकुसो। मधुरघणीयरिनु। आहार जिमइ। आहार दिनर प्रतिइं आकंठ प्रमाण लेतां
धातुयोषकुइ अनइरागनु उदय थाइ। तेह भणी वर्जइ वां। लूखुं आहार लेतां पेटनु ब उ भाग कणुरो घिवउ।
उक्तं च॥ रसा पगामं निनि सेविअव्वा। पायं रसा दित्तकरा नराणां दित्तं च कमा समभिद्दवंति दुमं जहा साउफलं व
पक्खी॥ १ वलीए तलां वा नो वर्जइ। आपणा सयनी विस्तृषा। शोभानउं करिवउं। तथा स्नानादिक इाणमउनादिक
सरीरिस श्रृषा वर्जइ॥ यतउक्तं॥ श्री दशवैकालिके॥ विभूसावत्तिअं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे
घोरे। जेणं पडइ दुरुत्तरे॥ १ विभूसा इत्थिसंसग्गी। पणीयं रसभोयणं। नरस्सत्तगवेसस्स। विसं तालउडं जहा॥ २॥
श्री शीलोपदेशमालायां। तं कहइत्यादि पूर्ववत्। अयं विशेषः प्रणीतं आहारं आहारयतो। निग्रंथस्य स्निग्ध

आहारडिमतारहइ। शंकादिकतस्मात्प्रणीतं। आहारंनाहारयेत्॥८ नोअइमाइंयाए।पाणभोयणं।आहा
रित्ताहवइसेनिग्गंथेतंकहमितिचेत्॥आ० अतिमायाएपाणभोयणं।आहारेमाणस्सबंभयारिस्स।बंभ
चेरेसंकावाधम्माउभंसेज्जा॥८ सनिर्ग्रंथः अतिमात्रयापानभोजनंआहरयितानभवेत्।महात्माप्रमाणाधि
कपानभोजनंद्विमणाहारनकुर्यात्।तंकमित्यादिपूर्ववत्।अयंविशेषः।इतिमात्रयापानभोजनंआहारयतो
निर्ग्रंथस्यप्रमाणाधिकपानभोजनंआहारतो।शंकादिकदोषतस्मात्अतिमात्रयापानभोजनंनआहार
यत्॥८ नोविभूसाणुवातीहवतिनिर्ग्रंथेतं।कहमितिचेत्।आ० विभूसावित्ताए।विभूसियसरीरेइत्थिजणस्स
हलसरीरोभवति।ततोणंतस्सइत्थिजणेणं।अहिलसिज्जमाणस्सबंभयारिस्स।बंभचेरेसंकावाजावके
वलियपन्नत्ताउवाधम्माउभंसेज्जा।तम्हाखलुनोनिग्गंथेविभूसणवादीसिया॥८ स्यावकदाचित्।अपिनिभूषा
नुपातीनभवेद्महात्माकदाचित्।शृंगारकरणाहारनकुर्यात्।तंकहमित्यादिपूर्ववत्।अयंविशेषः।भूषावर्जिका
विभूषितशरीर।स्त्रीजनस्याभिलाषणीयोभवति।शृंगारतत्परशृंगारसहितशरीरस्त्रीजननइ।वांछनीयक्त
इ वतोमिति व्याक्यालंकारे तस्यस्त्रीजनेनाभिलष्यमाणस्यब्रह्मचर्येनइविघइ।शंकादिकदोषतस्माद
कारणात्कदाचिदपिविभूषानुयातीनभवेत्॥८ नोसद्दरूवरसगंधफासाणुवादीसेनिग्गंथे।तंकह
मितिविआचार्याह॥निग्गंथस्सखलुसद्दरूवरसगंधफासाणुवदिस्स।बंभयारिस्स।बंभचेरेसंकावावितिगि
छावा।समुप्पज्जेज्जा।भेदंवालभेज्जा।उम्मायंपाउणेज्जा।दीहकालियंवा।रोगायंकहवेज्जा।केवलिपन्नत्ताउ
वाधम्माउभंसेज्जा।तम्हाखलुनोनिग्गंथेसद्दरूवरसगंधफासाणुवादीसेनिग्गंथेदसमेबंभचेरसमाहि

+ब्रह्मचारि
णोब्रह्मचर्ये
शंकाइत्यादि
तिवारस्था
इतेमाहात्मा
ब्रह्मचारान
इस्त्रीजनको
बताङ्कंता।उ-
५

१०६

ठाणे।हवंतिभवंतियएत्थसिलोगा॥तंजहा।जंविवित्तमणाइन्नरहियंइत्थिजणेणबंभचेरस्सरक्खट्ठा।
आलयंतुनिसेवए॥ स निर्ग्रंथः शब्दानुयातीगंधानुरसानुपातीस्पर्शानुपातीनभवेत्महात्मास्त्रीतणा
शब्दअनुकरतुरूपअनुकरतु।गंधअनुकरतु।स्पर्शअनुपातिकरतुनकुर्यात्सरीषाचेष्टाकरतु।तंकह
मित्यादिपूर्ववत्।अयंविशेषःशब्दानुपातिनो।रूपानुपातिनोगंधानुयातिनोरसानुपातिनः स्पर्शानुया
तिनोब्रह्मचारिणः।शब्दरूपरसस्पर्शअनुकरतांब्रह्मचारीनइशंकादिकदोषतस्मादशब्दानुयातीरू
पानुपातीगंधानुपाती।रसानुयाती।स्पर्शानुपातीनभवेत्।इमानिदसब्रह्मचर्यसमाधिस्थानानिभवंति
।एदशब्रह्मचर्यसमाधिस्थानकरणइ।भवंति।वात्रश्लोकतत्यथा।जंकिंचि०भिक्षुःब्रह्मचर्यस्य।रक्षार्थंत
दालयंनिसेवेत्।भिक्षुमहात्माब्रह्मचर्यरक्षानइकारणतेघरसेवइ।यः आलोयाविविक्तंअनाकीर्णः
स्त्रीजनेनरहितोभवति।येउपाश्रयनिर्व्यंजनअनाकीर्णभिचित्रादिवर्जितःस्त्रीजनरहितकइ॥
मणपल्हायजणणी।कामरागविवड्डणीबंभचेररओभिक्खू।थीकहंतुविवज्जए।रबह्मचर्यरतोभि
क्षुःस्त्रीकथावर्जयेत्।ब्रह्मचर्यआसक्तमहात्मास्त्रीकथावर्जइ।किं०कथाप्रल्हादजननीमननइहर
षकुपजावइबड़।पुनकिं०कथा।कामरागविवर्द्धनी।कामस्नेहविवर्द्धनी।कामस्नेहवधारइबइ॥रसमंचसं
थवंथीहिंसंकहंचअभिक्खणंबंभचेररउभिक्खूनिच्चसोपरिवज्जए।इब्रह्मचर्यरतोभिक्षुः भिक्षुः नित्यस्त्री
भिः।सहसंस्तवःअभीक्ष्णंसंकथांपरिवर्जयेत्ब्रह्मचर्यसहितभिक्षुनिरंतरस्त्रीभिःपरिचय।अनइनि
रंतरकथावार्त्तावर्जइ।अंगपच्चंगसंठाणं।चारुल्लवियपेहियं।बंभचेररओइत्थीणं।चक्खुगिज्झंविवज्ज

ए॥४ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः स्त्रीणां अंगप्रत्यंगसंस्थानचारूल्लपितप्रेक्षितं चक्षुर्ग्राह्यं वर्जयेत्। ब्रह्मआस
क्त महात्मा स्त्रीतणा अंग उपांग संस्थान चारू रूडउ उल्लपित बोलिवउं। प्रेक्षित चक्षुर्ग्राह्य जोइवु लोचन
ग्राह्य वर्जइ न जोइ॥४ जिम सूर्य सामी दृष्टि जोई घाइ तिम पाछी वालइ। तिम स्त्रीतणां अंग घाइ तिमं दृष्टी
नइ दृष्टि पाछी वालवी बीजी वार साहमूं न जोईइ॥४ कूइयं रुइयं गीयं। हसियं थणियकंदियं। बंभचेर
रउ स्त्रीणां सोय मिग्र वज्जए॥५ ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः स्त्रीणां कूजितं रुदितं गीतं हसितं स्तनितं क्रंदितं श्रोत्रग्रा
ह्यं वर्जयेत्। ब्रह्मव्रतआसक्तः भिक्षु स्त्रीतणाउं कूजितादिक कर्णनइ ग्राह्य वर्जइ न सांभलइ॥५ हासं क्रीडं
दर्प्पं सहसा त्रासियाणि य। बंभचेररओ स्त्रीणां नाणुचिंते कयाइवि॥६ ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः स्त्रीणां हास्यं क्रीडां
रतिं दर्प्पं सहसा चित्रासनानि कदाचिदपि नानुचिंतयेत्। ब्रह्मव्रतरत आसक्तो भिक्षु स्त्रीतणा कूजित हास्य क्री
डा साग। दर्प सहसाकारि सोगि चित्रासना निसयकि छारइ न चींतवइ॥६ पणीयं भत्तपाणं तु। खिप्पं मयविवड्ढ
णं। बंभचेररओ भिक्खू। निच्चसो परिवज्जए॥७ पुनः ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः प्रणीतं भक्तपानं क्षिप्रं मदविवर्द्धनं
नित्यं परिवर्जयेत्। ब्रह्मव्रतासक्तो भिक्षु स्निग्ध भातपाणी क्षिप्र शीघ्र मदनइ वधारणहार नित्य वर्जइ॥७॥
धम्मं लद्धं मियं कालि। जत्तत्थं पणिहाणवं। नाइमत्तं तु भुंजेज्जा। बंभचेररओ सया॥८ ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः धर्मे
लब्धं मितं काले यात्रार्थं भुंजीत। ब्रह्मव्रतासक्तो भिक्षु धर्मि सूजतुं लाधउं। मित थोडउं कालि अवसरि यात्रा
देह धारणा नइ अर्थि जिमइ। परं अतिमात्रं न भुंजीत। पणि अधिकउं न जिमइ॥८ विभूसं परिवज्जेज्जा। सरी २०७
रपरिमंडणं। बंभचेररओ भिक्खू। सिंगारत्थं न धारए॥९॥ भिक्षुः विभूषां परिवर्जयेत्। महात्मा शृंगार

वर्जइ। ब्रह्मचर्यरतो भिक्षुः। शृंगारार्थं शरीरपरिमंडनं न धारयेत्। ब्रह्मव्रतासक्त भिक्षु शृंगारार्थि शरीर
मंडन न धरइ॥९॥ सद्दे रूवे य गंधे य। रसे फासे तहेव य। पंचविहे कामगुणे। निच्चसो परिवज्जए॥१०॥ शब्दरूपगं
धरसस्पर्शान् पंचविधकामान्गुणान् नित्यं परिवर्जयेत्। भिक्षु सद्दरूपगंधरसस्पर्श ए पांच प्रका
रका मभोग नित्य वर्जइ॥१० आलउ थीजणाइन्नो। थीकहा य मणोरमा। संथवो चेव नारीणं। तासिं इंदियदरि
सणं॥११ कूइयं रुइयं गीयं। हसियं भुत्तासियाणि य। पणीयं भत्तपाणं च। अइमायं पाणभोयणं॥१२ गत्तभूसू
सणमिट्ठं च। कामभोगा य दुज्जया। नरस्सत्तगवेसिस्स। विसं तालउडं जहा॥१३ आत्मगवेषिणो नरस्य
एतत्सर्वं यथा तालपुटमिव भवति। आत्मस्वरूप जाणणहार पुरुष नइं एतला तालपुट विषक्रूर। एत
त् किं स्त्रीजनाकीर्ण आलय। स्त्रीसहित उपाश्रय स्त्रीकथा च मनोरमा अनइ रूडी स्त्रीकथा। च अन्यत् नारी
णां संस्तव अनइ स्त्रीतणउ परिचय तासां स्त्रीणां इंद्रियदर्शनं। स्त्रीतणां इंद्रियदर्शन कूजित रुदितं
गीतं हसितं भुक्तासितानि च प्रणीतं भक्तपानं च। अतिमात्रं च पानं भोजनं सगमं। भुक्त निमित भोग वि। आ
सितस्थादि त्रायनादि इष्टं। गात्रभूषणं दुस्त्यज कामभोगा॥१३ दुक्कं गाधानुअर्थ एकवउ। दुज्जए कामभो
गे य। निच्चसो परिवज्जए। संकट्ठाणाणि सव्वाणि वज्जिज्जा पणिहाणवं॥१४ भिक्षुः दुर्जयान् कामभोगा
न्नित्यं परिवर्जयेत्। तथा शंकास्थानानि सर्वाणि वर्जयेत्। अनइ शंकास्थानक सघलां परिवर्जइ। किं
सि प्रणिधानवान्। ध्यानवंत बड्डा॥१४ धम्मारामे चरे भिक्खू। धिइमं धम्मसारही। धम्मारामरए दंते। बंभचे
रसमाहिए॥१५ भिक्षुर्धर्मारामे रमेत्। भिक्षु धर्मरूपी आरामि चालइ। किं... भिक्षु धृतिवान् संतोषवंत

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

वुत्री
।धर्म्मसारथिः धर्मप्रवर्त्तकार।धम्मीरतः धर्मरूपी इवनि आसक्त।दंते।ब्रह्मचर्यसमाहित।व.ब्रह्मचर्यनइ
विषइसमाधिवंत।।१५ देवदाणवगंधव्वा।जक्खरक्खसकिंनरा।बंभयारिंनमंसंति दुक्करं जे करंति तं।।१
६।।देवदानवगंधर्वाः यक्षाराक्षसाकिंनराः ब्रह्मचारिणः नमस्कुर्वंति।दुगमं दुःखकरं तद्ब्रह्मव्रतं कुर्व
तिपाळयंति।।१६ एस धम्मे धुवेणीतिएसासए जिणदेसिए।सिद्धासिज्झंति चाणेणसिज्झिस्संति तहा वरे त्तिबेमि
।बंभचेरसमाहिठाणंसमत्तं।।१७ एष धर्म्मो ब्रह्मव्रतरूपः ध्रुवो नित्यः शाश्वतो।जिनदर्शितो वर्त्तते।एव ब्रह्मव्रत
रूपधर्म्मइ करी अनेकजीव जिनभाषितवर्त्तइ।ज्ञानेन ब्रह्मचर्ये नि अनेक जीवाः सिद्धा तथा संप्रति सिध्यंति तथा
अपरे स्वरूप तिइंणइ ब्रह्मचर्यइं आगइ जीव सीधा हिवडां सीझइ अनिराहि वसी सिधिइं आ सिद्ध।इति ब्रवीमि।।
इसी ब्रह्मचर्य नवगुप्तिरूप वाडि।तेह नी रक्षा।नइ विषइ सर्व बलियं नमय करइ।महात्मा किम तिं भिक्षु।तिगु
प्ति त्रिकुगुप्तिइं गुप्तउ।मनवचनकायसंवरी नइ रहइ।निकउ आलयलाइ नित्यप्रिर।दंतो आयणी पांचइं
इंद्रिया वइज़ीणइ।प्रसंतो लोभादिककषायजीता बइ।एह बुद्धिवंत नवगुप्ति पालइ।एह बुद्धदुष्करब्रह्म
व्रपालवु।।१७।। बंभचेरसमाहिठाणं सोलसमं सम्मत्तं।।१७।।